भारत-चीन सम्बन्ध राजीव गाँधी से अटल बिहारी वाजपेयी तक
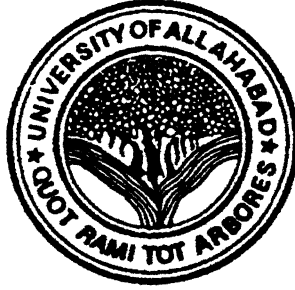
इलाहाबाद विश्वविद्यालय की डी० फिल्० उपाधि
हेतु प्रस्तुत

शोध-प्रबन्ध

शोधकर्ता :
अनन्त कुमार तिवारी

निर्देशक :
प्रो० उमा कान्त तिवारी

राजनीति विज्ञान विभाग
इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद
2002

ईश्वर को समर्पित

अनुक्रमणिका

प्राक्कथन

भारत तथा चीन एशिया के दो ऐसे विशाल राष्ट्र हैं जिनके बीच ऐतिहासिक काल से ही आर्थिक एव सास्कृतिक सम्बन्ध रहे है। स्वतत्रता के पश्चात् भी भारत शांतिपूर्ण-सहअस्तित्व तथा गुट-निरपेक्षता की नीति का अनुसरण करते हुए चीन सहित अपने सभी पड़ोसी देशों के साथ मधुर सम्बन्ध स्थापित करने हेतु प्रयासरत, रहा है। कालान्तर मे राष्ट्रीय हितो के टकराव ने चीन के साथ भारत के मतभेदों को जन्म दिया, जिसकी अन्तिम परिणति एक दु खद युद्ध के रूप मे हुई।

राजीव गांधी की चीन-यात्रा से भारत-चीन सम्बन्धों मे जो निरन्तर प्रगाढता आ रही है, वह अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति मे आये बदलाव के परिप्रेक्ष्य में और भी महत्वपूर्ण हो जाती है। आर्थिक उदारीकरण तथा भूमंडलीकरण के इस दौर मे दोनो देशो के बीच सहयोग की अपार सभावनाएँ मौजूद हैं। प्रस्तुत शोध-प्रबन्ध भारत-चीन सम्बन्धो के सामान्यीकरण को इसी परिप्रेक्ष्य मे देखने का एक लघु प्रयास है। इसमें नवम्बर, 2002 तक की घटनाओं के आधार पर एक सतुलित एव सारगर्भित निष्कर्ष निकालने का प्रयत्न किया गया है।

भारत-चीन सम्बन्धो पर शोध-कार्य की अत्यल्पता ने मुझे इस विषय को चुनने के लिए प्रेरित किया। जब मैने यह प्रस्ताव श्रद्धेय प्रो0 उमा कान्त तिवारी जी के समक्ष रखा तो उन्होने मेरे मार्गदर्शन का गुरुतर दायित्व सहर्ष स्वीकार कर लिया। इस शोध-कार्य में अपने सुदीर्घकाल में सचित अनुभवो एव ज्ञान द्वारा उन्होने जो मेरा मार्ग-दर्शन किया, उसके लिए मै उनके सम्मुख नत-मस्तक हूँ।

प्रस्तुत शोध-प्रबन्ध में अन्तर्निहित विचारो के सृजन एवं सहयोग तथा समर्थन के लिए मैं राजनीति विज्ञान विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय के विभागाध्यक्ष डा0 आलोक पन्त जी सहित समस्त गुरुजनो के प्रति कृतज्ञ हूँ जिनके सम्पूर्ण अनुभव एव ज्ञान का कोष मेरे लिए सदैव एक प्रकाश-स्तम्भ के सदृश रहा है। राजनीति विज्ञान विभाग के

वरिष्ठ प्रवक्ता डॉ0 मोहम्मद शाहिद जी ने अत्यन्त व्यस्तता के होते हुए भी मुझे जो सहयोग एव सम्बल प्रदान किया उसके लिए मै उनके समक्ष सदैव नत-मस्तक रहूँगा।

मै अपने परम-पूज्य पिता श्री चतुर्भुज तिवारी जी एव ममतामयी माता श्रीमती शीला देवी जी की चरण-वन्दना करता हूँ जिन्होने मुझे सदैव कर्तव्य-पथ पर आगे बढने के लिए प्रोत्साहित किया। अनुजद्वय-सुमन्त, बसन्त तथा सभी बहनो का भी मैं आभारी हूँ, जिनके स्नेह ने मुझे इस शोध-कार्य हेतु सम्बल प्रदान किया।

घनिष्ठ मित्र अभिषेक चन्द्र श्रीवास्तव तथा जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली में शोध-रत संदीप कुमार मिश्र एव अन्य समस्त मित्रगणो के प्रति आभार प्रकट न करना मेरी कृतघ्नता होगी जिन्होंने इस शोध-कार्य हेतु सार्थक सुझाव एव सहयोग दिया।

जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली, पं0 गोविन्द बल्लभ पन्त सामाजिक विज्ञान संस्थान, झूँसी, इलाहाबाद, राजकीय पुस्तकालय, इलाहाबाद तथा बेनी प्रसाद मेमोरियल पुस्तकालय, राजनीति विज्ञान विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय एवं अन्य संस्थानों के समस्त अधिकारियो तथा कर्मचारियो के प्रति भी मै हृदय से आभारी हूँ जिन्होने इस शोध-कार्य हेतु सामग्री के संकलन मे पूर्ण सहयोग प्रदान किया है।

अन्त मे मै, परोपकार, त्याग, दया एव करूणा की प्रतिमूर्ति रहे अपने स्वर्गीय दादा एव दादी जी को कोटिश नमन करता हूँ जिनके आशीर्वाद एव पुण्य-प्रताप से ही यह शोध-कार्य पूर्ण हो सका।

दिनाक 16-12-2002

Anant Kumar Tiwari
अनन्त कुमार तिवारी
शोध-छात्र
राजनीति विज्ञान विभाग
इलाहाबाद विश्वविद्यालय
इलाहाबाद

अध्याय - 1

भारत-चीन सम्बन्ध : ऐतिहासिक परिदृश्य

चीन के साथ भारतवर्ष का सम्पर्क सम्भवत तृतीय शताब्दी ईसा पूर्व से प्रारम्भ हुआ। कौटिल्य के अर्थशास्त्र मे चीन के रेशमी वस्त्र का उल्लेख मिलता है। कुछ विद्वानो का अनुमान है कि चीन का नाम वहॉ के चिन् वश (221 ई0पू0- 320 ई0) के आधार पर पडा। तृतीय शताब्दी ई0पू0 मे उत्तर-पश्चिम चीन मे इस नाम का एक लघु राज्य था। कतिपय इतिहासकारो का कथन है कि सम्पूर्ण देश के लिए 'चीन' नाम इस छोटे राज्य के नाम के आधार पर उसी प्रकार पडा, जिस प्रकार सिधु (हिन्दू) नाम के आधार पर सम्पूर्ण हिन्दुस्तान का नाम पड गया था। महाभारत के द्रोण पर्व (द्वितीय शताब्दी ई0पू0) में चीन नाम का उल्लेख मिलता है।[1]

" यवना चीन-कम्बोजा दारुणा म्लेच्छजातय :।
सकृदग्रहा कुलत्थाश्च हूणा पारसिकै सह।।"

ईसा के बहुत पहले से ही भारत तथा चीन के बीच जल एव थल दोनो ही मार्गो से व्यापारिक सम्बन्ध थे। प्रथम शताब्दी ईस्वी के एक चीनी ग्रन्थ से पता चलता है कि चीन का हुआंग-चे (काञ्ची) के साथ समुद्री मार्ग से व्यापार होता था। एक से छ. ईस्वी के बीच चीनी सम्राट ने हुआग-चे के शासक के पास बहुमूल्य उपहार भेजे तथा उससे एक दूतमंडल चीन भेजने को कहा। इस विवरण से स्पष्ट होता है कि ईसा पूर्व की द्वितीय अथवा प्रथम शताब्दियों मे भारत तथा चीन के बीच समुद्री मार्ग द्वारा विधिवत सम्पर्क स्थापित हो चुका था।[2] भारत और चीन के प्रारम्भिक सम्पर्क पूर्णतया व्यापार-परक थे। चीनी सिल्क की भारत में

---

[1] उदय नारायण राय, विश्व सभ्यता का इतिहास, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 1992, पृ0 339

[2] कृष्ण चन्द्र श्रीवास्तव, प्राचीन भारत का इतिहास (भाग-2) यूनाइटेड बुक डिपो इलाहाबाद, 1991 पृष्ठ 693

बडी मॉग थी। कालिदास ने भी 'चीनी रेशमी वस्त्र' (चीनाशुक) का उल्लेख किया है[3]। परन्तु शीघ्र ही व्यापार का स्थान धर्म-प्रचार ने ग्रहण कर लिया तथा बौद्ध प्रचारको के प्रयत्नों के फलस्वरुप भारतीय सभ्यता चीन मे व्यापक रुप से फैल गयी।

चीन एवं भारतवर्ष के प्राचीन सम्पर्क को घनिष्ठ बनाने मे बौद्ध धर्म ने सबसे अधिक योग दिया था। चीन की एक प्राचीन परम्परा के अनुसार बौद्ध धर्म के कुछ प्रचारक 217 ई0पू0 मे चिन् वश की राजधानी में आये हुए थे। वहॉ की एक अन्य परम्परा के अनुसार 121ई0पू0 में एक चीनी सेनानायक गौतम बुद्ध की एक सुवर्ण-प्रतिमा अपने साथ स्वदेश ले आया था। यद्यपि इन विवरणों की ऐतिहसाहिकता सन्देहास्पद है तथापि इतना स्पष्टतः ज्ञात है कि दो ईसा पूर्व मे आक्सस घाटी के यू-ची (कुषाण) शासकों ने चीनी दरबार में कुछ बौद्ध ग्रथ भेट किए थे। चीन के राजकीय स्रोतों से ज्ञात होता है कि 65 ईस्वी में हन्वंश के शासक मिगती ने स्वप्न मे एक स्वर्णिम पुरुष के दर्शन किए। उसके दरबारियो ने इस पुरुष की पहचान बुद्ध से की । फलस्वरुप उसने पश्चिम में अपने राजदूत भेजे जो अपने साथ 'धर्मरत्न' तथा 'काश्यप मातग' नामक दो बौद्ध भिक्षु ले गये। ये भिक्षु अपने साथ बहुसख्यक पवित्र ग्रंथ तथा अवशेष एक श्वेत अश्व पर लादकर ले गये। चीनी सम्राट ने उनके रहने के लिए राजधानी में एक विहार का निर्माण करवाया जिसे 'श्वेताश्व विहार' (White Horse–Monastery) कहा गया। यह चीन का प्राचीनतम बौद्ध बिहार था। इस प्रकार ईसा की प्रथम शताब्दी तक बौद्ध धर्म चीन में निश्चित आधार प्राप्त कर चुका था। दोनो देशों का सम्पर्क, जो प्रारम्भ में वाणिज्य-विषयक प्रेरणा का प्रभाव था, कालान्तर में बौद्ध प्रचारको की कृतियों के प्रभाव से आच्छादित हो उठा।[4]

[3] कालिदास, अभिज्ञान शाकुन्तलम, 1/32

[4] रमेश चन्द्र मजूमदार , क्लैसिकल एज, 1962, पृ0 608

चीनी शासको तथा कुलीन वर्ग ने बौद्ध धर्म को अपनाया और उसके प्रचार-प्रसार में अभिरुचि दिखाई। प्रारम्भ में बौद्ध धर्म को कन्फ्यूसियस मतानुयायियो के विरोध का सामना करना पड़ा। किन्तु शीघ्र ही उसने उनको अपनी ओर आकृष्ट कर लिया। प्रसिद्ध चीनी दार्शनिक मोत्सू (द्वितीय शताब्दी ईस्वी) ने तो इसे कन्फ्यूसियस के धर्म से श्रेष्ठतर घोषित किया। पश्चिमी सिन्वश के शासक बौद्ध धर्म के सरक्षक थे। सम्राट वु (265-290 ई0) तथा मिन् (313-316ई0) के कालों मे अनेक मठो तथा विहारों का निर्माण हुआ तथा चीन मे इस समय लगभग 37000 भिक्षु हो गये थे। इस समय नानकिंग तथा चंगन बौद्ध धर्म के प्रमुख केन्द्र थे। लगभग सौ वर्षो बाद दक्षिणी चीन के राजा लियांग-वूती ने इसे राजधर्म बनाया तथा उसका प्रचार प्रारम्भ किया। वेई वंश के समय में बौद्ध धर्म का प्रचार-प्रसार बढ़ा तथा चीन में बौद्ध भिक्षुओ और विहारो की सख्या अधिक हो गयी। तत्पश्चात् सुई एवं तांग राजवश का शासन काल आया। इस समय भी बौद्ध धर्म को राजकीय संरक्षण प्रदान किया गया। इतिहासकार लातूरेत के अनुसार सुई वश के समय तक बौद्ध धर्म चीनियों के जीवन का अभिन्न अंग बन गया था। 'तांगकाल' को 'चीन का बौद्ध काल' भी कहा गया है।[5]

चीन में बौद्ध धर्म की लोकप्रियता का प्रधान कारण धर्म-प्रचारकों का उत्साह था। ये प्रचारक भिन्न-भिन्न स्थानों से वहाँ गये थे। मध्य एशिया के बौद्ध प्रचारकों में धर्मरक्ष तथा कुमारजीव के नाम प्रमुख हैं। भारत के प्रारम्भिक प्रचारकों में धर्मक्षेम, गुणभद्र, बुद्धभद्र, धर्मगुप्त, उपशून्य, परमार्थ आदि उल्लेखनीय हैं। तांग काल में प्रभाकरमित्र, दिवाकर, बोधिरुचि, अमोघवज्र, वज्रमित्र जैसे बौद्ध प्रचारक चीन पहुँचे। कश्मीर में बौद्धों का प्रसिद्ध मठ था जहाँ से सगभूति,

[5] यू0एन0राय, गुप्त सम्राट और उनका काल, लोक भारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 1971, पृ0 477

धर्मयशस, बुद्धयशस, विमलाक्ष, बुद्धजीव, धर्ममित्र आदि बौद्ध विद्वान चीन गये। इन सभी के प्रयासो के परिणामस्वरुप बौद्ध धर्म चीन का अत्यन्त लोकप्रिय धर्म बन गया।[6]

बौद्ध धर्म की सरलता एव व्यावहारिकता से प्रभावित होकर अनेक चीनी यात्रियों ने बौद्ध ग्रन्थों की प्रतियॉ लेने तथा पवित्र बौद्ध स्थानों के दर्शनार्थ भारत की यात्रा की। इनमे फाहियान, हुएनसाग तथा इत्सिंग के नाम सर्वाधिक प्रसिद्ध है। फाहियान चतुर्थ शती मे चद्रगुप्त द्वितीय के शासन काल मे आया तथा उसने अनेक स्थानों की यात्रा की। अपने यात्रा-विवरण मे उसने गुप्त-कालीन समाज एव संस्कृति का सुन्दर चित्र खींचा है। हुएनसांग हर्षवर्द्धन के काल मे भारत आया तथा उसने हर्षकालीन भारत की राजनैतिक एव सास्कृतिक दशा का वर्णन किया है। इत्सिग सातवीं शती (671 ईस्वी) मे भारत आया। अपने यात्रा विवरण में उसने नालन्दा विश्वविद्यालय का वर्णन किया है।[7]

भारत-चीन सम्बन्धों के फलस्वरुप चीनवासियों के जीवन पर भारतीय सस्कृति का प्रभाव पडना स्वाभाविक ही था। बौद्ध धर्म की अहिसा, दया, करुणा, विनय आदि विशेषताओं ने चीनवासियों के जीवन में विलक्षण परिवर्तन उत्पन्न कर दिया। बौद्ध-सम्पर्क से चीन में मूर्तिपूजा, मन्दिर-निर्माण, भिक्षु-जीवन, पुरोहितवाद आदि का प्रारम्भ हुआ। भारतीय ज्योतिष एवम् चिकित्सा से भी चीनवासी प्रभावित हुए। भारतीय गाधारकला का प्रभाव चीन की कला पर पड़ा। बुद्ध तथा बोधिसत्वों की मूर्तियॉ बनाई गई तथा स्तूपों और मन्दिरो का निर्माण हुआ। अजन्ता के गुहा-चित्रों के समान तुल-हुआंग में गुहा-चित्र प्राप्त होते है।

---

[6] प्रबोध चन्द्र बागची, इडिया ऐड चाइना, न्यूयार्क, 1951 पृ0 33-35 तथा रमेश चन्द्र मजूमदार; क्लेसिकल एज, बम्बई, 1962, पृ0 609

[7] कृष्ण चन्द्र श्रीवास्तव, प्राचीन भारत का इतिहास (भाग-2), यूनाइटेड बुक डिपो, इला0, 1991, पृ0 694

चीन के 'पगोडा' भारतीय स्तूपो की नकल प्रतीत होते है। इस प्रकार भारतीय सस्कृति के विविध तत्वो का चीनी सस्कृति पर प्रभाव स्पष्टत परिलक्षित होता है।[8]

भारत की ही तरह चीन का आधुनिक इतिहास भी यूरोपीय देशो द्वारा बलात् प्रवेश एव शोषण का इतिहास रहा है। एशिया में पश्चिमी साम्राज्यवाद के आगमन से दोनो देशों के बीच का मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध एकाएक टूट गया।[9]

ब्रिटिश काल में चीन के साथ भारत का जो सम्बन्ध कायम रहा उसका एकमात्र उद्देश्य चीन की जनता को साम्राज्यवादी शोषण का शिकार बनाना था। यद्यपि भारत की जनता इस साम्राज्यवादी नीति मे किसी तरह का सहयोग नहीं करना चाहती थी, लेकिन वह सरकार को रोक भी नहीं सकती थी। चीन के लोग भारतीयों की इस विवशता को समझते थे और सम्भवतः इसी कारण दोनो देशो की जनता के बीच किसी तरह का मन-मुटाव पैदा नहीं हुआ। इसके विपरीत औपनिवेशिक दासता के अनुभव ने उन्हे एक-दूसरे के सन्निकट लाकर खड़ा कर दिया।[10]

आधुनिक काल में भारत और चीन के बीच प्रत्यक्ष सम्बन्ध 1927 मे हुए पददलित राष्ट्रों के ब्रुसेल्स सम्मेलन में हुआ। इस सम्मेलन में भारतीय तथा चीनी प्रतिनिधियों की सयुक्त विज्ञप्ति निकाली गयी जिसमे कहा गया था कि पश्चिमी साम्राज्यवाद से एशिया की मुक्ति के लिए भारत और चीन का सहयोग परम आवश्यक है। इसी विज्ञप्ति मे चीन में ब्रिटिश शासको द्वारा भारतीय सेनाओं के प्रयोग की निन्दा भी की गयी। चीन के प्रति भारत मे अपार सहानुभूति थी।

---

[8] प्रबोध चन्द्र बागची, इडिया ऐंड - चाइना, न्यूयार्क, 1951, पृ0 164-73

[9] दीनानाथ वर्मा, अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध, ज्ञानदा प्रकाशन (पी ऐड डी), नई दिल्ली, 2000, पृ0 326

[10] वही, पृ0 326

भारतीय राष्ट्रीय काग्रेस ने कई प्रस्तावो को स्वीकार करके चीन के प्रति ब्रिटिश नीति की आलोचना की।[11]

1931 में जब जापान द्वारा मचूरिया पर आक्रमण किया गया तो चीन के प्रति सहानुभूति प्रदर्शित करने हेतु 'चीन दिवस' मनाया गया और भारत में जापानी वस्तुओं के बहिष्कार का आन्दोलन भी चलाया गया। फिर जब 1937 मे चीन-जापान युद्ध शुरु हुआ तो भारत ने पुन चीन के प्रति अपनी सहानुभूति व्यक्त की।[12]

1937 में ही मार्शल झू-डी के अनुरोध पर नेहरु ने चन्दा एकत्र करके भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की ओर से डा0 कोटनीस तथा डा0 अटल के नेतृत्व में एक चिकित्सा-मिशन चीन को भेजा। यह चिकित्सा-दल अपनी नि.स्वार्थ सेवा एव समर्पण के लिए चीनी लोगों के बीच काफी प्रसिद्ध रहा। जापान के विरुद्ध युद्ध के दौरान गये इस भारतीय चिकित्सा-दल के सम्बन्ध मे महत्वपूर्ण बात यह है कि यह ऐसे देश द्वारा भेजा गया था जो स्वयं विदेशी शासन से मुक्ति के लिए संघर्ष कर रहा था।[13]

1934 में 'भारत-चीनी समाज' को लिखे एक पत्र में गुरुदेव रवीन्द्र नाथ टैगोर ने कहा : " आज हमारा यह कर्तव्य है कि हम प्राचीन तीर्थयात्रियो द्वारा बनाई गई उस ऐतिहासिक भावना को पुनर्जीवित करें जो न केवल एक भौगोलिक रास्ता है बल्कि जाति, धर्म तथा भाषा-सम्बन्धी कठिन बाधाओं को पार कर बनाई

[11] स्वर्णसिह, फिफ्टी ईयर्स आफ साइनो - इडियन टाइज, वर्ल्ड फोकस, (अक्टूबर-दिसम्बर 1999), पृ0 44,

[12] वी एन खन्ना, लिपाक्षी अरोडा, भारत की विदेश नीति, विकास पब्लिशिग हाउस प्रा.लि., नई दिल्ली, 2000, पृ0 136

[13] के0आर0नारायणन, ह्वाई साइनो-इंडियन कोआपरेशन इज ए हिस्टोरिकल नेसेसिटी इन द न्यू सेन्चुरी, मेनस्ट्रीम, 24 जून 2000, पृ0 8

गयी आध्यात्मिक भावना है जिसमें मानव मात्र के लिए प्रेम तथा सहयोग का विचार सन्निहित है।"[14]

अगस्त 1939 मे जब नेहरु चीन गये तो उन्होने बडे जोरदार ढग से भारत-चीन सम्बन्धों को 'अनश्वर सम्बन्ध' बताया जो कि भारत तथा चीन के लोगो को घनिष्ठ रुप से बॉधे हुए है। नेहरु अपने भाषणों मे 'भारत तथा चीन के पूर्वी सघ' की भी चर्चा किया करते थे। इसी प्रकार मई 1941 में जब डा0 सर्वपल्ली राधाकृष्णन चीन-यात्रा पर गये तो उन्होने भारत-चीन सम्बन्धो को राजनीतिक धरातल पर दो पड़ोसी राज्यों की अद्भुत मिसाल के रुप मे व्याख्यायित किया। गुरुदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर ने 1937 में अपनी चीन-यात्रा से वापस आने के बाद 'शाति-निकेतन' में चीनी अध्ययन केन्द्र के रुप मे 'चीना-भवन' की स्थापना की।[15]

मार्च 1947 में, जब भारत स्वतंत्र भी नहीं हुआ था और नेहरु अतरिम प्रधानमत्री थे, नई दिल्ली में एशियाई सम्बन्ध सम्मेलन (Asian Relations Conference) बुलाया गया। उस समय चीन में च्यांग काई शेक की राष्ट्रवादी सरकार सत्ता में थी। सम्मेलन में च्यांग सरकार के प्रतिनिधि ने चीन के उस मानचित्र पर आपत्ति की थी जिसमें तिब्बत को उस देश के भाग के रुप में नहीं दिखाया गया था। चीन ने इस बात पर भी आपत्ति की थी कि सम्मेलन में तिब्बत के प्रतिनिधि मण्डल को क्यो मान्यता दी गई। परन्तु जब पाकिस्तान की ओर से कबायलियों ने कश्मीर पर आक्रमण किया तब चीन ने कोई आपत्ति नहीं की। धीरे-धीरे चीन में साम्यवादी विजय की ओर बढ रहे थे। सितम्बर 1949 तक चीन की समस्त मुख्य भूमि साम्यवादी लाल सेना के अधीन आ गई थी। च्यांग काई शेक की सरकार मुख्य भूमि से भागकर ताईवान (फार्मोसा) में चली

---

[14] वही, पृ0 8

[15] स्वर्ण सिह, फिफ्टी इयर्स आफ साइनो - इडियन टाईज; वर्ल्डफोकस, (अक्टूबर-दिसम्बर 1999), पृ0 - 45

गई। चीन मे साम्यवादी दल की सरकार सत्ता मे आई और 1 अक्टूबर 1949 को चीन के जनवादी लोकतत्र (People's Republic of China) की विधिवत् स्थापना की गई।[16]

1947 मे भारत की आजादी तथा 1949 में साम्यवादी दल द्वारा 'चीन की मुक्ति' से एशिया तथा विश्व में एक नये युग का आरम्भ हुआ। भारत की आजादी के साथ ही एशिया से यूरोपीय प्रभुत्व का भी अन्त हो गया।[17]

दोनो देशों की आजादी के बाद के दौर में दोनों देशों के नेताओं ने एक-दूसरे की आकाक्षाओं एवं नीतियों की ठोस एव वास्तविक समझ के बिना ही 'हिन्दी-चीनी भाई भाई' के युग को बढावा दिया। उनकी एकता का आधार दोनो देशों की साम्राज्यवाद-विरोधी विचारधारा थी। किन्तु जैसे ही दोनो विशाल देश अपने शासन की वास्तविकताओं से रूबरू हुए, उनकी यह एकता एवम् मैत्री सतही एवं क्षणिक सिद्ध हुई।[18]

कोमिन्ताग सरकार के समय चीन मे भारतीय राजदूत के पद पर सरदार के0एम0 पणिक्कर काम कर रहे थे। अत 1949 में उन्हीं को दुबारा भारतीय राजदूत बनाकर चीन भेजा गया। पणिक्कर के प्रयत्नों से भारत और चीन के बीच उत्तम मैत्री सम्बन्धों की शुरुआत हुई। पणिक्कर ने बताया कि चीनी क्रान्ति एशिया के नवजागरण का प्रतीक है और चीन की नवस्थापित सरकार वहॉ के लगभग सौ वर्ष पुराने विकास का अनिवार्य परिणाम है। क्रान्ति के पश्चात साम्यवादी चीन को मान्यता देने वाले आरम्भ के कुछ देशों मे भारत भी था। भारत ने 30 दिसम्बर 1949 को साम्यवादी चीन को मान्यता प्रदान कर दी। कुछ

---

[16] वी एन खन्ना, लिपाक्षी अरोडा, भारत की विदेश नीति, नई दिल्ली, 2000, पृ0 137

[17] ए0के0 दामोदरन, इडिया ऐड चाइना इन द वर्ल्ड, मेनस्ट्रीम (एनुअल) 28 अक्टूबर 1989, पृ0 91,

[18] स्वर्ण सिंह, फिफ्टी ईयर्स आफ साइनो - इडियन टाईज, वर्ल्डफोकस, (अक्टूबर-दिसम्बर 1999), पृ0 - 44

ही समय पश्चात चीनी क्रान्ति की सफलता तथा भारत की मान्यता पर लोकसभा मे टिप्पणी करते हुए प्रधानमत्री नेहरु ने कहा था कि, "यह करोड़ो व्यक्तियो के जीवन मे आमूल क्रान्ति थी ... . इसके परिणामस्वरुप एक स्थायी और लोकप्रिय सरकार की स्थापना हुई। इसका हमारी पसद या नापसद से कोई सम्बन्ध ही नही है। इसलिए, स्वाभाविक था कि हमने इस नई सरकार को मान्यता प्रदान की"।[19]

भारत ने संयुक्त राष्ट्र में जनवादी चीन के प्रतिनिधित्व का पूरा समर्थन किया। भारत द्वारा चीन का समर्थन करने के फलस्वरुप सयुक्त राज्य अमेरिका तथा अन्य अनेक गैर साम्यवादी देश अप्रसन्न हुए। परन्तु भारत की नीति सिद्धान्तो पर आधारित थी। जब 1950 में भारत ने संयुक्त राष्ट्र की सुरक्षा परिषद के उस प्रस्ताव का समर्थन किया जिसमे उत्तरी कोरिया को दक्षिणी कोरिया पर आक्रमण करने का दोषी कहा गया था तब अमेरिका ने भारत की प्रशंसा की, परन्तु इससे साम्यवादी जगत को निराशा हुई। कुछ ही समय पश्चात जब अमेरिकी नेतृत्व में संयुक्त राष्ट्र की सेनाएँ उत्तरी कोरिया मे प्रवेश कर गई, तथा चीन की ओर बढने लगीं तब भारत ने स्पष्ट शब्दो में अमेरिका की भी आलोचना की ।[20]

प्रधानमत्री नेहरु ने एक पत्र में भारतीय राजदूत पणिक्कर को कहा था कि जब-जब चीन में शक्तिशाली सरकार की स्थापना हुई है, तब-तब उसने अपनी सीमाओ के विस्तार के प्रयास किए हैं। यही प्रकृति नए गतिशील चीन मे भी देखने को मिल रही है। नेहरु ने यह भी कहा था कि चीन में जो क्रान्ति 1949 मे हुई वह कोई राजमहल की क्रान्ति नहीं थी, वह तो जनसाधारण के द्वारा समर्थित क्रान्ति थी। इसी कारण, जैसा कि प्रोफेसर वी0पी0 दत्त ने लिखा, नेहरु

---

[19] भीमसन्धु, अनरिजाल्वूड कनफ्लिकृट· चाइना ऐड इण्डिया, नई दिल्ली, 1998, पृष्ठ 82
[20] जे एन दीक्षित, एक्रास बार्डर्स फिफ्टी ईयर्स आफ इडियाज फारेन पालिसी, नई दिल्ली, 1998, पृ0 36

ने चीन की नई सरकार से मित्रता का आह्वान किया, उसको विश्व समुदाय की मुख्य धारा मे लाने की नीति अपनाई और सम्पर्क बढाने तथा शत्रुता और शका को कम करने की चेष्टा की। नेहरु ने भारत की नीति को नई दिशा देकर यह अपेक्षा की कि चीन के साथ कोई सघर्ष न हों।[21]

तिब्बत का प्रश्न और भारत-चीन सम्बन्ध

तिब्बत भारत के उत्तर मे स्थित है। भारत के अतिरिक्त उसकी दक्षिणी सीमा पर नेपाल और बर्मा, तथा उत्तरी सीमा पर चीन का सिक्याग प्रान्त स्थित है। तिब्बत का कुल क्षेत्रफल लगभग 47,000 वर्गमील है। इसकी राजनैतिक व्यवस्था बौद्ध परम्परा पर आधारित थी। तिब्बत के धार्मिक नेता दलाई लामा वहॉ के राज्याध्यक्ष भी हुआ करते थे। चीन के साथ तिब्बत के सम्बन्धों की कोई स्पष्ट व्याख्या नही की गयी थी। पिछले 1000 वर्ष के इतिहास में तिब्बत अधिकतर एक स्वतंत्र देश रहा है। बीच-बीच मे चीन में जब निरंकुश शासक हुए तो उन्होने तिब्बत पर एक ढीला-ढाला नियंत्रण रखा और तिब्बत से सालाना 'सलामी' (कर) वसूलते रहे। परन्तु अनेक बार ऐसे मौके आये जब तिब्बत के शासको ने चीन पर राज्य किया और चीन को तिब्बत को 'सलामी' देनी पडी।[22]

18 वीं शताब्दी में छठें दलाई लामा के उत्तराधिकारी के प्रश्न पर तिब्बत और मंगोलिया मे तीव्र मतभेद उत्पन्न हो गए। चीन ने तिब्बत की राजधानी ल्हासा पर अपना नियत्रण स्थापित करके स्वेच्छा से सातवें दलाई लामा का चयन किया। सन् 1890 मे भारत की ब्रिटिश सरकार ने चीन के साथ एक सधि पर हस्ताक्षर किये जिससे भारत-तिब्बत सीमा निर्धारित की गई। इस संधि को तिब्बत के शासको ने अस्वीकार कर दिया। इसी दौरान रुस ने तिब्बत के आतरिक मामलों में हस्तक्षेप करना आरम्भ कर दिया ताकि वह उसे अपने प्रभाव में ला

---

[21] वी.एन.खन्ना,, लिपाक्षी अरोडा; भारत की विदेश नीति, नई दिल्ली 2000, पृ0 138
[22] डा0 गौरी शकर राजहंस, 'हम तिब्बत की अनदेखी नहीं कर सकते', हिन्दुस्तान (लखनऊ) 22 नवम्बर 1998

सके। भारत के गवर्नर जनरल लार्ड कर्जन ने 1904 मे रूसी प्रभाव को कम करने और तिब्बत को ब्रिटिश प्रभाव मे लाने के उद्‌देश्य से यंग हस्बैण्ड (Young Husband) नामक सैनिक अधिकारी की कमान मे ब्रिटिश-भारतीय सेना को तिब्बत भेजा।[23]

ब्रिटिश सरकार ने 1906 मे चीन के साथ हस्ताक्षरित एक अन्य सधि के द्वारा तिब्बत को चीन की प्रभुता (Suzerainty) के अधीन स्वीकार कर लिया। इस सधि को ब्रिटिश सरकार के द्वारा चीन पर आरोपित (Dictated) सधि की संज्ञा दी गई। इसके अनुसार यह व्यवस्था की गई कि ल्हासा में एक ब्रिटिश प्रतिनिधि नियुक्त किया जाएगा तथा ग्यागट्सी तक भारत, तिब्बत के लिये डाक-व्यवस्था स्थापित करेगा। साथ ही व्यापार मार्गों की सुरक्षा के लिए भारत को तिब्बत मे अपने सैनिक तैनात करने का अधिकार भी मिला। लेकिन इस सधि में एक महत्वपूर्ण बात यह थी कि इसमे कहीं भी तिब्बत और चीन के सम्बन्धो का स्पष्टीकरण नहीं किया गया था। वास्तविकता यह थी कि आतरिक मामले में तिब्बत हमेशा से पूर्ण स्वाधीन रहा है। यद्यपि चीन की प्रभुता उस पर रही है। फिर भी, चीन को जब-जब मौका मिला है, उसने तिब्बत की स्वायत्ता नष्ट करके उसे अपना अभिन्न अंग करने का प्रयास किया है।[24]

डा0 सनयात-सेन के नेतृत्व मे 1911 की क्रान्ति के पश्चात तिब्बत के अधिकारियो ने चीनी सैनिकों को अपने प्रदेश से वापस जाने के लिए बाध्य कर दिया। उसके पश्चात चीन द्वारा तिब्बत पर पुन अधिकार करने के सभी प्रयास विफल हो गये। ब्रिटेन, चीन और तिब्बत के प्रतिनिधियों की बैठक 1914 मे शिमला में हुई। इस बैठक में तिब्बत पर चीन के प्रभुत्व को स्वीकार किया गया, परन्तु तिब्बत को दो भागो में विभाजित कर दिया गया - वाह्‌य तिब्बत तथा

[23] वी एन खन्ना, लिपाक्षी अरोडा, भारत की विदेश नीति, नई दिल्ली 2000, पृ0 139
[24] दीनानाथ वर्मा, अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध, ज्ञानदा प्रकाशन (पी0ऐंड डी) नई दिल्ली, 2000, पृ0 327

आतरिक तिब्बत जिसकी सीमा चीन से लगती थी। वाहूय तिब्बत की स्वतत्रता स्वीकार कर ली गई और चीन ने उसके मामलों मे हस्तक्षेप न करने का वचन दिया। उसने यह भी वचन दिया कि चीन की ससद मे उसका कोई प्रतिनिधित्व नहीं होगा और न चीन के कोई सैनिक बाहय तिब्बत मे तैनात किए जाएँगे, न वहाँ के प्रशासकीय अधिकारियो को चीन नियुक्त करेगा और न तिब्बत को चीन का उपनिवेश बनाया जायगा। राष्ट्रवादी चीन ने 1933-39 की अवधि मे तिब्बत के विदेशी और गृहनीति दोनो को नियत्रित करने के कई प्रयास किए किन्तु एक लम्बे समय तक तिब्बत की स्थिति अस्पष्ट बनी रही ।[25]

चीन की नवगठित साम्यवादी सरकार ने 1 जनवरी 1950 को ''तिब्बत को साम्राज्यवादी षडयंत्रों से मुक्ति दिलाने'' की घोषणाा की। जब भारत के राजदूत चीन के प्रधानमंत्री चाऊ-एन-लाई से स्पष्टीकरण लेने के लिए मिले तब प्रधानमंत्री ने कहा कि तिब्बत को स्वतत्र करवाना चीन का 'पवित्र कर्तव्य' था, परन्तु यह वचन भी दिया कि चीन अपना उद्देश्य शातिपूर्ण बातचीत से प्राप्त करेगा, सैनिक कार्यवाही से नहीं।[26]

भारत ने इस सन्दर्भ में चीन को सुझाव दिया कि वह तिब्बत के धार्मिक एवं आध्यात्मिक नेता दलाईलामा से बातचीत करे। चीन ने भारत के इस सुझाव की भर्त्सना की एवं इसे चीन के आतरिक मामलों में हस्तक्षेप तथा भारत को 'आंग्ल-अमेरिकी साम्राज्यवाद'[27] का दलाल कहा। भारत को अक्टूबर 1950 मे यह सूचना मिली कि चीन ने पूरी तैयारी के साथ तिब्बत में आक्रमण जैसी

---

[25] वी एन खन्ना,, लिपाक्षी अरोडा, भारत की विदेश नीति, नई दिल्ली 2000, पृ0 140

[26] दीनानाथ वर्मा, अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध, ज्ञानदा प्रकाशन (पी ऐड डी) नई दिल्ली, 2000, पृ0 327

[27] वी सी.भूटानी, ''साइनो इडियन रिलेशन्स आर बैड · दे कैन नाट गेट बेटर'' मेनस्ट्रीम 5अगस्त 2000, पृ0 19

कार्यवाही आरम्भ कर दी है। इससे भारत को गहरा धक्का लगा। 26 अक्टूबर 1950 को भारत ने इसके विरोध मे एक पत्र लिखा, -

" विश्व की वर्तमान घटनाओ के परिप्रेक्ष्य में चीनी सेनाओ द्वारा तिब्बत पर किए गए आक्रमण को भारत सोचनीय समझता है और भारत सरकार की पक्की सम्मति में यह आक्रमण न तो चीन के हित मे और न ही शाति के हित में है"।

23 मई 1951 को चीन और तिब्बत के मध्य 17 सूत्रीय एकपक्षीय समझौते पर हस्ताक्षर हुए। यह समझौता चीन की नीति के अनुसार हुआ, जिसके द्वारा तिब्बत पर चीन की सम्पूर्ण संप्रभुता (Sovereignty) को स्वीकार करके उसे केवल सीमित स्वायत्तता देने का प्रावधान किया गया। इस समझौते में यह प्रावधान किया गया कि चीन, तिब्बत के विदेश सम्बन्धों का संचालन करेगा, तिब्बत की पूर्ण सुरक्षा के लिए चीन की सेनाएँ तिब्बत मे तैनात की जाएँगी और तिब्बत की सेनाओं का पुनर्गठन किया जायेगा ताकि आगे चलकर चीन की सेना में उसका विलय हो जाए। यह भी वचन दिया गया कि ल्हासा वापस आने पर दलाई लामा को पूर्ण सम्मान दिया जायगा, तिब्बत मे पूरी धार्मिक स्वतंत्रता सुनिश्चित की जायेगी, तिब्बत के विकास मे चीन पूर्ण सहयोग देगा और यह भी कि चीन का एक प्रशासकीय तथा सैनिक मिशन तिब्बत में नियुक्त किया जाएगा। इस प्रकार इस समझौते के तहत तिब्बत पूरी तरह 'चीन का एक क्षेत्र' हो गया।[28]

यद्यपि चीन की तिब्बत नीति से भारत प्रसन्न नही था तथापि वह चीन के साथ अपनी मैत्री को प्रभावित नहीं होने देना चाहता था। भारत सरकार की इस बात के लिए देश और विदेशो में काफी आलोचना की गई कि उसने तिब्बत मे अपने वैधानिक अधिकारों को त्यागकर चीनी शासकों को प्रसन्न करने के लिए

---

[28] वी.एन खन्ना,, लिपाक्षी अरोडा, भारत की विदेश नीति, नई दिल्ली 2000, पृ0 141

तिब्बत की स्वायत्तता का बलिदान कर दिया। समय के साथ दोनों देशो ने एक-दूसरे को समझना शुरु किया। 26 जनवरी 1951 को बीजिग मे भारतीय दूतावास मे भारतीय गणतत्र समारोह के अवसर पर माओ ने भारत एव चीन की मित्रता को नया आयाम प्रदान किया। 1951 मे जापान के साथ शान्ति सन्धि करने के लिए अमेरिका द्वारा सेनफ्रासिस्को मे एक काफ्रेंस बुलाई गई थी, जिसमें चीन को नहीं बुलाए जाने के कारण भारत ने भी इसे अस्वीकार कर दिया।[29] अब चीन को पूरी तरह विश्वास हो गया था कि भारत अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धो मे पूरी तरह स्वतत्र एव तटस्थ है।

1950 के दशक के मध्य में शीतयुद्व के कारण जब चीन तथा अमेरिका का वैचारिक विरोध चरमसीमा पर था, अमेरिका ने भारत के लिए सुरक्षा परिषद में स्थायी सीट का प्रस्ताव किया था। अमेरिका नहीं चाहता था कि सुरक्षा परिषद मे साम्यवादी वर्चस्व कायम हो। अमेरिका की सोच थी कि ऐसा करके वह भारत को अपने पक्ष मे ला सकेगा तथा भारत एव चीन के बीच गतिरोध भी बना रहेगा किन्तु नेहरु ने चीन की मैत्री तथा एशियाई एकता की कीमत पर अमेरिका का यह प्रस्ताव अस्वीकार कर दिया जिसके कारण हमनें सुरक्षा परिषद के स्थायी सदस्य होने का महत्वपूर्ण अवसर तो गॅवाया ही, बाद के वर्षो में हमें चीन का आक्रमण भी सहन करना पड़ा"।[30]

पंचशील समझौता :

कोरिया युद्ध के पश्चात भारत और चीन के मध्य एक व्यापक व्यापार समझौते के लिए बातचीत आरम्भ हुई। इस वार्ता के फलस्वरुप भारत तथा चीन

---

[29] जे एन दीक्षित, "एक्रास बार्डर्स फिफ्टी ईयर्स ऑफ इण्डियाज फारेन पालिसी", नई दिल्ली 1998, पृ0 45

[30] वही, पृ0 44

के तिब्बत क्षेत्र के मध्य वाणिज्य तथा अन्य सम्बन्धो के विषय मे भारत-चीन सधि पर 29 अप्रैल 1954 को हस्ताक्षर किए गए।[31] यह समझौता आठ वर्षो के लिए किया गया। इसके अन्तर्गत भारत ने तिब्बत मे अपने विशेष 'बहिर्देशीय अधिकार' त्याग दिए और तिब्बत पर चीन की सप्रभुता स्वीकार कर ली। तिब्बत को चीन का एक प्रदेश मानते हुए तिब्बत के यातूग एव ग्यागट्सी क्षेत्रो मे अपनी सेनाएँ तैनात करने का अधिकार छोड दिया तथा सीमा पर व्यापार एव तीर्थ यात्राओ के विषय मे नियम निर्धारित करना स्वीकार कर लिया।

इसी समझौते में पचशील के पॉच सिद्धान्तो का भी उल्लेख किया गया। वाणिज्य समझौतों पर हस्ताक्षर होने के पश्चात जून 1954 मे चीन के प्रधानमत्री चाऊ-एन-लाई भारत की यात्रा पर आये और फिर अक्टूबर 1954 मे नेहरु चीन की यात्रा पर गये। दोनो प्रधानमत्रियों का एक दूसरे के देश मे हार्दिक अभिनन्दन किया गया। प्रधानमंत्री चाऊ-एन-लाई की भारत-यात्रा (जून 1954) के अंत में जारी एक सयुक्त विज्ञप्ति मे इस बात पर बल दिया गया कि दोनो देशों के पारस्परिक सम्बन्ध भविष्य में पंचशील के पॉच आदर्शो पर आधारित होगे। इसी विज्ञप्ति में पचशील को औपचारिक मान्यता दी गई। पचशील के सिद्धान्त थे[32] –

(1) एक दूसरे की प्रादेशिक अखण्डता और संप्रभुता के लिए पारस्परिक सम्मान की भावना पर आचरण करना,

(2) अनाक्रमण, अर्थात एक दूसरे पर आक्रमण न करना;

(3) एक दूसरे के आतरिक मामलों मे हस्तक्षेप न करना,

(4) परस्पर समानता और मित्रता की भावना, और

(5) शान्तिपूर्ण सहअस्तित्व

---

[31] राय सी मैक्रीडीस, फारेन पालिसी इन वर्ल्ड अफेयर्स, नई दिल्ली, 1979, पृ0 334

[32] वी एन खन्ना,, लिपाक्षी अरोडा, भारत की विदेश नीति, नई दिल्ली 2000, पृ0 142

पचशील पर हस्ताक्षर होने के पश्चात के चार वर्षो को भारत चीन की प्रगाढ मैत्री तथा हिन्दी-चीनी भाई-भाई का काल कहा जाता है। प्रधानमत्री चाऊ ने 1954-1957 की अवधि मे चार बार भारत की यात्रा की। भारत-चीन मैत्री अफ्रीकी-एशियाई देशों के बाण्डुग सम्मेलन (अप्रैल 1955) के समय अपनी चरम सीमा पर थी। पंचशील के सिद्धान्तो को 1955 में हुए बाण्डुग सम्मेलन में कुछ परिवर्तनों के साथ स्वीकार किया गया। उस समय नेहरु और चाऊ ने निकटतम सहयोग का प्रदर्शन किया था।[33]

फारमोसा तथा तट से दूर स्थित क्वेमोए और मात्सू द्वीपो पर चीन के दावे को भारत ने तथा गोवा में पुर्तगाली बस्तियो पर भारत के दावे को चीन ने पूर्ण नैतिक तथा राजनयिक समर्थन प्रदान किया।

पचशील और बाण्डुंग सम्मेलन को भारतीय कूटनीति की महान सफलताएँ माना गया था परन्तु वस्तुतः वे भारतीय कूटनीति की पराजय सिद्ध हुए। ऐसा प्रतीत होता है कि भारत की चीन सम्बन्धी नीति जिन धारणाओं पर आधारित थी, वे धारणाएँ ही भ्रॉतिपूर्ण सिद्ध हुई। साम्राज्यवाद के विरुद्ध उसके सघर्ष के प्रति सहानुभूति के प्रवाह में बह कर यह भुला दिया था कि चीनी लोग प्राचीन काल से ही चीन को विश्व सभ्यता का केन्द्र मानते आये है और एक प्रसारवादी नीति मे विश्वास करते रहे हैं। भारत पर उनके भूतकाल में आक्रमण न करने का कारण उनकी शान्तिप्रियता नहीं वरन् हिमालय की दुर्गम पर्वतमालायें थीं। परन्तु 20वीं शताब्दी में एक ओर तो विज्ञान की प्रगति ने उनकी अगमता को काफी कम कर दिया और दूसरी ओर तिब्बत को चीन को सौंप देने की गलती कर भारत ने अपने ऊपर चीन के हमले को सरल बना दिया। इसके अतिरिक्त, भारतीय विदेश नीति-निर्माता यह भूल गये कि द्वितीय विश्व-युद्ध के पश्चात

---

[33] स्वर्ण सिह, फिफ्टी ईयर्स आफ साइनो - इडियन टाईज, वर्ल्डफोकस, (अक्टूबर-दिसम्बर 1999), पृ0 - 45

एशिया और अफ्रीका के जागरण से उत्पन्न हुई परिस्थितियों में भारत और चीन के मध्य एशिया और अफ्रीका विशेषत दक्षिणी-पूर्वी एशिया के नेतृत्व के लिये सघर्ष होना अनिवार्य ही था।[34]

भारत-चीन सम्बन्धो में तनाव का प्रथम सकेत 1958 मे तब मिला जब चीन के एक प्रकाशन (चाइना पिक्टोरियल) में प्रकाशित चीन के मानचित्रो में भारत के कुछ प्रदेशो को चीन के भाग के रुप मे दिखाया गया।[35] इन मानचित्रों मे उत्तर-पूर्व के लगभग 36,000 वर्गमील भारतीय प्रदेश को तथा उत्तर-पश्चिम के लगभग 12,000 वर्ग मील प्रदेश को चीन के भाग के रुप मे दिखाया गया। भारत मे जब इन मानचित्रों पर आपत्ति की और चीनी सरकार का ध्यान इस ओर दिलाया तब चीन ने यह कह कर टाल दिया कि वे मानचित्र तो पुरानी राष्ट्रवादी सरकार के थे और चीन को नया पर्यवेक्षण करने का अवसर ही नहीं मिला। जब तक चीन सरकार सर्वेक्षण नहीं करवा लेती तब तक वह चीन की सीमाओ में फेर-बदल का कोई प्रयत्न नहीं करेगी। यह आाश्वासन निरर्थक सिद्ध हुआ और भारत-चीन सीमा विवाद का आरम्भ हो गया।[36]

भारत और चीन की 1954-58 की अवधि की मैत्री तथा उभरते सीमा विवाद पर टिप्पणी करते हुए पूर्व विदेश सचिव जे0एस0 मेहता ने लिखा कि ''1954-58 का काल दोनों देशों के मध्य अटूट मित्रता का तथा दोनो ओर से आश्वासन देने का समय था। चाहे दोनों देशों मे वैचारिक मतभेद थे तथा सीमा सम्बन्धी मतभेद भी थे, फिर भी उनके सम्बन्ध सकारात्मक तथा सौहार्दपूर्ण थे ... . अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति के प्रति दोनो के दृष्टिकोण में समानता थी...

---

[34] डा बी.एल फडिया, अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति, साहित्य भवन पब्लिकेशन्स, आगरा, 1998, पृ0 383

[35] ए अप्पादोराय व एम एस राजन, इडियाज फारेन पालिसी एड रिलेशस, नई दिल्ली, 1985, पृ0 119

[36] वी एन खन्ना, लिपाक्षी अरोडा, भारत की विदेश नीति, नई दिल्ली 2000, पृ0 143

. . .यद्यपि उस समय भी सीमा के सम्बन्ध मे तिब्बत सम्बन्धी समझौते को लागू करने के विषय पर कुछ कठिनाइयॉ अवश्य थी तथापि अच्छे सम्बन्धो की इच्छा के कारण इन कठिनाइयों को कम किया गया, उभरने नहीं दिया गया।

पचशील समझौते पर हस्ताक्षर होने के पॉच वर्ष के अन्दर ही चीन के हस्तक्षेप के विरुद्ध तिब्बत में विद्रोह का बिगुल बज उठा। चीन की वामपथी सरकार के समर्थको का कहना था कि विद्रोह का कारण यह था कि चीन ने तिब्बत की सामन्तवादी परम्परा मे परिवर्तन करने के लिए जो भूमि-सुधार आरम्भ किए उनके साथ तिब्बत-वासियों ने सहयोग नहीं किया। परन्तु तिब्बत के लोगो के अनुसार विद्रोह का वास्तविक कारण था तिब्बत की स्वायत्ता का नाश करने के लिए चीनी सेनाओ का तिब्बत में प्रवेश और उनकी गतिविधियॉ। तिब्बत के निवासियों को चीन का नियन्त्रण किसी भी रुप में स्वीकार्य नहीं था।[37]

चीन मे 1956 के खम्पा क्षेत्र में बडे पैमाने पर विद्रोह आरम्भ हो गया था। इस विद्रोह को दलाईलामा का समर्थन प्राप्त था। खम्पा-विद्रोह के समय भारत मे कोई विशेष प्रतिक्रया नहीं हुई थी परन्तु जब 1959 में तिब्बत मे विद्रोह आरम्भ हुआ तब चीन ने भारत पर उसे उकसाने का आरोप लगाया। चीन ने तिब्बत मे हुए इस विद्रोह का इतना भीषण दमन किया कि दलाई लामा को अपनी सत्ता छोडकर गोपनीय मार्ग से भारत के लिए पलायन करना पड़ा। उनके साथ हजारो तिब्बतवासी भी भारत आ गये। इन सबको भारत ने शरण देकर मसूरी के पास बसा दिया। भारत ने इस शर्त पर उन्हे शरण प्रदान की कि वे भारत की भूमि से चीन के विरुद्ध कोई आन्दोलन नहीं चलाएँगे। भारत यह स्वीकार कर चुका था कि तिब्बत चीन का एक प्रदेश होने के नाते उसका अभिन्न अंग है। भारतीय जनता ने तिब्बत की धटनाओं पर नेहरु के नरम दृष्टिकोण की आलोचना की और यह अपेक्षा की कि भारत सरकार तिब्बत और दलाईलामा के

---

[37] वही, पृ0 143

सम्मान के लिए कार्य करेगी। परन्तु सरकार ने चीन के विरुद्ध कोई आवाज नहीं उठाई।[38]

भारत द्वारा दलाईलामा को शरण दिए जाने को चीन ने 'शत्रुतापूर्ण कार्य' बताया तथा आरोप लगाया कि भारत 'विस्तारवादी' नीति पर चल रहा है। उसने भारत के चीन जाने वाले पर्यटकों और व्यापारियों के लिए रुकावटे उत्पन्न कर दी। वास्तविकता यह थी कि तिब्बत मे असंतोष का कारण स्वय चीन की दोषपूर्ण तिब्बत नीति थी। चीन द्वारा नेहरु और भारत पर दोषारोपण करना एक दुर्भाग्यपूर्ण गलती मानी गयी। दूसरी ओर देश की जनता ने भी नेहरु पर यह दोष लगाया कि वे चीन की ओर तुष्टिकरण की नीति अपना रहे हैं।[39]

प्रोफेसर वी0पी0 दत्त ने इस स्थिति की समीक्षा करते हुए लिखा है कि, चीन द्वारा तिब्बत के विरुद्ध सैनिक कार्यवाही और भारत में इसके विरुद्ध हुई प्रतिक्रिया से भारत-चीन परिदृश्य अंधकारमय होने लगा, परन्तु नेहरु के पास कुछ करने को बचा ही नहीं था। भारत के पास इतना सैन्यबल था ही नहीं कि वह हस्तक्षेप करके तिब्बत को अपनी स्वतत्रता बनाए रखने में सहायता कर पाता। साम्यवादी चीन के प्रति नेहरु और उनके सहयोगियों का दृष्टिकोण स्पष्ट रुप से तुष्टिकारी था।

भारत-चीन सीमा विवाद :

भारत और चीन के बीच लगभग दो हजार मील लम्बी सीमा है। इस सीमा रेखा को समझौतो तथा प्रशासकीय व्यवस्थाओं से नियमित किया गया है। इसके अतिरिक्त भारत-चीन प्राकृतिक सीमा रेखा भी इतनी स्पष्ट है कि दोनों

---

[38] डा बी एल फडिया; अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति, साहित्य भवन पब्लिकेशन्स, आगरा, 1998, पृ0 384

[39] वी एन खन्ना,, लिपाक्षी अरोडा, भारत की विदेश नीति, नई दिल्ली 2000, पृ0 145

देशो की वास्तविक सीमाओ के विषय में किसी को कोई शका हो ही नहीं सकती है। समस्त भारत-चीन सीमा को सामान्य रुप से तीन भागो में बॉटा जा सकता है वे है भूटान के पूर्व की सीमा, उत्तर प्रदेश, हिमाचल तथा पंजाब से लगती मध्य सीमा और चीन के तिब्बत एव सिक्यांग प्रदेशो से जम्मू-कश्मीर को पृथक करने वाली पश्चिमी सीमा। भारत-चीन सीमा-विवाद मुख्य रूप से उत्तर-पूर्व मे मैक्महोन रेखा तथा उत्तर-पश्चिम मे लद्दाख से सम्बन्धित है।[40]

मैक्महोन रेखा (MC Mahon Lıne) उत्तर-पूर्व में भारत-चीन सीमा का विभाजन करती है। यह भूटान के पूर्व में दोनों देशों की सीमा रेखा है। भारत ने सदैव ही इस रेखा को वैध रूप से निर्धारित सीमा रेखा माना है, परन्तु चीन ने सदा ही उसकी साम्राज्यवादी रेखा कहकर निन्दा की है।[41]

सन् 1914 मे हुए शिमला सम्मेलन में, जिसमें ब्रिटिश- भारत, चीन और तिब्बत के प्रतिनिधियों ने भाग लिया था, सीमा रेखा निर्धारित करके औपचारिक रुप से सीमा-विभाजन किया गया था। इस सम्मेलन में ब्रिटिश-भारत का प्रतिनिधित्व आर्थर हेनरी मैक्महोन ने किया था जो कि भारत-मत्री भी थे। इस सम्मेलन में तिब्बत को आतरिक और वाह्य दो भागों में विभाजित किया गया था। वाह्य तिब्बत और भारत का सीमा विभाजन ऊॅची पर्वतमाला के मध्य किया गया। यह सीमा रेखा भारत-मंत्री मैक्महोन के सुझाव पर निश्चित की गई, और स्वय मैक्महोन ने मानचित्र पर लाल पेन्सिल से एक रेखा खींचकर सीमा-विभाजन किया। जिस मानचित्र पर यह रेखा बनाई गई थी, उस पर चीन, तिब्बत और ब्रिटिश भारत के प्रतिनिधियों ने हस्ताक्षर किए थे परन्तु चीन सरकार ने इसका

---

[40] ए, अप्पादोराय व एम0एस0 राजन, इडियाज फारेन पालिसी ऐड रिलेशस, नई दिल्ली, 1985, पृ - 132

[41] दीनानाथ वर्मा, अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध, ज्ञानदा प्रकाशन (पी.ऐड डी.) नई दिल्ली, 2000, पृ0 328

अनुमोदन नहीं किया। फिर भी, चीन की किसी सरकार ने इस रेखा पर कभी आपत्ति भी नहीं की। भारत ने सदैव इसे मान्यता दी।[42]

लद्दाख सदा से जम्मू-कश्मीर का अग रहा है और आज भी है। जम्मू-कश्मीर राज्य, भारत की स्वतत्रता से पूर्व, ब्रिटिश सम्राट की सर्वोच्च सत्ता के अधीन था। स्वतत्रता के बाद भारत मे उसका विलय हो गया। यद्यपि इस क्षेत्र मे, लद्दाख-चीन सीमा किसी संधि के द्वारा निर्धारित नहीं हुई थी, फिर भी शताब्दियों से भारत और चीन दोनो इस क्षेत्र की सीमा रेखा को मानते रहे थे। समय-समय पर आने वाले पर्यटकों ने भी अपनी रचनाओं में इस सीमा का उल्लेख किया है। भारत सदा इसे अपने मानचित्र में प्रदर्शित करता रहा है। भारत द्वारा 1899 मे चीन को भेजे एक पत्र में यह स्पष्ट कर दिया गया था कि अक्साई-चिन भारतीय प्रदेश का भाग था। जम्मू-कश्मीर राज्य के राजस्व अभिलेखों मे भी अक्साई-चिन को कश्मीर के लद्दाख प्रात का भाग स्वीकार किया गया था।[43]

1950-51 मे ही साम्यवादी चीन के नक्शे में भारत के एक बहुत बडे भू-भाग को चीन का अग दिखलाया गया था। जब भारत सरकार ने चीन का ध्यान इस ओर आकर्षित किया तो उसे यह जवाब मिला कि यह कोमिन्तांग सरकार के पुराने मानचित्र है और समय मिलते ही इनमें संशोधन कर दिया जायेगा। जुलाई 1954 में, चीन ने भारत को एक विरोध पत्र (प्रोटेस्ट-नोट) भेजा, जिसमें यह आरोप लगाया गया था कि भारतीय जवानों ने बू-जे (बाराहोती) पर अवैध रुप से कब्जा कर लिया है। भारत ने इस विरोध-पत्र को अस्वीकार करते हुये लिखा कि "यह स्थान भारतीय राज्य उत्तर प्रदेश में स्थित है और यहॉ भारतीय सीमा-सुरक्षा सेना की चौकी है। " अक्टूबर 1954 मे चीन यात्रा पर

---

42 डा0 वी एन खन्ना, लिपाछी अरोडा, भारत की विदेश नीति, नई दिल्ली 2000, पृ0 147

43 डा एन के श्रीवास्तव भारत की विदेश नीति, पृ0 134

गये नेहरु ने बाराहोती के प्रश्न की ओर चाऊ-एन-लाई का ध्यान आकर्पित किया तब उन्होने इस साधारण घटना कहकर टाल दिया। साम्यवादी क्रान्ति के कई वर्षो बाद तक चीन ने सीमा के प्रश्न को कभी उठाया ही नहीं था।[44]

नवम्बर 1956 एव जनवरी 1957 मे चाऊ एन-लाई की भारत यात्रा के दौरान यह निर्णय लिया गया कि ''सीमा सम्बन्धी कोई विवाद नहीं है, कुछ साधारण सी समस्यायें है, जिनको मित्रतापूर्ण तरीको से हल किया जाना चाहिये।'' '' ठीक इसी दौरान चीन ने अक्साई-चिन क्षेत्र से निकलती एक सडक का निर्माण आरम्भ कर दिया ।[45] इस सडक को पूर्वी लद्दाख से होकर गुजरना था। जुलाई 1958 में चीन ने भारत के लद्दाख मे स्थित खुरनाक जिले पर अधिकार कर लिया। सितम्बर 1958 मे चीनी सैनिको ने नेफा के लोहितमण्डल मे घुसपैठ प्रारम्भ कर दी। भारत सरकार को जब अक्टूबर 1958 में अक्साई-चिन सडक के निर्माण एवं नेफा मे घुसपैठ की जानकारी प्राप्त हुई तब उसने विरोध स्वरुप दो पत्र चीन को लिखे। किन्तु इसके बावजूद चीन की अतिक्रमण प्रक्रिया जारी रही और उसने भारत-तिब्बत सीमा पर लैयथल एवं सांगचो-माला मे बाहरी सैनिक चौकियॉ स्थापित कर लीं।

इस पृष्ठभूमि में, 23 जनवरी 1959 को चाऊ-एन-लाई ने एक पत्र लिखकर पहली बार भारत के हजारो वर्गमील प्रदेश पर अपना दावा प्रस्तुत किया तो भारत आश्चर्यचकित रह गया। चाऊ एन-लाई ने लिखा कि, '' भारत एवं चीन के मध्य कभी भी सीमाओं का निर्धारण नहीं हुआ है और तथाकथित सीमाये चीन के विरुद्ध किये गये साम्राज्यवादी षडयंत्र का परिणाम मात्र है। सीमा के प्रश्न को चीन ने पहले इसलिये नहीं उठाया क्योकि उसके लिये उपयुक्त समय नहीं था।'' स्पष्ट है कि चीन ने उस समय तक तिब्बत का अपने मे भलीभॉति

---

[44] एस.गोपाल; जवाहरलाल नेहरू· ए बायोग्राफी (दिल्ली, 1989) पृ0 475

[45] इटरनेशनल स्टडीज, 35(2), 1998 (अप्रैल-जून) पृ0 183

एकीकरण कर लिया था, चीन के सैनिको को भारत-चीन सीमा के साथ-साथ नियुक्त कर दिया था और अक्साई-चिन क्षेत्र मे 1100 मील लम्बी सडक का निर्माण कर लिया गया था।[46]

इसी दौरान मार्च 1959 मे तिब्बत-समस्या एक बार फिर उभर कर सामने आयी। 9 मार्च 1959 को ल्हासा मे प्रदर्शन के पश्चात् तिब्बत की मत्रिपरिषद् ने तिब्बत को स्वतत्र राष्ट्र घोषित कर दिया। चीन की सेना ने इस विद्रोह को दबा दिया। इन जटिल परिस्थितियो मे तिब्बत के नेता दलाई लामा ने अपने समर्थको के साथ तिब्बत को छोडकर भारत मे राजनैतिक शरण ली। इस बात का चीन ने तीव्र विरोध किया एवं अतिक्रमण की प्रक्रिया को जारी रखा। 7 अगस्त, 1959 को चीन के सैनिको की एक टुकड़ी ने खिन्जमेन में प्रवेश किया तथा 25 अगस्त, 1959 को चीनी सैनिको ने नेफा(NEFA- NORTH EAST FRONTIER AGENCY), वर्तमान अरुणाचल प्रदेश के सावन-मण्डल एव लौंगजू की भारतीय सीमा चौकी पर आधिपत्य कर लिया। 20 अक्टूबर, 1959 को चीनी सेनाओं ने लद्दाख मे 40 मील अन्दर घुसकर कोग्का दर्रे (Kongka Pass) में 9 भारतीय सिपाहियों को मार डाला। इस घटना ने भारत-चीन सम्बन्धों को अत्यन्त कटुतापूर्ण बना दिया।[47]

पंडित जवाहर लाल नेहरु ने चीन के तत्कालीन प्रधानमत्री चाऊ एन-लाई को सीमा विवाद सुलझाने के लिये भारत आमन्त्रित किया। 19 अप्रैल 1960 को दिल्ली में भारत और चीन के प्रधानमंत्रियो ने एक संयुक्त विज्ञप्ति जारी कर यह स्वीकार किया कि दोनों देश के बीच कुछ मतभेद हैं और विवादग्रस्त सीमाओ के बारे मे दोनो सरकारों के अधिकारी ऐतिहासिक तथा अन्य उपलब्ध सामग्रियो के अध्ययन के आधार पर अपनी सरकारों को प्रतिवेदन प्रस्तुत

---

[46] डा0 वी.एन खन्ना, लिपाक्षी अरोडा, भारत की विदेश नीति, नई दिल्ली 2000, पृ0 148

[47] सर्वपल्ली गोपाल, जवाहरलाल नेहरू, ए बायोग्राफी, वाल्यूम-2, दिल्ली, 1979, पृ0 89

करे। इस निर्णय के अनुसार दोनो देशों के अधिकारियो ने पीकिग, नई दिल्ली और रगून मे तीन दौर की असफल वार्ता की। भारत के प्रतिनिधिमण्डल ने वार्ता के दौरान 630 प्रमाणपत्रों को प्रस्तुत किया था जिनमे 516 प्रशासनिक तथ्यो एवं पारस्परिक सुझावों पर अनुमोदित तथा 49 वैधानिक (कानूनी) थे। चीनी प्रतिनिधिमण्डल ने वार्ता के दौरान 245 प्रमाणपत्र पेश किए थे जिनमें 47 कानूनी एव शेष 198 पारस्परिक एव प्रशासनिक तथ्यों पर आधारित थे। किसी भी तरह की वार्ताओं का चीन पर कोई असर नहीं हुआ।[48]

जनता की भावनाओं का आदर करते हुए नेहरु सरकार ने नीति-परिवर्तन करके यह निश्चित किया कि भारत अपनी सीमा-रेखा तक प्रभावी नियत्रण स्थापित करेगा। सीमा के साथ-साथ 1961 के अत तक भारतीय सेना ने 50 चौकियॉ स्थापित कर लीं। इस कार्य से चीन में तीव्र प्रतिक्रिया हुई। 12 जुलाई, 1962 को लद्दाख की गलबान घाटी में स्थित भारत की एक पुलिस-चौकी पर चीन ने कब्जा कर लिया। चीन द्वारा भारत के विरुद्ध आक्रामक कार्यवाहियॉ शुरु करते हुए 8 सितम्बर 1962 को अरुणाचल प्रदेश (उस समय नेफा कहलाता था) में मैक्महोन रेखा को पार कर भारत के कुछ क्षेत्रों को कब्जे में ले लिया गया। नेहरु ने जनता के बढ़ते हुये दबाव को ध्यान मे रखकर 13 अक्टूबर, 1962 को कहा, ''हमने सेना को हुक्म दिया है कि नेफा से चीनियो को मार भगावें।''[49]

सन् 1959 से एक अन्य घटनाक्रम भी विकसित हो रहा था जिस पर भारत ने ध्यान नही दिया। पाकिस्तान और चीन के बीच सामरिक और राजनीतिक सम्बन्ध स्थापित होने लगे थे। जुल्फिकार अली भुट्टो ने इन सम्बन्धों की पहल की थी और राष्ट्रपति अयूब खान ने इसका समर्थन किया था। इस समीकरण के परिणामस्वरुप पाकिस्तान ने जम्मू और कश्मीर का बहुत बडा भाग

[48] ह्वाइट पेपर-द्वितीय, नई दिल्ली, मिनिस्ट्री आफ एक्सटर्नल अफेयर्स, नवम्बर 1960, पृ0 8-16

[49] बी एम कौल, द अनटोल्ड स्टोरी, बम्बई, 1971, पृ0 387

सन् 1962 मे चीन को दे दिया था, जिस पर भारत के विरुद्ध 1948 मे हुई लडाई के समय से ही पाकिस्तान का आधिपत्य था।[50]

भारत-चीन सम्बन्धों में जैसे-जैसे गिरावट आती गई वैसे-वैसे चीन-पाकिस्तान सम्बन्ध सुधरते गये। सन् 1960 मे इसी प्रभाव के कारण चीन ने भारत के साथ सीमा सम्बन्धी वार्ता मे पश्चिमी काराकोरम को कश्मीर की सीमा मानने से इन्कार कर दिया। दिसम्बर 1962 मे चीन के जिन-जियाग तथा पाक-अधिकृत कश्मीर के बीच सीमा तय करने हेतु दोनो ने एक समझौते पर हस्ताक्षर किये। इसके साथ ही पाकिस्तान ने सयुक्त राष्ट्र सघ में चीन के प्रतिनिधित्व को भी समर्थन प्रदान किया।[51]

26 अक्टूबर, 1962 को चीन की सरकार द्वारा एक त्रिसूत्रीय प्रस्ताव पारित किया गया, जो इस प्रकार था -

1- दोनों देश युद्ध विराम-रेखा को वास्तविक नियंत्रण रेखा के रुप में स्वीकार करें तथा इस रेखा से सेनाओं को अपनी-अपनी ओर 20 किलोमीटर तक हटा ले।

2- यदि भारत न भी माने तो भी चीन अपनी सेना को नियंत्रण रेखा से 20 किलोमीटर उत्तर की ओर हटा लेगा, बशर्ते दोनों देश नियंत्रण रेखा का सम्मान करे।

3- दोनों प्रधानमंत्री समस्या के निदान के लिये वार्ता आरम्भ करे।

भारत ने इस प्रस्ताव को अस्वीकार करते हुये चीन से कहा कि वह सितम्बर 1962 वाली यथास्थिति स्वीकार करे। यह सुझाव चीन को स्वीकार्य नहीं था।[52]

---

[50] जे एन दीक्षित, भारतीय विदेश नीति, नई दिल्ली, 1999 पृ0 331
[51] टी कार्की हुसैन, चाइना-इडिया-पाकिस्तान, वर्ल्ड फोकस, अप्रैल 1996 पृ0 12
[52] दीनानाथ वर्मा, अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध, ज्ञानदा प्रकाशन (पी.ऐड डी) नई दिल्ली, 2000, पृ0 329

उपरोक्त प्रस्ताव 20 अक्टूबर, 1962 को नेफा और लद्दाख दोनो क्षेत्रो मे भीषण आक्रमण कर महत्वपूर्ण चौकियों पर कब्जा करने के बाद प्रस्तुत किया गया था। इस प्रस्ताव के भारत द्वारा अस्वीकार करने के बाद 15 नवम्बर, 1962 को चीन ने पुन नेफा और लद्दाख दोनों क्षेत्रो में बडे स्तर पर धावा बोल दिया। 16 नवम्बर तक चीनी सेनायें बोमडीला को पार करके असम के मैदानी क्षेत्रो मे पहुँच गईं। लद्दाख का वह समस्त क्षेत्र, जिस पर चीन अपना दावा कर रहा था, उसके अधिकार मे आ गया।

इस बीच भारत की प्रार्थना पर ब्रिटेन तथा अमेरिका द्वारा भारत को पर्याप्त मात्रा में युद्ध सामग्री भेजने के लिए कदम उठाए गये। साथ ही जाड़े के दिनो मे हिमाचल क्षेत्र मे चीनियों का टिकना असम्भव था। उधर सोवियत सघ भीतर-ही-भीतर चीन पर युद्ध बन्द करने के लिए दबाव डाल रहा था। ऐसे में चीन ने अकस्मात् 21 नवम्बर, 1962 को स्वयं अपनी ओर से एकपक्षीय युद्ध-विराम की घोषणा कर दी। चीन ने 26 अक्टूबर, 1962 के त्रिसूत्रीय प्रस्ताव को पुन दोहराया, जिसे भारत ने अस्वीकार करके फिर सितम्बर, 1962 की स्थिति मे वापसी की मॉग की।[53]

इस युद्ध मे बडी संख्या में भारतीय सेना के अधिकारी और जवान हताहत हुए, यद्यपि यह माना गया कि चीन की क्षति इससे भी अधिक हुई। परन्तु आश्चर्य की बात यह है कि इतने गम्भीर युद्ध के चलते भी न तो औपचारिक रुप से युद्ध की घोषणा की गई, और न पीकिंग तथा नई दिल्ली मे एक-दूसरे देश के दूतावास ही बन्द किये गये। राजनयिक सम्बन्धो का औपचारिक विच्छेदन भी नहीं हुआ। ऐसा विश्वास दिया गया कि यद्यपि भारत की विदेश नीति के सिद्धान्त और आदर्श अवश्य उचित थे, फिर भी चीनी आक्रमण ने नेहरु की

---

[53] दीनानाथ वर्मा, अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध, ज्ञानदा प्रकाशन (पी ऐड डी) नई दिल्ली, 2000, पृ0 329

नीति को विफल कर दिया। नेहरु ने चीन की विदेश नीति में हुये परिवर्तनो एव उसमे निहित परिणामो का वास्तविक अनुमान नहीं लगाया।[54]

भारत-चीन युद्ध पर जो प्रतिक्रिया तटस्थ राष्ट्रो मे हुई, वह अत्यन्त ही आश्चर्यजनक थी। इन्डोनेशिया के राष्ट्रपति सुकर्ण के लिये भारत ने जितना किया था उतना शायद ही किसी और देश ने किया हो, किन्तु सकट के समय मे वे चुपचाप ही रहे। मिस्र के राष्ट्रपति नासिर, युगोस्लाविया के टीटो तथा घाना के एनक्रूमा भारत के गहरे मित्र माने जाते थे, परन्तु उन्होने भी भारत का साथ नहीं दिया। घाना के एनक्रूमा ने भारत को शस्त्र सहायता देने के लिये ब्रिटेन से विरोध भी प्रकट किया।[55]

कोलम्बो प्रस्ताव :

चीन द्वारा एकपक्षीय युद्ध विराम घोषणा के पश्चात 10 दिसम्बर, 1962 को श्रीलका की प्रधानमत्री सिरिमाओ भण्डारनायके ने कोलम्बो मे छ. गुटनिरपेक्ष देशों - श्रीलका, बर्मा, मिस्र, इंडोनेशिया, घाना तथा कम्बोडिया, का एक सम्मेलन बुलाया। इस सम्मेलन में पारित प्रस्तावों को लेकर श्रीमती भण्डारनायके ने दोनों देशों के प्रधानमत्रियों से बातचीत की। कोलम्बो प्रस्ताव मे निम्न बाते थीं[56] -

1- कोलम्बो सम्मेलन इस बात का अनुभव करता है कि वर्तमान युद्ध विराम का समय भारत-चीन विवाद के शान्तिपूर्ण समाधान के लिये उपयुक्त है।

2- चीन पश्चिमी क्षेत्र में अपनी चौकियॉ 10 किमी0 पीछे हटा ले। जैसा कि चीनी प्रधानमंत्री चाऊ-एन-लाई ने गत 21 तथा 24 नवम्बर, 1962 को प्रधानमत्री नेहरु को भेजे पत्र में स्वयं प्रस्तावित किया था।

---

[54] डा0 वी एन खन्ना, लिपाक्षी अरोडा, भारत की विदेश नीति, नई दिल्ली 2000, पृ0 152

[55] दीनानाथ वर्मा, अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध, ज्ञानदा प्रकाशन (पी ऐड डी) नई दिल्ली, 2000, पृ0 330

[56] गॉधी जी राय, अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति, पटना, 1993, पृ0 444

3- यह सम्मेलन भारत-सरकार से अपील करता है कि वह अपनी वर्तमान सैनिक स्थिति बनाये रखे।

4- सीमा-विवाद का अन्तिम समाधान होने तक चीन द्वारा खाली किया गया क्षेत्र असैनिक क्षेत्र हो, जिसकी निगरानी दोनो पक्षो द्वारा नियुक्त गैर-सैनिक चौकियॉ करे।

5- पूर्वी नेफा क्षेत्र मे दोनो सरकारो द्वारा मान्य वास्तविक नियत्रण रेखा, युद्ध-विराम रेखा का कार्य करे।

6- मध्यवर्ती क्षेत्र का समाधान सैनिक शक्ति का आश्रय लिये बिना ही शान्तिपूर्ण ढग से किया जाय। यहॉ 8 सितम्बर, 1962 के पूर्व की स्थिति रहनी चाहिये।

7- सम्मेलन यह भी विश्वास करता है कि इन प्रस्तावों के क्रियान्वयन होने से दोनो देशों के प्रतिनिधियों के बीच युद्ध-विराम की स्थिति में समस्याओं को सुलझाने की दृष्टि से वार्ता के लिए मार्ग प्रशस्त होगा।

भारत ने उपर्युक्त कोलम्बो प्रस्ताव, जो 19 जनवरी 1963 को जारी किया गया था, को स्वीकार कर लिया किन्तु चीन ने इसमें कुछ ऐसी शर्ते जोड दी जिससे यह प्रस्ताव महत्वहीन हो गया। ये शर्तें निम्नलिखित थी।[57] :-

1- पश्चिम के विसैन्यीकृत क्षेत्र मे भारत और चीन दोनों की असैनिक चौकियॉ नहीं होनी चाहिये, वरन् सिर्फ चीन को ही इस प्रकार का अधिकार मिलना चाहिए।

2- विसैन्यीकृत प्रदेश में भारतीयों को किसी भी रुप मे उपस्थित होने की स्वीकृति नहीं मिलनी चाहिये।

3- पूर्वी क्षेत्र के सम्बन्ध मे चीन का अभिमत था कि भारतीय सेना को मैक्महोन रेखा तक जाने का अधिकार नहीं होना चाहिये।

---

[57] गॉधी जी राय, अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति, पटना, 1993, पृ0 444

इस प्रकार कोलम्बो प्रस्तावो को लागू नहीं किया जा सका, क्योकि चीन की शर्ते मानना भारत के लिए असम्भव था। 3 अक्टूबर, 1963 को राष्ट्रपति नासिर ने एक प्रस्ताव रखा जिसमे 'कोलम्बो शक्तियो' के एक और सम्मेलन का सुझाव था, परन्तु इसको व्यावहारिक रुप नहीं दिया जा सका। मई 1964, मे हताश जवाहरलाल नेहरु की मृत्यु पर भेजे अपने शोक सदेश मे चाऊ-एन-लाई ने विवाद के शातिपूर्ण समाधान की आशा अवश्य व्यक्त की परन्तु, लगभग 1980 तक भारत चीन सम्बन्धों में सुधार के कोई विशेष लक्षण दिखाई नहीं दिए।[58]

जी0पी0 देशपाण्डे ने भारत-चीन सीमा विवाद को एक ऐसी समस्या बताया है जो कि एक ही साथ गम्भीर भी है और साधारण भी। यह साधारण इसलिए है कि चाहे तुरन्त उसका कोई समाधान दृष्टिगोचर न हो, फिर भी इसका समाधान असम्भव नहीं है। यह गम्भीर इसलिए है कि भारत-चीन सम्बन्ध तब तक सामान्य हो ही नहीं सकते जब तक कि दोनो देशों के बीच कोई सीमा-समझौता नहीं हो जाता। देशपाडे का निष्कर्ष है कि चाहे सीमा-विवाद का समाधान भारत-चीन सम्बन्धो को सामान्य बनाने के लिये पर्याप्त न भी हो, फिर भी यह एक आवश्यक शर्त (स्थिति) है।[59]

1959 से ही चीन, पाकिस्तान के साथ अपने सम्बन्धों को सुधार रहा था। उल्लेखनीय है कि जब चीन मे साम्यवादी सरकार की स्थापना हुई थी तो पाकिस्तान ने उसके प्रति कोई सहानुभूति नहीं प्रदर्शित की थी। जब अमेरिका के नेतृत्व में चीन के खिलाफ सेन्टो (CENTO) तथा सीटो (SEATO) बना, तब पाकिस्तान उसका एक सदस्य हो गया और उसकी सारी नीति चीन-विरोधी थी। कश्मीर-विवाद पर तब चीन ने भारत का समर्थन किया था। लेकिन, सीमा-विवाद को लेकर जब भारत तथा चीन में सघर्ष होने लगा तब पाकिस्तान में चीन का

---

[58] डा0 वी.एन खन्ना, लिपाक्षी अरोडा, भारत की विदेश नीति, नई दिल्ली 2000, पृ0 154

[59] डा0 वी एन. खन्ना, लिपाक्षी अरोडा, भारत की विदेश नीति, नई दिल्ली 2000, पृ0 154

राजनय सक्रिय हो उठा। दोनो मे कई समझौते भी हुये। वास्तव मे पाकिस्तान व चीन की मैत्री का आधार केवल भारत-विरोध था।[60]

1962 के भारत-चीन युद्ध मे भारत की हार से पाकिस्तान भी प्रोत्साहित हुआ और उसने भी कश्मीर-समस्या का सैनिक समाधान निकालने के लिए सितम्बर, 1965 मे भारत पर आक्रमण कर दिया। इस लडाई मे चीन ने पाकिस्तान का पूरी तरह साथ दिया और भारत को आक्रमक बताया। भारत-पाकिस्तान युद्ध, 1965 मे भारतीय सेना ने पाकिस्तानी सैनिकों के न केवल अमेरिकी शस्त्रास्त्र पकडे बल्कि चीन मे निर्मित अनेक हथियार भी पकडे गए। इससे यह स्पष्ट था कि अमेरिका के मित्र पाकिस्तान से मैत्री करने मे चीन को कोई शका नहीं हुई, क्योकि ये तीनों ही देश उस समय भारत-विरोधी थे। इस युद्ध के दौरान चीन ने भारत-चीन सीमा पर भी तनाव पैदा करने की कोशिश की।[61] पाकिस्तान ने भारत के शत्रु की हैसियत से चीन को काराकोरम क्षेत्र मे बसा दिया एव पाक-अधिकृत कश्मीर का 2600 वर्गमील भू-भाग चीन को सौप दिया।

भारत-पाकिस्तान युद्ध, 1965 के दौरान ही 16 सितम्बर, 1965 को चीन ने भारत को एक चेतावनी दी जिसमे भारत से कहा गया कि वह भारत-सिक्किम-चीन सीमा पर स्थित 56 सैनिक प्रतिष्ठानों को तुरन्त हटा ले, क्योकि चीन के अनुसार उनका निर्माण भारत ने अवैध रुप से किया था। चीन ने कहा कि यदि भारत ने तीन दिन मे ऐसा नही किया तो उसको गम्भीर परिणामों का सामना करना पडेगा। चीन की इस चेतावनी से चितित सोवियत सघ तथा अमेरिका ने चीन को चेतावनी देते हुए कहा कि वह स्थिति को और गम्भीर न बनाए। प्रधानमंत्री श्री लाल बहादुर शास्त्री ने चीन को स्पष्ट शब्दों में कह दिया

---

[60] गिरि देशिग्कर, एन एन्टी इडिया ग्लू? मनूशी, 110,(जनवरी-फरवरी 1999),पृ0-14
[61] वर्ल्ड फोकस, 20 (11-12), (अक्टूबर-दिसम्बर 1999), पृ0 45

कि उसके द्वारा लगाए गए आरोप निराधार है और भारत ने सिक्किम-चीन सीमा की अवहेलना नहीं की है। बाद मे जब 23 सितम्बर, 1965 को भारत-पाकिस्तान के बीच युद्ध विराम हो गया तो पीकिग रेडियो ने एक नाटकीय घोषणा करते हुए कहा कि ''भारतीय सैनिक प्रतिष्ठानों को तोडकर अपनी सीमा में वापस चले गये।'' चीन की इस मनगढ़न्त कहानी को भारत सरकार के एक प्रवक्ता ने 'उपजाऊ चीनी मस्तिष्क की उपज' बताया।[62]

श्रीमती इदिरा गॉधी के शासन काल मे भारत-चीन सम्बन्ध सुधारने के अनेक असफल प्रयास किए गये। जून 1967 में चीन के नई दिल्ली स्थित दूतावास के दो अधिकारियों को गुप्तचरी के आरोप में गिरफ्तार किया गया। सितम्बर मे चीन ने नाथू-ला में भारतीय चौकी पर हमला किया। अक्टूबर 1967 में चो-ला की चौकी पर धावा किया गया और फिर अप्रैल 1968 में नाथू-ला में चीन की सैनिक गतिविधियॉ देखी गईं। अनेक देशों द्वारा की गई चीन की कटु आलोचना के पश्चात् 1970 में चीन ने भारतीय चौकियों पर आक्रमक गतिविधियॉ बन्द कर दीं। 1970 के दौरान ही बीजिंग में 'मई दिवस स्वागत समारोह' में भारतीय प्रभारी राजदूत का 'माओ-त्से-तुंग' ने स्वागत करते हुए कहा कि, ''भारत एक महान देश है तथा भारत और चीन बहुत पहले अच्छे मित्र थे और उन्हे फिर मित्र बनना चाहिए''। भारतीय इतिहास में इस घटना को 'माओ-मुस्कुराहट' के नाम से जाना जाता है। 26 अगस्त, 1970 को भारतीय विदेशमंत्री स्वर्ण सिंह ने चीन के साथ सम्बन्ध सुधारने की इच्छा अभिव्यक्त की।[63]

भारत-सोवियत मैत्री संधि, 1971 के सम्पन्न होने से एक सप्ताह पूर्व मास्को में चीन के राजदूत ने भारतीय राजदूत डी0पी0 धर से तीन बार मुलाकात

---

[62] दीनानाथ वर्मा,, अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध, वही, पृ0 332

[63] द टाइम्स आफ इंडिया, नई दिल्ली, 27 अगस्त 1970

की। नवम्बर 1971 मे चीन ने अफ्रीकी-एशियाई मैत्री टेबिल टेनिस प्रतियोगिता का आयोजन किया जिसमें भारत की टीम ने भी भाग लिया। इस तरह टूटते हुए सम्बन्धो मे एक बार पुन सामान्यीकरण की स्थिति प्रस्फुटित हुई, इसे 'पिगपाग कूटनीति' का जन्म भी कहा जाता है।

चीन ने पुन 1971 में बाग्लादेश सकट के समय भारत के प्रति शत्रुता का प्रदर्शन करते हुये पाकिस्तान का खुलकर समर्थन किया। परन्तु चीन ने प्रत्यक्ष हस्तक्षेप नही किया। उस समय जुल्फिकार अली भुट्टो पाकिस्तान में किसी पद पर नहीं थे, परन्तु उन्हे यह आशा थी कि यदि मुजीब को प्रधानमंत्री नहीं बनाया गया तो सत्ता उन्हें प्राप्त हो जायेगी। याह्या खॉ ने बाद मे स्वयं स्वीकार किया कि भुट्टो ने उन्हे यह कहकर गुमराह किया था कि युद्ध में चीन पाकिस्तान के पक्ष मे हस्तक्षेप करेगा। संयुक्त राज्य अमेरिका को भी विश्वास था कि चीन हस्तक्षेप करेगा। परन्तु, अगस्त 1971 में हस्ताक्षरित भारत-सोवियत मैत्री संधि की पृष्ठभूमि में न तो चीन ने और न ही अमेरिका ने प्रत्यक्ष हस्तक्षेप किया। यद्यपि इसी समय बीजिंग-इस्लामाबाद की धुरी मे राष्ट्रपति निक्सन तथा डा0 हेनरी किसिन्जर के प्रयासों से वाशिंगटन का भी प्रवेश हुआ, जिससे अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति के समीकरण तेजी से बदलने लगे।[64]

सयुक्त राष्ट्र मे चीन के प्रतिनिधि ने दावा किया कि पूर्वी पाकिस्तान की समस्या पाकिस्तान का आन्तरिक प्रश्न था। उसने भारत के दृष्टिकोण को 'गुन्डागर्दी का तर्क' तक कह डाला। साथ ही उसने कुछ समय के लिये बांग्लादेश को सयुक्त राष्ट्र का सदस्य नहीं बनने दिया। इन सबके बावजूद श्रीमती इंदिरा गॉधी ने जनवरी 1972 में यह आशा व्यक्त की कि चीन-पाक धुरी के होते हुये भी अत मे भारत-चीन सम्बन्धो में सुधार अवश्य होगा। 15 दिसम्बर, 1972 को

---

[64] डा0 वी एन. खन्ना, लिपाक्षी अरोडा; वहीं, पृष्ठ 156

राज्य सभा मे तत्कालीन विदेश मत्री स्वर्ण सिह ने भारत-चीन सम्बन्धो की समीक्षा करते हुये नये सम्बन्ध स्थापित करने पर बल दिया।[65]

भारत ने जब मई 1974 मे राजस्थान के पोखरन मे शान्तिपूर्ण कार्यो हेतु परमाणु-परीक्षण किया तब चीन ने यह प्रचार करना आरम्भ किया कि भारत अपने छोटे पडोसियों को भयभीत कर रहा है। इसी प्रकार जब 1974-75 मे सिक्किम की जनता ने अपने शासक चोग्याल के विरुद्ध विद्रोह कर सिक्किम को भारतीय सघ मे विलय करने की प्रार्थना की, तब चीन ने भारत पर विस्तारवादी होने का आरोप लगाया। चीन ने यह भी आरोप लगाया कि भारत मास्को की सहायता से एक विशाल भारतीय साम्राज्य की स्थापना का प्रयास कर रहा है। श्रीमती गॉधी ने इसके जवाब मे कहा कि चीन ने तिब्बत मे जो कुछ किया, उस पृष्ठभूमि में उसे सिक्किम के विषय में कुछ भी बोलने का अधिकार हो ही नही सकता।[66]

यद्यपि न्यूनतम कर्मियो के द्वारा दोनो देशो के दूतावास कार्य करते रहे थे, परन्तु 1962-74 की अवधि में राजदूत स्तर पर भारत चीन सम्बन्ध निलम्बित ही रहे थे। श्रीमती इन्दिरा गॉधी ने चीन के साथ सम्बन्धों के सामान्यीकरण की पहल करते हुये अप्रैल 1976 मे बीजिंग में श्री के0आर0 नारायणन को भारत का राजदूत नियुक्त किया। जुलाई 1976 में चीन ने भी भारत मे श्री चेन-चन-युन को राजदूत नियुक्त किया। जगत एस0 मेहता के अनुसार, " चीन ने यह अनुभव कर लिया था कि पाकिस्तान के पक्ष मे चीन और अमेरिका के झुकाव के होते हुये भी भारत में राजनैतिक आत्म-विश्वास उभरा है और बॉग्लादेश संकट के पश्चात उसमे आर्थिक गतिशीलता आयी है . ... चीन मे "चार की

[65] वर्ल्ड फोकस 20 (11-12), (अक्टूबर- दिसम्बर 1999), पृ0 46
[66] डा0 वी एन खन्ना, लिपाक्षी अरोडा, वही, पृ0 157

चौकडी" (Gang of Four) के पतन के पश्चात् नई राजनीतिक सरचना भी अब रचनात्मक-चित्तवृत्ति (Constructive Mood) मे थी।[67]

चीन के सस्थापक और वरिष्ठ नेता माओ-त्से-तुग का सितम्बर 1976 मे निधन हो गया और उनके स्थान पर हुआ-कुओ-फेग चीन के राष्ट्रपति बनाये गये। फेग के विरुद्ध सघर्ष करने वाले चार उच्चस्तरीय नेताओं को बन्दी बना लिया गया। इधर भारत मे भी मार्च 1977 मे मोरारजी देसाई के नेतृत्व में जनता पार्टी की सरकार बनी, जिसने यह घोषणा की कि वह अपनी विदेश नीति में 'सच्चे अर्थो मे' गुट-निरपेक्षता की नीति का पालन करेगी ।[68]

तत्कालीन भारतीय विदेश मत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी ने 12 फरवरी, 1979 को चीन की यात्रा की। वाजपेयी की यात्रा के समय ही चीन ने अपने पडोसी वियतनाम पर आक्रमण कर दिया। इस आक्रमण के विरुद्ध रोष प्रकट करते हुये वाजपेयी 17 फरवरी को स्वदेश लौट आये। चीन ने वाजपेयी की इस यात्रा के दौरान हुई वार्ता मे अपनी ओर से न तो कश्मीर का प्रश्न उठाया, न ही सिक्किम के भारत में विलय पर चर्चा की। इस यात्रा के पश्चात नागा और मिजो विद्रोहियो को चीन से प्राप्त हो रही सहायता समाप्त हो गयी। भारत-विरोधी प्रचार में भी कमी आयी। यद्यपि वाजपेयी ने अपनी ओर से सिक्किम के विलय के प्रश्न पर भारत का दृष्टिकोण स्पष्ट किया, परन्तु चीन ने कोई प्रतिक्रिया व्यक्त नहीं की।[69]

विदेश मंत्री वाजपेयी ने अपनी चीन यात्रा को 'टोही मिशन' की संज्ञा दी और कहा कि इससे एशिया में नये शक्ति-सतुलन की शुरुआत हो सकती है। वाजपेयी की यह यात्रा सीमा समस्या को छोडकर, लाभदायक रही। यात्रा, पर

---

[67] डा0 वी0एन0 खन्ना, लिपाक्षी अरोडा, वहीं, पृष्ठ 158

[68] दीनानाथ वर्मा, वही, पृ0 337

[69] सी.वी. रगनाथन; इडिया-चाइना रिलेशसः प्राब्लम्स ऐड पर्सपेक्टिव्स, वर्ल्ड अफेयर्स, (अप्रैल-जून 1998), वाल्यूम 2 न 2, पृ0 105

टिप्पणी करते हुये जगत एस0 मेहता ने कहा कि इस यात्रा के दौरान भारत-चीन वार्ता में यह समझौता हुआ लगता था कि सीमा-विवाद के प्रश्न को दोनों देशो के सम्बन्धो के सुधार की प्रक्रिया मे बाधा नहीं बनने दिया जायेगा। मेहता का विचार है कि वाजपेयी की यात्रा के दौरान वियतनाम पर हुये आक्रमण को सोवियत संघ के समर्थकों के द्वारा बढा-चढा कर प्रस्तुत किया गया। इस घटना को जानबूझ कर किया गया भारत का अपमान नहीं कहा जा सकता। मेहता के अनुसार इस यात्रा के परिणाम सुखद रहे।[70]

जनता सरकार द्वारा जो पहल की गयी थी, श्रीमती इन्दिरा गॉधी ने पुन 1980 मे सत्तारुढ़ होने पर उसका उपयोग किया और भारत-चीन सम्बन्ध सुधारने के प्रयास जारी रखे। मई 1980 में युगोस्लाविया के राष्ट्रपति मार्शल टीटो की अन्त्येष्टि के अवसर पर बेलग्रेड में श्रीमती गॉधी ने तत्कालीन चीनी प्रधानमत्री हुआ-गुआ-फेंग से भेंट की। दोनों नेताओ ने सम्बन्ध सुधारने की प्रक्रिया को गति देने का निर्णय किया। चीनी विदेश मंत्री हुआंग-हुआ ने जून 1981 मे भारत की यात्रा की और सीमा-विवाद सहित सभी प्रकार के सम्बन्धो के सामान्यीकरण के लिये वे राजी हो गये। चीनी सरकार ने भारतीय यात्रियों को मानसरोवर तथा कैलाश पर्वत जाने की अनुमति दे दी।[71]

भारत और चीन के बीच आधिकारिक स्तर पर वार्ता का प्रथम दौर दिसम्बर 1981 में बीजिंग मे हुआ। चीन का एक प्रतिनिधिमण्डल श्री फू-हाओ के नेतृत्व में भारत-चीन सीमा-विवाद पर वार्ता के लिये 16 मई, 1982 को दिल्ली में दूसरे दौर की वार्ता हेतु पहुँचा। भारत-चीन वार्ता का तीसरा दौर 19 जनवरी, 1983 को बीजिग में प्रारम्भ हुआ। इसमें भारत की ओर से श्री के0एस0 वाजपेयी ने प्रतिनिधि-मण्डल का नेतृत्व किया। दोनो देशों के बीच वार्ता का चौथा

---

[70] डा0 वी एन खन्ना, लिपाक्षी अरोडा; वहीं, पृ0 159

[71] स्वर्ण सिह, फिफ्टी ईयर्स आफ साइनो-इडियन टाईज, वर्ल्डफोकस, (अक्टूबर-दिसम्बर 1999), पृ0 - 46

दौर 24 अक्टूबर, 1983 को नई दिल्ली मे हुआ। चौथे दौर की वार्ता मे चीन भारत के इस प्रस्ताव पर सहमत हो गया कि सीमा विवाद के प्रत्येक पहलू पर अलग-अलग विचार किया जायेगा। वार्ता का पॉचवा दौर सितम्बर 1984 मे बीजिग मे शुरु हुआ। इस वार्ता में कोई विशेष प्रगति नहीं हुई।[72]

31 अक्टूबर 1984 को श्रीमती इन्दिरा गॉधी की हत्या कर दी गयी और राजीव गॉधी भारत के नये प्रधानमत्री बने। श्रीमती इन्दिरा गॉधी के अन्त्येष्टि के अवसर पर चीन के उप-प्रधानमत्री याओ-यी-सीन का भारत आगमन हुआ और उन्होने राजीव गॉधी को चीन के साथ मधुर सम्बन्ध का आश्वासन दिया। राजीव गॉधी ने भी स्पष्ट कहा कि, ''हम लोग अधिक अच्छे सम्बन्ध के लिये प्रयास करेगे और यदि बेहतर नहीं हो 1950 मे जैसा सम्बन्ध था वैसा बनाने का अवश्य प्रयास करेगे।[73]

सन् 1981 तक यह स्पष्ट हो गया था कि चीन भारत के साथ सम्बन्धो में तेजी से सुधार लाना चाहता था, चाहे वह इस प्रक्रिया मे न तो अपनी ओर से कोई विशेष रियायत देना चाहता था और न ही पाकिस्तान के साथ अपनी मैत्री में कोई कमी या समझौता करना चाहता था। वह नेपाल और बांग्लादेश के साथ भी अपने सम्बन्धो मे कोई परिवर्तन किये बिना भारत के प्रति मित्रता का हाथ बढा रहा था। चीन ने यह नीति अपनाई कि सीमा की जटिल समस्या को पृथक रखकर दोनो देशों को अपने राजनीतिक, आर्थिक, वाणिज्यिक, सांस्कृतिक तथा सामाजिक सम्बन्धो के विकास के लिये कार्य करना चाहिये। भारत ने सामान्य रुप से यह स्वीकार किया कि कुछ समय के लिये सीमा विवाद को न छेडा जाये। परन्तु अनिश्चित काल के लिये यथास्थिति बनाए रखना भी भारत के हित मे नहीं था। चीन के वयोवृद्ध नेता देग-शियाओ-पिग के एक सुझाव के अनुसार वर्तमान

---

[72] गॉधी जी राय, अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति, वही, पृ0 447

[73] द हिन्दुस्तान टाइम्स, (नई दिल्ली) 5 नवम्बर, 1984

नियत्रण रेखा को ही अन्तर्राष्ट्रीय सीमा का रुप दिया जाना था। इसका अर्थ यह होता कि जो भूमि जिसके पास है वह स्थायी रुप से उसका प्रादेशिक भाग मान लिया जाता। देग-शियाओ-पिग ने एक भारतीय शिष्टमण्डल के नेता जी0 पार्थसारथी से अक्टूबर, 1982 मे कहा कि, सबसे अच्छा तो यह होगा कि सीमा-विवाद को कुछ समय के लिये भुला दिया जाय और अपने सम्बन्ध सुधारने पर बल दिया जाय, परन्तु यदि भारतीय चाहते है कि सीमा के प्रश्न पर बातचीत होती रहे तो निश्चय ही दोनो पक्ष बातचीत करते रह सकते है, एक न एक दिन समस्या का समाधान मिल ही जायेगा। देंग के इन विचारों पर ही दोनो देश 1996 मे चलते देखे गये। दोनो देशो के अधिकारियो के मध्य 1983 तक यह सहमति हो गयी कि वे विज्ञान, प्रोद्योगिकी, शिक्षा, कला एवं खेलकूद के क्षेत्रो मे सहयोग बढा कर अपने द्विपक्षीय सम्बन्धों का विस्तार करेगे।[74]

[74] डा0 वी एन. खन्ना, लिपाक्षी अरोडा, वही, पृ0 161

अध्याय - 2

भारत चीन सम्बन्ध : राजीव गांधी से चन्द्रशेखर तक

सामान्य पडोसी सम्बन्धो को बनाने के रास्ते मे सबसे बडा कठिन कार्य है हिमालय के आधे भाग मे 4200 कि मी लम्बी सीमा का सीमाकन। दिल्ली तथा बीजिग दोनो ओर से सास्कृतिक, शैक्षिक, वैज्ञानिक तथा व्यापारिक सम्बन्धों को शीघ्र सुधारने के सुखद समाचार मिल रहे थे लेकिन सीमा-विवाद एक ऐसी समस्या है जिनका समाधान आने वाले कई वर्षों मे नजर नहीं आता। चीन एकमुश्त सौदे के सिद्धान्त और भारत खण्ड से खण्ड स्तर के अन्तर्राष्ट्रीय स्वीकृत सिद्धान्त के आधार पर समाधान की इच्छा रखता है। यदि एकमुश्त सौदे के सिद्धान्त को मान लिया जाये तो भारत को अक्साई-चिन के साथ 5000 वर्ग किमी. का अपना क्षेत्र छोड़ना होगा और यदि भारत के सिद्धान्त को माना जाये तो चीन को 1959 से पहले की सीमा पर लौट जाना होगा। कोई भी देश इस प्रकार के दूसरे के विचारो को मान्यता देने को तैयार नहीं था। अत गतिरोध बने रहना स्वाभाविक था।[1]

राजीव गाधी के शासन काल मे भी भारत तथा चीन के बीच मधुर सम्बन्ध बनाने का प्रयास जारी रहा। प्रधानमत्री राजीव गाधी ने यह निर्णय लिया कि पड़ोसी राज्यो के साथ मित्रता एवम् सहयोगात्मक सम्बन्धो को विकसित करने के लिए एक प्रमुख अभियान चलाना चाहिए। पडोसियों के प्रति भारत के परिवर्तित दृष्टिकोण का सुखद प्रभाव हुआ तथा अनेक पडोसियो के साथ भारत के सम्बन्धों मे कुछ सुधार होता दिखाई दिया। प्रधानमंत्री ने कहा कि, ''कई देशो, विशेषत हमारे पडोसियो के साथ सम्बन्धो मे ताजी हवा का झोका महसूस हुआ।'' इस प्रकार की विचारधारा और

द ट्रिब्यून, 3 फरवरी, 1983

भारत की वचनबद्धता के होते हुए भी चीन अपनी पुरानी नीति ''एकमुश्त सौदे द्वारा सीमा-विवाद को हल करने से पहले सामान्यीकरण'' पर अडा रहा।[2]

जुलाई 1985 मे चीन ने भारत को सुझाव दिया कि उसे ल्हासा मे अपने मिशन को पुन खोलना चाहिए और बदले मे चीन कलकत्ता अथवा किसी दूसरे स्थान पर अपना मिशन खोलेगा लेकिन भारत ने चीन के प्रस्ताव को इस आधार पर अस्वीकार कर दिया कि चीन, वास्तविक समस्या-सीमा-विवाद, को हल किये बिना सम्बन्धो को सामान्य बनाना चाहता था। कुलदीप नैय्यर ने 13 जुलाई, 1985 को ट्रिब्यून मे एक उच्चस्तरीय स्रोत के हवाले से लिखा कि, ''ल्हासा मे अपना मिशन पुन खोलने मे हमे कोई आपत्ति नहीं है और न ही हमे 1962 के चीनी आक्रमण से पहले की स्थिति बहाल करने के लिए दूसरे कदम उठाने में कोई आपत्ति है लेकिन इससे पहले हमे पुरानी स्थिति बहाल करनी होगी। चीन ने जिस भारतीय क्षेत्र पर कब्जा किया हुआ है पहले उसे वापस करना चाहिए।''[3]

अक्टूबर 1985 मे तत्कालीन प्रधानमत्री राजीव गाधी और चीन के प्रधानमंत्री जोआ-जियाग के बीच न्यूयार्क मे बातचीत हुई। दोनो नेताओ ने यह कहा कि भारत-चीन के बीच सारे विवादो को आपसी समझ के द्वारा हल कर लिया जाएगा। इस बातचीत ने नई दिल्ली में 4 से 11 नवम्बर 1985 के बीच होने वाली छठे दौर की भारत-चीन वार्ता के लिए अच्छा आधार तैयार कर दिया। इस वार्ता द्वारा बीजिग में भारतीय दूतावास की सम्पत्ति के विवाद को सुलझा लिया गया, लेकिन मुख्य सीमा-विवाद को सुलझाने मे कोई प्रगति नहीं हो सकी।[4] दोनों पक्षो के बीच कृषि,

---

[2] अभिजीत घोष, डायनामिक्स आफ इडिया - चाइना नार्मलाइजेशन, चाइना रिपोर्ट 31 2 (अप्रैल-जून 1995) पृ0 256

[3] कुलदीप नैय्यर, द ट्रिब्यून, 13 जुलाई 1985

[4] सुमीत गागुली , ' द साइनो-इडियन बार्डर टाक्स 1981-1989, ए व्यू फ्राम न्यू देलही' एशियन सर्वे, वाल्यूम XXIX, न 12, दिसम्बर 1989 पृ0 1128-29,

शिक्षा, कम्प्यूटर उद्योग, प्लाज्मा भौतिकी, तथा बायो-तकनीकी के क्षेत्रो मे शिष्टमडलो के आदान प्रदान का भी समझौता हुआ। वार्ता के अन्त मे कहा गया कि, "यह उपयोगी तथा दोनो देशो के बीच सद्भाव बढाने के लिए अनुकूल रही।"[5]

दोनो देशो के बीच वार्ता का सातवॉ दौर 21 जुलाई, 1986 से शुरू होना निश्चित हुआ, परन्तु चीन द्वारा अरूणाचल प्रदेश में घुसपैठ से दोनो के बीच सम्बन्ध एक बार फिर तनावपूर्ण स्थिति मे पहुॅच गये। जून 1986 में चीन ने भारतीय क्षेत्र मे 6-7 किमी अन्दर तक घुस पैठ कर ली। यह क्षेत्र अरूणाचल प्रदेश मे कमाग मडल के चियाग ड्रेग क्षेत्र की चरागाह का है, जो मैक्महोन रेखा के दक्षिण मे है। भारत ने चीन की इस घुसपैठ का कडा विरोध किया और इसे 21 जुलाई से होने वाली सातवे दौर की वार्ता, (बीजिंग) में उठाया। किन्तु चीन ने कहा कि यह क्षेत्र वास्तविक नियन्त्रण रेखा के उत्तर मे है और यह उसकी सीमा है, साथ ही इस बात पर जोर दिया कि पूरा अरूणाचल प्रदेश उसका है। इस प्रकार बातचीत का यह दौर बिना किसी ठोस नतीजे के समाप्त हो गया।[6]

सातवे दौर की बातचीत में अरूणाचल प्रदेश में चीनी घुसपैठ के प्रश्न पर कोई निर्णय नहीं होने से भारत-चीन सम्बन्ध पर एक बार फिर प्रश्नचिन्ह लग गया। इतना ही नहीं अगस्त 1986 मे चीन ने भारत पर ही सीमा के उल्लघन का आरोप लगाया जिसका भारत सरकार को खंडन करना पडा। 6 अगस्त 1986 को भारत-सरकार ने इस बात की पुष्टि कर दी कि चीन ने भारतीय क्षेत्र सुमदुरोंग- चू घाटी में एक हेलीपैड का निर्माण किया है।[7] 18 दिसम्बर, 1986 को राजीव गॉधी ने यह आश्वासन दिया कि चीन को सीमा क्षेत्र के बारे मे कोई रियायत नही दी जाएगी। 20 फरवरी

[5] राजिन्दर पुरी, 'द ग्रेटलीप फारवर्ड', इलस्ट्रेटेड वीकली आफ इडिया, बम्बई, नवम्बर 17, 1985
[6] द टाइम्स आफ इंडिया (नई दिल्ली), 25 जुलाई 1986
[7] बीजिग रिव्यू, वाल्यूम 29, न 35, 1 सितम्बर 1986, पृ0 14-15

1987 को जब भारत ने अरूणाचल प्रदेश को भारतीय सघ का 24वॉ राज्य घोषित किया तो 21 फरवरी, 1987 को चीनी विदेश मन्त्रालय के एक प्रवक्ता ने कहा कि भारत की इस कार्यवाही से चीन की प्रादेशिक अखण्डता और प्रभुसत्ता का गम्भीर उल्लघन हुआ है। दूसरी तरफ भारत ने चीन के इस विरोध को भारत के घरेलू मामले मे हस्तक्षेप की सज्ञा दी।[8]

सातवे दौर की वार्ता मे भारत के प्रतिनिधिमडल का नेतृत्व विदेश सचिव ए.पी. वेकटेश्वरन् तथा चीन के प्रतिनिधिमडल का नेतृत्व वहा के विदेश सचिव ल्यू-शूछिग ने किया। प्रतिनिधिमडल को तीन अलग-अलग समूहो मे बॉट दिया गया, जो सीमा-विवाद, सास्कृतिक आदान-प्रदान तथा विज्ञान एव तकनीकी-सहयोग के सम्बन्ध मे बातचीत करते रहे। सातवे दौर की बातचीत सद्भाव एव मैत्रीपूर्ण वातावरण मे हुई। इससे एक-दूसरे की स्थिति को समझने में काफी मदद मिली, लेकिन कोई ठोस प्रगति नहीं हो सकी। यद्यपि अरुणाचल प्रदेश के बॉगडोग मे सुमदुरोग-चू घाटी मे घुसपैठ के सवाल पर विस्तार से चर्चा हुई। लेकिन चीन इस बात पर अडा रहा कि बागडोग वास्तविक सीमा रेखा के उत्तर मे है, और वह चीन का अग है। चीन ने यह भी कहा कि उसका 90,000 वर्ग किलोमीटर भू-क्षेत्र भारत के अवैध कब्जे मे है और अक्साई-चिन हमेशा से चीन का क्षेत्र रहा है।[9]

फरवरी 1987 मे चीन ने अरूणाचल प्रदेश पर दावा करते हुए कहा कि भारत-चीन सीमा के विवादित पूर्वी क्षेत्र में अरूणाचल प्रदेश की स्थिति को कभी मान्यता नहीं दी है।[10] इस पर प्रतिक्रिया देते हुए भारत सरकार के विदेश मंत्रालय की वार्षिक रिपोर्ट मे कहा गया कि, "यह दोनो देशो के बीच सीमा पर शाति और

---

[8] द टाइम्स आफ इडिया (नई दिल्ली), 16 अप्रैल, 1987
[9] जी एस मिश्रा, ' इडिया-चाइना रिलेशन्स ए रिएप्रेजल', मेनस्ट्रीम 3 मार्च, 1987 तथा ईयर बुक आन इडियाज फारेन पालिसी, 1989, नई दिल्ली, पृ0 120
[10] बीजिग रिव्यू, वाल्यूम 29, न 51, 22 दिसम्बर 1986, पृ0 9

सद्भाव बनाये रखने की आपसी समझ के खिलाफ है।" इसके साथ ही रिपोर्ट मे भारत की चीन से बेहतर सम्बन्ध बनाये रखने की इच्छा व्यक्त करते हुए कहा गया कि, "चीन से रिश्ते सुधारने के लिए सीमा का मुद्दा बहुत महत्वपूर्ण है लेकिन व्यापार, सस्कृति, विज्ञान, और तकनीक मे कुछ सालो से हुई तरक्की से दोनो देशो के सीमाई और अन्तर्राष्ट्रीय मुद्दो पर एक दूसरे की बात समझने की दिशा मे काफी प्रगति हुई है। यह बातचीत चालू रखनी चाहिए। भारत सरकार यह उम्मीद करती है कि दोनो देशो के रिश्ते शांतिपूर्ण-सहअस्तित्व के सिद्धान्तो के मुताबिक बेहतर होते रहेगे।"[11]

वर्ष 1987 के प्रारम्भिक दिनो में दोनो देशों के बीच सम्बन्ध काफी तनावपूर्ण हो गये। भारत ने इन्हीं दिनो चीन से लगने वाली अपनी सीमा पर 'आपरेशन चेकर बोर्ड' नाम से एक सैनिक अभ्यास भी किया। यह सैनिक अभ्यास अक्टूबर 1986 से मार्च 1987 तक चला तथा इसमे वायुसेना एवं थल सेना की दस से अधिक टुकडियो ने भाग लिया। चीन ने भी इसके प्रतिक्रिया स्वरूप अपने हथियार तथा सैनिको को तिब्बत मे तैनात करना शुरू किया, जिससे स्थिति विस्फोटक होने लगी। किन्तु बाद मे, दोनो ही देशो ने स्थिति को बिगडते देखकर सयम का परिचय दिया जिससे एक दुर्भाग्यपूर्ण स्थिति से बचा जा सका।[12]

भारत-चीन सम्बन्धो तथा सीमा वार्ताओ में आये गतिरोध को दूर करने के लिए भारत मे अधिकारी स्तर की वार्ता को राजनीतिक वार्ता में परिवर्तित करने का निर्णय लिया। इसी क्रम मे अप्रैल 1987 मे, नवनियुक्त प्रतिरक्षा मत्री के.सी. पन्त ने उत्तरी कोरिया से वापस आते हुए बीजिग की अनिर्धारित यात्रा की। इस दौरान उन्होने भारत की शाति की इच्छा को चीनी नेताओ को बताया।[13] 21 मार्च 1987 को दोनो देशो के

---

[11] दिनमान, 3-9 मई, 1987, पृ0 23

[12] बीजिग रिव्यू, वाल्यूम 30, न0 18, 4 मई 1987, पृ0 6 तथा वाल्यूम 30, न0 20, 18 मई 1987, पृ0 7

[13] अभिजीत घोष, डायनामिक्स आफ इडिया - चाइना नार्मलाइजेशन, चाइना रिपोर्ट 31 2 (अप्रैल-जून 1995) पृ0 256

बीच 1 जनवरी, 1987 से 31 मार्च, 1988 की अवधि के लिए एक व्यापार-समझौते पर हस्ताक्षर किए गए। इस समझौते मे दोनो देशो के बीच आपसी कुल व्यापार को 15 करोड डालर से बढाकर 20 करोड डालर कर देने का लक्ष्य था।[14]

जून 1987 मे भारत के तत्कालीन विदेश मन्त्री श्री नारायण दत्त तिवारी ने नाम (NAM) कान्फ्रेस से आते हुए बीजिग रूकने तथा चीनी विदेश मत्री से बातचीत करने का निश्चय किया। श्री तिवारी की इस यात्रा से दोनो देशो के सम्बन्धो को सामान्य बनाने तथा बातचीत को आगे बढाने मे काफी सहायता मिली। विदेश मत्री ने अपनी यात्रा का उद्देश्य स्पष्ट करते हुए कहा कि, "हम चाहते है कि चीन के साथ मित्रतापूर्ण तथा सामान्यीकरण के आश्वासनो की समीक्षा की जाए, हम अपने सभी मतभेदो को, सीमा-विवाद को शामिल करके, बातचीत द्वारा हल करना चाहते है। इसलिए किसी प्रकार के झगडे की आवश्यकता नहीं है, और न ही ऐसी किसी प्रकार की बात की। सभी मामलो का समाधान बातचीत के द्वारा प्राप्त किया जा सकता है।" विदेश मत्री ने लोकसभा को बताया कि भारत, चीन के साथ आठवे दौर की वार्ता के लिए पूरी तरह तैयार है।[15]

भारत के विदेशमत्री श्री नारायण दत्त तिवारी, अपनी यात्रा के दौरान कुछ सीमा-तक चीनियो को यह समझाने मे सफल रहे कि दोनो देशो को पूर्ण सामान्य सम्बन्ध तथा मित्रता एव सहयोग को बढाने के लिए निश्चयपूर्वक प्रयत्न करने चाहिए। वहाँ से वापस आने के बाद उन्होने कहा कि चीन के अधिकारियो से सीमा विवाद पर उनकी उपयोगी और रचनात्मक वार्ता हुई।

भारत तथा चीन के बीच अधिकारी स्तर की आठवे दौर की वार्ता 15 नवम्बर, 1987 को शुरू हुई। सर्वोच्च राजनीतिक स्तर पर बने सम्पर्कों के कारण यह वार्ता

[14] दीनानाथ वर्मा, अन्तर्राष्ट्रीय, सम्बन्ध नई दिल्ली, 2000, पृ0 340
[15] टाइम्स आफ इडिया, 24 अप्रैल, 1987

आशा तथा सद्भावना के वातावरण मे हुई। इस वार्ता मे चीन के प्रतिनिधिमडल का नेतृत्व चीन के विदेश उपमत्री ल्यू-शूजिग ने तथा भारतीय प्रतिनिधिमडल का नेतृत्व भारत के विदेश सचिव के पी एस मेनन ने किया। चीनियो ने द्विपक्षीय सम्बन्धो मे आए तनाव और डर को दूर करने का प्रयत्न किया। दोनो औपचारिक रूप से इस बात पर सहमत हो गये कि सम्बन्धो के सकारात्मक पक्ष पर सीमा-विवाद की छाया न पडने दी जाए।[16] दोनो पक्षो ने इस बात पर जोर दिया कि समझौता वार्ता के माध्यम से सीमा-समस्या का समाधान न होने तक सीमा पर शान्ति कायम रखी जानी चाहिए। इस वार्ता द्वारा मतभेदो को दूर करने और हर क्षेत्र मे द्विपक्षीय सम्बन्ध को बढाने के लिए उपयुक्त वातावरण तैयार किया गया। बातचीत के दौरान भारत ने इस बात पर जोर दिया कि उसका इरादा चीन से अपने सम्बन्धों को सुधारने और आपसी विश्वास तथा सहयोग के लिए उपयुक्त वातावरण बनाने का है। नई दिल्ली में होने वाली आठवे दौर की यह वार्ता 17 नवम्बर 1987 को बिना किसी ठोस परिणाम के समाप्त हो गयी।

इस प्रकार, आठ दौर की अधिकारी स्तर की वार्ताओ (1981-1987) के बाद भी भारत तथा चीन के बीच सीमा-विवाद का कोई स्थाई समाधान नहीं निकाला जा सका। किन्तु इन वार्ताओं के परिणामस्वरूप दोनो देशो के नेता इस बात को स्पष्ट रूप से समझ गये कि नौकरशाही के स्तर पर सीमा-विवाद को नहीं हल किया जा सकता। इसके लिए कोई राजनीतिक समाधान ही तलाशना होगा।[17]

भारत-चीन सम्बन्धो के इतिहास मे वर्ष 1988 का विशेष महत्वपूर्ण स्थान रहेगा। भारत, आठवे दौर की वार्ता मे घोषित इरादो पर डटा रहा जिसके

---

[16] निखिल चक्रवर्ती, ' देयर इज ए डिस्टिक्ट था इन द चाइनीज मूड', द टेलीग्राफ, 22 नवम्बर, 1987

[17] जे के बरल, जे के महापात्रा तथा एस पी मिश्रा, राजीव गाधीज चाइना डिप्लोमेसी डायनामिक्स ऐंड प्राब्लम्स, इटरनेशनल स्टडीज, वाल्यूम 26, न 3, (जुलाई - सितम्बर 1989), पृ0 266

परिणामस्वरूप दोनो देशो की मैत्री और मजबूत हुई। किन्ही दो देशो के बीच राजनीतिक सम्बन्ध को बढाने और समस्याओ को सुलझाने मे आर्थिक तथा सास्कृतिक समझौतो का महत्वपूर्ण स्थान होता है। चीन के साथ भारत का आर्थिक सहयोग तो पहले से ही विकसित हो चुका था, परन्तु 28 मई, 1988 को भारत और चीन के बीच पहली सास्कृतिक सधि पर हस्ताक्षर हुए।[18] इसमे विविध क्षेत्रो मे घनिष्ठ सम्बन्ध बनाने और आपसी सहमति से काम करने की व्यवस्था थी। यह समझौता 5 वर्ष के लिए हुआ और यह प्रावधान किया गया कि आपत्ति न होने पर इसका स्वत 5-5 वर्ष के लिए नवीनीकरण होता रहेगा। समझौते मे सास्कृतिक आदान-प्रदान के सर्वाधिक कार्यक्रम बनाने की व्यवस्था थी। इसके अनुसार प्राय दो वर्ष मे सास्कृतिक प्रतिनिधिमडल एक-दूसरे के देश की यात्रा करेगे। ये प्रतिनिधिमंडल सस्कृति और कला, शिक्षा, समाज, विज्ञान, खेल, जन-स्वास्थ्य, प्रेस एवम् प्रकाशन, प्रसारण, फिल्म और दूरदर्शन का प्रतिनिधित्व करेगे। जून, 1988 मे पश्चिम बगाल के मुख्यमत्री ने चीन और जापान की यात्रा से लौटने के बाद कलकत्ता हवाई अड्डे पर सवाददाताओ को बताया कि चीन में बदलती हुई राजनीतिक स्थिति के कारण चीन सरकार का भारत के प्रति रूख अच्छा है। उन्होंने कहा कि साम्यवादी नेताओ के साथ उनकी बातचीत के दौरान भारत-चीन सीमा विवाद सहित अनेक द्विपक्षीय मामलो पर भी विचार-विमर्श हुआ। चीन ने यथाशीघ्र भारत के साथ व्यापार शुरु करने मे भी रूचि दिखाई।[19]

नवम्बर, 1987 मे जब चीन के उप विदेशमत्री ल्यू-शूजिग सीमा-विवाद पर आठवे दौर की बातचीत करने वाले दल का नेतृत्व कर रहे थे, तब भी उन्होने भारत के प्रधानमत्री को आमन्त्रित किया था। भारत के प्रधानमत्री को इसका फैसला करना था। इस फैसले मे सबसे सक्रिय भूमिका भारत के विदेश सचिव के.पी. एस. मेनन ने

[18] दीनानाथ वर्मा, अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध, नई दिल्ली, 2000, पृ0 340
[19] हिन्दुस्तान, पटना, 23 जून 1988

निभाई। यह तय हो जाने के पश्चात कि राजीव गॉधी पुरानी बातो को भूलकर चीन की यात्रा करेगे, के पी एस मेनन को चीन की कई यात्राए करनी पडीं। के पी एस मेनन के नेतृत्व मे राजीव गॉधी की चीन यात्रा को अतिम रूप देने के लिए एक उच्चस्तरीय प्रतिनिधिमडल नवम्बर, 1988 के तीसरे सप्ताह मे चीन पहुॅचा। इस प्रतिनिधिमडल ने महत्वपूर्ण द्विपक्षीय क्षेत्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय विषयों और जटिल सीमा-विवाद के बारे मे चीनी नेताओ के साथ होने वाली प्रधानमत्री की कार्यसूची पर भी चर्चा की।[20]

19 दिसम्बर, 1988 को भारत के प्रधानमत्री श्री राजीव गॉधी एक उच्चस्तरीय प्रतिनिधिमडल के साथ चीन की पॉच दिवसीय यात्रा पर बीजिंग पहुॅचे। इसके साथ ही भारत-चीन सम्बन्धो के इतिहास में एक नया अध्याय जुड़ गया। 34 वर्षों के लम्बे अन्तराल के बाद यह भारत के किसी प्रधानमत्री की पहली यात्रा थी। राजीव गॉधी की इस यात्रा ने भारत तथा चीन के बीच तमाम मतभेदो को दूर करने मे महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इस यात्रा से दोनो देशो के बीच आये गतिरोध को दूर करने मे मदद मिली। राजीव गॉधी ने कहा कि उनकी इस यात्रा से दोनो देशों के द्विपक्षीय सम्बन्धो के विकास में 'एक नये युग की शुरूआत' होगी।[21]

चीन की भूमि पर पैर रखते ही प्रधानमत्री राजीव गाधी ने कहा कि, "मैं आशावान हूॅ कि इसका परिणाम अच्छा निकलेगा। हमने चीन के साथ अपने सम्बन्धों को नये सिरे से शुरू करके मैत्री को सुदृढ करने का निश्चय किया है।[22] अन्तर्राष्ट्रीय व्यवस्था मे आ रहे महत्वपूर्ण परिवर्तनों के परिणाम-स्वरूप एशिया के दो बडे देश लम्बे

[20] इद्रजीत, 'मित्रता की ओर नया कदम', दिनमान, 15 जनवरी 1989 पृ0 42
[21] द स्टेट्समैन, 20 दिसम्बर, 1988
[22] द टेलीग्राफ, कलकत्ता, 22 दिसम्बर 1988

समय तक आपस मे सघर्ष की स्थिति बनाए नहीं रख सकते। 1962 ई के बाद इनके बीच जो महान दीवार खडी हो गयी थी, उसको लाघना जरूरी था।[23]

अपनी पॉच दिवसीय चीन-यात्रा के दौरान राजीव गॉधी ने साम्यवादी दल के अध्यक्ष तथा चीन के वयोवृद्ध नेता देग-शियाओ-पिग, दल के महासचिव झाओ-झियाग, राष्ट्रपति याग-शाकुन तथा प्रधानमत्री ली-पेग से व्यापक स्तर पर विचार-विमर्श किया। इन नेताओ से राजीव गाधी को सकारात्मक तथा रचनात्मक समर्थन प्राप्त हुआ। इन नेताओ ने इस बात की बडी सराहना की कि राजीव गॉधी की इस यात्रा से आपसी सम्बन्धो का वातावरण सामान्य हुआ है। देग-शियाओ-पिग ने जिस गर्मजोशी के साथ राजीव गॉधी का स्वागत किया वह सारे ससार मे चर्चा का विषय बना। अमेरिकी तथा जापानी पत्रकारो ने इसे 'सर्वाधिक अवधि तक हाथ मिलाये जाने की घटना' कहा। राजीव गॉधी के स्वागत में वयोवृद्ध नेता देंग-शियाओ-पिग ने कहा कि "युवा दोस्त का स्वागत! आपकी यात्रा से नई शुरूआत होगी और हम अपने मैत्रीपूर्ण सम्बन्धो की पुनर्स्थापना करेगे। क्या आप सहमत है?" इसके उत्तर मे राजीव गॉधी ने कहा, "निस्सदेह, हॉ, हमे मित्र होना चाहिए।"[24] चीन के प्रधानमत्री ली-पेंग और भारतीय प्रधानमत्री राजीव गॉधी ने विश्व के दो बडे देशो की मित्रता की आवश्यकता को महसूस किया और इस ओर सकारात्मक कदम उठाने के लिए एक दूसरे को आश्वस्त किया। दोनो देशो के प्रधानमत्रियो ने इस शिखर वार्ता को 'दोस्ती की नई शुरूआत' कहा।

इस यात्रा के दौरान देंग- शियाओ - पिग ने कहा "हमारे सम्बन्धो के सुधार को इस यात्रा से 'वास्तविक आरम्भ मिला है, तथा यह यात्रा हमारे सम्बन्धो के विकास को और अधिक प्रोत्साहन देगी।"[25]

[23] इद्रजीत, "मित्रता की ओर नया कदम" दिनमान, 15 जनवरी, 1989 पृ0 42
[21] इद्रजीत, वही, पृ0 42
[25] द स्टेट्समैन, 22 दिसम्बर, 1988

एक प्रीतिभोज मे दिये अपने भाषण मे चीन के प्रधानमत्री ली-पेंग ने कहा, "हमारा यह सदा से ही विश्वास तथा सद्आशय है कि मैत्रीपूर्ण विचार-विनिमय, जोकि पारस्परिक निकटता तथा पारस्परिक समायोजन की भावना मे हमे होगा, उसके द्वारा दोनो देशो मे चिरकाल से चले आ रहे सीमा-विवाद का समाधान न्याय-पूर्ण तथा तर्कसगत रूप मे हो जाएगा। हमारा यह निश्चित विचार है कि चीन तथा भारत शातिपूर्ण-सहअस्तित्व के जनक होते हुए इन सिद्धान्तो के आधार पर द्विपक्षीय सम्बन्धो का स्वस्थ रूप से विकास कर सकते है।"[26]

श्री राजीव गॉधी ने भारत-चीन मित्रता तथा सहयोग को नवीन सकारात्मक स्वास्थ्य प्रदान करने की आवश्यकता पर बल दिया जिससे कि पारस्परिक द्विपक्षीय सम्बन्धो में शान्तिपूर्ण सहअस्तित्व के सिद्धान्तो के प्रयोग द्वारा सीमा विवाद का मैत्रीपूर्ण समाधान ढूँढा जा सके। श्री राजीव गाधी ने कहा, "विश्व को इस शांतिपूर्ण सहअस्तित्व के सिद्धांतो के विषय मे बतलाते हुए, हम अपनी पारस्परिक समस्याओ का समाधान इन सिद्धान्तो के अनुसार करेगे। सीमा विवाद का प्रश्न एक प्रमुख समस्या बनी हुई है। यदि हम इसका समाधान एक दूसरे के दृष्टिकोण के आधार पर करेंगे तो यह हमारे पारस्परिक लाभ में होगा तथा हमारे दोनो देशो के लोगों के हित मे होगा। इस काल के दौरान हमारी सीमाओ पर शाति तथा स्थिरता की आवश्यकता है। हमे पूर्ण विश्वास है कि सीमा का प्रश्न सद्भावनापूर्ण ढंग से सुलझाया जा सकता है। इसे एक यथार्थ समय अवधि में सुलझाया जाना चाहिए। भारत इसके अनुसार कार्यक्रम निश्चित करने के लिये तैयार है।"[27]

इस यात्रा के दौरान चीन के प्रधानमत्री ली-पेंग ने कहा कि चीन की सरकार इस बात के लिए भारत-सरकार की प्रशसा करती है कि वह तिब्बत को चीन का

---

[26] द हिन्दुस्तान टाइम्स, 4 दिसम्बर, 1991

[27] मीरा सिन्हा भट्टाचार्या, "ए लैण्डमार्क विजिट", फ्रटलाइन, 20 दिसम्बर, 1991 पृ0 22

अभिन्न अग मानती है तथा भारत, चीन के आतरिक मामलो मे कोई हस्तक्षेप नहीं करेगा, साथ ही तिब्बत की स्वतत्रता हेतु किए जाने वाली किसी भी राजनीतिक गतिविधियो को अपने यहॉ सचालित करने की अनुमति भी नही देगा। राजीव गाधी ने कहा कि तिब्बत के प्रश्न पर भारत सरकार की नीति मे कोई बदलाव नही आया है। भारत तिब्बत को चीन का स्वायत्तशासी क्षेत्र मानता है और वह चीन के आतरिक मामलो मे हस्तक्षेप करने वाली किसी भी राजनीतिक गतिविधि को अपने यहा से सचालित होने की अनुमति नहीं देगा।[28]

राजीव गाधी द्वारा तिब्बत पर दिये गये उनके बयान के लिए विभिन्न समाचार पत्रो एव विश्लेषको ने उनकी काफी आलोचना की। अपने इस बयान मे उन्होने कहा था कि "तिब्बत, चीन का आंतरिक मामला है।" वास्तव मे, तिब्बत भारत के लिए कूटनीतिक दृष्टि से काफी महत्वपूर्ण है। इसका प्रयोग वह चीन के साथ सौदेबाजी मे कर सकता है। दूसरी ओर राजीव गॉधी चीनी नेताओ से सिक्किम, कश्मीर और अरूणाचल प्रदेश पर ऐसी कोई छूट लेने मे भी असफल रहे।[29] तिब्बत के प्रश्न पर चीन भारत को हमेशा से दबाव मे रखता आया है। तिब्बती राष्ट्रवाद और चीन के जिन-जियाग प्रान्त मे मुस्लिम चरमपंथ, दो ऐसे बिन्दु है जिनका प्रयोग चीन के साथ सीमा-विवाद पर सौदेबाजी के लिए किया जा सकता है।

राजीव गॉधी की इस यात्रा के दौरान सीमा-विवाद का गतिरोध टूट गया और उसके बारे मे नये सिरे से बातचीत शुरूआत हुई। इस बारे मे दोनो पक्ष सहमत हुए कि "सीमा विवाद के प्रश्न का एक - दूसरे को स्वीकार्य समाधान ढूंढते हुए इस

---

[28] मीरा सिन्हा भट्टाचार्या, वही, पृ0 22

[29] ए पी वेंकटेश्वरन, "द चाइना विजिट लिटिल स्कूप फार यूफोरिया, द हिन्दुस्तान टाइम्स, 3 जनवरी 1989, एम एल सोढी, ' सम्मिट इन बीजिग इडिया इन पोलिटिकल कल डे साक' द स्टेट्समैन 16 जनवरी 1989, ए जी. नूरानी, हैज पी एम एक्सेप्टेड देंग्स पैकेज?' इडियन एक्सप्रेस, 11 जनवरी 1989

समस्या के निष्पक्ष और तर्कसगत हल के लिए अनुकूल वातावरण तथा परिस्थितियॉ उत्पन्न करने के लिए कठिन परिश्रम किया जाएगा।''[30]

सीमा विवाद को हल करने के लिए यह निर्णय लिया गया कि एक सयुक्त कार्यकारी दल (JWG) का गठन किया जाएगा और आर्थिक सम्बन्धो तथा व्यापार एव विज्ञान और प्रौद्योगिकी को बढावा देने के लिए अलग से एक सयुक्त कार्यकारी दल का गठन किया जाएगा। यह भी निश्चित किया गया कि यह सयुक्त कार्यकारी दल सीमा-विवाद के सभी पहलुओ का व्यापक अध्ययन करके एक निश्चित समय-सीमा के भीतर सीमा-विवाद के पूर्ण समाधान का प्रयास करेगा।[31] सीमा सम्बन्धी सयुक्त कार्यकारी दल मे भारतीय विदेश सचिव तथा चीन के विदेश उपमत्री होगे। यह दल दो बाते सुनिश्चित करने का प्रयास करेगा (1) नियत्रण रेखा के साथ-साथ शाति बनाये रखना, तथा (2) दीर्घकाल से लम्बित सीमा-विवाद का बातचीत द्वारा समाधान।[32]

22 दिसम्बर, 1988 को भारत तथा चीन ने नागरिक उड्डयन सेवाओ, विज्ञान व प्रौद्योगिकी के क्षेत्र मे उच्च-स्तरीय सहयोग तथा सांस्कृतिक आदान-प्रदान के लिए तीन समझौतो पर हस्ताक्षर किये [33]। भारत की ओर से राजीव गॉधी एव चीन की ओर से प्रधानमत्री ली-पेंग की उपस्थिति मे बीजिंग मे इन समझौतो पर हस्ताक्षर हुए। भारत सरकार की तरफ से पर्यटन तथा नागरिक उड्डयन मत्रालय में सचिव एस0 के0 मिश्रा, विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी विभाग में सचिव बसन्त गोवारीकर, सस्कृति विभाग मे सचिव जे0 वीर राघवन ने तथा चीन की तरफ से वहॉ के नागरिक उड्डयन

---

[30] सी वी रगनाथन, इडिया चाइना रिलेशस प्राब्लम्स ऐंड पर्सपेक्टिव्स, वर्ल्ड अफेयर्स (अप्रैल - जून 1998), वाल्यूम 2, न02, पृ0 107

[31] द स्टेट्समैन, 23 दिसम्बर 1988

[32] सुरजीत मानसिह, ' इडिया-चाइना रिलेशस इन द पोस्ट कोल्ड वार एरा', एशियन सर्वे, वाल्यूम 34, अक-3, मार्च 1994, पृ0 285-300

[33] सुरजीत मानसिह और स्टीफन आई लेविन, ''चाइना ऐंड इडिया मूविग बियाड कनफ्रटेशन'', प्राब्लम्स आफ कम्युनिज्म, मार्च-जून, 1989, पृ0 30-48

प्रशासन के महानिदेशक, चीन के वैज्ञानिक तथा प्रौद्योगिकी आयोग तथा सस्कृति विभाग से सम्बद्ध उपमत्रियो ने समझौते पर हस्ताक्षर किये।

1981 से 1987 के बीच हुई आठ दौर की वार्ताओ के परिणाम से वर्तमान यात्रा के परिणाम का अतर स्पष्ट करते हुए राजीव गॉधी ने कहा, "बहुत अतर है, पहले सरकारी स्तर पर जो बातचीत चल रही थी वह केवल सीमा के प्रश्न पर ही नहीं थी, बल्कि बहुत व्यापक थी और एक प्रकार से उसी से चीन-यात्रा की बुनियाद तैयार हुई। पहले उनके उपमत्री तथा हमारे विदेश सचिव दो पक्ष थे। अब इन दोनों का सयुक्त-कार्यदल होगा। फिर वे सर्वोच्च स्तरीय बातचीत की पृष्ठभूमि मे काम करेगे। हम महसूस करते है कि वास्तव मे अब वे सफल हो सकते है। अब यह दल काफी अर्थपूर्ण है। पहले से अधिक दृष्टि मे रहने वाला है और इसलिए मै आशा करता हूँ कि इसके अच्छे परिणाम सामने आयेगे।"[34]

इस महत्वपूर्ण यात्रा के दौरान राजीव गॉधी की देंग-शियाओ-पिग के अलावा राज्य तथा साम्यवादी दल के अनेक महत्वपूर्ण नेताओ से भी बातचीत हुई। इनमें झू-रोग्जी भी शामिल थे। इस बातचीत मे चीन के नेताओं ने इस बात पर विशेष बल दिया कि भारत तथा चीन दोनो को अपने सामाजिक और आर्थिक विकास के लिए शातिपूर्ण एवं स्वस्थ वातावरण की आवश्यकता है। इसी मे उनकी विस्तृत आबादी का विकास तथा क्षेत्रीय एव विश्व शाति निहित है। दोनो पक्षो ने पंचशील के सिद्धान्तों में पूर्ण विश्वास व्यक्त किया तथा इस बात को स्वीकार किया कि ये सिद्धान्त आपसी सम्बन्धो को बढाने के लिए आज भी प्रासंगिक है तथा इनसे नवीन अन्तर्राष्ट्रीय राजनीतिक व्यवस्था एवं नवीन अन्तर्राष्ट्रीय आर्थिक व्यवस्था की स्थापना हेतु आधारभूत दिशा-निर्देश प्राप्त किये जा सकते है। देंग-शियाओ-पिंग ने इस बात पर जोर देते हुए

[34] इद्रजीत, "मित्रता की ओर नया कदम", दिनमान, 15 जनवरी, 1989, पृ0 42

कहा कि यदि चीन तथा भारत, विकास का उच्च स्तर नहीं प्राप्त करते है तो 21वीं शताब्दी को 'एशिया की शताब्दी' बनाने का सपना अधूरा रह जाएगा।[35]

प्रधानमत्री राजीव गॉधी की पॉच दिवसीय चीन यात्रा की समाप्ति पर 23 दिसम्बर 1988 को जारी एक सयुक्त विज्ञप्ति मे भारत और चीन ने अपनी 4050 किलोमीटर लम्बी सीमा पर शाति बनाए रखने की इच्छा व्यक्त की। दोनो देशो ने एक बार फिर पचशील के प्रति अपनी आस्था व्यक्त करते हुए द्विपक्षीय सम्बन्धो मे ऐसा सुधार करने का फैसला किया जिससे सीमा-विवाद के उचित, तर्कसगत और सर्वमान्य हल के लिए उपयुक्त वातावरण का निर्माण हो सके। सयुक्त विज्ञप्ति मे यह स्पष्ट कहा गया कि पचशील के सिद्धान्तो के आधार पर ही दोनो पडोसी देशो के सम्बन्धो की बहाली और विकास न केवल दोनो देशो की जनता की हितों के अनुकूल है, बल्कि इससे एशिया ओर पूरे विश्व मे शान्ति और स्थिरता कायम करने मे भी मदद मिलेगी।[36]

राजीव गॉधी की चीन-यात्रा की सीमा विवाद को सुलझाने तथा अन्य क्षेत्रो मे सहयोग को बढावा देने की उपलब्धियो के साथ-साथ जो सबसे बडी उपलब्धि है वह यह है कि उन्होने अपने विचारशील भाषणों द्वारा वर्तमान भारत की छवि और दृष्टिकोण को चीन की युवापीढी के सामने रखा। चीन के किन्घुआ (Qınghua) विश्वविद्यालय को सम्बोधित करते हुए उन्होने कहा, "मैं इस बात से बहुत प्रसन्न हूँ कि भारत तथा चीन पुराने दलदल से बाहर निकलने के लिए पूरी तरह तैयार है।"[37]

चीन के किन्घुआ (Qinghua) विश्वविद्यालय में छात्रो और शिक्षको को सम्बोधित करते हुए राजीव गॉधी ने कहा, "मुझे पूरी आशा है कि इस यात्रा के दौरान

[35] सी वी रगनाथन, वही, पृ0 107-108
[36] अमृत बाजार पत्रिका, 24 दिसम्बर, 1988
[37] द टेलीग्राफ, कलकत्ता, 22 दिसम्बर 1988

हमारे चीनी मित्रो के साथ मिलकर हम सीमा-विवाद के समाधान के लिए बेहतर वातावरण कायम करेगे। विश्व-व्यवस्था को नया मोड देने के लिए भारत तथा चीन पृथक रूप से तथा आपस मे मिलकर क्या कार्य कर सकते है, इसका हमे नये सिरे से निर्धारण करना होगा। हमारा पहला कदम सहअस्तित्व के दशाब्दियो पुराने पॉच सिद्धान्तो को पुनर्जीवित करना होगा तथा भारत तथा चीन एक नई अन्तर्राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था कायम करने के लिए अन्तर्राष्ट्रीय मचो पर मिलकर काम करेगे।"[38]

इस यात्रा के दौरान दोनो देशो के नेताओ ने तथा उनके शिष्टमडलो ने पारस्परिक हितो के मामले मे गहरा विचार विमर्श किया। इसमे सीमा-विवाद का प्रश्न तथा भारत-चीन आर्थिक, सास्कृतिक तथा प्रौद्योगिकीय सहयोग मे वृद्धि का मामला भी था। सीमा-विवाद पर सयुक्त कार्यकारी दल के गठन के अतिरिक्त नागरिक उड्डयन, विज्ञान तथा तकनीकी एव सास्कृतिक आदान-प्रदान के सम्बन्ध मे भी समझौते किये गये।[39] नागरिक उड्डयन सेवाओ के सम्बन्ध मे किए गए समझौते के अन्तर्गत दोनो देश नई-दिल्ली और बीजिग के बीच सीधी विमान सेवाएँ शुरू करने के मुद्दे पर सिद्धान्तत सहमत हो गये। तकनीकी सहयोग के क्षेत्र मे हुए समझौते के अन्तर्गत दोनों देशो के वैज्ञानिको और सस्थाओ के बीच आदान-प्रदान के अतिरिक्त एक सयुक्त समिति गठित करने का प्रस्ताव रखा गया जो समय-समय पर इसकी प्रगति की समीक्षा करती रहेगी। सास्कृतिक आदान-प्रदान के समझौते की अवधि तीन वर्ष रखी गई। इस समझौते के अन्तर्गत नृत्य, सगीत दलो, कलाकारो तथा लेखको का एक दूसरे के देशो मे आना-जाना, एक दूसरे के देशो पर कला प्रदर्शनियॉ आयोजित करना, छात्रो तथा विद्वानो का एक-दूसरे के देशो मे आना-जाना तथा एक-दूसरे के देशो के साहित्य का

---

[38] दिनमान, 15 जनवरी, 1989 पृ0 45
[39] सी वी रगनाथन, वही, पृ0 107

अनुवाद तथा प्रकाशन शामिल है। इस ऐतिहासिक यात्रा के अवसर पर दोनो देशो के बीच सीधी टेलीफोन सेवा भी शुरू हो गयी।[40]

राजीव गॉधी की चीन-यात्रा का निर्णय कई आतरिक एव वाह्य कारको से प्रभावित था। जहॉ तक आतरिक कारको का सम्बन्ध है, दो ऐसे मुद्दे उस समय की भारतीय राजनीति मे थे, जिनसे राजीव गॉधी की प्रतिष्ठा मे उल्लेखनीय कमी आ रही थी। पहला, राजीव गॉधी कई कठोर उपायो को लागू करने के बावजूद भी पजाब की हिसात्मक स्थिति को नियत्रित नहीं कर पा रहे थे। दूसरे, राजीव गॉधी तथा उनकी सरकार पर रक्षा सौदों विशेषकर बोफोर्स तोपो की खरीद मे दलाली का आरोप विपक्ष द्वारा लगाया जा रहा था। स्थिति उस समय और बिगड गई जब सरकार के ही तत्कालीन रक्षामत्री वी0 पी0 सिह ने त्यागपत्र देते हुए बोफोर्स सौदे की व्यापक जॉच की मॉग कर दी। इन सब परिस्थितियो के कारण राजीव गॉधी को अपनी गिरती प्रतिष्ठा को बचाने के लिए विदेश नीति के क्षेत्र मे एक महत्वपूर्ण सफलता की आवश्यकता जान पडी।[41]

इस समय की अन्तर्राष्ट्रीय परिस्थितियो मे भी महत्वपूर्ण परिवर्तन दिखाई दे रहे थे। सोवियत रूस तथा चीन के सम्बन्ध अब सुधरने लगे थे। जुलाई, 1986 में ब्लाडीवोस्टक में दिये अपने भाषण मे मिखाईल गोर्बाच्योव ने चीन के साथ सम्बन्धो मे सुधार लाने पर विशेष बल दिया। इस भाषण मे उन्होने सोवियत सघ तथा चीन के सम्बन्धो को बढाने के लिए कुछ महत्वपूर्ण निर्णयों की भी घोषणा की। ऐसे में भारत-सरकार, सोवियत सघ तथा चीन के बढते सम्बन्धों को सन्देह की दृष्टि से देखने लगी। उसे ऐसा लगा कि भारत-चीन सघर्ष मे सोवियत सघ जिस प्रकार साठ तथा सत्तर के दशक मे भारत के साथ खडा था, वैसा अब नहीं हो सकेगा। इस

---

[40] द स्टेट्समैन, 23 दिसम्बर 1988

[41] अभिजीत घोष, वही, पृ0 257

बदलते अन्तर्राष्ट्रीय परिदृश्य मे राजीव गॉधी को चीन की यात्रा करना अपरिहार्य जान पडा।[42]

भारत द्वारा चीन के साथ सम्बन्धो को सुधारने के कई कारण थे। इनमे से तीन कारण महत्वपूर्ण है पहला, चीन का इसके सभी दक्षिण-एशियाई देशो विशेषकर पाकिस्तान, श्रीलका तथा नेपाल से मित्रवत सम्बन्ध है। दूसरे, चीन मे साम्यवादी दल की 13वीं काग्रेस के बाद नेतृत्व मे हुए परिवर्तन से चीन की विदेश नीति मे भी उल्लेखनीय परिवर्तन आया है। तीसरा कारण सोवियत-चीन सम्बन्धो मे आने वाला सकारात्मक परिवर्तन है। नवम्बर, 1986 मे भारत की यात्रा पर आये मिखाईल गोर्बाच्योव ने स्पष्ट रूप से कहा, 'भारत-चीन सीमा विवाद में मास्को किसी का पक्ष नहीं लेगा।' ऐसी परिस्थितियो मे भारत के लिए चीन के साथ सम्बन्धो को सुधारने के सिवाय और कोई समुचित विकल्प नहीं बचता था।[43]

सुब्रह्मण्यम स्वामी के अनुसार चीन के साथ सम्बन्धों को सुधारने का सबसे उपयुक्त समय 1980 से 1983 के बीच था, जबकि सोवियत सघ चीन का प्रमुख विरोधी था।[44]

राजीव गॉधी की चीन यात्रा की काफी आलोचना भी की गई। राष्ट्रीय स्वयसेवक सघ के मुखपत्र 'आर्गनाइजर' ने अपने सम्पादकीय मे लिखा कि इस सद्‌भावना यात्रा की कीमत हमे धीरे-धीरे चुकानी होगी।[45]

राजीव गॉधी की चीन-यात्रा से दो माह पूर्व लिखे अपने सम्पादकीय लेख मे 'आर्गनाइजर' ने राजीव गॉधी की, उनके इस कथन के लिए कि "उनकी आगामी

---

[42] अभिजीत घोष वही, पृ0 257

[43] प्रो0 खालिद महमूद, रिबिल्डिग साइनो-इडियन रिलेशस (1988-2000)- रॉकी पाथ, अनसर्टेन डेस्टिनेशन, रीजनल स्टडीज, 19 (1), 2000 (विटर 2001), पृ0 8

[44] वही, पृ0 9

[45] आर्गनाइजर, नई दिल्ली, 1 जनवरी 1989

चीन-यात्रा के दौरान भारत की किसी भी भूमि को चीन को देने का कोई प्रश्न ही नहीं है," काफी निन्दा की। पत्र के अनुसार, 1962 के ससद के उस प्रस्ताव मे, जिसमे कहा गया था कि, 'भारत के एक-एक इंच भूमि की रक्षा की जायेगी' तथा राजीव गॉधी के इस कथन मे काफी अन्तर है। यद्यपि राष्ट्रीय स्वयसेवक सघ ने खोयी हुई भारतीय भूमि के लिए चीन के साथ युद्ध करने से इकार किया किन्तु उसने चीन के साथ समझौते मे 'तिब्बत की आजादी' को सौदे के रूप मे प्रयोग करने की आलोचना भी की।[46]

जार्ज फर्नांडीज ने भी राजीव गॉधी की चीन यात्रा पर तीखी प्रतिक्रिया व्यक्त की। उन्होने 'तिब्बत की आजादी' के लिए होने वाली रैली मे राजीव गॉधी द्वारा भारत के राष्ट्रीय हितो तथा तिब्बती लोगो के अधिकारो को चीन को बेचने से रोकने के लिए 'हिमालय बचाओ' सम्मेलन के आयोजन का आह्वान किया। राजीव गॉधी के इस कथन को कि 'तिब्बत चीन का अभिन्न अग था' उद्धृत करते हुए जार्ज फर्नांडीज ने कहा, "भारत को चीन के साथ शाति स्थापित करने के लिए तिब्बती लोगो के आत्म-निर्णय के अधिकार से सौदेबाजी करने का कोई हक नहीं है।"[47]

पूर्व विदेश सचिव ए0पी0 वेकटेश्वरन, जोकि लम्बे अरसे तक चीन मे राजदूत भी रह चुके हैं, का कहना है कि राजीव गॉधी का यह दौरा राजनीतिक नफा-नुकसान के मद्देनजर और सोवियत दबाव के कारण हुआ। उनका कहना है, "उन्हे सत्ता में आने के बाद ही जाना चाहिए था। उन्हे यही सलाह भी दी गयी थी, लेकिन वे अब जा रहे है जबकि अगला आम-चुनाव सिर पर है। अब चीन हल निकालने के बजाए रियायते हासिल करने के फेर मे रहेगा।"[48] भारतीय जनता पार्टी के तत्कालीन अध्यक्ष

[46] चाइना विजिट, आर्गनाइजर, 9 अक्टूबर 1988
[47] द टाइम्स आफ इडिया, 27 दिसम्बर, 1988
[48] इडिया टुडे, 31 दिसम्बर, 1988, पृ0 33

लाल कृष्ण आडवाणी ने तो यहॉ तक कह दिया कि प्रधानमत्री खाली हाथ वापस आये है।[49] भारतीय जनता पार्टी के ही अटल बिहारी वाजपेयी ने राजीव गॉधी की चीन-यात्रा के परिणाम पर अपनी राय जाहिर करते हुए कहा, "जब तक दो देशो के बीच बातचीत होती रहती है तब तक सीमा पर ठॉय-ठॉय का खतरा नहीं रहता और शाति का कबूतर अपने घोसले में राहत की सॉस लेता हुआ गुटर-गूॅ- गुटर-गूॅ कर सकता है। तनाव रहित सम्बन्ध और शातिपूर्ण सीमा चीन के सन्दर्भ मे ये दो ऐसी नियामते है, जिनके सहारे बीते वर्ष को अलविदा और आते वर्ष को खुशामदीद कहा जा सकता है।"[50]

भारत-चीन सम्बन्ध के भविष्य पर विचार करते हुए अटल बिहारी वाजपेयी ने कहा, "प्रधानमत्री की चीन-यात्रा से यहॉ भी अपेक्षा थी कि वे चीनी नेताओ को सीमा के बारे मे सेक्टर के अनुसार समझौता करने के लिए राजी कर लेगे जिससे सीमा-प्रश्न पर अन्तहीन चर्चा का अर्थहीन दौर समाप्त हो जायेगा और सम्मानजनक समाधान की प्रक्रिया का शुभारम्भ हो सकेगा। किन्तु ऐसा लगता है कि चीन एकमुश्त समझौता करने की अपनी जिद पर अडा रहा और राजीव गॉधी को एक नये कार्यदल के गठन मात्र से सतोष करना पडा। नया कार्यदल, जिसमे दोनो देशो के अफसरो के अलावा सैनिक कमाडर भी होगे, सीमा के प्रश्न को हल करने के लिए ऐसा क्या नया करेगा जो पिछले 35-40 सालो मे नहीं हुआ, यह समझना भी सरल नहीं है। यदि कार्यकारी दल का कार्य केवल सीमोल्लंघन की घटनाओ पर नजर रखना और रोकना है तो बात अलग है। जहॉ तक सीमा-प्रश्न के समाधान का सवाल है, अफसरों का कोई दल यह कार्य नहीं कर सकता। यह तो राजनीतिक स्तर पर ही सम्भव है।"[51]

---

[49] दिनमान, 15 जनवरी, 1989, पृ0 42
[50] दिनमान, 15 जनवरी, 1989, पृ0 18
[51] दिनमान, 15 जनवरी, 1989, पृ0 19

दिल्ली स्थित 'विकासशील समाज अध्ययन केन्द्र' के निदेशक और भारत के सबसे प्रतिष्ठित चीन मामलो के विशेषज्ञ गिरी देशिग्कर ने कहा, "देग-शियाओ-पिग, माओ की पीढी के उन बचे हुए लोगो मे है, जिन्होने 'लम्बी कूच' और 'सास्कृतिक क्राति' से लेकर खुलेपन की नीति के दौर देखे है। दुनिया की नजर मे वे बहुत धैर्यवान व्यक्ति है और बेहतर यही है कि उनके सत्ता मे रहते ही बातचीत कर ली जाए।"[52]

सोवियत सघ ने भी राजीव गॉधी की चीन-यात्रा की प्रशसा करते हुए सतोष व्यक्त किया। सोवियत संघ की समाचार एजेन्सी 'इतरतास' के अनुसार "एशिया के दो बडे देशो के बीच अच्छे पडोसियों जैसे तथा मैत्रीपूर्ण सम्बन्धो के स्थापित हो जाने से इस महाद्वीप मे स्थिरता आ सकती है। दुनिया मे सबसे ज्यादा आबादी वाले दो देशो पर एशिया-प्रशान्त क्षेत्र मे शाति बनाए रखने की विशेष जिम्मेदारी है। यह जरूरी है कि भारत तथा चीन के बीच सीमा-विवाद का समाधान बातचीत के जरिए किया जाय। भारतीय प्रधानमत्री की चीन-यात्रा से सीमा-विवाद हल करने की प्रक्रिया शुरू हुई है।"[53]

"कुल मिलाकर यात्रा लाभदायक तथा समय की मॉग के अनुसार रही है। जिस उल्लास के साथ पेइचिग (बीजिग) मे चीन के नेताओ ने तथा श्याम एव शघाई में जन-समूह ने स्वागत किया, उससे शून्य से नीचे के तापमान का पता ही नहीं चला। अब समय आ गया है कि विगत बातो से परे हटकर स्थिति का मूल्याकन किया जाए।"[54]

---

[52] इडिया टुडे, 31 दिसम्बर, 1988, पृ0 33
[53] हिन्दुस्तान, पटना, 25 दिसम्बर 1988
[54] दिनमान, 15 जनवरी, 1989, पृ0 45

चीन मे माओ के युग की समाप्ति के बाद उसने अपनी विदेश नीति मे महत्वपूर्ण परिवर्तन करने शुरू किए। चीन अपने विदेश सम्बन्धो मे पहले की अपेक्षा अब काफी व्यावहारिक होने लगा था। जैसे-जैसे चीन की विदेश-नीति मे विचारधारा का तत्व कमजोर पडता गया, वह अपने पुराने क्रातिकारी उन्माद को त्यागकर नई चुनौतियो का मुकाबला करने के लिए तैयार हो गया। ऐसी ही परिस्थितियो मे उसने भारत के साथ मित्रवत् सम्बन्ध पुन स्थापित करने का निर्णय लिया।[55]

तत्कालीन प्रधानमत्री श्री राजीव गाँधी की अपनी पहल पर की गई चीन-यात्रा की आलोचनाओ का प्रत्युत्तर देते हुए तत्कालीन विदेश राज्य-मत्री श्री के नटवर सिह ने कहा, "यदि रिचर्ड निक्सन तथा हेनरी किसिजर चीन के समर्थन मे अमेरिकी नीति तथा लोक समिति को बदल सकते है तो हम भी ऐसा क्यो नहीं कर सकते? यदि इस शताब्दी मे दो रक्तिम् युद्ध लडने के पश्चात् भी फ्रास तथा जर्मनी इतने अच्छे मित्र बन सकते है, जापान तथा चीन अपने सम्बन्धो को सामान्य बना सकते है, राष्ट्रपति सादात इजराइल की यात्रा पर जा सकते है, तब श्री राजीव गॉधी बीजिंग की हवाई यात्रा क्यो नहीं कर सकते। क्या श्री चाऊ-एन-लाई चार बार भारत की यात्रा नहीं कर चुके है?"[56]

राजीव गॉधी की चीन-यात्रा से दोनो देशो के बीच सम्बन्धो की एक 'नई शुरूआत' हुई। दोनो ने यह महसूस किया कि स्थिर, उद्देश्यपूर्ण एव शातिपूर्ण सम्बन्ध ही उनके दीर्घकालीन हित में है। राजीव गॉधी ने दोनो देशो की समस्याओ को ध्यान मे रखते हुए गोर्बाच्योव द्वारा अपनायी गई सोवियत-चीन सम्बन्धों के सामान्यीकरण की नीति का अनुसरण करते हुए भारत-चीन सम्बन्धो को 'एक नई दृष्टि' प्रदान की।[57]

---

[55] रीजनल स्टडीज, 19 (1), 2000 (विन्टर 2001), पृ0 5
[56] मेनस्ट्रीम, 6 जनवरी 1990, पृ0 33
[57] जे0मोहन मलिक, "चाइना-इडियन रिलेशस इन द पोस्ट सोवियत एरा द कन्टीन्यूयिग राइवलरी", द चाइना क्वार्टर्ली, न0 142, जून 1995, पृ0 317-319

अटल बिहारी वाजपेयी जब 1979 मे चीन यात्रा पर गये थे तभी देग-शियाओ-पिग ने वाजपेयी से कहा था कि चीन भारत के साथ सम्बन्धो को सामान्य बनाने का इच्छुक है। इसके लिए देग ने यह सुझाव भी दिया कि जब तक सीमा विवाद को हल करने के लिए उपयुक्त वातावरण नहीं तैयार हो जाता तब तक इस प्रश्न को छोडकर अन्य क्षेत्रो मे द्विपक्षीय सम्बन्धो को बढाने पर जोर दिया जाना चाहिए। जब इसके लिए उपयुक्त वातावरण तैयार हो जायेगा तब इसका समाधान कर लिया जाएगा। राजीव गॉधी ने सोचा कि चीन जैसे महत्वपूर्ण पडोसी के साथ सम्बन्धो को सुधारने मे देग-शियाओ-पिग के इस विचार से लाभ उठाना चाहिए। अत· उन्होने चीन के साथ अच्छे राजनीतिक सम्बन्ध स्थापित करने का निर्णय लिया। इसी क्रम मे उन्होने चीन की सद्भावना यात्रा की। राजीव गॉधी की यह यात्रा बदलते अन्तर्राष्ट्रीय व्यवस्था के सन्दर्भ मे एशियाई क्षेत्र मे रणनीतिक वातावरण तैयार करने हेतु भारत द्वारा सही समय पर किया गया कूटनीतिक प्रयास था, जिसके लाभकारी परिणाम आने वाले वर्षों मे देखने को मिलते है।[58]

राजीव गॉधी की ऐतिहासिक चीन-यात्रा के पश्चात् दोनों देशो के बीच सम्बन्धो मे गुणात्मक सुधार दिखाई पडने लगा। वर्ष 1989 के प्रथम छ महीनो मे लगभग आधा दर्जन चीनी प्रतिनिधिमडलों ने भारत की यात्रा की। इनमे मुख्य रूप से ससदीय प्रतिनिधिमडल, न्यायविदो की एक टीम, अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धो के विशेषज्ञो का एक दल तथा कुछ मत्री और अधिकारी शामिल थे। जून 1989 मे चीन मे हुए 'तियानमेन चौक' की घटना पर भारत ने अत्यन्त संयमित प्रतिक्रिया व्यक्त की, जिसकी चीनी नेताओ ने प्रशसा की तथा भारत के साथ सशक्त निकटता के सम्बन्धो के विकास की इच्छा व्यक्त की। राजीव गॉधी की यात्रा के दौरान सीमा विवाद के समाधान के लिए

[58] जे एन दीक्षित, ''एक्रास वार्डर्स फिफ्टी इयर्स आफ इडियाज फारेन पालिसी'', नई दिल्ली, 1998, पृ0 स0 181

गठित सयुक्त कार्यकारी दल की प्रथम बैठक 1-4 जुलाई, 1989 को बीजिग मे हुई।[59] इस बैठक मे चीन की ओर से वहॉ के उप-विदेश मत्री ल्यू-शूकिग ने तथा भारत की ओर से भारत के विदेश सचिव श्री एस के सिह ने भाग लिया। सयुक्त कार्यकारी दल की प्रथम बैठक के पश्चात् यह घोषणा की गई, “भारत तथा चीन ने जटिल सीमा-प्रश्न के ‘शीघ्र समाधान’ हेतु अपने दृढ निश्चय की अभिव्यक्ति की है। उन्होने व्यापार तथा सांस्कृतिक, वैज्ञानिक तथा प्रौद्योगिकीय सम्बन्धो मे विविधता लाने तथा इसके प्रसार के लिए ठोस कदम उठाने का भी निश्चय किया है।” इसके अतिरिक्त, दोनो पक्षो ने सीमा पर शाति तथा स्थिरता बनाये रखते हुए नये विश्वास उत्पन्न करने वाले प्रबन्ध करने का भी निश्चय किया।[60]

सयुक्त कार्यकारी दल की प्रथम बैठक मे यह तय किया गया कि इसकी अगली बैठक किसी समय आने वाले वर्ष मे नई दिल्ली मे होगी। इस बैठक मे कुछ महत्वपूर्ण विश्वास उत्पन्न करने वाले उपायो को लागू करने पर दोनों पक्ष सहमत हो गये। इसमें सीमा-विवाद को सेना के कमाडरों के हाथ से ले लिया गया तथा यह तय हुआ कि सीमा-विवाद के समाधान की देखरेख उच्च्य राजनीतिक स्तर पर की जाएगी। सयुक्त कार्यकारी दल की प्रथम बैठक में सीमा पर सैन्य गतिविधियों की जानकारी देने, पर्यवेक्षको की अदला-बदली, एक हाटलाइन टेलीफोन सम्पर्क स्थापित करने तथा वरिष्ठ सैन्य कमाण्डरो की नियमित बैठके करने पर भी सहमति व्यक्त की गई।[61]

सितम्बर, 1989 में भारत तथा चीन के बीच व्यापार, आर्थिक, वैज्ञानिक एव तकनीकी पर सयुक्त आयोग की प्रथम बैठक हुई। इस बैठक मे दोनो पक्ष आपस में व्यापार को बढाने पर सहमत हुए। इस बैठक मे चीन 1 मिलियन टन लौह अयस्क,

---

[59] द स्टेट्समैन, 2,3,4 तथा 5 जुलाई 1989

[60] द स्टेट्समैन, 21 सितम्बर 1989

[61] गैरी किन्वर्थ, ‘द प्रैक्टिस आफ कामन सिक्योरिटी चाइनाज बार्डर विथ रशिया ऐंड इडिया’, चाइनीज काउन्सिल आफ एडवास्ड पालिसी स्टडीज (कैप्स), न 4, अक्टूबर 1993, पृ0 15

100 मिलियन टन क्रोमाइट अयस्क तथा 200,000 से 300,000 टन यूरिया का आयात करने पर सहमत हुआ। भारत 50 मिलियन डालर मूल्य के सिल्क और सिल्क के धागे, 10 से 12 मिलियन डालर मूल्य की दाले, 5 से 6 मिलियन डालर मूल्य के मुनक्का तथा 4 से 5 मिलियन डालर मूल्य का पेट्रोलियम तथा पेट्रोलियम उत्पाद आयात करने पर सहमत हुआ।[62]

भारत तथा चीन के बीच सम्बन्धो को और मजबूती तब मिली जब चीन के उप-प्रधानमत्री वू-जेकियान ने अक्टूबर 1989 मे नई दिल्ली की यात्रा की तथा प्रधानमत्री एव विदेश मत्री सहित अनेक भारतीय नेताओ से मुलाकात की। वू ने कहा कि सीमा-समस्या का ऐसा हल निकाला जा सकता है जो दोनो पक्षो को स्वीकार्य हो। इसके अलावा दोनो पक्षो ने अनेक अन्तर्राष्ट्रीय मुद्दो पर समान विचार व्यक्त किये तथा एक नई अन्तर्राष्ट्रीय राजनीतिक एव आर्थिक व्यवस्था के निर्माण के लिए साथ मिलकर काम करने पर सहमति व्यक्त की।[63]

वर्ष 1989 मे भारत मे आम चुनाव सम्पन्न हुए। इस चुनाव मे घरेलू राजनीति के ही मुद्दे छाये रहे। 'ऊँचे पदो पर भ्रष्टाचार' का मुद्दा विपक्ष का प्रमुख मुद्दा था। इस चुनाव मे भारत की जनता ने कांग्रेस पार्टी की तत्कालीन सरकार के खिलाफ मतदान किया। इस चुनाव का सबसे महत्वपूर्ण परिणाम यह रहा कि किसी भी दल को पूर्ण बहुमत नहीं मिला। आने वाले वर्ष (1989 से 1991) भारत मे राजनीतिक अस्थिरता के रहे। 2 दिसम्बर, 1989 को वी पी. सिह के नेतृत्व मे राष्ट्रीय मोर्चा की अल्पमतीय सरकार का गठन हुआ, जिसे भाजपा और साम्यवादी दलों ने 'बाहर से समर्थन' दिया। ऐसे मे सरकार के पास राजनीतिक शक्ति का अभाव था, परिणामस्वरूप विदेश नीति के क्षेत्र मे कोई महत्वपूर्ण परिवर्तन नहीं दृष्टिगोचर होता

[62] द स्टेट्समैन, 21 सितम्बर, 1989
[63] बीजिग रिव्यू, वाल्यूम 32 न 4, 30 अक्टूबर से 5 नवम्बर, 1989, पृ0 4-5

है। यद्यपि इन्द्र कुमार गुजराल ने विदेशमत्री के रूप मे यह आश्वासन दिया कि विदेशी सम्बन्धो मे निरन्तरता एव स्थिरता बनाये रखी जाएगी।[64]

वी पी सिह सरकार की चीन के प्रति नीति का उल्लेख राष्ट्रपति द्वारा 20 दिसम्बर 1989 को ससद को किये गये सम्बोधन मे मिलता है। उन्होने कहा, "मेरी सरकार चीन के साथ सहयोग एव समझदारी की प्रक्रिया को जारी रखेगी। ऐसी उम्मीद की जाती है कि सीमा विवाद का समुचित एव तार्किक हल हमारे राष्ट्रीय हितो के अनुरूप ढूँढा जा सकता है।"[65]

वी.पी. सरकार के कार्यकाल मे चीन के विदेशमत्री कियान-किचेन ने मार्च 1990 मे भारत की यात्रा की। भारत के विदेश मत्री इन्द्र कुमार गुजराल से दो दिन विचार विमर्श करने के पश्चात् उन्होने नई दिल्ली मे एक सवाददाता सम्मेलन मे कई महत्वपूर्ण मुद्दो, कश्मीर से लेकर सोवियत सघ मे परिवर्तन, पर विस्तृत चर्चा की। दोनो विदेश मत्रियो ने अपनी वार्ता के स्तर को बढाने तथा सम्पर्कों मे तेजी लाने पर सहमति व्यक्त की।[66]

कियान-किचेन ने इस बात पर बल दिया कि सारे कूटनीतिक मुद्दो के समाधान के लिए आपसी समझदारी की आवश्यकता है। इसी से सीमा विवाद का भी हल ढूँढा जा सकता है। उन्होने चीन के पाकिस्तान के साथ मित्रवत सम्बन्ध, विशेषकर उसको सैनिक सामानो की आपूर्ति पर चीन का पक्ष लेते हुए कहा कि चीन के अन्य देशो के साथ सम्बन्ध भारत के साथ मित्रता स्थापित करने मे बाधक नहीं होगे।[67] कियान-किचेन ने इस बात से भी इंकार किया कि चीन, भारत तथा पाकिस्तान के

---

[64] रीजनल स्टडीज, 19 (1), 2000 (विटर 2001), पृ0 9

[65] सतीश कुमार (सम्पादित), 'डान आन इडिया-चाइना डेटेंन्टे', ईयर बुक आन इडियाज फारेन पालिसी, 1990-91 (नई दिल्ली टाटा मैक्ग्रा हिल पब्लिशिग कम्पनी, 1991) पृ0 57

[66] द हिन्दू, 24 मार्च 1990

[67] इडियन एक्सप्रेस, 24 मार्च 1990

बीच विवाद मे मध्यस्थता करेगा। उन्होने विश्वास व्यक्त किया कि भारत तथा पाकिस्तान अपनी समस्याओ को शातिपूर्ण ढग से आपसी बातचीत के द्वारा हल कर लेगे।[68]

30 अगस्त, 1990 से सयुक्त कार्यकारी दल की तीन दिवसीय दूसरी बैठक नई दिल्ली मे शुरू हुई। इस बैठक मे सीमा पर शाति एव स्थिरता बनाए रखने के लिए सस्थानीकृत व्यवस्था के अन्तर्गत सयुक्त सैन्य तत्र के गठन का निर्णय किया गया।[69]

10 नवम्बर, 1990 को चन्द्रशेखर के नेतृत्व मे काग्रेस के समर्थन से एक अल्पमतीय तथा अल्पकालिक सरकार का गठन हुआ। इसकी मात्र एक ही भूमिका थी तब तक बने रहना, जब तक काग्रेस अपना समर्थन वापस लेकर चुनावो मे भाग लेने का निर्णय न ले ले। 5 मार्च 1991 को काग्रेस ने अपना समर्थन वापस ले लिया। इसी के साथ चुनावों की घोषणा भी हो गयी।[70] चन्द्रशेखर ने आरम्भ मे ही यह बात दो-टूक शब्दो में कह दी थी कि वह अपना पहला कर्तव्य और सबसे बडा उत्तरदायित्व देश के क्षत-विक्षत शरीर पर मरहम लगाना समझते है। ऐसे मे उनसे विदेश नीति के सम्बन्धो मे किसी ठोस कदम की आशा भी नहीं की जा सकती है। बहुमत खोने के सकट की तलवार उनके सिर पर हमेशा लटकी रही। चन्द्रशेखर-सरकार का सत्तारूढ रहना काग्रेस के समर्थन पर आधारित था और इस कारण वैदेशिक मामलो मे दिशा-परिवर्तन की गुजाइश कम ही थी।

1991 में इराक द्वारा कुवैत पर कब्जा और उसके बाद अमेरिका द्वारा इराक पर सैनिक आक्रमण ने दुनिया को हिलाकर रख दिया था। इस मामले पर भी चन्द्रशेखर-सरकार की नीति काफी अस्पष्ट रही। इराक तथा कुवैत मे रह रहे भारतीय

---

[68] वी पी दत्त, 'इडिया-चाइना प्रोमाइज एड लिमिटेशन', इन इडियन फारेन पालिसी एजेडा फार द 21स्ट सेन्चुरी, 1998, नई दिल्ली, पृ0 232

[69] द हिन्दू, 2 सितम्बर 1990

[70] बिपिन चन्द्र, मृदुला मुखर्जी, आदित्य मुखर्जी, आजादी के बाद का भारत (1947-2000), 2002, पृ0 385

प्रवासियो को वापस लाने मे तत्कालीन सरकार ने सराहनीय कार्य-कुशलता दिखाई। खाडी युद्ध के दौरान कुछ अमेरिकी लडाकू विमानो को भारतीय हवाई अड्डो पर उतरने और ईंधन भरने की सुविधा चन्द्रशेखर-सरकार ने उपलब्ध कराई, जिसकी काग्रेस ने कटु आलोचना की। चन्द्रशेखर-सरकार ने स्पष्ट किया कि अमेरिकी विमानो को यह सुविधा राजीव गॉधी तथा वी पी सिह के कार्यकाल मे दी गई 'अनुमति' के अन्तर्गत ही 'रूटीन' रूप मे मिली थी। उन्होने यह स्पष्ट किया कि इन विमानो से कोई युद्धक सामग्री नहीं ले जाई जा रही थी।

इस दौरान भारत-चीन सम्बन्धो के सामान्यीकरण मे एक सकारात्मक विकास यह हुआ कि फरवरी 1991 मे भारत के विदेश मत्री वी सी शुक्ला, बीजिंग में चीन के विदेशमत्री कियान-किचेन मिले, जिसके परिणामस्वरूप बम्बई और शघाई मे वाणिज्य-दूतावास को पुन खोलने का फैसला किया गया।[71] इसके तत्काल बाद ही भारत के वाणिज्य-मत्री, सुब्रह्मण्यम स्वामी ने बीजिग की यात्रा की, जिसमे दोनो देश सीमा-व्यापार को शुरू करने पर सहमत हुए। [72]

मई 1991 मे पूर्व थल-सेनाध्यक्ष जनरल के सुदरजी ने चीन की दो सप्ताह की सद्भावना यात्रा की। इस दौरान उन्होने अनेक चीनी विशेषज्ञों तथा नेताओ से मुलाकात की।[73] चीन से वापस आने के बाद जनरल के सुन्दरजी ने लिखा कि चीन के अनुसार उसकी महाशक्ति बनने की कोई महत्वाकाक्षा नही है। चीन चाहता है कि दक्षिण के देश आपसी मतभेदों को सुलझा करके एक नई एवं न्यायोचित विश्व व्यवस्था के निर्माण के लिए एकजुट हो जाएँ।[74]

---

[71] द स्टेट्समैन, 2 फरवरी 1991 तथा बीजिग रिव्यू, वाल्यूम 34, न0 7-8, (18 फरवरी - 3 मार्च 1991), पृ0 5

[72] द स्टेट्समैन, 6 तथा 7 फरवरी 1991, तथा फार ईस्टर्न इकोनामिक रिव्यू, 28, फरवरी 1991 पृ0 17-18

[73] द हिन्दू, 22 मई, 1991

[74] जनरल (रिटायर्ड) के सुन्दरजी, इपरेटिव आफ 1990 ज न्यूक्लियर डेटरेन्स, द हिन्दू, 17 जुलाई 1991

अध्याय - 3

भारत-चीन सम्बन्ध : नरसिम्हा राव से गुजराल तक

भारत-चीन सम्बन्धो के सामान्यीकरण की जो शुरूआत राजीव गॉधी की एतिहासिक चीन-यात्रा से हुई थी, उसे नरसिम्हाराव के नेतृत्व मे गठित होने वाली नई सरकार ने जारी रखा। इस दौरान अन्तर्राष्ट्रीय व्यवस्था भी बडी तेजी के साथ बदल रही थी। शीत युद्ध की समाप्ति, पूर्वी यूरोप के देशो मे उदारवाद का आगमन तथा समाजवाद का ह्रास, वारसा समझौते की समाप्ति, सोवियत सघ का विघटन, एकीकृत जर्मनी का प्रादुर्भाव, यूरोपीय समुदाय का सामाजिक-आर्थिक-राजनीतिक एकीकरण, एक विशाल आर्थिक दृष्टि से उन्नत देश के रूप मे जापान का प्रादुर्भाव, आसियान (ASEAN) की बढती हुई शक्ति, पश्चिमी तथा केन्द्रीय एशिया मे बढता मुस्लिम कट्टरवाद, रूस तथा स्वतत्र राज्यो के राष्ट्रमंडल के अन्य सदस्यो की दुर्बलता, चीन, वियतनाम तथा क्यूबा जैसे साम्यवादी देशों का लगभग एकाकीपन, बचे हुए साम्यवादी शासनो को समाप्त करने के प्रयत्न, अमेरिका का एकमात्र महाशक्ति के रूप मे उभरना, अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धो मे एक-ध्रुवीयता का प्रादुर्भाव तथा एशिया, अफ्रीका एव लैटिन अमेरिका के विकासशील राष्ट्रो में आपसी सम्बन्धो को प्रगाढ बनाने की नई आवश्यकता ने भारत-चीन सम्बन्धो को निश्चित रूप से प्रभावित किया।

इस नए वातावरण मे चीन को अलग-थलग पड जाने, अमेरिका के वर्चस्व तथा अपने निर्यातो को बनाए रखने एव बढ़ाने की समस्या का डर था। मुस्लिम कट्टरवाद की बढती शक्ति को भी साम्यवादी चीन अच्छा नहीं समझता था, क्योंकि चीन में मुस्लिम जनसख्या का प्रतिशत बढ़ रहा था। मानव-अधिकारो के मुद्दे पर भी पश्चिमी देशो का चीन पर बहुत दबाव पड रहा था। चीन द्वारा अमेरिकी कानून सुपर-301 को टालने के लिए उठाये गये अप्रत्यक्ष कदम, अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धो के उत्तर-शीत युद्ध

काल, उत्तर-सोवियत सघ तथा उत्तर-साम्यवादी ब्लॉक के युग मे चीन की नीतियो पर पड रहे दबावो को प्रतिबिम्बित कर रहे थे।

जब उत्तर-शीत युद्ध युग मे वाशिगटन तथा नई-दिल्ली एक दूसरे के निकट आ रहे थे तो चीन आक्रामक नीति अपनाकर भारत को अनावश्यक रूप से अमेरिका के और अधिक निकट नहीं आने देना चाहता था। चीन एशिया मे, विशेषकर दक्षिण एशिया मे अमेरिकी शक्ति को सीमित रखना चाहता था क्योकि उसे अमेरिका द्वारा चीन मे साम्यवाद का तख्ता पलटने का डर था। वह यह भी नही चाहता था कि भारत तथा रूस के बीच शीत-युद्धोत्तर काल मे भी पहले जैसी मैत्री कायम रहे। भारत एक विकासशील शक्ति था तथा चीन इसकी और अधिक उपेक्षा नहीं कर सकता था। आर्थिक उदारवाद के इस युग मे चीन भारत के साथ व्यापारिक, औद्योगिक, सास्कृतिक तथा सैन्य सम्बन्ध स्थापित करके ही लाभान्वित हो सकता था। इन सभी कारको ने चीन को भारत के प्रति अपनी नीति मे और अधिक बदलाव लाने के लिए प्रेरित किया।

रूस तथा चीन के बीच सुधरते सम्बन्ध, चीन द्वारा अपने आतरिक सामाजिक-आर्थिक सरचना मे परिवर्तन हेतु "चार आधुनिकीकरणो" पर बल दिये जाने, शीत युद्ध का अन्त तथा सोवियत संघ के विघटन ने भारत के प्रति चीन की नीति को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित किया। सोवियत सघ के विघटन का भारत-चीन सम्बन्धो पर महत्वपूर्ण प्रभाव परिलक्षित होता हैं।[1]

पहला, सोवियत सघ के विघटन से भारत तथा चीन के बीच अच्छे सम्बन्ध कायम करने की महत्वपूर्ण बाधा दूर हो गयी। दूसरा, भारत के लिये विश्वसनीय एवं लाभदायक महाशक्ति के रूप मे सोवियत सघ के विघटित हो जाने से चीन के साथ सम्बन्धो को सुधारना आवश्यक हो गया। तीसरा, सोवियत सघ भारत का प्रमुख

---

[1] रमेश ठाकुर, द पालिटिक्स एड इकोनामिक्स आफ इडियाज फारेन पालिसी, नई दिल्ली, 1994, पृ0 84

निर्यातक देश था। भारत के कुल निर्यात का पॉचवा हिस्सा सोवियत सघ को निर्यात किया जाता था, अत भारत के लिए नये व्यापार-सहयोगी की तलाश आवश्यक हो गयी। चौथा, एक-ध्रुवीय विश्व मे अमेरिका का आक्रामक रूप मे अभ्युदय तथा अन्तर्राष्ट्रीय एव एशियाई मामलो मे उसके बढते प्रभुत्व को रोकना भारत तथा चीन दोनो के लिए समान रूप से महत्वपूर्ण था।

इसी समय चीन की राजनीति मे उभरने वाली चुनौतियो ने भी उसे अपनी विदेश नीति को पुन समायोजित करने के लिए विवश किया। चीन के सिक्याग प्रान्त मे मुस्लिम कट्टरवाद की बढती प्रवृत्तियॉ तथा 'तिब्बत की आजादी' के आन्दोलन के पुन उभर कर आने से चीन काफी चिन्तित था। चीन की आन्तरिक राजनीतिक एव आर्थिक परिस्थितियो ने चीन को अपने चारो ओर राजनीतिक स्थिरता एव शान्ति का वातावरण बनाने के लिए विवश कर दिया। एक शान्त एव राजनीतिक रूप से स्थिर वातावरण में ही चीन के उद्देश्यो की प्राप्ति सम्भव थी। अत उसने अपनी विदेश नीति मे अपने सभी पडोसी देशो के साथ शातिपूर्ण एव स्थिर सम्बन्ध स्थापित करने की इच्छा व्यक्त की। भारत के साथ सम्बन्धो को सुधारने का प्रयास भी इसी दिशा मे चीन द्वारा उठाया गया एक कदम था।[2]

अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धो के उत्तर-शीत युद्ध युग तथा उत्तर-सोवियत सघ युग मे साम्यवादी चीन के पास उपलब्ध सीमित विकल्पो तथा पूर्व सोवियत सघ के साथ अपनी पुरानी मित्रता के युग के अन्त के तत्वो को पूरी तरह समझते हुए भारत ने चीन के साथ अपने सम्बन्धो को बढाने की प्रक्रिया को तीव्र करने का निर्णय किया। सोवियत सघ के विघटन के बाद भारत अब उस पर और अधिक निर्भर नहीं रह सकता था बल्कि उसे तो नई विश्व-व्यवस्था मे अपना स्थान बनाना था। वास्तव में, सोवियत सघ

---

[2] जे एन दीक्षित, माई साउथ ब्लाक ईयर्स मेमोरीज ऑफ ए फारेन सेक्रेटरी, नई-दिल्ली, 1996, पृ0 232

के साथ गहरी मित्रता भी भारत तथा चीन के बीच एक बाधा थी। किन्तु सोवियत सघ के विघटन के बाद भारत का अमेरिका पर निर्भर रहना तथा उसी के साथ बधे रहना भी भाारत के हित मे नहीं था। इसलिए भारत द्वारा अपने पडोसियो, विशेषकर चीन के साथ सम्बन्ध सुधारना काफी महत्वपूर्ण हो गया था। भारत के लिए यह आवश्यक हो गया था कि वह चीन द्वारा पाकिस्तान को दिये जा रहे समर्थन को आशिक रूप से निष्प्रभावित करे तथा एशिया मे अमेरिका के प्रभुत्व को सीमित रखने के लिए कार्य करे। मानवीय अधिकारो तथा परमाणु-अप्रसार सन्धि पर पश्चिमी देशो, विशेषकर अमेरिका के दबाव को जहॉ तक हो सके निष्प्रभावी करने की आवश्यकता ने भी चीन, जो स्वयं भी ऐसे दबावो के पक्ष मे नहीं था, के साथ सीमा-विवाद को सुलझाने तथा एक ऐसे समय मे हिमालय की सीमा पर तनाव पैदा न होने देने, जब भारत की सेना का एक भाग पजाब, कश्मीर तथा उत्तर-पूर्व मे कानून तथा व्यवस्था बनाए रखने मे व्यस्त था, की आवश्यकता ने भी भारत को चीन के साथ अच्छे सम्बन्धो की स्थापना के लिए प्रेरित किया।

दिसम्बर, 1988 मे राजीव गॉधी द्वारा की गई ऐतिहासिक चीन-यात्रा के ठीक तीन वर्ष बाद चीन के प्रधानमत्री ली-पेग नई दिल्ली की छ. दिवसीय (11दिसम्बर से 16 दिसम्बर, 1991) यात्रा पर भारत आये।[3] 31 वर्षों के लम्बे अन्तराल के बाद किसी चीनी प्रधानमत्री की यह पहली भारत-यात्रा थी। अपनी भारत-यात्रा की पूर्व सध्या पर बीजिग मे एक भारतीय सवाददाता से ली-पेंग ने कहा कि सीमा-विवाद के समाधान होने तक भारत तथा चीन दोनो को नियंत्रण रेखा पर शाति बनाए रखनी चाहिए।[4] इस यात्रा

---

[3] एनुअल रिपोर्ट मिनिस्ट्री आफ एक्सटर्नल अफेयर्स, 1991-92, नई-दिल्ली, पृ0 17
[4] द हिन्दुस्तान टाइम्स, 7 दिसम्बर, 1991

के दौरान दोनो प्रधानमत्रियो ने आपसी विचार-विमर्श मे शीत-युद्धोत्तर विश्व की चुनौतियो का सामना करने के लिए आपसी सहयोग को बढाने पर बल दिया।[5]

दोनो प्रधानमत्रियो ने नई विश्व व्यवस्था मे 'विश्व शक्तियो के गम्भीर असतुलन' पर चिन्ता व्यक्त करते हुए इसे विकासशील देशो की राजनीतिक तथा आर्थिक समस्याओ के समाधान मे एक बडी बाधा बताया। दोनों प्रधानमत्रियो ने 'अन्तर्राष्ट्रीय गुटतत्र' के प्रति कडा रोष प्रकट किया तथा कहा, "किसी भी देश या देशो को अन्तर्राष्ट्रीय मामलो मे चालाकी अथवा 'शक्ति की राजनीति करने की इजाजत नहीं दी जानी चाहिए"[6] दोनो नेताओ ने इस बात पर सहमति व्यक्त की कि नई विश्व-व्यवस्था पचशील के सिद्धान्तों पर आधारित होनी चाहिए।

भारतीय ससद को सम्बोधित करते हुए प्रधानमत्री नरसिम्हा राव ने कहा, "मै और प्रधानमत्री ली-पेग, दोनो इस बात पर सहमत है कि नई विश्वव्यवस्था मे राष्ट्रो के बीच सम्बन्धो को आधार पचशील के वे सिद्धात ही होने चाहिए जिनका प्रतिपादन भारत और चीन ने 1954 मे किया था। अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धो मे राज्यो के आकार, शक्ति आदि से निरपेक्ष होकर सभी राष्ट्रो को अतर्राष्ट्रीय समुदाय का एक सदस्य मानते हुए समानता को बढावा दिया जाना चाहिए। अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धो मे बिवादो के समाधान हेतु 'शक्ति' का प्रयोग नहीं होना चाहिए। निशस्त्रीकरण को बढावा दिया जाना चाहिए। दक्षिण-दक्षिण सहयोग को बढाने के साथ ही सयुक्त राष्ट्र सघ की भूमिका को भी इस सन्दर्भ मे और मजबूत किया जाना चाहिए।"[7]

चीन के प्रधानमंत्री ली-पेग ने प्रधानमंत्री नरसिम्हा राव द्वारा दिये भोज के अवसर पर कहा, "कम से कम हम कष्टकारी सीमा-विवाद को हल करने की प्रक्रिया

---

[5] एशियन रिकार्डर, वाल्यूम xxxviii , 1992, पृ0 22136
[6] वही, पृ0 22136
[7] पी0वी0 नरसिम्हाराव, सेलेक्टेड स्पीचेज, वाल्यूम I, 1991-92, नई-दिल्ली, पृ0 350-351

शुरू कर सकते है। मुझे पक्का विश्वास है कि परस्पर विवेक तथा समझौते की भावना से तथा आपसी समझौते की भावना के द्वारा किये गये वार्तालाप से हम इसका हल ढूढ सकते है। दोनो ही देशो को द्विपक्षीय सम्बन्धो को आगे बढाने के रास्ते मे सीमा-विवाद को रूकावट नहीं बनने देना चाहिए।"[8]

सीमा सम्बन्धी महत्वपूर्ण प्रश्न पर, दोनो प्रधानमत्रियो ने सयुक्त कार्यकारी दल द्वारा किये जा रहे प्रयासो को तेज करने की आवश्यकता पर बल दिया, जिससे सीमा-विवाद का शीघ्र, उचित और परस्पर स्वीकार्य समाधान ढूँढा जा सके। जब तक कोई अन्तिम समाधान ढूँढ न लिया जाय तब तक सीमावर्ती क्षेत्रो को तनावमुक्त रखा जाए। दोनो देशो ने इस बात पर सहमति प्रकट की कि सीमा-सुरक्षा कार्मिको के बीच नियमित रूप से बैठको का आयोजन किया जाना चाहिए जिससे 'विश्वास उत्पन्न करने वाले उपाय' ढूँढे जा सके।[9] दोनो नेताओं ने इस बात पर भी सहमति व्यक्त की कि उत्तर-पूर्व के वॉग-डुँग क्षेत्र की अग्रिम सीमा-चौकियो को, जहॉ सेनाएँ एकदम आमने-सामने है, पीछे हटाने के लिए विशेष प्रयास करने चाहिए।[10]

भारत तथा चीन, दोनो इस बात पर सहमत हुए कि वास्तविक नियत्रण रेखा के जिन क्षेत्रो के बारे मे दोनो देशो के बीच मतभेद है, उन क्षेत्रो को रेखाकित किया जाना चाहिए तथा इसके हल के लिए संयुक्त कार्यकारी दल की बैठको में दोनों देशों की सेनाओ के प्रतिनिधिमंडलो से तकनीकी मामलों के बारे मे सहायता ली जानी चाहिए।[11]

इस यात्रा के दौरान प्रधानमत्री नरसिम्हा राव ने घोषणा की, "मेरी सरकार सीमा-प्रश्न का ऐसा न्याय-सगत तथा तर्क-संगत समाधान खोजने के लिए वचनबद्ध है

---

[8] बीजिग रिव्यू, वाल्यूम 34, न 51, 23-29 दिसम्बर, 1991, पृ0 4

[9] एशियन रिकार्डर, वाल्यूम XXXVIII, 1992, पृ0 22137

[10] जे एन दीक्षित, माई साउथ ब्लाक ईयर्स मेमोरीज ऑफ ए फारेन सेक्रेटरी, नई-दिल्ली, 1996, पृ0 233

[11] जे एन दीक्षित, वही, पृ0 233

जो प्रत्येक राष्ट्र की प्रतिष्ठा तथा आत्म-सम्मान के अनुरूप हो। दोनो ही देश शातिपूर्वक इस तरह का कोई समाधान निकाल सकते है इसके लिए हमारा दृष्टिकोण निश्चित रूप से सकारात्मक तथा व्यावहारिक होना चाहिए जिसमे ऐतिहासिक तथ्यो एव ऑकडो, परम्पराओ एव रीतियो के साथ ही वर्तमान समय की वास्तविकताओ का भी ध्यान रखना आवश्यक होगा। इस प्रकार से हम दोनो राष्ट्रो की भावनाओ एव हितो के अनुरूप कोई समाधान ढूँढ सकते है।"[12]

द्विपक्षीय सम्बन्धो को बढाने तथा सुदृढ करने हेतु भारत तथा चीन ने समानता तथा परस्पर लाभ के आधार पर सीमा-व्यापार पुन शुरू करने, 29 वर्षों तक बन्द रहने के बाद शघाई तथा बम्बई मे वाणिज्य-दूतावास को पुन खोलने तथा अन्तरिक्ष अनुसंधान, तकनीक तथा इसके प्रयोग मे सहयोग करने से सम्बन्धित तीन समझौतो पर हस्ताक्षर किये।[13]

दोनो देशो के बीच आर्थिक एव व्यापारिक सम्बन्धों को बढ़ाने हेतु दोनो देशो के प्रमुख औद्योगिक एवं वाणिज्यिक केन्द्रो मे वाणिज्य दूतावास खोलने के लिए किए गए समझौते पर भारत की ओर से तत्कालीन विदेशमंत्री माधव सिह सोलकी तथा चीन के विदेशमंत्री कियान-किचेन ने हस्ताक्षर किए। इस वाणिज्य-सधि मे वाणिज्य-दूतावास की स्थापना परस्पर परामर्श से शीघ्र किये जाने तथा वाणिज्य दूतावासो मे काम करने वाले कर्मचारियो के विशेषाधिकारो एव उन्मुक्तियो का स्पष्ट रूप से उल्लेख किया गया था।[14]

सीमा-व्यापार के पुन शुरू करने के मसौदे पर भारत के तत्कालीन वाणिज्य राज्य मंत्री पी0 चिदम्बरम तथा चीन के विदेश व्यापार तथा आर्थिक सम्बन्धों के मंत्री ली-लैक्विग ने हस्ताक्षर किए। इस मसौदे को 1 जनवरी, 1992 से लागू होना था। इस व्यापार-मसौदे से दोनो देशो के बीच व्यापार में और अधिक वृद्धि तथा विविधता लाने

---

[12] पी वी नरसिम्हाराव, सेलेक्टेड स्पीचेज, वाल्यूम I, नई-दिल्ली, 1991-92, पृ0 344

[13] एनुअल रिपोर्ट, मिनिस्ट्री आफ एक्सटर्नल अफेयर्स, 1991-92, नई-दिल्ली, पृ0 17

[14] फारेन अफेयर्स रिकार्ड वाल्यूम XXXVIII, न. 12, 1991, नई-दिल्ली, पृ0 242

का प्रयास किया गया था। इसके अन्तर्गत चीन को भारत से लौह-अयस्क, क्रोम-अयस्क, चाय, तम्बाकू, विभिन्न रसायन, इजीनियरिग उत्पाद, हीरे-जवाहरात तथा सिन्थेटिक वस्त्र एव धागे आदि का आयात करना था, जबकि भारत को चीन से अखबारी कागज, कच्चा रेशम तथा रेशम का धागा, कुछ कृषि उत्पादन की वस्तुएँ, धातु तथा खनिज एव इसके साथ-साथ कोकिग-कोयला, रसायन तथा पेट्रोलियम उत्पादों का आयात करना था।[15]

सीमा-व्यापार को पुन शुरु करने वाले विवरण-पत्र, जिसकी अवधि दो वर्ष थी, मे यह उल्लेख था कि वर्तमान मे चीन के स्वायत्तशासी क्षेत्र तिब्बत के पुलान तथा उत्तर-प्रदेश के पिथौरागढ जिले के लोगो के बीच व्यापार तथा वस्तुओ का आदान-प्रदान किया जायेगा तथा समय-समय पर आपसी सहमति से दूसरे क्षेत्रो मे भी सीमा-व्यापार को शुरू किया जाएगा।[16] चीन, भारत के साथ व्यापार सम्बन्धो को त्वरित गति से बढाने तथा इसके विविधीकरण के लिए सहमत हो गया और उसने वर्तमान मे भारत के प्रतिकूल भुगतान-सतुलन को ठीक करने की इच्छा भी व्यक्त की। दोनो ही देश आपस मे व्यापार को प्रोत्साहित करने के पक्ष मे थे। उन्होने विभिन्न क्षेत्रो मे प्रतिनिधिमण्डलो के आदान-प्रदान तथा व्यापारियो एव व्यापारिक सगठनों की आपसी यात्राओ को प्रोत्साहित करने के साथ ही विभिन्न प्रकार के व्यापार तथा सहयोग की सम्भावनाओ को तलाशना भी स्वीकार किया।

अतरिक्ष अनुसधान, तकनीक तथा इसके प्रयोग के क्षेत्र मे द्विपक्षीय सहयोग के लिए किए गए समझौते पर भारत के अन्तरिक्ष सचिव, यू0 आर0 राव तथा चीन के वायु-अन्तरिक्ष तथा विमान-सेवा उपमत्री लियो-जीयुआन ने हस्ताक्षर किए। यह समझौता भारत के अन्तरिक्ष विभाग तथा चीन के वायु-अन्तरिक्ष मत्रालय के बीच व्यापक उच्चस्तरीय विचार-विमर्श के उपरान्त किया गया था। इसमे कहा गया था कि भारत

---

[15] एशियन रिकार्डर, वाल्यूम XXXVIII, 1992, पृ0 22136
[16] वही, पृ0 22136

तथा चीन, दो सबसे बडे विकासशील देश होने के कारण आपसी सहयोग से अन्तरिक्ष जैसी आधुनिकतम तकनीक के विकास से अधिक से अधिक लाभ उठा सकते है, जिसमे दोनो ही देशो ने हाल के वर्षों मे अद्वितीय उन्नति की है।

तिब्बत के सन्दर्भ मे, प्रधानमत्री राव ने ली-पेग को बताया कि भारत की नीति मे कोई परिवर्तन नहीं हुआ है और वह अब भी तिब्बत को चीन का एक स्वायत्तशासी क्षेत्र मानता है। भारत चाहता है कि तिब्बत के धर्मगुरू दलाई लामा तिब्बत के भविष्य के सन्दर्भ मे चीनी अधिकारियो से बातचीत करे।[17] प्रधानमत्री ली-पेग ने भी दलाई-लामा से बातचीत की इच्छा जाहिर करते हुए कहा कि बातचीत मे कठिनाई यही है कि तिब्बत चीन से स्वतत्र होना चाहता है, जिसके लिए चीन तैयार नहीं है।[18]

जब प्रधानमत्री राव ने ली-पेग को कश्मीर की वास्तविक स्थिति से अवगत कराते हुए उसे बिगाडने मे पाकिस्तान की भूमिका की ओर ध्यान दिलाया, तब ली-पेग ने नपी-तुली तथा पक्षपात रहित प्रतिक्रिया व्यक्त की। न तो उन्होने पाकिस्तान के साथ चीन के घनिष्ठ सम्बन्धो की ओर इशारा किया और न ही उन्होनें कश्मीर मुद्दे पर पाकिस्तान का पक्ष लिया, जैसा कि चीन अक्सर करता रहा था। ली-पेग ने कश्मीर मुद्दे को दुर्भाग्यपूर्ण बताते हुए उसे भारत तथा पाकिस्तान के औपनिवेशिक अतीत का परिणाम बताया। उन्होने कहा कि चीन चाहता है कि भारत तथा पाकिस्तान कश्मीर मुद्दे का शातिपूर्ण द्विपक्षीय वार्ता के जरिए कोई ऐसा समाधान निकाले जो दोनो देशो को स्वीकार्य होने के साथ ही जम्मू तथा कश्मीर के लोगो की भावनाओं के भी अनुरूप हो। प्रधानमत्री ली-पेग ने स्पष्ट किया कि चीन इस पक्ष मे कदापि नहीं है कि कश्मीर

---

[17] जे एन दीक्षित, माई साउथ ब्लाक ईयर्स मेमोरीज आफ ए फारेन सेक्रेटरी, नई-दिल्ली, 1996, पृ0 234

[18] वही, पृ0 234

एक अलग एव स्वतत्र देश बने।[19] प्रधानमत्री ली-पेग की कश्मीर के सन्दर्भ मे की गई यह टिप्पणी 1960 के दशक से लेकर 1980 के दशक के पूर्व तक के चीन के दृष्टिकोण मे आये परिवर्तन की ओर सकेत करती है।

चीन द्वारा पाकिस्तान तथा म्यॉमार को की जा रही हथियार एव सैनिक साजो-सामान की आपूर्ति से भारत का चिन्तित होना स्वाभाविक था, क्योकि इससे भारत की सुरक्षा को खतरा होने के साथ ही इस पूरे क्षेत्र मे शस्त्रो की होड को भी बढावा मिलता था। प्रधानमत्री ली-पेंग की यात्रा के दौरान ही भारत के विदेशमत्री माधव सिह सोलकी ने जब इस मुद्दे को उठाया तो चीन के विदेशमत्री कियान-किचेन ने आश्वस्त किया कि चीन हथियारो की होड अथवा क्षेत्रीय सतुलन को बिगाडने का इच्छुक नही है, बल्कि वह स्वय इस पूरे क्षेत्र की शांति एव स्थिरता को कायम रखने के प्रति चितित है। उन्होने चीन की इस बात को दोहराया कि हथियारो की आपूर्ति तीन कारको से प्रेरित होती है पहला, खरीदने वाले देश की औचित्यपूर्ण सुरक्षा आवश्यकताओ से, दूसरा, क्षेत्रीय शांति एव स्थिरता को कायम रखने के उद्देश्य से, तथा तीसरा, दूसरे राष्ट्रो के आंतरिक मामलो मे कोई राजनीतिक हस्तक्षेप न हो सके।[20]

भारत ने पाकिस्तान द्वारा पजाब तथा जम्मू-कश्मीर मे आतकवादी गतितिधियो को दिये जाने वाले निरन्तर मदद की ओर जब चीन का ध्यान आकृष्ट किया तब चीन के प्रधानमत्री ने कहा कि चीन उपयुक्त अवसर आने पर भारत के दृष्टिकोण से पाकिस्तान को अवगत करा देगा। उन्होने यह भी कहा कि चीन हमेशा से आतकवाद का विरोध करता है, क्योकि इससे किसी समस्या को हल करने मे मदद नही मिलती बल्कि इससे समस्याये और बढ जाती है।[21]

---

[19] वही, पृ0 234-235

[20] एशियन रिकार्डर, 1992, वाल्यूम, XXXVIII, पृ0 22137

[21] एनुअल रिपोर्ट, मिनिस्ट्री आफ एक्सटर्नल अफेयर्स, 1991-92, नई-दिल्ली, पृ0 18

प्रधानमत्री ली-पेग की भारत-यात्रा के अन्त मे एक सयुक्त विज्ञप्ति जारी की गई जिसमे कहा गया कि दोनो देश यह विश्वास करते है कि सीमा-विवाद पर सयुक्त कार्यकारी दल की अब तक हुई बैठको से इस समस्या के हल के लिए आपसी समझदारी बढी है। दोनो देश यह मानते है कि सीमा-विवाद के शीघ्र समाधान के लिए सयुक्त कार्यकारी दल अपने काम मे तेजी लाए तथा यह भी कि सीमा क्षेत्रो मे सैन्य अधिकारियो के बीच समय-समय पर बैठके नियमित आधार पर होनी चाहिए।[22] भारत ने इस बात को दोहराया कि तिब्बत चीन का अटूट अग है तथा भारत तिब्बतियो को अपनी भूमि से चीन-विरोधी गतिविधियों को सचालित करने की अनुमति नही देगा। यद्यपि विज्ञप्ति मे कश्मीर के सम्बन्ध मे कोई प्रत्यक्ष उल्लेख नहीं था तथापि चीन ने दक्षिण-एशिया क्षेत्र के देशो के बीच मैत्रीपूर्ण साधनो एव शान्तिपूर्ण ढंग से सभी द्विपक्षीय समस्याओ को सुलझाने का समर्थन किया। सयुक्त विज्ञप्ति मे कहा गया कि दोनो ही देश इस बात मे विश्वास करते है कि दक्षिण-एशिया मे शांति तथा स्थिरता बनाये रखना इस क्षेत्र के लोगो के हित मे तथा विश्व-शांति एव स्थिरता के लिए सहायक होगा। दोनो देशो ने कहा कि भारत-चीन सम्बन्धो में सुधार तथा विकास प्रत्यक्ष रूप से किसी तीसरे देश के विरूद्ध नहीं है और न ही यह इन देशो के दूसरे देशों के साथ मैत्रीपूर्ण सम्बन्धों को प्रतिकूल रूप से प्रभावित करेगे। व्यापार, संस्कृति, विज्ञान तथा तकनीक के क्षेत्रो मे द्विपक्षीय सहयोग को देखते हुए दोनों देशो ने व्यापार सहित आर्थिक क्षेत्र की विविधता तथा इसमें गतिशीलता लाने के लिए सयुक्त प्रयत्नों की आवश्यकता पर बल दिया। दोनो ही देशो ने स्वास्थ्य, शिक्षा, ऊर्जा तथा कृषि के क्षेत्रों मे सहयोग करने हेतु सक्रिय रूप से जुट जाने का निर्णय लिया। इस संयुक्त विज्ञप्ति मे भारत मे एक चीन-उत्सव कराने

---

[22] बीजिग रिव्यू, वाल्यूम 34, न 52, (30 दिसम्बर, 1991-5 जनवरी, 1992), पृ0 11

की भी स्वीकृति दी गई। दोनो देशो ने पचशील मे आस्था प्रकट करते हुए शस्त्रो की होड रोकने तथा नि शस्त्रीकरण के लिए प्रयत्न करने का आह्वान किया। उत्तर तथा दक्षिण के बीच बढते आर्थिक अन्तर को कम करने की आवश्यकता पर बल देते हुए यह विचार दिया गया कि सार्वभौमिक आर्थिक, सामाजिक, जनाकिकीय तथा पर्यावरण की समस्याओं को इस प्रकार से सुलझाया जाना चाहिए कि समस्त विश्व को उसका लाभ मिले। आपस मे एक-दूसरे को और अधिक समझने के लिए, द्विपक्षीय मैत्री को और विकसित करने के लिए तथा सभी क्षेत्रो मे दृढ सहयोग करने के लिए भारत तथा चीन ने अपने नेताओ की एक-दूसरे के देश मे नियमित यात्रा का समर्थन किया।[23]

प्रधानमत्री ली-पेग की यात्रा के परिणामो पर विचार किया जाय तो यह स्पष्ट होता है कि इस दौरान हुई वार्ताओ में भारत ने चीन को अधिक रियायते प्रदान की जबकि इसके बदले मे वह चीन से अपेक्षाकृत काफी कम हासिल कर सका।[24] चीन ने भारत से तिब्बत को चीन का एक स्वायत्त क्षेत्र होने की पुष्टि करा ली, वह भी ऐसे समय मे जबकि पश्चिम के देश तिब्बत मे मानवाधिकारो के गम्भीर उल्लघन के लिए चीन की कटु आलोचना कर रहे थे। भारत भी चीन मे 1989 मे हुई 'तियानमेन नरसहार' की बढती आलोचना के परिप्रेक्ष्य में चीन पर कश्मीर के सम्बन्ध में तिब्बत जैसा ही आश्वासन लेने के लिए दबाव डाल सकता था, परन्तु भारत इस सम्बन्ध मे चीन के केवल इसी कथन से संतुष्ट रह गया कि 'सभी द्विपक्षीय मुद्दे शातिपूर्ण ढग से आपसी बातचीत के आधार पर सुलझाये जाने चाहिए।' दोनो देशो द्वारा जारी सयुक्त विज्ञप्ति मे तिब्बतियो द्वारा भारत से चीन-विरोधी गतिविधियों को सचालित करने तथा उनके चीन को तोडने के इस कुत्सित प्रयास के खिलाफ चेतावनी भी दी गयी, वहीं

---

[23] बीजिग रिव्यू, वाल्यूम 34, न 52, (30 दिसम्बर, 1991-5 जनवरी, 1992), पृ0 12

[24] सुमीत गागुली ''ज्वाइट बेनिफिशियरीज'' फॉर इस्टर्न इकोनॉमिक रिव्यू 30 जनवरी 1992 पृ24

दूसरी ओर कश्मीर घाटी मे पाकिस्तान द्वारा प्रायोजित आतकवाद की ओर न तो सकेत किया गया और न ही स्पष्ट रूप से कश्मीर का उल्लेख ही किया गया।

मानवाधिकार के मुद्दे पर चीन की अन्तर्राष्ट्रीय समुदाय द्वारा गम्भीर आलोचना किए जाने के बावजूद भी भारत ने इस मुद्दे पर चीन का साथ दिया। सयुक्त विज्ञप्ति मे कहा गया कि विकासशील देशो के लिए आजीविका एव विकास ही मूलभूत मानव-अधिकार है। यद्यपि भारतीय विदेशमंत्री ने यह स्पष्ट किया कि मानव-अधिकार का मुद्दा भारत के लिए कोई समस्या नही है, क्योकि भारत की राजनीतिक व्यवस्था खुली है तथा यहॉ न्यायपालिका स्वतत्र है।[25] किन्तु तिब्बती शरणार्थियो द्वारा तिब्बत की आजादी के लिए किए जा रहे प्रदर्शन के भारतीय पुलिस द्वारा बर्बरतापूर्वक दमन से उनके इस कथन की विश्वसनीयता काफी कम हो जाती है।

भारत द्वारा 'अन्तर्राष्ट्रीय गुटतत्र' के विरूद्ध मुहिम मे तथा अन्तर्राष्ट्रीय मामलो मे 'शक्ति-राजनीति' को लागू करने के विरोध मे चीन के साथ सयुक्त भागीदारी करना अमेरिका का निरूद्देश्य ही अपमान करने के समान है।[26] चीन द्वारा पाकिस्तान को मिसाइल तथा नाभिकीय तकनीकी की आपूर्ति पर भारत के विदेशमंत्री माधव सिह सोलकी ने जब अपनी चिन्ता से अवगत कराया तो चीन के विदेशमत्री कियान-किचेन ने अत्यत शात एव उदासीन प्रतिक्रिया व्यक्त की।[27] इसके अलावा पाकिस्तान द्वारा दक्षिण-एशिया को 'नाभिकीय मुक्त क्षेत्र' बनाने के प्रस्ताव पर भारत द्वारा सन्देह प्रकट करने के बावजूद प्रधानमत्री ली-पेग ने एक संवाददाता सम्मेलन मे स्पष्ट रूप से कहा

---

[25] रीता मनचन्दा, 'चाइना मेक्स डिप्लोमेटिक गेन्स एट इडियाज एक्सपेन्स   अनइक्वल एक्सचेज' फार ईस्टर्न इकोनोमिक रिव्यू, 26 दिसम्बर 1991, पृ0 10

[26] सुमीत गागुली, वही पृ0 24

[27] दस्टेट्समैन, 15 दिसम्बर, 1991

कि चीन, दक्षिण-एशिया सहित पूरे विश्व को नाभिकीय मुक्त क्षेत्र बनाने का समर्थन करता है।[28]

प्रधानमत्री ली-पेग की यात्रा के दौरान भारत-सरकार की नीतियो की आलोचना कुछ सीमा तक ही सही है क्योकि शीत-युद्धोत्तर विश्व की परिस्थितियों को ध्यान मे रखना भारत के लिए अत्यन्त आवश्यक है। सोवियत सघ के विघटन के बाद चीन, पाकिस्तान तथा अमेरिका के सामरिक गठजोड का सामना भारत अब अकेले नही कर सकता और अब ऐसा कोई देश नहीं है जो सोवियत सघ द्वारा भारत को दी गई राजनीतिक, कूटनीतिक तथा सामरिक सहायता का स्थान ले सके। अत बदली हुई परिस्थितियो मे भारत के लिए यह आवश्यक हो जाता है कि वह अपने विशाल सहयोगी चीन के साथ मित्रतापूर्ण सम्बन्ध कायम करे।[29]

ली-पेग ने चीन जाने से पूर्व राष्ट्रपति आर.वेंकटरामन तथा प्रधानमत्री नरसिम्हा राव को चीन आने का निमत्रण दिया, जिसे स्वीकार कर लिया गया। ली-पेग की भारत यात्रा को दोनो देशो के बीच सम्बन्ध सुधारने की दिशा में "एक मील का पत्थर" कहा जा सकता है। फरवरी 1992 मे नई दिल्ली में सयुक्त कार्यकारी दल की चौथी बैठक हुई। यह बैठक 'सन्तोषजनक, अर्थपूर्ण एवं सकारात्मक' माहौल मे हुई।[30]

तिब्बत की आजादी के जोरदार समर्थक माने जाने वाले जार्ज फर्नांडीज ने प्रधानमत्री राव को 3 दिसम्बर 1991 को लिखे एक खुले पत्र मे चार मुद्दो का उल्लेख किया, जिनको उनके अनुसार ली-पेग की भारत-यात्रा के दौरान होने वाली वार्ता मे उठाया जाना चाहिए। पहला, तिब्बत को शांति-क्षेत्र मे परिवर्तित करने का दलाई लामा

---

[28] बीजिग रिव्यू, वाल्यूम, 34 न 52, (30 दिसम्बर 1991-5 जनवरी 1992), पृ0 5
[29] अभिजीत घोष, 'डायनामिक्स आफ इडिया - चाइना नार्मलाइजेशन,' चाइना रिपोर्ट 31 2, (अप्रेल-जून 1995), पृ0 261
[30] शिन्हुआ, बीजिग, 26 मार्च, 1992

का प्रस्ताव , दूसरा, दलाई लामा द्वारा तिब्बत जाने एव वहॉ के लोगो के साथ रहने की उनकी इच्छा, तीसरा, चीन-सरकार द्वारा तिब्बत मे किया जा रहा मानव अधिकारो का गम्भीर उल्लघन और चौथा, सारे तिब्बती कैदियो की रिहाई। जार्ज फर्नांडीज का विचार था कि चीन के साथ बातचीत मे लेने और देने की किसी भी नीति से दृढतापूर्वक बचा जाना चाहिए। सीमा-विवाद के सन्दर्भ मे उन्होने कहा कि चीन को दो-टूक शब्दो मे कहना होगा कि वह 1950 से अथवा 1962 के युद्ध मे जिस भारतीय भूमि पर जबरन कब्जा किए हुए है, उसे वह खाली कर दे। चीन द्वारा तिब्बत पर किये आक्रमण को 'शिशु-हत्या' की संज्ञा देते हुए उन्होने तिब्बत को राजनीतिक या सास्कृतिक रूप से चीन का हिस्सा मानने से इकार किया। तिब्बत की वर्तमान स्थिति के लिए भारत को जिम्मेदार ठहराते हुये जार्ज फर्नांडीज ने भारत-सरकार से कहा कि तिब्बती लोगो की मदद करना भारत-सरकार का कर्तव्य है। उनके अनुसार 'एक स्वतत्र तिब्बत उत्तर के मोर्चे पर हमारी सुरक्षा का जमानतदार है।[31]

ली-पेग की भारत-यात्रा के बाद फरवरी 1992 में भारत की कार्मिक, लोक शिकायत एव पेशन राज्यमंत्री मारग्रेट अल्वा ने चीन की यात्रा की। चीन के उप प्रधानमत्री वू-जेकियान ने मारग्रेट अल्वा को बताया कि चीन, भारत के साथ प्रबन्धन, प्रशासन एवं प्रशिक्षण के क्षेत्र में भागीदारी का इच्छुक है।[32]

भारत के तत्कालीन राष्ट्रपति श्री आर.वेंकटरामन ने 18 से 23 मई 1992 तक चीन की यात्रा की। चीन के साथ कूटनीतिक सम्बन्धो की स्थापना के बाद, वेकटरामन पहले भारतीय राष्ट्राध्यक्ष थे, जिन्होंने चीन की यात्रा की।[33] राष्ट्रपति वेकटरामन ने चीन जाने से पहले प्रधानमत्री राव से व्यापक विचार-विमर्श किया। श्री वेंकट रामन की चीन

---

[31] मेनस्ट्रीम, 14 दिसम्बर 1991
[32] द स्टेट्समैन, 23 फरवरी 1992
[33] एनुअल रिपोर्ट, मिनिस्ट्री आफ एक्सटर्नल अफेयर्स, 1992-93, नई दिल्ली पृ0 34

यात्रा ने यह सदेश दिया कि भारत चीन के साथ महत्वपूर्ण ढग से निरन्तर सम्बन्ध बनाने के लिए उत्साहित है।[34]

श्री वेकटरामन की यात्रा के दौरान दोनो पक्षो ने सीमा-विवाद की जटिलता को देखते हुए इसे शातिपूर्ण वार्ताओ के जरिए हल करने की अपनी दृढ इच्छा को दोहराया। दोनो पक्षो ने इस मुद्दे पर अपने विचारो मे एक गुणात्मक परिवर्तन करते हुए कहा कि सीमा-विवाद को हल करने के लिए एक समय-चक्र पर बल नहीं दिया जाना चाहिए। यह इस बात की सार्वजनिक स्वीकारोक्ति थी कि आपसी विश्वास कायम किये बिना इस विवाद का हल नहीं निकाला जा सकता है। राष्ट्रपति वेकटरामन तथा चीनी नेताओ के बीच हुई बातचीत से भारत के इस दृष्टिकोण मे कि सीमा विवाद के हल के बिना सम्बन्धो मे सुधार नहीं हो सकता है, निश्चित परिवर्तन का पता चलता है।[35] क्योकि हाल तक भारत यह कहता रहा था कि सीमा-विवाद का एक निश्चित अवधि के भीतर समाधान ढूँढ लिया जाना चाहिए। वार्ता मे इस बात पर बल दिया गया कि दोनो देशो के बीच सीमावर्ती क्षेत्रो मे विश्वास-निर्माण करने वाले उपायों को तेज किए जाने की आवश्यकता है। इसके लिए सीमाओ पर दोनो देशो की सेनाओ की ब्रिगेडियर स्तर की नियमित बैठके करने का फैसला किया गया, जिससे किसी अप्रिय स्थिति से बचा जा सके।[36]

राष्ट्रपति वेकटरामन से होने वाली वार्ता मे चीन द्वारा तिब्बत का मुद्दा भी उठाया गया। यद्यपि चीनी नेताओ ने भारत की इस बात के लिए प्रशंसा की कि वह तिब्बत को चीन का एक स्वायत्तशासी क्षेत्र मानता है; फिर भी दलाई लामा द्वारा भारत से सचालित की जा रही राजनीतिक गतिविधियो पर अप्रसन्नता भी जाहिर की गई।

---

[34] जे एन दीक्षित, वही, पृ0 237-238

[35] एशियन रिकार्डर, 1992, वाल्यूम XXXVIII पृ0 22400

[36] वही, पृ0 22400

राष्ट्रपति वेकटरामन ने चीनी नेताओ को यह बताया कि जिन शर्तों के अधीन तिब्बती शरणार्थियो को भारत मे शरण दी गई है, उसमे उनके राजनीतिक गतिविधियो मे भाग लेने को प्रतिबधित किया गया है।[37]

चीनी नेताओ के साथ होने वाली राष्ट्रपति की वार्ताओ मे भारत-पाकिस्तान सम्बन्धो का मुद्दा भी उठा। राष्ट्रपति वेकटरामन ने चीनी नेताओ को यह बताया कि भारत पाकिस्तान के साथ मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध विकसित करना चाहता है लेकिन पाकिस्तान गुप्त रूप से तथा खुले रूप से भारत मे आतकवादी गतिविधियो को बढावा देता है। ली-पेग ने कहा कि चीन, भारत तथा पाकिस्तान दोनो का मित्र है और उसने भारत की चिन्ताओ से पाकिस्तान के प्रधानमत्री नवाज शरीफ को अवगत कराते हुए सकारात्मक रूख अपनाने की सलाह भी दी है।[38] चीनी नेताओ के साथ बातचीत मे ऐसे मुद्दे, जिनमे भारत तथा चीन के विचारों मे विरोधाभास है, नहीं उठाये गये। इन मुद्दो मे परमाणु अप्रसार तथा दक्षिण-एशिया का 'नाभिकीय मुक्त क्षेत्र' बनाने हेतु पॉच देशो का सम्मेलन बुनाने का प्रस्ताव भी शामिल है।

राष्ट्रपति वेंकटरामन की चीन-यात्रा के दौरान चीनी नेतृत्व ने अपनी अर्थव्यवस्था के आधुनिकीकरण हेतु लागू किये गये आर्थिक सुधारो के परिणाम स्वरूप आने वाली सामाजिक एव विकास की समस्याओ पर विस्तृत एव विश्लेषणात्मक बातचीत की। चीन की कम्युनिस्ट पार्टी के महासचिव जियाग-जेमिन के साथ राष्ट्रपति वेकटरामन की होने वाली बातचीत मे आर्थिक सुधारो का मुद्दा प्रमुख था। जियाग-जेमिन ने यह महसूस किया कि इस विषय पर दोनो देशो के अनुभवो का आदान-प्रदान दोनो के लिए ही लाभदायक होगा।[39] राष्ट्रपति के साथ होने वाली बातचीत मे जियाग-जेमिन ने बताया कि

---

[37] वही, पृ0 22400

[38] एशियन रिकार्डर, 1992, वाल्यूम XXXVIII, पृ0 22400

[39] वही, पृ0 22400

देश की अर्थव्यवस्था के उदारीकरण तथा आर्थिक सुधारो को लागू करने के परिणामस्वरूप चीन के विभिन्न हिस्सो मे 'वितरणात्मक न्याय' तथा 'आर्थिक विकास मे असतुलन' की समस्याये मुख्य रूप से उभरी है।[40] राष्ट्रपति वेकटरामन ने भी भारत मे आर्थिक पुननिर्माण तथा सुधार कार्यक्रमो को लागू करने के पीछे युक्तियो का विस्तार पूर्वक उल्लेख किया।[41] राष्ट्रपति वेकटरामन ने कहा कि उनके साथ होने वाली बातचीत मे आर्थिक सहयोग का मुद्दा प्रमुख रहा, जबकि राजनीतिक मुद्दे प्राथमिकता के बावजूद निम्न स्तर पर ही छोड दिये गये। इस दौरान दोनो देशो मे सयुक्त-उद्यम स्थापित करने की इच्छा भी व्यक्त की गयी।[42]

जम्मू तथा कश्मीर के सम्बन्ध मे जियाग-जेमिन तथा ली-पेग ने निष्पक्ष दृष्टिकोण अपनाते हुए दो एकसमान बाते कहीं। पहला, उन्होने इस बात को पुन. दोहराया कि जम्मू तथा कश्मीर से सम्बन्धित सारे विरोधाभास एक औपनिवेशिक तथा साम्राज्यवादी अतीत की देन है। दूसरा, उनके अनुसार, ऐसे सारे विरोधाभासो को भारत तथा पाकिस्तान द्वारा शातिपूर्ण बातचीत तथा "दोनो देशो को स्वीकार्य किसी भी साधन"[43] द्वारा हल किया जाना चाहिए। जहॉ तक दूसरे बिन्दु का सम्बन्ध है, यह भारत तथा पाकिस्तान के बीच 1972 मे होने वाले शिमला समझौते के 'सहमति-पूर्व पाठ' के तत्सम्बन्धित उस खण्ड को, जैसा चीनियो ने समझा, से सम्बन्धित है।

चीनी राष्ट्रपति श्री यांग-शागकुन ने राष्ट्रपति वेंकटरामन से बातचीत के दौरान उन्हे 'हिन्दी-चीनी भाई-भाई' के युग की याद दिलाई तथा भारतीय राष्ट्रपति को यह आश्वासन दिया कि चीन गहरी और अटूट मित्रता निभाएगा। चीन ने वेंकटरामन की

---

[40] जे एन दीक्षित, वही, पृ0 238
[41] वही, पृ0 238
[42] एशियन रिकार्डर, 1992, वाल्यूम XXXVIII, पृ0 22400
[43] जे एन दीक्षित, वही, पृ0 238-239

यात्रा के दौरान ही एक नाभिकीय परीक्षण किया जिससे राष्ट्रपति की यात्रा को एक झटका लगा।[44] ऐसा कहा गया कि चीन ने यह परीक्षण भारत पर अपनी श्रेष्ठता दिखाने तथा भारत की परमाणु अप्रसार के प्रति सवेदनाओ का निरादर करने के लिए किया। तत्कालीन विदेश सचिव जे एन दीक्षित ने अपना विचार व्यक्त करते हुए कहा कि चीन ने यह परीक्षण अमेरिका तथा पश्चिमी शक्तियो को दिखाने के लिए किए और इससे चीन भारत पर परमाणु अप्रसार के लिए कभी दबाव नहीं डाल पायेगा।[45]

चीन के साथ सम्बन्धो को सुधारने हेतु विश्वास पैदा करने के लिए तत्कालीन रक्षा मत्री शरद पवार ने वरिष्ठ सैनिक अधिकारियो के साथ जुलाई 1992 मे चीन की यात्रा की। शरद पवार की इस यात्रा से आपसी समझ तथा विश्वास कायम करने एव सीमा पर तनाव दूर करने के प्रयास मे मदद मिली। भारत तथा चीन के बीच सीमा-विवाद सहित सभी लम्बित मुद्दो को तय करने की दिशा मे इसे एक महत्वपूर्ण कदम माना गया।[46] चीन के प्रधानमंत्री ली-पेग ने शरद पवार से कहा कि हाल के वर्षों मे भारत तथा चीन के नेताओ द्वारा की गयी यात्राओ एव बैठको से भारत-चीन सम्बन्ध एक नये चरण मे पहुँच गये है।[47] प्रधानमत्री ली-पेग ने अन्तर्राष्ट्रीय मुद्दो के साथ-साथ नई अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति तथा आर्थिक व्यवस्था, पर्यावरण सरक्षण सहित विकास के कई मुद्दो पर विचारो का आदान-प्रदान किया।[48] इसके परिणामस्वरूप चीन के रक्षामंत्री ने

---

[44] कृष्ण डी माथुर तथा पी एम कामथ, कन्डक्ट आफ इडियाज फारेन पालिसी, नई दिल्ली, 1996, पृ0 160

[45] जे एन दीक्षित, वही, पृ0 241

[46] एनुअल रिपोर्ट, मिनिस्ट्री आफ एक्सटर्नल अफेयर्स, 1992-93, नई दिल्ली पृ0 34

[47] एशियन रिकार्डर, 1992, वाल्यूम XXXVIII, पृ0 22527

[48] वही पृ0 22527

1994 मे भारत की यात्रा की। इस दौरान दोनो देशो ने सयुक्त नौ-सैनिक अभ्यास करने का निर्णय लिया।[49]

फरवरी 1992 मे सुरक्षा परिषद की न्यूयार्क मे होने वाली बैठक मे प्रधानमत्री राव की मुलाकात ली-पेग से हुई। चीन के प्रधानमत्री ली-पेंग ने सयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद मे दिये गये अपने भाषण की राव के भाषण से समानता पर काफी प्रसन्नता जाहिर की।[50] उन्होने कहा, "ऐसा प्रतीत होता है कि सुरक्षा परिषद् मे दिये जाने वाले भाषण के तैयार होने से पूर्व हम दोनों ने परामर्श किया था, क्योकि कई महत्वपूर्ण मुद्दो पर हम दोनो के विचारों में काफी समानता थी"।[51] भारत तथा चीन ने मानव-अधिकारो के मुद्दे पर तथा इसके खराब रिकार्ड के लिए अमेरिका तथा पश्चिमी देशो द्वारा डाले जा रहे दबावो पर समान विचार व्यक्त किए। मानव-अधिकारो के संरक्षण के अलावा इस मुद्दे को व्यापार एव सहायता से जोडने के अमेरिकी प्रयासो ने भारत तथा चीन को साथ ला खडा किया। मानव-अधिकारों का मुद्दा चीन के सन्दर्भ मे जहॉ कैदियो द्वारा निर्मत सामान से जुड़ा था, वही भारत के सन्दर्भ मे यह कालीन-उद्योग में लगे बाल-मजदूरो से जुडा था।

फरवरी 1992 मे होने वाली संयुक्त कार्यकारी दल की चौथी बैठक मे वास्तविक नियत्रण रेखा से लगने वाली दोनों देशो की उन सैन्य चौकियों की पहचान की गई, जहॉ सेनाऍ बिल्कुल आमने -सामने थी। दोनो पक्षो ने वास्तविक नियत्रण रेखा के उन क्षेत्रो की भी पहचान की जिसके बारे मे असहमति थी। दोनो पक्षो ने वास्तविक नियत्रण रेखा पर रहने वाली सेना के स्तर के बारे मे भी सामान्य जानकारी एक-दूसरे को दी तथा

---

[49] वी पी दत्त- इडिया-चाइना प्रोमाइज एड लिमिटेशन, इन इडियन फारेन पालिसी ऐजेण्डा फार द 21स्ट सेन्चुरी (सम्पा0), वाल्यूम 2, नई दिल्ली 1998, पृ0 233

[50] पी एम कामथ एड कृष्ण डी माथुर, वही, पृ0 158

[51] वही, पृ0 158

सीमा पर द्विपक्षीय समझौतो के अनुसार शाति एव स्थिरता बनाये रखने का निश्चय किया,[52] सबसे महत्वपूर्ण निर्णय यह किया गया कि दोनो पक्ष 'वास्तविक नियत्रण रेखा पर शाति तथा स्थिरता बनाए रखने' हेतु समझौता करने के लिए अलग-अलग मसौदा तैयार करेगे तथा इसे 12 सप्ताह के भीतर एक-दूसरे पक्ष को सौप देगे ताकि उसे सयुक्त कार्यकारी दल की अगली बैठक मे ठोस चर्चा का आधार बनाया जा सके।[53] वास्तविक नियत्रण रेखा पर शाति एव स्थिरता कायम रखने हेतु समझौते के लिए प्रस्तावित मसौदे का राष्ट्रपति वेकटरामन की मई 1992 मे की गई चीन-यात्रा के दौरान आदान-प्रदान किया गया।[54]

सयुक्त कार्यकारी दल की पॉचवी बैठक 27 से 29 अक्टूबर को बींजिग में हुई। यह बैठक मुख्य रूप से सीमा पर शांति एवं स्थिरता बनाए रखने हेतु समझौते पर केन्द्रित रही। इस बैठक मे चीनी पक्ष ने भारत के लिये तीन समस्याएँ खडीं की पहला, चीन ने भारत द्वारा चिन्हित की गयी अग्रिम चौकी को वहा से एक-पक्षीय ढग से पीछे हटाने के लिए दबाव डाला, दूसरा, उन्होंने भारत-चीन वास्तविक नियत्रण रेखा के सिक्कम क्षेत्र को अलग से सन्दर्भित करने की इच्छा व्यक्त की, तीसरा, उन्होने कहा कि वास्तविक नियत्रण रेखा के जिन क्षेत्रो के बारे मे सहमति मौजूद है वहा पर वास्तविक नियत्रण रेखा पर शाति एव स्थिरता कायम रखने का समझौता लागू नही होगा।[55] भारत ने इस पर प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए कहा कि सीमा पर से सेनाओं को एकपक्षीय रूप से हटाना सम्भव नहीं है। ऐसा तभी होगा जब दोनो पक्ष इसके लिए तैयार होंर, तथा भारतीय सेना के 1984 के पूर्व की स्थिति मे जाने का तो कोई प्रश्न ही नहीं उठता।

---

[52] जे एन दीक्षित, वही, पृ0 237
[53] वही, पृ0 237
[54] वही, पृ0 240
[55] वही, पृ0 242-243

दूसरे, सिक्किम - तिब्बत क्षेत्र मे सीमा - निर्धारण के लिए एक फार्मूला अवश्य तैयार किया जाना चाहिए, क्योकि भारत द्वारा इस क्षेत्र के पृथक उल्लेख की स्वीकृति देने का अर्थ चीन के इस पक्ष को मान लेना होगा कि सिक्किम, भारत का अभिन्न अग नहीं है। तीसरे, भारत ने कहा कि वह सीमा विवाद के राजनीतिक एव तकनीकी पहलुओ को देखते हुए किसी कठोर पूर्व शर्त को थोपने के लिए इच्छुक नहीं है तथा वह चाहता है कि वास्तविक नियत्रण रेखा का सीमाकन जमीनी वास्तविकताओ को ध्यान मे रखते हुए किया जाए न कि क्षेत्रीय आधार पर।[56] इस बैठक मे इस बात पर भी सहमति हुई कि मसौदे को चीनी तथा भारतीय दोनो भाषाओ मे सयुक्त रूप से तैयार किया जाना चाहिए।[57]

दिसम्बर 1988 मे गठित होने वाले आर्थिक सम्बन्ध, व्यापार, विज्ञान एव तकनीकी पर संयुक्त कार्यदल की चौथी बैठक में 5 जनवरी, 1993 को एक व्यापार-समझौते पर भारत तथा चीन ने हस्ताक्षर किए। यह बैठक दो दिनो तक चली। इस समझौते मे दोनो देशो के बीच व्यापार की वस्तुओ का दायरा बढाने, कई जगहो को सीमा-व्यापार के लिए खोलने तथा एक-दूसरे के देश मे निवेश को प्रोत्साहित करने पर सहमति व्यक्त की गयी।[58]

संयुक्त कार्यकारी दल की छठवीं बैठक जून 1993 मे नई दिल्ली मे हुई। इस बैठक मे वास्तविक नियत्रण रेखा पर शांति तथा स्थिरता बनाये रखने के मसौदे को अतिम रूप दे दिया गया। इस बात पर भी सहमति हुई कि सयुक्त कार्यकारी दल बिना किसी पूर्वाग्रह के भारत-चीन सीमा का रेखांकन करेगा। दोनो पक्ष अग्रिम चौकियो से

[56] जे एन दीक्षित, वही, पृ0 243
[57] वही, पृ0 243
[58] द स्टेट्समैन, 6 जनवरी 1993

सेनाएँ हटा लेंगे तथा उन क्षेत्रो को, जिनके बारे मे भारत तथा चीन के बीच मतभेद है, सयुक्त कार्यकारी दल के विशेषज्ञो के एक उपसमूह को सौप दिया जाएगा।[59]

भारत-चीन सम्बन्धो के सामान्यीकरण की दिशा मे किये जाने वाले प्रयासो के क्रम मे भारत के प्रधानमत्री पी वी नरसिम्हा राव ने दिसम्बर 1993 मे चीन की यात्रा की। इस दौरान चार समझौतो पर हस्ताक्षर किए गए। इनमे से 'वास्तविक नियत्रण रेखा पर शाति एव स्थिरता कायम रखने' तथा 'एक दूसरे के विरूद्ध बल के प्रयोग या बल प्रयोग की धमकी' न देने से सम्बन्धित समझौता सबसे महत्वपूर्ण है[60]। इस दौरान दोनो पक्षो ने शिपकी-ला दर्रे से सीमा-व्यापार को बढ़ाने के मसौदे, पर्यावरण के क्षेत्र मे सहयोग हेतु पॉच वर्षीय समझौते तथा रेडियो-टेलीविजन के क्षेत्र मे सहयोग से सम्बन्धित एक अन्य समझौते पर भी रहस्ताक्षर किए।

वास्तविक नियत्रण रेखा पर शाति तथा स्थिरता बनाए रखने हेतु हुए समझौते मे दोनो पक्ष इस बात पर सहमत हुए कि, 'पारस्परिक एवम् समान सुरक्षा' के लिए जितना आवश्यक हो उतनी ही सेना वास्तविक नियत्रण रेखा पर रखी जाएगी, शेष को चरणबद्ध तरीके से हटा लिया जाएगा। उन क्षेत्रो में जहॉ दोनों के बीच सहमति है, सैन्य अभ्यास नहीं किया जाएगा तथा जहॉ किया जाएगा, वहॉ इसकी पूर्व सूचना दी जाएगी। इस समझौते मे जिन क्षेत्रो मे मतभेद है उनका संयुक्त अनुमोदन करने, सीमा क्षेत्र के कमाण्डरो के बीच बेहतर सम्पर्क स्थापित करने, उनकी बैठके आयोजित करने, और अधिक विश्वास बढाने वाले उपाय करने, अग्रिम चौकियों पर से सैन्य टुकडियो को पीछे हटाने तथा हवाई क्षेत्रो के उल्लघन को रोकने से सम्बन्धित प्रावधान भी किए गये।[61]

[59] जे एन दीक्षित, वही, पृ0 244
[60] बीजिग रिव्यू, वाल्यूम, 36, न 38, (20 से 26 दिसम्बर 1993), पृ0 6
[61] एनुअल रिपोर्ट, 1993-94, मिनिस्ट्री आफ एक्सटर्नल अफेयर्स, नई दिल्ली पृ0 19

इस समझौते का मुख्य उद्देश्य वास्तविक नियत्रण रेखा पर तनाव को समाप्त करना, सैनिक-झडपो की सम्भावना को समाप्त करना तथा सीमा विवाद को एक उचित तथा उद्देश्य पूर्ण ढॉचे के अन्तर्गत हल करने हेतु वातावरण तैयार करना था।[62] यह समझौता दर्शाता है कि दोनो देश पुरानी बातो को भूलकर पारस्परिक हितो पर आधारित स्थायी सम्बन्ध बनाने के इच्छुक है। प्रधानमत्री राव ने कहा, 'मुझे विश्वास है कि यदि हम इस प्रक्रिया को जारी रखेगे तो हमारी सीमाऍ भी शान्त बनी रहेगी।'[63]

प्रधानमत्री राव ने बीजिग मे कहा कि दोनों देशो ने विवादित मुद्दो को अलग रखकर "शाति एव सहयोग के रास्ते पर चलने " का फैसला किया है।[64]

कश्मीर मुद्दे पर चीन की स्थिति तथा कश्मीर मे पाकिस्तान द्वारा आतकवाद को बढावा दिये जाने के मुद्दे पर भी दोनो प्रधानमत्रियो मे विचार विमर्श हुआ। चीन ने कश्मीर मुद्दे को आपसी बातचीत के द्वारा हल किए जाने पर बल दिया।[65] चीन ने पुन दलाईलामा तथा तिब्बत का मुद्दा उठाया। प्रधानमत्री राव ने भारत के पुराने रूख को दोहराते हुए कहा कि तिब्बत चीन का स्वायत्तशासी क्षेत्र है तथा भारत, दलाईलामा का आदर करता है किन्तु उन्हे चीन-विरोधी राजनीतिक गतिविधियो को भारतीय भूमि से संचालित करने की इजाजत नही देता।[66] प्रधानमंत्री राव की यात्रा के दौरान जब चीन ने दलाईलामा की भारत मे गतिविधियो का मुद्दा उठाया तब भारत चीन द्वारा पाकिस्तान को दी जाने वाली M-11 मिसाइलों का मुद्दा उठाने से चूक गया।[67]

---

[62] जे एन दीक्षित, वही, पृ0 246

[63] पी0वी0 नरसिम्हाराव, सेलेक्टेड स्पीचेज, वाल्यूम III, 1993-94, नई-दिल्ली, पृ0 394

[64] वी पी दत्त, इडिया-चाइना प्रोमाइज एड लिमिटेशन, इन इडियन फारेन पालिसी, ऐजेण्डा फार द 21स्ट सेन्चुरी (सम्पा0), वाल्यूम 2, नई दिल्ली 1998, पृ0 233

[65] वी पी दत्त, वही, पृ0 233

[66] वी पी दत्त, वहीं, पृ0 233-234

[67] कृष्ण डी0 माथुर, और पी एम कामथ , कन्डक्ट आफ इण्डियाज फारेन पालिसी, नई दिल्ली 1996, पृ0 160

आपसी विश्वास को बढाने के क्रम मे रक्षा क्षेत्रो मे भी आदान-प्रदान होता रहा। नवम्बर 1993 मे चीन की नौसेना का युद्धक जहाज 'झेग-ही' बम्बई आया। यह भारतीय बन्दरगाह पर आने वाला पहला चीनी युद्ध पोत था।[68]

प्रधानमत्री राव की यात्रा के बाद दिसम्बर 1993 के मध्य मे चीनी सेना का एक उच्चस्तरीय प्रतिनिधिमडल भारत आया। पिछले 30 सालो मे भारत आने वाला यह पहला सैन्य दल था[69] उसके कुछ ही दिनो बाद काग्रेस (आई) कार्यसमिति के सदस्य तथा पूर्व विदेशमत्री नारायण दत्त तिवारी ने चीन की यात्रा की। इस दौरान हुई बातचीत मे पारस्परिक हितो पर आधारित आर्थिक सम्बन्धों को बढावा देने पर विचार किया गया।

भारत-चीन विशेषज्ञ दल, जिसका गठन प्रधानमत्री राव की चीन यात्रा के समय सयुक्त कार्यकारी दल की सहयता के लिए किया गया था, की पहली बैठक फरवरी 1994 मे नई दिल्ली मे हुई। इस विशेषज्ञ दल की दूसरी बैठक अप्रैल 1994 मे बीजिग मे हुई। इसमे वास्तविक नियत्रण रेखा को परिभाषित करने, सीमा पर सैनिको की कटौती करने तथा अन्य विश्वास उत्पन्न करने वाले उपायो के सम्बन्ध मे महत्वपूर्ण कार्य किया गया।[70]

जून 1994 के मध्य मे चीन की विदेश व्यापार एव आर्थिक सहयोग मत्री श्रीमती वू-यी के नेतृत्व मे एक उच्चस्तरीय प्रतिनिधिमडल, भारत-चीन व्यापार, आर्थिक सम्बन्ध, विज्ञान तथा तकनीकी पर सयुक्त कार्यदल की बैठक मे भाग लेने के लिए नई दिल्ली पहुँचा। इस दौरान वर्ष 1994-95 के लिए एक व्यापार मसौदे पर हस्ताक्षर किया गया। प्रधानमत्री राव ने विश्व-व्यापार सगठन मे चीन के प्रवेश हेतु भारत के समर्थन

---

[68] एनुअल रिपोर्ट, 1993-94, मिनिस्ट्री आफ एक्सटर्नल अफेयर्स, नई दिल्ली पृ0 20
[69] द स्टेट्समैन, 21 दिसम्बर 1993
[70] द स्टेट्समैन, 24 अप्रैल 1994

का आश्वासन दिया। चीन की ओर से भी भारत को एपेक (APEC) की सदस्यता दिलाने की इच्छा व्यक्त की गयी।[71]

सीमा-विवाद पर सयुक्त कार्यकारी दल की सॉतवी बैठक जुलाई 1994 के प्रथम सप्ताह मे बीजिग मे हुई। यह बैठक सीमा के कुछ क्षेत्रो मे जहॉ सेनाऍ आमने-सामने है, उसे कम कर पाने मे असफल रही। साथ ही चीन के प्रतिनिधिमडल का नेतृत्व कर रहे वहां के उप विदेशमंत्री तग-जियाजुआन ने कहा कि चीन सीमा-विवाद के समाधान के लिए हमेशा से गम्भीर, रचनात्मक एव समझदार रहा है। [72] इस बैठक मे भारतीय प्रतिनिधिमडल का नेतृत्व विदेश सचिव के. श्रीनिवासन ने किया।

चीन के उप प्रधानमंत्री तथा विदेशमत्री कियान-किचेन ने 17 से 19 जुलाई 1994 के बीच नई दिल्ली की यात्रा की। कियान ने कहा कि सीमा पर सेना कम करने के सम्बन्ध मे दोनो देशो द्वारा की जाने वाली वार्ताओ का शीघ्र ही ‘ठोस परिणाम’ आएगा कियान के इस कथन से कि यदि ‘जो पक्ष पहले आगे बढा है वह पहले पीछे हटे’, तो बातचीत मे तेजी से प्रगति होगी, भारत के लिए निश्चित रूप से समस्या पैदा हुई।[73] सिक्किम के प्रश्न पर कियान का दृष्टिकोण बडा ही अस्पष्ट था। उन्होने कहा कि चीन ने 1970 के दशक से ही कोई बयान देना बन्द कर दिया है। कियान ने आशा व्यक्त की कि द्विपक्षीय वार्ता से धीरे-धीरे समस्या का हल निकाल लिया जाएगा। कियान ने यह भी कहा कि ‘हम अभी कुछ भी स्पष्ट नहीं कह रहे हैं, दोनो पक्ष अभी इस मुद्दे पर विचार कर रहे है।[74] कियान-किचेन की इस यात्रा के दौरान भारत तथा

---

[71] द हिन्दू, 16 जून, 1994
[72] द स्टेट्समैन, 7 तथा 8 जुलाई 1994
[73] द हिन्दू, 19 तथा 20 जुलाई 1994
[74] द हिन्दू, 19 जुलाई 1994

चीन ने 18 जुलाई 1994 को दोहरे करारोपण से बचने तथा कर-वचन को रोकने हेतु एक समझोते पर हस्ताक्षर किये।[75]

चीन के उपप्रधानमत्री तथा विदेशमत्री कियान-किचेन की यात्रा के पश्चात भारत के उपराष्ट्रपति श्री के आर नारायणन ने 22 से 28 अक्टूबर 1994 तक चीन की यात्रा की। इस दौरान दोनो देशो ने प्रत्यक्ष बैकिग लेनदेन तथा वीसा-नियमो को आसान बनाने हेतु एक ज्ञापन-पत्र पर हस्ताक्षर किए। दोनो देशो ने एशिया क्षेत्र को 21 वी शताब्दी का समृद्ध क्षेत्र बनाने के लिए आर्थिक सम्बन्धो को बढाने की आवश्यकता पर बल दिया। उपराष्ट्रपति की चीन यात्रा को भारत-चीन सम्बन्धो के सामान्यीकरण की प्रक्रिया के विकास मे एक स्वागत योग्य कदम कहा जा सकता है।[76]

वर्ष 1994 में ही चीन मे 'भारत महोत्सव' मनाया गया जोकि चीन मे मनाया जाने वाला किसी विदेशी राष्ट्र का पहला त्योहार था। इससे पूर्व दिसम्बर 1992 मे भारत मे चीन का सास्कृतिक त्योहार मनाया गया था।[77] दोनो देशो ने जून, 1994 मे पचशील समझौते की चालीसवीं वर्षगाठ मनायी। इस अवसर पर नई दिल्ली तथा बीजिंग मे दोनो देशो के विद्वान तथा नीति-निर्माता उपस्थित रहे। 27 जून, 1994 को नई दिल्ली मे होने वाले एक सेमीनार में, जिसका उद्घाटन प्रधानमत्री राव ने किया, दोनो देशो के प्रतिभागियो ने शीत-युद्धोत्तर विश्व मे पचशील की प्रासंगिकता पर विचार विमर्श किया।[78]

भारत चीन सयुक्त कार्यकारी दल की आठवीं बैठक नई दिल्ली मे अगस्त 1995 मे हुई। इस बैठक मे सीमा विवाद के उचित, तर्क सगत एव एक दूसरे को स्वीकार्य

---

[75] टी पालोज तथा गुरूप्रीत कौर (सम्पादित); इडिया एड वर्ल्ड अफेयर्स, नई दिल्ली 1995, पृ0 165
[76] एनुअल रिपोर्ट 1994-95 , मिनिस्ट्री आफ एक्सटर्नल अफेयर्स, नई दिल्ली, पृ0 25
[77] एनुअल रिपोर्ट 1993-94 , मिनिस्ट्री आफ एक्सटर्नल अफेयर्स, नई दिल्ली, पृ0 21
[78] एनुअल रिपोर्ट 1994-95 , मिनिस्ट्र आफ एक्सटर्नल अफेयर्स, नई दिल्ली, पृ0 26

समाधान ढूँढने के लिए तथा सीमा पर शाति एव स्थिरता बनाने हेतु समझौते को लागू करने पर विचार-विमर्श का क्रम जारी रहा। इस बैठक मे दोनो पक्ष सुम-दुरोग-चू घाटी मे जहॉ सेनाऍ बिल्कुल आमने-सामने थी, अपनी दो-दो चौकियॉ पीछे हटाने पर सहमत हुए। इस निर्णय को बिना किसी पूर्वाग्रह के लागू किया गया।[79]

यद्यपि भारत तथा चीन के बीच व्यापार 1984 मे 'मोस्ट फेवर्ड' नेशन समझौते पर हस्ताक्षर के साथ ही धीरे-धीरे बढना शुरू हो गया था, लेकिन इसमे अधिक तेजी उस समय आई जब प्रधानमंत्री राव तथा ली-पेग ने यह निर्णय किया कि सीमा-विवाद को अन्य क्षेत्रो मे होनेवाले सहयोग मे बाधक नहीं बनने दिया जाएगा वर्ष 1993 मे दोनो के बीच व्यापार, इससे पहले के वर्ष के व्यापार से 98 प्रतिशत बढकर 675 73 डालर तक जा पहुचा।

शीत युद्ध की समाप्ति, चीन-रूस के बीच बढते मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध, अफगान एव कम्बोडिया मे सघर्ष की समाप्ति, भारत का अमेरिका, आसियान, यूरोप तथा जापान के साथ बढता मधुर सम्बन्ध और नरसिम्हा राव सरकार द्वारा शुरू किए गये उदारीकरण एव आर्थिक सुधारो की नीतियो ने सम्मिलित रूप से एक ऐसा वातावरण तैयार किया जिसमे भारत तथा चीन के बीच निकटता आना अवश्यम्भावी था।[80] विश्वास एवं सुरक्षा को बढाने वाले कई उपायो, उच्च स्तर पर राजनीतिक तथा सैनिक वार्ताओ, बढते व्यापार एव निवेश तथा अन्तर्राष्ट्रीय मुद्दो, विज्ञान एव तकनीकी के क्षेत्र मे विस्तृत सहयोग ने भारत-चीन सम्बन्धो के लिए एक व्यापक पृष्ठभूमि तैयार कर दी। शीतयुद्ध

---

[79] एनुअल रिपोर्ट 1995-96 , मिनिस्ट्री आफ एक्सटर्नल अफेयर्स, नई दिल्ली, पृ0 10

[80] सुजीत दत्ता, इडिया-चाइना रिलेशस द पोस्ट कोल्ड वार फेज, इन एम के रसगोत्रा एड वी डी चोपडा (सम्पादित), इडियाज रिलेशस विद रशिया एड चाइना ए न्यू फेज, नई दिल्ली, 1997, पृ0 158-159

के बाद अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र मे होने वाले परिवर्तनो ने भी विस्तृत रणनीतिक एव कूटनीतिक स्तर पर भारत तथा चीन को पास आने के लिए प्रोत्साहित किया।[81]

भारत-चीन सम्बन्धो के सुधरने के बावजूद चीन द्वारा पाकिस्तान को M-11 मिसाइलो तथा नाभिकीय हथियार कार्यक्रमो के लिए सहायता उपलब्ध कराने से यह स्पष्ट होता है कि चीन, पाकिस्तान को भारत के विरूद्ध एक सबल प्रतिद्वन्द्वी के रूप मे खडा करना चाहता है। इसके अलावा भारत तथा चीन के बीच परमाणु-अप्रसार सधि, दक्षिण-एशिया को नाभिकीय मुक्त क्षेत्र बनाने हेतु पॉच देशो के सम्मेलन का पाकिस्तान का प्रस्ताव आदि मतभेद के मुद्दे भी है।[82] चीन अंडमान सागर मे काकस द्वीप पर म्यॉमार के सुदुर दक्षिण मे एक शक्तिशाली नौसैनिक अड्डा स्थापित कर रहा है तथा म्यॉमार की सैनिक सरकार को हथियारो की आपूर्ति भी कर रहा है, जिससे आसाम मे घुसपैठ की सम्भावना बढ जाती है।

नवम्बर 1995 में चीन की राष्ट्रीय जनवादी काग्रेस के अध्यक्ष, कियो-शी ने भारत की यात्रा की। इस यात्रा से भी भारत-चीन सम्बन्धो को सामान्य बनाने मे मदद मिली।[83]

वर्ष 1996 मे हुए चुनावो के बाद के दो वर्ष भारत मे राजनीतिक अस्थिरता के रहे। इस दौरान सयुक्त मोर्चा की दो सरकारो का गठन हुआ। इन दोनो सरकारो को काग्रेस का समर्थन प्राप्त था। न्यूनतम साझा कार्यक्रम के आधार पर बने इस संयुक्त मोर्चे की दोनो सरकारो ने भी चीन के साथ सम्बन्धो को सुधारने की प्रक्रिया को जारी रखा। सयुक्त मोर्चे की पहली सरकार एच.डी. देवगौडा के प्रधानमन्त्रित्व मे गठित हुई।

---

[81] सी वी रगनाथन, इडिया-चाइना रिलेशन्स - रेट्रोस्पेक्ट्स एड प्रासपेक्ट्स, इन इडियन फारेन पालिसी एजेन्डा फार द 21 स्ट सेन्चुरी, नई दिल्ली, 1998 पृ0 252

[82] सुरजीत मानसिह, 'इडिया-चाइना रिलेशन्स इन द पोस्ट फोल्ड वार एरा,' एशियन सर्वे, वाल्यूम XXXIV, न0 3, मार्च 1994 पृ0 285-300

[83] मेनस्ट्रीम, 16 मार्च 2002

इस सरकार के विदेशमत्री इन्द्र कुमार गुजराल थे। इस सरकार मे चूँकि भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी भी शामिल हुई थी, अत इन्द्रजीत गुप्त के रूप मे पहली वार भारत मे एक कम्युनिस्ट गृहमत्री बना था। सयुक्त मोर्चे की दूसरी सरकार मे प्रधानमत्री इन्द्र कुमार गुजराल बने जो इससे पूर्व विदेशमत्री थे।

सीमा-विवाद के समाधान हेतु गठित सयुक्त कार्यकारी दल की नौवी बैठक बीजिग मे अक्टूबर 1996 मे हुई। इस बैठक मे भारत-चीन सीमा के पूर्वी क्षेत्र मे विवादित नियत्रण रेखा पर दो और जगहो पर मेजर-जनरल स्तर के सैनिक अधिकारियो की बैठके आयोजित किये जाने तथा दोनो देशो के अधिकारियो, नेताओ तथा लोगो की यात्राओ को प्रोत्साहित करने के सम्बन्ध मे सहमति हुई।[84]

नवम्बर 1996 के शुरू मे हुए विश्व खाद्य सम्मेलन के अवसर पर रोम मे भारत के प्रधानमत्री एच.डी. देवगौडा तथा चीन के प्रधानमत्री ली-पेग के मध्य वार्ता का लम्बा दौरा हर दृष्टि से उत्साहवर्धक रहा। इस अनौपचारिक वार्ता मे ली-पेग ने कहा कि एशिया के विकासशील देशो के हितो की रक्षा के लिए भारत-चीन मैत्री सम्बन्ध सहायक सिद्ध होगे। ली-पेग का यह दृष्टिकोण भारत-चीन सम्बन्धो को सुधारने की दिशा मे अत्यन्त सराहनीय था। भारतीय प्रधानमत्री ने ली-पेग को आश्वासन दिया कि दलाई-लामा को भारत-भूमि से कोई राजनीतिक गतिविधि चलाने की अनुमति नहीं होगी। भारत के प्रधानमत्री द्वारा बिना किसी उचित सन्दर्भ के दिये गये इस आश्वासन की भारत मे काफी आलोचना हुई और इसे चीन के तुष्टिकरण का नाम दिया गया।[85]

नवम्बर 1996 मे चीन के राष्ट्रपति और साम्यवादी दल के अध्यक्ष जियाग-जेमिन ने भारत की महत्वपूर्ण यात्रा की। यह चीन के किसी भी राष्ट्रपति की पहली भारत-यात्रा थी भारत-चीन सम्बन्धो को सामान्य बनाने के उद्देश्य से जियाग-जेमिन ने भारत के

---

[84] एशियन सर्वे, 41(2), (मार्च-अप्रैल 2001), पृ0 356

[85] वी एन खन्ना, लिपाक्षी अरोडा, भारत की विदेश नीति, नई दिल्ली, 2000 पृ0 166

राष्ट्रपति, प्रधानमत्री और विपक्ष के नेता से विस्तृत वार्ताएँ कीं। जियाग-जेमिन की इस यात्रा के दौरान कई महत्वपूर्ण समझौतो पर हस्ताक्षर किए गये। इसमे सबसे महत्वपूर्ण समझौता था भारत-चीन सीमा पर वास्तविक नियत्रण रेखा के साथ-साथ सैनिक क्षेत्र मे विश्वास उत्पन्न करने वाला समझौता।[86]

इन समझौते मे स्पष्ट रूप से कहा गया कि दोनो देश न तो एक-दूसरे के विरूद्ध अपनी सैन्य शक्ति का प्रयोग करेगे और न ही इसकी धमकी देगे। परस्पर विश्वास बढाने के लिए दोनो देश वास्तविक नियंत्रण रेखा से निर्धारित क्षेत्रो तक अपनी सेनाओ को पीछे हटाने तथा कुछ विशेष किस्म की तोपे, गोला-बारूद, सतह से सतह और सतह से हवा मे मार करने वाले मिसाइलो को हटाने पर सहमत हो गए। समझौते मे यह भी तय हुआ कि दोनो देश किसी भी स्थिति मे अपनी मर्जी से सैन्य प्रभुत्व कायम करने का प्रयत्न नहीं करेगे। दस पृष्ठों के इस समझौते मे यह भी प्रावधान था कि दोनो पक्ष आपसी सहमति से वास्तविक नियत्रण रेखा-क्षेत्र मे परस्पर तथा सामान सुरक्षा के सिद्धान्तो के आधार पर सैन्य गतिविधियो में शिथिलता लायेगे, साथ ही दोनो देश नियत्रण रेखा पर अधिक सैनिको के साथ युद्धाभ्यास नहीं करेगे। कोई भी देश यदि एक ब्रिगेड से अधिक सैनिको के साथ युद्धाभ्यास करेगा तो वह इसकी पूर्व सूचना दूसरे देश को अवश्य देगा। नियत्रण रेखा के दस किलोमीटर के क्षेत्र मे कोई भी देश लडाकू विमान नहीं उडायेगा।

भारतीय विदेश सचिव सलमान हैदर ने इस समझौते को राष्ट्रपति जियाग-जेमिन की यात्रा का 'महत्वपूर्ण परिणाम' बताया जबकि दोनो देशों के अधिकारियो ने इसे

---

[86] स्वर्ण सिह, "साइनो इडियन सी बी एम्स प्राब्लम्स एड प्रास्पेक्टस," स्ट्रेटेजिक एनालिसिस, वाल्यूम XX, न0 4, जुलाई 1997, पृ0 549

'अनाक्रमण सधि' के रूप मे व्याख्यायित किया।[87] विदेशमत्री इद्र कुमार गुजराल ने इसे द्विपक्षीय सम्बन्धो मे एक महत्वपूर्ण कदम बताया।[88]

अटल बिहारी वाजपेयी, जो उस समय विपक्ष के नेता थे, ने इस समझौते पर टिप्पणी करते हुए कहा कि भारत को चीन की ओर से सतर्क रहना होगा। उन्होने कहा," . . सीमा के हमारी ओर पर्वतीय क्षेत्र है, यदि कभी स्थिति विस्फोटक हो जाय या शत्रुता पुन जागृत हो जाए, तो चीन बडी सुगमता से अपने सैनिक सीमा पर शीघ्र भेज सकता है, परन्तु भारत के लिए, पर्वतीय प्रदेश होने के कारण, ऐसा करना कठिन होगा" भारतीय रक्षा अध्ययन एव विश्लेषण सस्थान के उप निदेशक उदय भास्कर ने इस पर विचार व्यक्त करते हुए कहा कि, भारत चीन सम्बन्धों के कंटकाकीर्ण परिप्रेक्ष्य मे तथा अनेक द्विपक्षीय विवादो के चलते, धीरे-धीरे होने वाली सम्बन्ध सुधार-प्रक्रिया दोनो देशो के लिए शुभ लक्षण प्रस्तुत करती है। इससे इस क्षेत्र मे स्थायित्व को भी बल मिलेगा। संसार के सभी देश चीन के साथ अच्छे सम्बन्ध रखने को उच्च्च प्राथमिकता दे रहे है। भारत से अधिक और किसी भी देश के लिए ऐसा करना अति आवश्यक नहीं है।[89]

इस समझौते के अतिरिक्त भारत और चीन ने तीन अन्य समझौते पर भी हस्ताक्षर किये। वे थे (क) हॉगकॉग को ब्रिटेन द्वारा, 30 जून 1997 को चीन को वापस सौप दिए जाने के पश्चात् भी भारत के वाणिज्य-कार्यालय का हॉगकॉग मे बने रहने का समझौता (ख) दोनो देशो द्वारा शस्त्रास्त्रो तथा मादक पदार्थों की तस्करी रोकने

---

[87] टाइम्स आफ इडिया, 30 नवम्बर 1996

[88] द हिन्दू, 6 दिसम्बर 1996

[89] वी एन खन्ना लिपाक्षी अरोडा, भारत की विदेश नीति, नई दिल्ली, 2000, पृ0 169

एव अन्य आर्थिक अपराधो के विरूद्ध सघर्ष करने सम्बन्धी समझौता , और (ग) सागरीय यातायात को नियन्त्रित करने तथा दोहरे करो को रोकने सम्बन्धी समझौता।[90]

जियाग-जेमिन भारत आने के तुरन्त बाद जब पाकिस्तान गये तो उन्होने पाकिस्तान द्वारा कश्मीर-समस्या को अन्तर्राष्ट्रीय विवाद का रूप दिये जाने के प्रयास पर कोई ध्यान नहीं दिया। उन्होने यहॉ तक कहा कि कश्मीर के प्रश्न को कुछ समय के लिए उठाया ही नही जाना चाहिए, और दोनों देशो (भारत तथा पाकिस्तान) को सामान्य सम्बन्ध स्थापित करने के लिए प्रयत्न करने चाहिए। इस प्रकार परोक्ष रूप से पहली बार चीन ने भारत के दृष्टिकोण का समर्थन किया।

4 से 5 अगस्त, 1997 का नई-दिल्ली मे सीमा-विवाद पर गठित सयुक्त कार्यकारी दल की दसवीं बैठक हुई। इस बैठक मे दोनो पक्षो ने वास्तविक नियत्रण रेखा को स्पष्ट करने हेतु व्यापक विचार-विमर्श किया। 1993 तथा 1996 मे हुए विश्वास उत्पन्न करने वाले उपायो से सम्बन्धित समझौतो के क्रियान्वयन पर भी दोनो पक्षो ने विचार किया।[91]

सयुक्त कार्यकारी दल की दसवीं बैठक मे दोनो देश विदेश मत्रालय स्तर की वार्षिक बैठक करने पर सहमत हो गए। दोनो देशो ने क्षेत्रीय कमाण्डरों की नियमित झण्डा-बैठके आयोजित करने पर सहमति व्यक्त की। इसके अलावा यह भी तय हुआ कि बिना किसी पूर्व निर्धारित कार्यक्रम के ही क्षेत्रीय कमाण्डर झण्डा उठा करके अपनी बैठके कर सकते है। क्षेत्रीय कमाण्डरो के बीच बेहतर सम्पर्क स्थापित करने के लिए सीधी टेलीफोन सेवा शुरू करने का प्रस्ताव भी किया गया।[92]

---

[90] वही, पृ0 169
[91] एशियन सर्वे, 41 (2), (मार्च-अप्रैल 2001), पृ0 356
[92] वहीं, पृ0 357

इस प्रकार, इस दौरान दोनो देशो द्वारा आपसी सम्बन्धो को मजबूत बनाने तथा सीमा-विवाद का एक-दूसरे को स्वीकार्य हल निकालने के प्रयास किये जाते रहे। कुछ मुद्दो पर मतभेद के बावजूद दोनो देशों की सरकारो ने पारस्परिक मित्रता के सम्बन्ध विकसित करने की इच्छा व्यक्त की।

अध्याय - 4

भारत-चीन सम्बन्ध : अटल बिहारी वाजपेयी कालांश

फरवरी-मार्च 1998 मे भारत मे बारहवीं लोकसभा के चुनाव सम्पन्न हुए। इन चुनावो से 'त्रिशकु लोकसभा और विखण्डित जनादेश' के लक्षण स्पष्ट हुए। किसी भी दल अथवा गठबन्धन को स्पष्ट बहुमत प्राप्त नहीं हुआ, यद्यपि भाजपा अपने सहयोगी दलो के साथ सबसे बडे गठबन्धन के रूप मे उभरी। ऐसी स्थिति मे भाजपा नेता अटल बिहारी वाजपेयी के नेतृत्व मे एक मिली-जुली सरकार का गठन हुआ। सहयोगियो की बडी संख्या के कारण सरकार मे स्थायित्व न आ सका। अप्रैल 1999 मे सरकार ने विश्वास मत खो दिया। वैकल्पिक काग्रेस-सरकार या धर्म-निरपेक्ष साझा सरकार के गठित न होने पर नए चुनावो की घोषणा कर दी गई। अटल बिहारी वाजपेयी के नेतृत्व वाली सरकार सितम्बर-अक्टूबर 1999 के चुनावो तक कामचलाऊ सरकार के रूप मे कार्य करती रही। 13 वीं लोकसभा के चुनावो मे भाजपा के नेतृत्व वाला 'राष्ट्रीय जनतान्त्रिक' मोर्चा सबसे बड़ी राजनीतिक शक्ति के रूप मे उभरा। 13 अक्टूबर, 1999 को एक बार फिर अटल बिहारी वाजपेयी के नेतृत्व मे राष्ट्रीय जनतान्त्रिक मोर्चे की सरकार का गठन हुआ। इस प्रकार, मार्च 1998 से ही अटल बिहारी वाजपेयी के नेतृत्व वाली सरकार द्वारा भारतीय विदेश नीति का सचालन तथा समायोजन किया जा रहा है। इस सरकार द्वारा प्रारम्भ मे ही कुछ ऐसे निर्णय लिए गये जिनसे भारत-चीन सम्बन्धो के सामान्यीकरण की प्रक्रिया को जबर्दस्त झटका लगा।[1]

अटल बिहारी वाजपेयी सरकार ने सत्ता मे आने के तुरन्त बाद चीन के सम्बन्ध मे एक नये दृष्टिकोण को अपनाया, जिसके चार मुख्य तत्व थे पहला, दक्षिण-एशिया मे चीन की बढती गतिविधियो के प्रति भारतीय हितो की स्पष्ट एव खुली

[1] जे एन दीक्षित, एक्रास बार्डर्स फिफ्टी ईयर्स आफ इडियाज फारेन पालिसी, नई दिल्ली, 1998, पृ0 408

अभिव्यक्ति, दूसरा, भारत को न्यूनतम प्रतिरोधक क्षमता के साथ एक नाभिकीय शक्ति के रूप मे स्थापित करना, तीसरा, तिब्बत के अति सवेदनशील मुद्दे पर और अधिक दृढ नीति अपनाना तथा चौथा, चीन के खतरे को देखते हुए भारत की बिगडती सुरक्षा स्थिति के सन्दर्भ मे सयुक्त राज्य अमेरिका के साथ तालमेल स्थापित करना।[2]

वाजपेयी सरकार के रक्षामत्री जार्ज फर्नांडीज ने अप्रैल 1998 मे ब्रिटिश ब्राडकास्टिग कारपोरेशन को दिए एक साक्षात्कार मे कहा कि भारत की सुरक्षा को पाकिस्तान की अपेक्षा चीन से ज्यादा खतरा है।[3] नई दिल्ली मे 'प्रेस से मिलिए' कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुए जार्ज फर्नांडीज ने चीन पर भारतीय क्षेत्र मे प्राय घुसपैठ करने तथा अरूणाचल प्रदेश मे एक हैलीपैड का निर्माण किये जाने का आरोप भी लगाया। उन्होने अपने इस आरोप को अरूणाचल प्रदेश के मुख्यमंत्री द्वारा उनको दी गई सूचना पर आधारित बताया। प्रधानमत्री वाजपेयी ने जार्ज फर्नांडीज के इस बयान का खडन करते हुए कहा, "चीन द्वारा अरूणाचल प्रदेश मे हैलीपैड बनाए जाने का कोई प्रमाण नहीं मिला है।"[4] बाद मे 3 जून, 1998 को राज्यसभा मे एक प्रश्न का उत्तर देते हुए जार्ज फर्नांडीज ने भी इस बात को स्वीकार किया कि भारतीय क्षेत्र मे चीन द्वारा कोई घुसपैठ नहीं हुई थी और न ही अरूणाचल प्रदेश में किसी हैलीपैड का निर्माण किया गया था। चीन के विदेश मत्रालय ने भारतीय रक्षामत्री द्वारा लगाये गये आरोप को निराधार एवं गैर-जिम्मेदाराना बताते हुए अपना कडा विरोध दर्ज कराया। इसके बाद जार्ज ने चीन के प्रति अपने रूख मे नरमी लाते हुए चीन के साथ वार्ता का स्तर और ऊपर उठाने हेतु सम्मिलित प्रयास करने का आह्वान किया।[5]

---

[2] जान डब्ल्यू गार्वर द रेस्टोरेशन आफ साइनो - इडियन कमिटी फालोंइग इडियाज न्यूक्लियर टेस्ट्स, द चाइना क्वार्टरली, 168, 2001 दिसम्बर, पृ0 866

[3] 'द नेशन', इस्लामाबाद, 6 अप्रैल 1998

[4] द सेन्टीनेल, गुवाहाटी, 9 अप्रैल 1998

[5] द पायोनियर, 17 अप्रैल 1998

जार्ज फर्नांडीज के चीन विरोधी वक्तव्य की भारत मे भी काफी आलोचना हुई। काग्रेस पार्टी के विदेश नीति -विशेषज्ञ नटवर सिह ने फर्नांडीज के इस बयान को, गैर जिम्मेदाराना तथा चीन को उत्तेजित करने वाला बताया।[6] जार्ज फर्नांडीज द्वारा दिये गये इस सुविचारित अथवा आकस्मिक चीन-विरोधी वक्तव्य ने, आगामी 26 अप्रैल 1998 से शुरू होने वाली चीन की सेना के जनरल स्टाफ की छ दिवसीय भारत-यात्रा के माहौल को तनावपूर्ण बना दिया।[7] उनकी इस यात्रा के दौरान कुछ विवादित मुद्दे भी उठाये गये। इनमे पाकिस्तान को मिसाइल टेक्नोलॉजी का चीन द्वारा हस्तातरण तथा गौरी मिसाइल के परीक्षण मे दी गई चीनी सहायता का मुद्दा प्रमुख था। फर्नाडीज का मानना था कि पाकिस्तान की गौरी मिसाइल का जनक चीन ही है।

वास्तव मे रक्षामत्री द्वारा दिये गये इस वक्तव्य का उद्देश्य भारत की सुरक्षा-चिताओ को रेखांकित करना था। साथ ही इस बात के लिए आधार तैयार करना था कि भारत को अपने परमाणु-कार्यक्रमो तथा मिसाइल टेक्नोलॉजी मे विकास करने की तीव्र आवश्यकता है। इसका एक आशय यह भी था कि भारत के रक्षा-वजट मे वृद्धि की जानी चाहिए।[8]

जार्ज फर्नांडीज ने 2 मई, 1998 को दिए अपने सार्वजनिक भाषण मे चीन को उसके पाकिस्तान तथा म्यॉमार के साथ बढते रक्षा और आर्थिक सम्बन्धो के कारण, भारत के लिए 'खतरा नम्बर एक' बताया।[9] इन बयानो से आशा के अनुरूप चीन ने कटु एव नकारात्मक प्रतिक्रिया जाहिर की। अपने दावो के समर्थन मे जार्ज फर्नांडीज द्वारा उद्धृत कोई भी तथ्य नया नहीं था या कम से कम हाल के घटनाक्रमो से सम्बन्धित नहीं था। भारत, चीन की सैन्य क्षमता और तिब्बत मे मिसाइल तैनात करने

---

[6] द एशियन एज, नई दिल्ली, 17 अप्रैल 1998
[7] द हिन्दू, 27 अप्रैल 1998
[8] इडिया टुडे, वीकली, नई दिल्ली, 27 अप्रैल 1998
[9] टाइम्स आफ इडिया, 4 मई 1998

से अवगत था। भारत म्यामार और पाकिस्तान के साथ चीन के रक्षा और आर्थिक सहयोग से भी अवगत था। भारत और चीन इस घटना के निहितार्थों से भलीभॉति अवगत थे, फिर भी भारत के पडोसी देशो के साथ चीन के समीकरणो द्वारा उत्पन्न सम्भावित दबावो से सम्बन्धो मे अलगाव लाने के प्रयास किये गए।[10] जार्ज फर्नांडीज को ऐसे वक्तव्यो को देते समय यह ध्यान रखना चाहिए था कि वह मात्र एक राजनीतिक नेता नहीं है जो व्यक्गित रूप से कुछ भी कह ले। वह सरकार के एक महत्वपूर्ण मत्री है तथा उनके कथन सरकारी दृष्टिकोण के सूचक के रूप मे सुधरते भारत-चीन सम्बन्धो को नुकसान पहॅुचा सकते है।[11] जो भी हो जार्ज फर्नांडीज द्वारा चीन के विरूद्ध की गई प्रतिकूल टिप्पणी ने भारत में एक ऐसा राजनीतिक वातावरण तैयार कर दिया जिसमे भारत ने आगामी दिनो मे परमाणु परीक्षण किया।[12]

भारत ने 11 मई, 1998 को तीन भूमिगत नाभिकीय परीक्षण किए। इन परीक्षणो के प्रति चीन ने प्रारम्भ मे हल्की प्रतिक्रिया व्यक्त की। चीन के विदेश मत्रालय ने इन परीक्षणो पर प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए इसे दक्षिण-एशिया में शाति एव सुरक्षा की स्थिरता के लिए हानिकारक बताया।[13] 13 मई, 1998 को दो और परीक्षण किए गए। इनमे से एक हाइड्रोजन बम था। इन दूसरे चरण के परीक्षणों पर चीन ने अपेक्षाकृत तीखी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए कहा कि 'इन परीक्षणो से चीनी सरकार को गभीर आघात लगा है और वह इसकी तीव्र भर्त्सना करती है'। इन परीक्षणो के बाद वाजपेयी ने घोषणा कर दी कि भारत एक न्यूक्लियर हथियारो वाला देश बन चुका है। इन परीक्षणो पर सर्वाधिक आक्रोश अमेरिका द्वारा व्यक्त किया गया इसलिए भारत ने उसका विश्वास जीतने का प्रयास किया। प्रधानमंत्री वाजपेयी ने अमेरिकी राष्ट्रपति

---

[10] जे एन दीक्षित, एक्रास बार्डर्स फिफ्टी ईयर्स आफ इडियाज फारेन पालिसी, नई दिल्ली, 1998, पृ0 414

[11] खालिद महमूद, रिबिल्डिग साइनो-इडियन रिलेशस - (1988-2000) रॉकी पाथ, अनसर्टेन डेस्टीनेशन, रीजनल स्टडीज, 19 (1) 2000 (विटर 2001) पृ0 19

[12] चाइना क्वार्टरली, 168, (दिसम्बर 2001), पृ0 867

[13] शिन्हुआ, बीजींग 13 मई 1998

बिल क्लिटन को एक गोपनीय पत्र भेजा। इस पत्र मे उन्होने अपने दो पडोसी देशो का नाम लिये बिना उनकी नाभिकीय महत्वाकाक्षाओ का हवाला देते हुए भारत के नाभिकीय परीक्षणो का औचित्य सिद्ध किया था। अमेरिकी प्रशासन ने काफी तत्परता से यह गोपनीय पत्र 'न्यूयार्क-टाइम्स' तक पहुॅचा दिया, जिसने उसे 13 मई 1998 को प्रकाशित कर दिया।[14] इस पत्र मे वाजपेयी ने क्लिटन को बताया था कि भारत की सीमा पर एक घोषित रूप से परमाणु शक्ति-सम्पन्न देश है तथा यह भी कि भारत 1962 में एक आक्रमण भी झेल चुका है। यद्यपि उस देश के साथ गत दशको में सम्बन्धों मे काफी सुधार हुआ है, फिर भी सीमा-विवाद को लेकर एक अविश्वास का माहौल अभी भी बना हुआ है। चीन द्वारा पाकिस्तान को नाभिकीय हथियारो के विकास में दी जाने वाली सहायता के सन्दर्भ मे वाजपेयी ने कहा कि इस देश द्वारा हमारे दूसरे पडोसी देश को नाभिकीय हथियार विकसित करने के लिए दी जा रही सहायता ने इस अविश्वास को और बढाया है। इस पत्र मे अटल बिहारी वाजपेयी ने अमेरिका के साथ घनिष्ठ सहयोग का प्रस्ताव करते हुए कहा, "हम आशा करते हैं कि आप भारत की सुरक्षा-चिताओ को समझेगे। भारत द्वारा किए गए इन परीक्षणो से किसी भी ऐसे देश को कोई खतरा नहीं है जो भारत के प्रति शत्रुतापूर्ण दृष्टिकोण न रखता हो। हम आपके देश के साथ तथा व्यक्तिगत रूप से आपके साथ मित्रतापूर्ण सम्बन्धो और सहयोग को काफी महत्व देते है।[15]

वाजपेयी द्वारा अमेरिकी राष्ट्रपति बिल क्लिटन को लिखे इस पत्र पर टिप्पणी करते हुए भारत के पूर्व विदेश सचिव जे.एन.दीक्षित ने कहा, "पत्र में चीन का विशेष सन्दर्भ नहीं दिया जाना चाहिए था। जार्ज फर्नांडीज के पूर्व के बयानो तथा इस पत्र ने

---

[14] न्यूयार्क टाइम्स, 13 मई 1998,

[15] द चाइना क्वार्टरली, 168, दिसम्बर, 2001, पृ0 868

चीन के साथ सम्बन्धो को सुधारने की प्रक्रिया को विपरीत दिशा मे ले जाने मे सहयोग किया है।[16]

चीन की सरकार ने वाजपेयी द्वारा अमेरिकी राष्ट्रपति क्लिटन को लिखे पत्र पर कडा रोष प्रकट किया। उसके अनुसार चीन के पास नाभिकीय हथियार होने से भारत को कोई खतरा नहीं है। चीन-पाकिस्तान सहयोग से भी भारत को कोई खतरा नहीं हो सकता, क्योकि किसी भी राष्ट्र के साथ सम्बन्ध निर्धारित करने का एक प्रभुता-सम्पन्न राष्ट्र को पूरा अधिकार है। अत चीन का पाकिस्तान अथवा म्यामार के साथ सैनिक सम्बन्धो का सहारा भारत ने केवल परमाणु परीक्षणो के औचित्य को सिद्ध करने के लिए लिया। वास्तव मे, भारत सरकार ने पश्चिम द्वारा लगाये जाने वाले प्रतिबन्धो को कम करने के लिए 'चीनी खतरे' के कार्ड का इस्तेमाल किया। वाजपेयी द्वारा क्लिटन को लिखे पत्र का निहितार्थ था चीनी खतरे का भय दिखाकर अमेरिका के साथ निकटता स्थापित करना, चीन को नाभिकीय हथियारो तथा मिसाइल तकनीकी का प्रच्छन्न प्रसारक बताना तथा पाकिस्तान द्वारा चीन की शह पर आतकवाद फैलाये जाने के कारण भारत की सुरक्षा-क्षमताओ मे महत्वपूर्ण वृद्धि की आवश्यकता को औचित्यपूर्ण सिद्ध करना।[17] भारत की नई सरकार को यह आशा थी कि यदि अमेरिका भारत के इन पक्षों को समझ लेता है तो वह उसके साथ अन्य क्षेत्रो मे सहयोग करने के लिए तैयार है।

वाजपेयी सरकार ने सत्ता मे आने के तुरन्त बाद से ही चीन के प्रति आक्रामक तेवर अपनाने शुरू कर दिये थे। चीन को अपने लिए खतरा बताकर वह अमेरिका के साथ चीन-विरोधी गुट मे शामिल होने को इच्छुक थी। चीन के लिए यह एक खतरनाक स्थिति थी। उसे भारत के परमाणु हथियार सम्पन्न होने से कोई खतरा नहीं

---

[16] आउटलुक, वीकली, नई दिल्ली, 1 जून, 1998

[17] द चाइना क्वार्टरली, 168, दिसम्बर, 2001, पृ0 869

था किन्तु भारत द्वारा अमेरिका के साथ गठबन्धन बना लेने से उसके लिए गम्भीर खतरा पैदा हो सकता था। अत चीन ने यह इच्छा जाहिर की कि भारत अपने को अमेरिका के साथ मिलकर चीन को घेरने से अलग कर ले।[18]

कहा जाता है कि 1995 मे ही नरसिम्हाराव सरकार ने 1998 सरीखे नाभिकीय परीक्षणो के लिए मजूरी दे दी थी। लेकिन अमेरिका को इसका पता चल गया और उसने इसे रोकने हेतु राव-सरकार पर पूरा दबाव डाला। बाद मे जब वाजपेयी सरकार सत्ता मे आई तो उसने ये परीक्षण सफलतापूर्वक सम्पन्न किए। वाजपेयी सरकार द्वारा परमाणु परीक्षण किए जाने के कई कारण थे।

पहला, द्वितीय विश्व युद्ध के बाद नाभिकीय दृष्टि से विश्व अत्यन्त ही असमान हो गया था। परमाणु अप्रसार सधि (एन.पी टी) का मुख्य उद्देश्य था- विश्व के सिर्फ चार बडे देशो - अमेरिका, सोवियत सघ, ब्रिटेन और फ्रांस को ही नाभिकीय देश बनाये रखना। बाद मे इसमे चीन ने जबर्दस्ती प्रवेश किया और 'पॉच बड़े देशों' की नाभिकीय इजारेदारी का समर्थन किया। सी.टी.बी.टी. (व्यापक परमाणु परीक्षण निषेध संधि) भी उतना ही भेदभाव बरतती है। वह गैर-परमाणु शक्ति सम्पन्न देशो पर इस वादे पर हस्ताक्षर करने पर जोर दे रही है कि वे नाभिकीय शक्ति न बने। लेकिन साथ ही नाभिकीय देश नाभिकीय नि शस्त्रीकरण का कोई वादा भी नहीं कर रहे है, पचास वर्षों के भीतर भी नहीं। भारत द्वारा ऐसा वादा मनमाने की कोशिशे नाकाम रही है। इसीलिए उसने सी.टी.बी.टी पर हस्ताक्षर करने से इन्कार कर दिया, वैसे ही जैसे एन पी.टी पर।[19]

---

[18] राज चेंगप्पा, मनोज जोशी, ''हॉकिश इडिया'' इडिया टुडे, 1 जून 1998 पृ0 28-34

[19] बिपिन चन्द्र, मृदुला मुखर्जी, आदित्य मुखर्जी, आजादी के बाद का भारत (1947-2000) नई दिल्ली, 2002, पृ0 390

दूसरा, भारत नाभिकीय देशो से घिर चुका था। एक ओर तो चीन था, एक ऐसा देश जिसने 1962 मे भारत पर हमला किया था। उसके पास चार सौ से पॉच सौ नाभिकीय बम है, और दूर तक बम ले जा सकने वाली मिसाइले, जिसमे आई सी बी एम (अन्तर्महाद्वीपीय बैलिस्टिक मिसाइले) भी शामिल है। चीन ने तिब्बत मे न्यूक्लियर अड्डे भी बना रखे है। दूसरी ओर, डियगो गार्सिया में अमेरिकी अड्डे से न्यूक्लियर जहाज भारत के पास सागर मे चक्कर लगाते रहते है। इसके अलावा, कजाकिस्तान, यूक्रेन और रूस के पास विकसित नभिकीय हथियार है। इधर, पाकिस्तान ने भी चीन के साथ मिलकर और उसकी सहायता से दूरगामी मिसाइल तथा नाभिकीय शक्ति प्राप्त कर ली है। पाकिस्तान पहले ही भारत को तीन युद्धो मे फॅसा चुका है, और लगातार शत्रुतापूर्ण तनाव बनाए रखे हुए है। वह 'गौरी' नामक जमीन-से-जमीन तक मार करने वाली बैलिस्टिक मिसाइले भी बना चुका है, जो 1500 कि.मी. तक मार कर सकती है। भारतीय परीक्षणो के तुरन्त बाद पाकिस्तान ने भी अपने परीक्षण किए। शायद इन परीक्षणो मे चीन ने बडी मदद की। चीन और पाकिस्तान का बढ़ता राजनयिक और न्यूक्लियर गठजोड तथा युद्ध तैयारियो मे सहयोग भारत के लिए बडी चिता का विषय है। इसी असमान विश्व-न्यूक्लियर व्यवस्था और पडोसियो से खतरे के सन्दर्भ मे ही भारत की न्यूक्लियर तैयारी और इस विकल्प के पक्ष मे कुछ समय तक देश मे प्राप्त समर्थन को समझा जा सकता है।[20]

भारत द्वारा परमाणु परीक्षण किये जाने के बाद अनेक देशो ने भारत के खिलाफ कड़े प्रतिबन्धो की घोषणा कर दी। इसी बीच 28 और 30 मई, 1998 को पाकिस्तान ने भी परमाणु परीक्षण कर लिए। चीन विश्व के देशो के साथ भारत पर दबाव बनाने की मुहिम मे जुट गया। उसने अमेरिका से भारत और पाकिस्तान पर

---

[20] वही, पृ0 390-391

कडे प्रतिबन्ध लागू करने की मॉग की तथा इस आधार पर भारत एव पाकिस्तान पर प्रतिबन्ध लगाने मे विभेद करने की भी मॉग की, क्योकि भारत ने पहले इस सकट की शुरूआत की थी।[21] चीन के राष्ट्रपति जियाग जेमिन ने कहा कि 'इस क्षेत्र मे तनावपूर्ण स्थिति भारत ने उत्पन्न की, अत इसका दोषारोपण भारत पर अवश्य ही किया जाना चाहिए।'[22] अमेरिकी प्रतिनिधियो के साथ होने वाली बातचीत मे चीनी दूत ने अमेरिका द्वारा ताईवान को हथियारो की आपूर्ति का मुद्दा भी नहीं उठाया जोकि अमेरिका द्वारा दक्षिण-एशिया के परमाणु-अप्रसार के प्रश्न पर चीन द्वारा हमेशा उठाया जाता था। चीन अब दक्षिण एशिया के परमाणु-अप्रसार के मुद्दे पर अमेरिका के साथ सहयोग करने के लिए तैयार था।

चीन ने सयुक्त राष्ट्र सघ के माध्यम से भी भारत पर अन्तर्राष्ट्रीय दबाव बनाने का प्रयास किया। उसने अमेरिका के साथ मिलकर सुरक्षा परिषद् के स्थायी सदस्यो के विदेशमत्रियो की एक बैठक 4 जून, 1998 को बुलाई, जिसमे सयुक्त विज्ञप्ति जारी करके सदस्य देशो से भारत तथा पाकिस्तान के परमाणु कार्यक्रम को समाप्त करने, दक्षिण एशिया मे शस्त्रों की होड को रोकने तथा इस क्षेत्र मे परमाणु अप्रसार को मजबूत करने हेतु सहयोग करने की अपील की गई। इसके दो दिन बाद चीन ने सयुक्त राष्ट्र द्वारा प्रस्ताव सं 1172 पास कराया जिसमे कहा गया था कि परमाणु परीक्षण बन्द किए जाएं, शस्त्र विकास कार्यक्रम बन्द किया जाए तथा मिसाइल विकास कार्यक्रम को छोड दिया जाए। 9 जुलाई, 1998 को जब भारत ने चीन के समक्ष परमाणु हथियारों के पहले न प्रयोग करने के सम्बन्ध मे समझौते का प्रस्ताव किया तो

---

[21] राबर्ट सटर, साउथ एशिया क्राइसिस चाइना एसेसमेन्ट्स एड गोल्स काग्रेसनल रिसर्च सर्विस मेमोरेण्डम, 11 जून 1998

[22] शिन्हुआ, बीजींग 3 जून 1998

चीन ने कहा कि भारत पहले अपने परमाणु हथियारो का त्याग करे तथा बिना किसी शर्त के सी टी.बी टी और एन पी टी पर हस्ताक्षर करे।[23]

चीन ने सीमा विवाद के हल हेतु गठित सयुक्त कार्यकारी दल को भी निलम्बित कर दिया जिसकी अगली बैठक 1998 में ही होने वाली थी। जून के प्रारम्भ मे सीमा समस्या पर बातचीत के लिए जब भारतीय अधिकारियो का एक दल बीजिग गया तो वहॉ उनका फीका स्वागत किया गया। चीनी सरकार के एक प्रवक्ता का कहना था कि, "हम चाहते है कि भारत चीन के खिलाफ निर्मूल टिप्पणी करना तुरन्त बन्द करे तथा जितना शीघ्र सम्भव हो, द्विपक्षीय सम्बन्धो को बढ़ाने हेतु ठोस कदम उठाये।[24]"

चीन ने कश्मीर मुद्दे पर पाकिस्तान की स्थिति को लेकर भी भारत पर दबाव बनाने का प्रयास किया। भारत तथा पाकिस्तान के विरूद्ध कार्रवाई हेतु सुरक्षा परिषद मे लाये गये प्रस्ताव पर बोलते हुए चीन के संयुक्त राष्ट्र संघ में राजदूत किन-हुआसुन ने कहा, "कश्मीर समस्या का समाधान संयुक्त-राष्ट्र के सम्बन्धित प्रस्ताव तथा 1972 के शिमला समझौते के अन्तर्गत शांतिपूर्ण वार्ता द्वारा होना चाहिए।" इस प्रकार चीन कश्मीर मुद्दे पर अपने पहले के पाकिस्तान-समर्थक दृष्टिकोण पर पुन पहुॅच गया। किन-हुआसुन ने यह भी कहा कि "हम ऐसी किसी भी कार्रवाई का विरोध करते है जो 'क्षेत्रीय-प्रभुत्ववाद' को बढ़ावा देती है।" क्षेत्रीय-प्रभुत्ववाद भारतीय नीति के लिए एक कूट वाक्य था।[25]

पोखरन ॥ के बाद चीन के साथ सम्बन्धो मे आ रही गिरावट पर रोक लगाने हेतु कुछ उपाय अपनाना आवश्यक समझा गया तथा द्विपक्षीय वार्ता को आरम्भ करने

---

[23] मिग झाग, 'इडियाज ब्लास्टस एड चाइनाज रियेक्शस', रिमार्क्स एट कारनेगी इनडोमेण्ट फार इटरनेशनल पीस कान्फ्रेन्स, 16 जुलाई 1998

[24] फारेन मिनिस्ट्री न्यूज ब्रीफिग्स, बीजिग रिव्यू, (29 जून - 5 जुलाई 1998) पृ0 22

[25] यूनाइटेड नेशन्स सिक्योरिटी काउन्सिल, 3890 वींमीटिग, 6 जून 1998, (इन द चाइना क्वार्टरली, 168 दिसम्बर, 2001, पृ0 स 873

हेतु प्रयास शुरू किए गए। आसियान रीजनल फोरम की जुलाई 1998 की बैठक मे भारत के प्रतिनिधि श्री जसवत सिह ने चीन के विदेश मत्री श्री ताग-जिया-जुआन से मुलाकात की तथा दोनो नेताओ ने उच्च सरकारी विचार-विमर्श की प्रक्रिया को चालू रखने का निर्णय किया लेकिन सम्बन्धो की प्रकृति सीमित ही रही। अक्टूबर 1998 मे जब प्रधानमत्री वाजपेयी ने दलाईलामा से मुलाकात की तो चीन ने इसकी तीव्र आलोचना की तथा कहा कि ऐसा करना दलाईलामा को राजनीतिक गतिविधियो मे शामिल करने के समान है। उसने यह भी कहा कि भारत चीन के विरूद्ध तिब्बत कार्ड का प्रयोग करने का प्रयास कर रहा है। चीन ने इस बात की धमकी भी दी कि वह भी कश्मीर-कार्ड का प्रयोग कर सकता है।

चीन ने भारत को यह भी स्पष्ट कर दिया कि उसके पाकिस्तान के साथ घनिष्ठ सैनिक सम्बन्ध पूर्ववत बने रहेगे। अगस्त 1998 में पाकिस्तान के सेनाध्यक्ष जनरल जहॉगीर करामत ने चीन के सेनाध्यक्ष के निमत्रण पर 10 दिन की चीन-यात्रा की। इस दौरान करामत की चीन के केन्द्रीय सैन्य आयोग के उपाध्यक्ष से भी बातचीत हुई। वार्ता के बाद कहा गया कि चीन तथा पाकिस्तान की मित्रता समय पर खरी उतरी है तथा चीन-पाकिस्तान की दोस्ती पंचशील के सिद्धान्तो पर आधारित है। इसलिए इस पर किसी को आपत्ति नहीं होनी चाहिए। जनरल करामत ने चीन द्वारा समय-समय पर दी गयी सहायता के लिए उसका आभार व्यक्त किया। जनरल करामत की यात्रा ने चीन-पाकिस्तान सैन्य सहयोग को सीमित करने के भारत के प्रयास को व्यर्थ कर दिया तथा दोनों देशो ने दक्षिण एशिया की बिगड़ती सुरक्षा स्थिति से निपटने के लिए सहयोग करने की इच्छा भी व्यक्त की।[26] मई 1998 के बाद से चीन द्वारा पाकिस्तान के मिसाइल कार्यक्रम को दी जाने वाली गुप्त सहायता और बढा दी गयी।

---

[26] द चाइना क्वार्टरली, 168, (दिसम्बर 2001), पृ0 874

अगस्त 1998 मे 'फ्रन्टलाइन' के सम्पादक एन राम ने चीन की 11 दिवसीय यात्रा की। इस दौरान उन्होने वहॉ के कई अधिकारियो एव विद्वानो से विचार-विमर्श किया।[27] चीन के विदेश मत्रालय के प्रवक्ता ने भारत की इस बात के लिए आलोचना की कि उसने अपने परमाणु परीक्षणों के लिए अनुचित रूप से 'चीनी खतरे' का सहारा लिया। प्रवक्ता ने आगे कहा कि चीन यह नहीं समझ पा रहा है कि क्षेत्र के सुरक्षा वातावरण को गिराने के लिए उस पर कैसे आरोप लगाया गया जबकि चीन वह अकेला नाभिकीय अस्त्र सम्पन्न देश है जिसने गैर नाभिकीय हथियार वाले देशों के विरूद्ध इनका प्रयोग न करने तथा इस क्षेत्र को 'नाभिकीय-अस्त्र मुक्त' क्षेत्र बनाने की घोषणा की है। चीन के प्रवक्ता ने चीन के शांतिपूर्ण इरादो को स्पष्ट करते हुए आगे कहा कि चीन ने अपनी सेना में दो बार कटौती की है पहली बार एक मिलियन तथा दूसरी बार आधा मिलियन।[28]

चीन के विदेश मत्रालय के प्रवक्ता ने चीन द्वारा दोनों देशो के बीच सम्बन्धों को बढाने हेतु किये गये प्रयासो का उल्लेख करते हुए एन0 राम से कहा कि भारत को चीन के खिलाफ की गई अपनी टिप्पणियो पर स्पष्टीकरण देते हुए आगे ऐसा करने पर रोक लगानी चाहिए। उनके अनुसार भारत को द्विपक्षीय सम्बन्धो को पुन. सुधारने हेतु कुछ ठोस कदम उठाने चाहिए।[29]

भारत मे चीन के राजदूत झू-गग ने 9 जुलाई को भारत की भर्त्सना करते हुए कहा, "कुछ लोग चीन के विरूद्ध अपमानजनक टिप्पणी कर रहे है और नितान्त ही असत्य रूप से भारत की सुरक्षा के लिए चीन को खतरा बता रहे है। उनके इन कथनो ने वर्तमान माहौल को गभीर रूप से खराब किया है, तथा भारत-चीन सम्बन्धो

---

[27] रीजनल स्टडीज, 19 (1), 2000 (विटर 2001), पृ0 22
[28] रीजनल स्टडीज, 19 (1), 2000 (विटर 2001), पृ0 22
[29] एन राम,'साइनो-इडियन रिलेशस ह्वाट लाइज अहेड? फ्रट लाइन, नई दिल्ली 25 सितम्बर, 1998, पृ0 4-21

के भविष्य को भी। चूँकि भारत ने ऐसी स्थिति उत्पन्न की है अत यह उसकी जिम्मेदारी है कि इस स्थिति को ठीक करे।"[30] 20 अक्टूबर 1998 को नई दिल्ली मे अन्तर्राष्ट्रीय मामलो के भारतीय महासघ को सम्बोधित करते हुए चीन के राजदूत झू-गग ने कहा, "चीन ने विश्व के किसी भी देश के लिए न तो कभी खतरा पैदा किया है, न करता है और न कभी करेगा। चीन दक्षिण-एशिया के सभी देशों से यह आशा करता है कि वे चीन के अच्छे पडोसी, अच्छे मित्र तथा अच्छे सहयोगी बनेगे। चीन के नेताओं ने हमेशा से भारत के साथ घनिष्ठ एव मित्रवत सम्बन्ध स्थापित करने की कामना की है तथा इसके लिए गम्भीर प्रयास भी किये है। कुछ लोगो ने चीन के विकास को अवरुद्ध करने तथा दूसरे देशो के साथ उसका मतभेद पैदा करने के लिए जानबूझकर 'चीनी खतरे का सिद्धान्त' प्रतिपादित किया है।"[31]

दक्षिण एशियाई मामलों के जाने-माने राजनीतिज्ञ सुब्रह्मण्यम स्वामी ने वाजपेयी सरकार की इस महत्वपूर्ण असफलता की निन्दा करते हुए कहा कि वाजपेयी सरकार से 'गॉठ को खोलने' की उम्मीद करना निरर्थक है।[32]

भारत द्वारा परमाणु परीक्षणो के बाद अमेरिका के राष्ट्रपति को पत्र लिखकर उसके औचित्य को सही ठहराते हुए अमेरिका से निकट सहयोग स्थापित करने की इच्छा ने चीन को भारत के विरूद्ध कड़ी प्रतिक्रिया करने के लिए प्रेरित किया। इस दौरान दोनो ने अमेरिका के माध्यम से एक-दूसरे पर दबाव बनाने का प्रयास किया। दोनों देशो ने बडी ही चतुराई से अमेरिका को अपने पक्ष मे करने का प्रयास किया। चीन का प्रयास रहा कि अमेरिका जहा भारत के विरूद्ध कडे प्रतिबन्ध लगाये वहीं पाकिस्तान को कुछ रियायत दे। भारत ने चीन द्वारा पाकिस्तान के नाभिकीय तथा

---

[30] शिन्हुआ,बीजींग 10 जुलाई 1998, इन फारेन ब्राडकास्ट इन्फार्मेशन सर्विस, डेलीरिपोर्ट, चाइना, न0 98-193
[31] जान डब्ल्यू गार्वर 'द रेस्टोरेशन आफ साइनो इडियन कमिटी फालोइग इडियाज न्यूक्लियर टेस्ट्स द चाइना क्वार्टरली, 168, दिसम्बर, 2001, पृ0 871
[32] सुब्रह्मण्यम स्वामी, 'वाजपेयीज चाइना फियास्को' फ्रटलाइन, 6 नवम्बर 1998

मिसाइल कार्यक्रमो को दी जा रही सहायता के आधार पर अमेरिका को अपने परमाणु कार्यक्रमो के विस्तार को समझाने का प्रयास किया। प्रारम्भ मे तो अमेरिका ने दक्षिण एशिया के इस परमाणु सकट के प्रति अपनी परमाणु अप्रसार की नीति के कारण तथा चीन के साथ अच्छे सम्बन्ध स्थापित करने की इच्छा के कारण तीखी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए चीन-समर्थक दृष्टिकोण अपनाया। बाद के कुछ महीनो मे अमेरिका ने चीन के भारत-विरोधी रूख को छोडते हुए एक अधिक तटस्थ दृष्टिकोण अपनाने का प्रयास किया। वास्तव मे, परमाणु-अप्रसार अमेरिका का दूरगामी उद्देश्य था जोकि क्लिटन प्रशासन तथा शीत-युद्धोत्तर युग मे अधिक महत्वपूर्ण बन गया। जियाग-जेमिन जब अक्टूबर 1997 मे अमेरिका गये थे तब दोनो देशों ने दक्षिण एशिया मे परमाणु-अप्रसार के लिए 'रचनात्मक रणनीतिक भागीदारी' की इच्छा व्यक्त की थी। दोनो देशो के राष्ट्रपतियों ने एक संयुक्त वक्तव्य देते हुए कहा था कि, "दोनो देश वैश्विक तथा क्षेत्रीय शाति एव स्थिरता बनाए रखने हेतु सहयोग की अपार क्षमता रखते है।"[33] भारत ने इस सयुक्त वक्तव्य से यह समझा कि चीन अब अमेरिका के साथ मिलकर दक्षिण एशिया की सुरक्षा में महत्वपूर्ण भूमिका निभायेगा। भारत की यह प्रत्याशा मई 1998 के परीक्षणो के बाद चीन और अमेरिका के बीच बढते गठजोड़ से और ठोस हो गई। भारत द्वारा परमाणु परीक्षण करने के बाद तथा पाकिस्तान द्वारा परमाणु परीक्षण करने से पूर्व क्लिटन ने चीनी राष्ट्रपति जियाग जेमिन से 'हाटलाइन' पर बात की। यह दोनो देशों के बीच अक्टूबर 1997 मे शुरू हुई सीधी सचार-सुविधा के बाद दोनो राष्ट्रपतियो का टेलीफोन पर पहला सीधा सम्पर्क था। इस 'हाटलाइन सम्पर्क' के दौरान क्लिटन ने जियाग-जेमिन से कहा कि वह अपने प्रभाव का इस्तेमाल

---

[33] द चाइना क्वार्टरली, 168, दिसम्बर, 2001,पृ0 स0 875

करके पाकिस्तान को भारत द्वारा किये गये परीक्षणो का जवाब देने से रोके। जियाग इस बात पर सहमत हो गये कि वह ऐसा एक पत्र पाकिस्तान को लिखेगे।

इसी दौरान पाकिस्तान के विदेशमत्री शमशाद अहमद के नेतृत्व मे एक प्रतिनिधिमडल चीन गया जहॉ दोनो पक्षों ने महत्वपूर्ण अर्न्राष्ट्रीय प्रश्नों तथा प्रासगिक सुरक्षा मुद्‌दो पर गहन विचार विमर्श किया। पाकिस्तान के विदेश मत्री ने चीन से 'नाभिकीय सुरक्षा छतरी' उपलब्ध कराने की मांग की ताकि पाकिस्तान को परमाणु परीक्षण न करना पडे। चीन ने ऐसी किसी नाभिकीय सुरक्षा-छतरी उपलब्ध कराने मे रूचि नहीं दिखाई। फलस्वरूप पाकिस्तान ने परमाणु परीक्षण करने का निर्णय लिया।[34]

दक्षिण एशिया के सुरक्षा मामलो मे अमेरिका की बढ़ती भागीदारी तथा चीन के साथ उसके गठजोड के परिणामस्वरूप जून 1998 मे अमेरिकी राष्ट्रपति बिल-क्लिटन ने चीन की यात्रा की। क्लिंटन की इस यात्रा के दौरान दोनो देशो के राष्ट्राध्यक्षो ने 27 जून, 1998 को 'दक्षिण एशिया पर एक सयुक्त वक्तव्य' जारी किया। इसे भारत ने अपने विरूद्ध चीन तथा अमेरिका के असाधारण गठबन्धन के परिणाम के रूप मे देखा। इस संयुक्त वक्तव्य में कहा गया था कि, "वैश्विक परमाणु अप्रसार तथा दक्षिण एशिया की शाति एवं सुरक्षा के प्रति चीन तथा अमेरिका की संयुक्त जिम्मेदारी है, जिसे इन परीक्षणों (भारत तथा पाकिस्तान द्वारा किये गए परमाणु परीक्षण) ने खतरे में डाल दिया है। संयुक्त राज्य अमेरिका तथा चीन दक्षिण एशिया मे नाभिकीय अस्त्रों एव मिसाइलों की बढती होड को रोकने हेतु मिलकर काम करने पर सहमत हो गये है।"[35]

इस संयुक्त वक्तव्य मे अमेरिका तथा चीन ने भारत और पाकिस्तान से अपने परमाणु परीक्षणो, नाभिकीय हथियारों तथा उनको ले जानी वाली मिसाइलों की तैनाती

---

[34] एजिजाबेथ रोजेनथाल, ''चाइना सीम्स टू डिनाय पाकिस्तान ए न्यूक्लियर अम्ब्रेला', न्यूयार्क टाइम्स, 21 मई 1998, पृ0 ए 7

[35] बीजिग रिव्यू, 20-27 जुलाई 1998, पृ0 17

को. रोकने और सी टी बी टी पर तुरन्त और बिना शर्त हस्ताक्षर करने को कहा। दोनो ने भारत तथा पाकिस्तान के बीच कश्मीर सहित समस्त मुद्दो के शातिपूर्वक समाधान हेतु सहयोग करने की इच्छा भी व्यक्त की।[36] इस प्रकार चीन ने अमेरिका के साथ निकटता स्थापित कर भारत को यह प्रदर्शित कर दिया कि अमेरिका को चीन के विरूद्ध खडा करने की उसकी कोशिश सफल नहीं हो पायी क्योकि अमेरिका की दृष्टि मे भारत की अपेक्षा चीन हमेशा से भारी रहा है। चीन तथा अमेरिका के इस बढते गठजोड की भारत मे कडी आलोचना की गयी। धीरे-धीरे अमेरिका ने भारत तथा चीन दोनो के प्रति अपनी नीतियो मे सतुलन लाना शुरू किया। भारत तथा चीन दोनो ही एक दूसरे के अमेरिका के साथ बढते सम्बन्ध से भयभीत रहते है। चीन के दबाव ने भारत को अमेरिका के साथ चीन-विरोधी गठजोड बनाने के लिए प्रेरित किया जबकि भारतीय दबाव ने अमेरिका के चीन के साथ गठजोड़ को कमजोर कर दिया।[37]

कड़ी आंतरिक आलोचना, अन्तर्राष्ट्रीय अलगाव तथा चीन के बढते दबावो का सामना करते हुए वाजपेयी सरकार ने चीन को शात करने की नीति अपनायी। इस क्रम मे पहला कदम उठाते हुए अधिकारियो को अन्य चार महाशक्तियों के साथ होने वाली बातचीत मे चीन का कोई उल्लेख नहीं करने का निर्देश दिया गया।[38] अगले कदम के रुप में प्रधानमंत्री के प्रधान सचिव ब्रजेश मिश्रा ने 29 अक्टूबर, 1998 को सरकार की चीन-नीति के सम्बन्ध में एक वक्तव्य दिया। इस वक्तव्य के अनुसार, “भारत चीन को एक शत्रु के रूप मे नहीं देखता तथा वह चीन के साथ हथियारों की होड करने का भी इच्छुक नहीं है। चीन के साथ सम्बन्धों में कुछ समस्याये जरूर है,

---

[36] वही, पृ0 17

[37] जान डब्ल्यू गार्वर, द रेस्टोरेशन आफ साइनो-इडियन कमिटी फालोइग इडियाज न्यूक्लियर टेस्ट्स, द चाइना क्वार्टरली, 168, दिसम्बर, 2001, पृ0 स 879

[38] दिलीप पडगॉवकर; ''पीएम्ज साइलेन्स आन चाइना मे बी ए स्ट्रेटेजी'', द सण्डे टाइम्स, 27 सितम्बर 1998

परन्तु इसका यह अर्थ नही है कि हम चीन को गम्भीर खतरा मानते है।"[39] जसवत सिह ने जब दिसम्बर, 1999 मे विदेश मत्रालय का कार्यभार सम्भाला तो चीन के विदेशमत्री ताग-जिया-जुआन ने उन्हे बधाई सदेश भेजा। जसवत सिह ने एक सम्वाददाता सम्मेलन को सम्बोधित करते हुये कहा कि भारत चीन के साथ सम्बन्ध बढाने का इच्छुक है और चाहता है कि औपचारिक वार्ता का दौर पुन शुरू किया जाय। उन्होने इस 'गॉठ को खोलने' मे आपसी विचार-विमर्श के द्वारा चीन से सहयोग करने की अपील भी की।[40]

इसी बीच दिसम्बर 1998 मे रूस के प्रधानमत्री येवगेनी प्रिमाकोव भारत की तीन दिवसीय यात्रा पर आये। पोखरन मे परमाणु परीक्षण होने के बाद रूस वह पहला देश था जिसका कोई उच्च-पदाधिकारी भारत-यात्रा पर आया था। अपनी इस यात्रा के दौरान प्रिमाकोव ने भारत-रूस-चीन का रक्षात्मक (सामरिक) त्रिकोण बनाने का सुझाव दिया। उनके इस सुझाव के पीछे अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर शक्ति सतुलन का समीकरण बनाने के अलावा विशुद्ध घरेलू नजरिये से समस्याओ को निपटाने की तजबीज भी थी। भारत-चीन-रूस तीनो ही ऐसे देश है, जिनके बीच सीमा-विवाद अभी भी जारी है। चीन के साथ भारत के सीमा विवाद में 1962 के चीनी आक्रमण के बाद और इजाफा हुआ है। इसी प्रकार रूस-चीन सीमा विवाद भी द्वितीय विश्व-युद्ध के बाद से जारी है। इन तीनो देशों के एक मच पर आने से सामरिक क्षेत्र मे तो आपसी सहयोग बढेगा ही साथ ही वे मसले भी हल होने की दिशा मे आगे बढेगे, जिन पर वर्षों से

---

[39] मनोरजन मोहती, "पार्टीज टू पचशील इडिया-चाइना रिलेशस एड द न्यूक्लियर एक्सप्लोजन्स इन साउथ एशिया", बुलेटिन आफ कन्सर्न्ड एशियन स्कालर्स, वाल्यूम 31 न 2, अप्रैल-जून 1999, पृ0 63
[40] द चाइना क्वार्टरली, 168, दिसम्बर, 2001, पृ0 स 880

असमजस की स्थिति बनी हुई है। इसके साथ ही आर्थिक मोर्चे पर भी सहयोग के नए मार्ग बनेगे।[41]

जब 24 मार्च, 1999 से यूगोस्लाविया पर नाटो के हमले शुरू हो गये तो रूस, चीन व भारत ने अपना कडा विरोध जताया। यह विरोध जायज इसलिए था, क्योकि सयुक्त राष्ट्र सघ द्वारा इस हमले की अनुमति नहीं दी गई थी। अत नाटो द्वारा किया गया यह हमला संयुक्त राष्ट्र संघ के लिखित सविधान का खुला उल्लघन माना गया। दूसरी तरफ यह निष्कर्ष निकाला गया कि नाटो के हमलो के पीछे अमेरिकी दबाव प्रमुख रूप से जिम्मेदार है। यूगोस्लाविया पर हमले के बाद प्रधानमत्री वाजपेयी ने घोषणा की कि भारत, रूस व चीन के बीच बनने वाले 'रणनीतिक त्रिकोण' मे भारत की सहमति है। शुरू-शुरू मे भारत, रूस व चीन में इसे गभीरता से नही लिया गया था तथा इसे केवल प्रिमाकोव का व्यक्तिगत विचार माना गया था। भारत-रूस तथा चीन के 'रणनीतिक त्रिकोण' पर टिप्पणी करते हुए एक समीक्षक ने कहा कि "बिल्ली के गले मे घटी बॉधेगा कौन ?"[42]

जनवरी 1999 में भारत के राष्ट्रपति के.आर.नारायणन ने चीन के भारत मे तत्कालीन राजदूत झू-गंग तथा पूर्व राजदूत शेग-रूईशेग के साथ होने वाली बैठक मे चीन के साथ व्यापक सहयोग का आह्वान करते हुए स्पष्ट किया कि न तो चीन भारत के लिए खतरा है और न ही भारत चीन के लिए। इससे चीन के साथ सम्बन्ध सुधारने की प्रक्रिया को काफी बढ़ावा मिला।[43]

26 फरवरी 1999 को भारत ने अधिकारी-स्तरीय प्रतिनिधिमंडल वार्षिक विचार विमर्श के लिए चीन भेजा। भारतीय प्रतिनिधिमंडल ने चीन के रुख को कठोर पाया

---

[41] डेमोक्रेटिक वर्ल्ड, 1-15 जनवरी 1999, पृ0 67
[42] एम वी कामथ,"ए साइनो-रूसो-इडियन एक्सिस, द सेण्टीनेल, 24 अप्रैल 1999
[43] द चाइना क्वार्टरली, 168, दिसम्बर, 2001, पृ0 880

तथा चीन ने भी शुरू मे यह घोषणा की कि इस विचार विमर्श को कोई सफलता प्राप्त नहीं हुई। परन्तु शीघ्र ही चीन ने यह कहा कि बैठक वास्तव मे सफल रही थी और दोनो देशो का दृष्टिकोण सकारात्मक तथा प्रगतिवादी था। अप्रैल 1999 मे सयुक्त कार्यकारी दल की 11 वीं बैठक बीजिग मे हुई[44] जिसमे दोनो देशो मे मित्रतापूर्ण एव सुखद वातावरण में विचार-विमर्श हुआ। दोनो देशो ने आपसी सम्बन्धो के विभिन्न क्षेत्रो मे मित्रतापूर्ण अच्छे पडोसी सम्बन्धो को विकसित करने पर बल दिया। दोनों ने एक बहु-केन्द्रीय विश्व के विकास की आवश्यकता की पूर्ति के लिए आपसी सहयोग को सशक्त करने पर भी सहमति व्यक्त की।

वास्तव मे वर्ष 1998 के अन्त मे हुई जसवत सिह तथा स्ट्रोब टालबोट के बीच हुई बातचीत के बाद अमेरिका तथा भारत के बीच बढती आपसी समझ ने चीन को 1999 के प्रारम्भ में भारत के साथ सम्बन्ध सुधारने के लिये प्रेरित किया। 1999 के प्रारम्भ तक अमेरिका चीन के उकसाने के बावजूद भारत के नाभिकीय कार्यक्रम के प्रति एक समझदारीपूर्ण दृष्टिकोण बना चुका था। अत वह सयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद के प्रस्ताव स. 1172 को पूरी तरह क्रियान्वित करने से भी पीछे हट रहा था।[45]

मई-जून 1999 मे भारत तथा पाकिस्तान के बीच कारगिल में हुए संघर्ष के दौरान चीन ने निष्पक्ष दृष्टिकोण अपनाया। पाकिस्तान द्वारा कारगिल में नियंत्रण रेखा के भीतर की गयी घुसपैठ को चीन ने अनुचित बताते हुए पाकिस्तान की इस दलील को मानने से इन्कार कर दिया कि उसका कारगिल सघर्ष मे कोई हाथ नहीं था तथा यह कि घुसपैठिए वास्तव मे कश्मीर के स्वतंत्रता सेनानी थे। पाकिस्तान के साथ चीन की पुरानी और निकट मैत्री की पृष्ठभूमि मे तथा उसके द्वारा पाकिस्तान के परमाणु

---

[44] द चाइना क्वाटली, वही, पृ0 स 880

[45] वही, पृ0 880

कार्यक्रम मे दी गई सहायता को ध्यान मे रखते हुए यह अपेक्षा थी कि कारगिल सघर्ष मे चीन पाकिस्तान का साथ अवश्य देगा, परन्तु ऐसा हुआ नही। अन्य देशो की भाति चीन ने भी पाकिस्तान से यही आग्रह किया कि वह कारगिल से अपने सैनिकों तथा अन्य घुसपैठियो को वापस बुला ले। चीन ने यह स्पष्ट कर दिया कि पाकिस्तान को कारगिल खाली करना ही पडेगा। इस प्रकार लम्बे समय के बाद चीन ने ऐसी नीति अपनाई जिससे भारत की स्थिति का समर्थन हुआ।[46]

शीत-युद्ध के बाद अन्तर्राष्ट्रीय समीकरणो में आये परिवर्तन के कारण चीन की विदेश नीति मे भी महत्वपूर्ण बदलाव आया है। चीन की विदेश नीति मे पाकिस्तान का महत्व धीरे-धीरे कम होता जा रहा है। इसके साथ ही भारत द्वारा चीन से सम्बन्ध सुधारने हेतु किए जा रहे निरन्तर कूटनीतिक प्रयासों ने भी इन मुद्दो पर चीन की सोच को प्रभावित किया है। इसके अतिरिक्त भी अन्य कई कारण हो सकते है जिन्होंने भारत पाकिस्तान के बीच हुए इस सघर्ष में चीन की तटस्थता के दृष्टिकोण को प्रभावित किया हो। यद्यपि कुछ समीक्षको ने कश्मीर मे घुसपैठ के प्रति चीन की तटस्थता को पाकिस्तान के पक्ष मे भी व्याख्यायित किया है।[47]

चीन द्वारा कारगिल संघर्ष मे पाकिस्तान-समर्थक दृष्टिकोण न अपनाये जाने के कई कारण हो सकते है- पहला, पाकिस्तान ने मई 1998 में चीन द्वारा परमाणु परीक्षण न करने की सलाह दिये जाने के बावजूद परीक्षण किया। पाकिस्तान द्वारा निरन्तर नाभिकीय और मिसाइल परीक्षण किए जाने के कारण अमेरिका की निगाह मे चीन की भूमिका भी संदिग्ध थी। चीन पर अमेरिकी प्रयोगशालाओ से नाभिकीय तथा

[46] वी एन खन्ना, लिपाक्षी अरोडा, भारत की विदेश नीति, नई दिल्ली, 2000, पृ0 स 170-171
[47] वी आर राघवन, 'चाइना, इडिया एड कश्मीर, द हिन्दू, 15 जून 1999, पृ0 10

मिसाइल तकनीकी चुराने का आरोप पहले से ही था। अत चीन को इस सन्दर्भ मे और अधिक सतर्क होना पडा।[48]

दूसरे, पाकिस्तान, चीन के जिन-जियांग प्रान्त मे इस्लामिक चरमपंथियो की बढती गतिविधियो को रोकने मे असफल रहा था। इसमे से कुछ चीनी युघुर मुस्लिम कारगिल मे घुसपैठ करते हुए भी पकडे गये। ऐसे में चीन जेहादी गतिविधियो के समर्थक के रूप मे दिखना नहीं चाहता था क्योकि यह उसके स्वय के हित में नहीं था। तीसरे, पाकिस्तान द्वारा अफगानिस्तान के मामलो मे नियत्रण बढाये जाने से चीन अन्य देशो की भाति चिन्तित था। चीन अपने सभी पडोसियो से अच्छे सम्बन्ध स्थापित करने का इच्छुक था। चौथे, कारगिल संघर्ष के सन्दर्भ मे चीन ने जो महत्वपूर्ण विश्लेषण किया वह यह था कि चीन, भारत तथा पाकिस्तान, तीनो ही नाभिकीय अस्त्रो तथा मिसाइलो से लैस है। यदि भारत तथा पाकिस्तान के बीच कोई नाभिकीय युद्ध छिडता है तो इससे निश्चित रूप से चीन के परमाणु हथियारो की सुरक्षा भी खतरे में पड जाती। इसके साथ ही इस पूरे क्षेत्र की शाति एव स्थिरता को भी खतरा उत्पन्न हो जाता। पॉचवें, अमेरिका द्वारा चीन पर परमाणु तथा मिसाइल तकनीकी चुराने का आरोप लगाये जाने के बाद चीन नहीं चाहता था कि इस सघर्ष के माध्यम से इस क्षेत्र मे पश्चिम का हस्तक्षेप हो और अन्तिम, कारगिल-सघर्ष पर अन्तर्राष्ट्रीय प्रतिक्रिया ने भी चीन के निष्पक्ष रहने के दृष्टिकोण को प्रभावित किया।[49]

कारगिल-सघर्ष के दौरान चीन द्वारा पाकिस्तान का समर्थन न किये जाने के बावजूद भी दोनो देशो मे सैनिक सहयोग बना रहा। कारगिल मे चल रहे सघर्ष के बीच ही 23 मई 1999 को पकिस्तान के ज्वाईंट स्टाफ कमिटी के अध्यक्ष तथा आर्मी

[48] स्वर्ण सिह, द कारगिल कानफ्लिक्ट ह्वाई एड हाउ आफ चाइनाज-न्यूट्रलिटी, स्ट्रेटेजिक एनालिसिस, अक्टूबर 1999, पृ0 1087

[49] स्वर्ण सिह, वही पृ0, 1088

चीफ आफ स्टाफ जनरल परवेज मुशर्रफ ने बीजिग की एक सप्ताह लम्बी यात्रा की। इस दौरान मुशर्रफ ने चीन की जनमुक्ति सेना के चीफ आफ जनरल स्टाफ फू-कुआन-ये से मुलाकात की जिन्होने पाकिस्तान के साथ अटूट मित्रता निभाने की घोषणा की। यद्यपि चीन ने पाकिस्तान की कश्मीर-मुद्दे के अन्र्राष्ट्रीयकरण की मॉग को ठुकरा दिया, फिर भी उसने कहा कि भारत की आपत्ति के बावजूद चीन द्वारा पाकिस्तान को दी जा रही सैनिक सहायता जारी रहेगी[50]

11 जून 1999 को पाकिस्तान के विदेशमत्री सरताज अजीज अपनी निर्धारित दिल्ली यात्रा से एक दिन पूर्व बीजिग पहुॅचे। इस दौरान सरताज अजीज ने चीन के विदेश मत्री तांग-जिया-जुआन से मुलाकात की। ताग ने कहा "कश्मीर मुद्‌दा अपने लम्बे इतिहास से उलझा हुआ है और इसे केवल शातिपूर्ण तरीको से ही हल किया जा सकता है और किया जाना भी चाहिए। चीन यह आशा करता है कि भारत और पाकिस्तान आपसी बातचीत के द्वारा कश्मीर-मुद्दे का कोई राजनीतिक समाधान निकाल लेगे।[51]

चीन की संसद के अध्यक्ष ली-पेग ने भी कहा कि चीन यह आशा करता है कि भारत तथा पाकिस्तान दक्षिण एशिया मे शाति तथा स्थिरता बनाये रखते हुए आपसी बातचीत से समस्या का कोई हल निकाल लेगे तथा स्थिति को और विस्फोटक बनाने से बचेंगे।

भारत के विदेश मत्री जसवंत सिंह ने 15 से 17 जून 1999 को चीन की यात्रा की। इस दौरान जसवंत सिह ने चीन के उच्च्च स्तरीय नेताओ से बातचीत की। इससे पूर्व वह दिल्ली में पाकिस्तान के विदेशमंत्री सरताज अजीज से कारगिल-प्रकरण

---

[50] जान डब्ल्यू गार्वर, द रेस्टोरेशन आफ साइनो-इडियन कमिटी फालोइग इडियाज न्यक्लियर टेस्ट्स, द चाइना क्वार्टरली, 168, दिसम्बर, 2001, पृ0 स 882

[51] चाइना होप्स फार इफेक्टिव साल्युशन इन कश्मीर; चाइना डेली, 12 जून 1999, पृ0 1

पर बात कर चुके थे। अत उन्होने चीन को पाकिस्तान द्वारा कारगिल क्षेत्र मे नियत्रण रेखा पर युद्ध जैसी स्थिति उत्पन्न किए जाने से अवगत कराया। जसवत सिह की इस यात्रा से चीन के साथ सम्बन्धो मे सुधार होने की प्रक्रिया तेज होने लगी। इस दौरान ताग जिया जुआन ने कहा, "भारत-चीन सम्बन्ध विकास की प्रक्रिया मे पहुँच चुके है और जसवत सिह की यात्रा इस दिशा मे एक महत्वपूर्ण कदम है। दोनो देश एक दूसरे को खतरा नहीं मानते है। भारत चीन का महत्वपूर्ण पडोसी है तथा उसके साथ अच्छे सम्बन्ध बनाना चीन की राष्ट्रीय नीति है।"[52]

इस यात्रा के दौरान दोनो विदेशमंत्रियो ने एक 'सुरक्षा-वार्तालाप' शुरू करने पर सहमति व्यक्त की। दोनो ने बदलती अन्तर्राष्ट्रीय परिस्थितियो पर भी विचार विमर्श किया। दोनो देश इस बात पर सहमत थे कि विश्वास स्थापित करने वाले उपायो को सुदृढ़ किया जाना चाहिए। दोनो देशों ने सयुक्त कार्यकारी दल की गतिविधि को तेज करने तथा द्विपक्षीय सम्बन्धों को सुधारने के लिए राजनीतिक, कूटनीतिक तथा सैनिक स्तर पर प्रतिनिधिमडलो की यात्राओं को बढ़ाने का निर्णय भी किया।[53] दोनो देशो के विदेशमंत्रियों की अगली मुलाकात सिंगापुर में आसियान क्षेत्रीय फोरम की बैठक के दौरान हुई, जहाँ द्विपक्षीय सहयोग हेतु छ· उपक्रमो को अपनाने पर सहमति व्यक्त की गयी। चीनी पक्ष ने यह भी स्वीकार किया कि दक्षिण एशिया मे भारत की महत्वपूर्ण भूमिका है।[54]

जून 1999 के अन्त मे पाकिस्तान के प्रधानमत्री नवाज शरीफ चीन की पॉच दिवसीय (बाद मे इसे तीन दिन पहले ही समाप्त कर दिया गया) 'कार्यकारी यात्रा' पर

---

[52] स्ट्रेटेजिक एनालिसिस, 23 (7), अक्टूबर 1999, पृ0 1099
[53] मीरा सिन्हा भट्टाचारजी, इडिया-चाइना-पाकिस्तान बियाण्ड कारगिल - चेजिग इक्वेशस, चाइना रिपोर्ट, 35 (4), (अक्टू-दिसम्बर-1999) पृ0 497
[54] पी एस सूर्यनारायण, चाइना रिन्यूज आफर सिक्योरिटी डायलाग शिफ्ट इन इण्डो-यूएस टाईज" द हिन्दू, 25 जुलाई 1999, पृ0 1

बीजिग पहुँचे। उनकी यात्रा का उद्‌देश्य कश्मीर-मुद्दे को सयुक्त राष्ट्र मे ले जाने हेतु चीन का समर्थन हासिल करना था। चीन ने पाकिस्तान के इस प्रयास को मानने से इन्कार कर दिया। चीन के प्रधानमंत्री झू-रोग्जी ने नवाज शरीफ को कश्मीर मुद्दे के शातिपूर्ण समाधान के लिए भारत से बातचीत करने को कहा।[55]

'यह सही है कि पाकिस्तान के प्रधानमत्री नवाज शरीफ चीन से बहुत प्रसन्न होकर नहीं लौटे परन्तु चीन ने कुछ ऐसी बातें कही जो बड़ी चिन्ताजनक थी। चीन के प्रमुख समाचार पत्र 'चायना डेली' ने यह कहा कि कारगिल मे तुरन्त युद्ध विराम होना चाहिए। इसका सीधा अर्थ यह हुआ कि जो क्षेत्र पाकिस्तान ने हडप लिया है वह पाकिस्तान के पास रह जाय और जो क्षेत्र भारत ने खो दिया है उसकी वह परवाह न करे । इसी बीच पेरिस मे चीन ने अपने देश में बने रक्षा-उपकरणो की प्रदर्शनी में कहा कि वह पाकिस्तान के साथ मिलकर आधुनिकतम लडाकू हवाई जहाज बनाएगा। भारत के लिए सच यह है कि अपने-अपने स्वार्थ के कारण अमेरिका और चीन जम्मू- कश्मीर तथा कारगिल में युद्ध-विराम को मुद्दा बनाकर भारत और पकिस्तान के झगड़े में पंच बनना चाहते है। डर यह है कि कहीं हम अनजाने मे चीन या अमेरिका के चक्रव्यूह मे फॅस न जाएँ।[56]

फरवरी 2000 मे भारत के उद्योगमत्री मुरासोली मारन ने चीन की यात्रा की। उनकी यह यात्रा पूरी तरह से व्यापार से सम्बन्धित थी। भारत ने चीन के साथ एक समझौते पर हस्ताक्षर किए जिसमे विश्व-व्यापार संगठन में चीन की सदस्यता को समर्थन देने का उल्लेख था । मुरासोली मारन ने कहा कि विश्व-व्यापार सगठन मे चीन के प्रवेश से विकासशील देशो के हाथ मजबूत होगे।[57]

---

[55] स्ट्रेटेजिक एनालिसिस, 23 (7), (अक्टू 1999), पृ0 1093
[56] डॉ गौरी शकर राजहस 'कठोर निर्णय लेने की आवश्यकता', हिन्दुस्तान, लखनऊ, 4 जुलाई 1999
[57] द हिन्दू, 17 फरवरी 2000

जनवरी 2000 मे तिब्बत के एक वरिष्ठ धर्मगुरू करमापा लामा के अचानक चीनी नियत्रण से भागकर भारत आ जाने की घटना ने पुन दोनो देशो के बीच सम्बन्धों को तनावपूर्ण बना दिया। कांग्यू पथ के 17 वे करमापा उग्येन त्रिनले दोरजी का भारत-आगमन विवाद का कारण बन गया क्योकि यह मुद्दा अन्तर्राष्ट्रीय मानवाधिकारो से लेकर तिब्बती समुदाय से भी जुडा हुआ था। 1959 मे जब दलाई लामा भारत आए थे तो उन्होने स्पष्ट तौर पर स्वीकार किया था कि भारत की भूमि से कोई भी राजनीतिक मुहिम नहीं चलाई जाएगी। किन्तु इस आश्वासन के बावजूद कई ऐसे अवसर आये है जिसमे तिब्बती सम्प्रदायो ने भारत की भूमि से राजनीतिक आदोलन चलाने की कोशिश की है। चीन ने करमापा के भारत-आगमन को लेकर चेतावनी दी कि यदि भारत करमापा को शरण देता है तो भारत-चीन सम्बन्धो पर नकारात्मक प्रभाव पडेगे जिसके लिए भारत उत्तरदायी होगा। चीन ने कहा कि ऐसा करना शातिपूर्ण-सहअस्तित्व की नीति के विरुद्ध होगा। भारत ने चीन के इस वक्तव्य पर कोई प्रतिक्रिया व्यक्त नहीं की। वास्तव मे, करमापा के भारत पलायन का विषय करमापा और चीन के अधिकारियो के बीच तय किया जाना चाहिए। इसमे भारत का कोई स्वार्थ नहीं है। जहॉ तक करमापा को राजनीतिक शरण देने की बात है, यह भारत की सम्प्रभुता का विषय है,चीन इस मुद्दे को लेकर भारत पर दबाव नहीं डाल सकता। राजनीतिक शरण देने का यह अर्थ कतई नहीं है कि भारत चीन के आन्तरिक मामले मे हस्तक्षेप कर रहा है। न ही इससे इस बात का सकेत मिलता है कि भारत चीन की अक्षुण्णता को चुनौती दे रहा है।[58]

मार्च 2000 मे भारत तथा चीन के बीच 'सुरक्षा-वार्तालाप' का पहला दौर बीजिग में सम्पन्न हुआ। इस वार्तालाप मे दोनो देशों ने परमाणु शस्त्र के मुद्दे पर

---

[58] जे एन,दीक्षित, करमापा विवाद और भारत-चीन सम्बन्ध, हिन्दुस्तान, 23 जनवरी 2000

विचार किया। भारत ने चीन द्वारा पाकिस्तान को दी जाने वाली परमाणु एव मिसाइल सहायता को क्षेत्रीय स्थिरता पर प्रतिकूल प्रभाव डालने वाला बताया।[59] चीन ने कहा कि उसके पाकिस्तान से सामान्य सम्बन्ध है तथा यह किसी तीसरे देश के विरूद्ध नहीं है। इस वार्तालाप में भारत ने अपनी नयी परमाणु नीति को परिभाषित किया। चीन ने कहा कि भारत को अपना परमाणु शस्त्र कार्यक्रम बन्द करके सी.टी बी.टी पर हस्ताक्षर कर देना चाहिए। चीन ने यह भी कहा कि भारत को सुरक्षा परिषद के प्रस्ताव सख्या 1172, जिसमें भारत तथा पाकिस्तान को अपने-अपने परमाणु शस्त्र कार्यक्रम बन्द करके सी टी.बी.टी पर हस्ताक्षर करने के लिए कहा गया था, पर कार्य करना चाहिए। ऐसे मतभेदों के बावजूद दोनो देशो के बीच सुरक्षा वार्तालाप का प्रारम्भ होना एक प्रगतिपूर्ण कदम माना गया।[60]

अमेरिका के राष्ट्रपति बिल क्लिंटन की बहु-प्रचारित भारत-यात्रा अप्रैल 2000 में सम्पन्न हुई। अमेरिकी राष्ट्रपति की इस यात्रा से भारत तथा अमेरिका के आपसी सम्बन्धो मे एक नया मोड़ आया। भारतीय जनमानस के मस्तिष्क से अमेरिका की 'स्वाभाविक अविश्वासी' वाली छवि दूर हुई तथा अमेरिका ने अपनी पाकिस्तान के पक्ष में 'निन्दापूर्ण झुकाव' वाली छवि को भी एक बार फिर सुधारने का प्रयास किया।[61] वाजपेयी सरकार ने क्लिंटन की इस भारत यात्रा को भारत की भविष्य में विश्व-शक्ति बनने की महत्वकांक्षा के लिये समर्थन के रुप मे देखा। चीन ने यद्यपि क्लिटन की इस यात्रा को 'भारत-अमेरिका धुरी' के रुप मे तो नही देखा परन्तु वह इस यात्रा के वैश्विक शक्ति समीकरणों के निहितार्थो पर गम्भीर नजर रखे हुए था।

28 से 29 अप्रैल 2000 को नई दिल्ली मे भारत तथा चीन के बीच

---

[59] सी राजा मोहन, ''इडिया-चाइना टू टाक डिस्पाइट न्यूक्लियर डिफरेंसेज, द हिन्दू, 9 मार्च 2000
[60] टाइम्स आफ इडिया, 9 मार्च 2000
[61] प्रान चोपडा, ' क्लिटनूस विजिट एड आफ्टर', द फ्रटलाइन, फोर्टनाइटली, चेन्नई, 28 अप्रैल 2000

सीमा- विवाद के समाधान हेतु गठित सयुक्त कार्यकारी दल की 12 वीं बैठक सम्पन्न हुई। इस बैठक मे दोनो देश 'अग्रगामी दृष्टि' अपनाने तथा सीमा-विवाद को हल करने हेतु एक विशेषज्ञ समूह का गठन करने पर सहमत हुए। इसके अतिरिक्त इस बैठक मे दोनो देशो की सेनाओ के बीच विश्वास उत्पन्न करने वाले उपायो को अपनाने तथा वास्तविक नियंत्रण रेखा के स्पष्टीकरण पर भी चर्चा की गयी।[62] अप्रैल 2000 में ही भारत-चीन के कूटनीतिक सम्बन्धो की स्थापना की पचासवीं वर्षगाठ मनाई गयी। इस अवसर पर बीजिग तथा नई दिल्ली मे समारोह आयोजित किए गए तथा दोनो देशों के नेताओं ने एक-दूसरे को बधाई सन्देश भेजे। दोनो देशो ने यह आशा व्यक्त की कि सम्बन्धो में सामान्यीकरण की नई शुरूआत से रचनात्मक, सहयोगात्मक तथा मित्रतापूर्ण सम्बन्धो की स्थापना हो सकेगी।[63]

चीन के निमत्रण पर भारत के राष्ट्रपति के.आर.नारायणन मई-जून 2000 में चीन की यात्रा पर गये। वह इससे पहले चीन मे भारत के राजदूत रह चुके थे। नारायणन ने अपनी छह दिवसीय चीन-यात्रा से पूर्व नई दिल्ली मे चीनी पत्रकारों को दिए गए साक्षात्कार मे कहा कि सीमा पर शांति है और हमने चीन के साथ सीमा पर शांति से जुडी एक संधि तथा विश्वास निर्माण उपाय से जुडी एक संधि पर हस्ताक्षर किया है। सरकारी संवाद समिति शिन्हुआ के अनुसार राष्ट्रपति ने कहा कि भारत चीन के साथ विभिन्न स्तरो पर बातचीत कर रहा है। उन्होने कहा कि भारत-चीन सीमा मुद्दे पर सयुक्त समूह और विशेषज्ञ समूह सहिष्णुतापूर्वक दोनो देशों की समस्याओ पर विचार विमर्श कर रहे है।[64]

---

[62] एशियन सर्वे, 41 (2),(मार्च-अप्रैल 2001), पृ0 356

[63] रीजनल स्टडीज, 19 (1), 2000 (विटर 2001), पृ0 26

[64] 27 मई 2000, हिन्दुस्तान, लखनऊ

राष्ट्रपति की इस चीन-यात्रा के दौरान चीन के नेताओ से हुई बातचीत मे 'वैश्विक आतकवाद' तथा सुरक्षा परिषद के विस्तार का मुद्दा प्रमुखता से उठाया गया। चीन ने आतकवाद को रोकने मे अन्तर्राष्ट्रीय समुदाय का सहयोग करने की इच्छा तो व्यक्त की परन्तु सुरक्षा परिषद मे स्थायी सदस्यता हेतु भारत के दावे के प्रति कोई वायदा नहीं किया। इस दौरान चीन ने भारत के परमाणु हथियार कार्यक्रम के मुद्दे को तो नहीं उठाया किन्तु सुरक्षा परिषद के प्रस्ताव सख्या 1172 के पूरी तरह क्रियान्वयन मे ढील देने का सकेत भी नहीं दिया।[65]

राष्ट्रपति के. आर नारायणन की यह चीन-यात्रा द्विपक्षीय सम्बन्धो को आगे बढाने की दिशा में बहुत महत्वपूर्ण सिद्ध हुई। इस यात्रा के दौरान राष्ट्रपति ने पीकिग विश्वविद्यालय को सम्बोधित करते हुए कहा, 'भारत तथा चीन के बीच सम्बन्ध हजारो वर्ष पुराने है। दोनों देशों की ऐतिहासिक धरोहर एक है। दोनो देश विश्व की दो प्राचीन सभ्यताएँ है तथा इनके बीच सांस्कृतिक, राजनीतिक तथा आर्थिक सम्बन्ध बहुत ही प्राचीन है। अत दोनो देशो को चाहिए कि वे इस क्षेत्र की शांति, स्थिरता तथा अपने लोगों की भलाई के लिए एकजुट होकर काम करें। मेरा विश्वास है कि आने वाले दिनो में भारत-चीन की मैत्री दो प्राचीन सभ्यताओ के बीच सामंजस्यपूर्ण सम्बन्धों का अनूठा उदाहरण प्रस्तुत करेगी तथा यह एक न्योयोचित, स्थिर तथा शातिपूर्ण विश्व व्यवस्था के लिए आधार भी होगी'।[66] इस यात्रा के दौरान भारत ने चीन को विश्वास दिलाया कि दलाई लामा व अन्य किसी तिब्बती शरणार्थी को भारत की भूमि का चीन के विरूद्ध राजनीतिक कार्य के लिए प्रयोग नहीं करने दिया जाएगा तथा भारत तिब्बत को चीन का अभिन्न अग मानता है, तो दूसरी ओर चीन ने भी आश्वस्त किया कि

---

[65] द हिन्दू, 1 जून 2000

[66] के आर नारायणन, ह्वाई साइनो-इडियन कोआपरेशन इज ए हिस्टोरिकल नेसेसिटी इन द न्यू सेन्चुरी, मेनस्ट्रीम, 24 जून, 2000, पृ0 9

पाकिस्तान के साथ उसकी मित्रता भारत के विरुद्ध नहीं है। जियाग-जेमिन ने कहा कि दोनो देशो के मध्य सम्बन्धो की स्थापना रणनीतिक बुलन्दियो तथा दूर-दृष्टि के साथ होनी चाहिए।

दोनो देशो के बीच आपसी विश्वास कायम करने के लिए किए जा रहे उच्च स्तरीय राजनीतिक सम्पर्कों के क्रम मे चीन के विदेश मत्री ताग-जिया जुआन ने जुलाई 2000 मे भारत की यात्रा की। चीन के विदेशमत्री ने भारतीय विदेश मत्री जसवंत सिह से काफी लम्बी बातचीत की। इस दौरान दोनो नेताओ ने सीमा-विवाद, नाभिकीय अप्रसार, सयुक्त राष्ट्र मे सुधार, सीमा-पार आतकवाद तथा पाकिस्तान के नाभिकीय तथा मिसाइल कार्यक्रम को चीन द्वारा दी जा रही सहायता सहित अनेक अन्तर्राष्ट्रीय मुद्दो पर विचार विमर्श किया।[67] नई दिल्ली मे एक सवाददाता सम्मेलन को सम्बोधित करते हुए तांग-जिया-जुआन ने वास्तविक नियत्रण रेखा के निर्धारण की प्रक्रिया को तथा सयुक्त कार्यकारी दल की गतिविधियो को तेज किये जाने की आशा प्रकट की। नई दिल्ली आने से पूर्व एक भारतीय संवाददाता द्वारा भेजे प्रश्नो के लिखित उत्तर मे तांग ने कहा, "हम दक्षिण एशिया मे शांति तथा स्थिरता चाहते है"।[68] ताग-जिया-जुआन ने कहा कि भारत तथा चीन के महत्वपूर्ण अन्तर्राष्ट्रीय मुद्दो पर समान विचार है। दोनों देश बहु-केन्द्रीय विश्व तथा नई अन्तर्राष्ट्रीय आर्थिक एवं राजनीतिक व्यवस्था स्थापित करने के पक्षधर हैं। आतकवाद के मुद्दे पर चीन का विचार व्यक्त करते हुए उन्होंने कहा कि, चीन किसी भी प्रकार के अन्तर्राष्ट्रीय आतकवाद, जोकि इसे एक राजनीतिक हथियार के रूप मे प्रयोग करता है, की निन्दा करता है तथा अन्तर्राष्ट्रीय समुदाय द्वारा उसके विरूद्ध किये जा रहे हर प्रयास का

---

[67] द चाइना क्वार्टरली, 168, दिसम्बर 2001, पृ0 886

[68] द हिन्दू, 22 जुलाई, 2000

समर्थन करता है। तिब्बत के प्रश्न पर उन्होने कहा कि दलाई लामा को तिब्बत की स्वतत्रता की बात छोड देनी चाहिए तथा तिब्बत को चीन का अपृथक्करणीय अग स्वीकार करने की सार्वजनिक घोषणा करनी चाहिए। ताग ने चीन द्वारा पाकिस्तान को दी जा रही मिसाइल तथा परमाणु कार्यक्रम मे सहायता का विशेष सन्दर्भ न देते हुए कहा कि चीन का पाकिस्तान के साथ वैसा ही सैन्य तथा व्यापारिक सम्बन्ध है, जैसा कि दो सम्प्रभु राष्ट्रो के बीच सामान्य रूप से होता है तथा यह किसी भी प्रकार से दक्षिण-एशिया मे शाति तथा स्थिरता के लिए खतरे को एवम् शस्त्रो की होड को बढावा नहीं देता है। उन्होने यह भी कहा कि चीन चाहता है कि भारत तथा पाकिस्तान आपसी बातचीत के द्वारा अपने विवादो का समाधान निकाल ले।[69]

तांग-जिया-जुआन ने अपनी भारत यात्रा के तुरन्त बाद पाकिस्तान की यात्रा की, जहॉ उन्होने चीन तथा पाकिस्तान की मैत्री को 'सदाबहार मैत्री' बताते हुए कहा कि भारत तथा चीन के बढ़ते रिश्तों के कारण चीन तथा पाकिस्तान के रिश्ते प्रभावित नहीं होगे।[70] पाकिस्तान के मुख्य कार्यकारी जनरल परवेज मुशर्रफ के साथ बातचीत मे ताग ने कहा कि चीन-पाकिस्तान मैत्री 'अन्तर्राष्ट्रीय परिवर्तनो तथा समय पर खरी' उतरी है। चीन पाकिस्तान के साथ सहयोग बढ़ाने तथा उसे मजबूत करने का पक्षधर है। जनरल मुशर्रफ तथा तांग के बीच चीन द्वारा पाकिस्तान को नाभिकीय तकनीकी के हस्तांतरण के अमेरिकी दुष्प्रचार के मुद्दे पर भी बातचीत हुई।[71]

21 वीं शताब्दी के प्रारम्भ मे चीन की नेशनल पीपुल्स काग्रेस की स्थायी समिति के अध्यक्ष ली-पेंग द्वारा की गयी भारत यात्रा से दोनो देशों के बीच सामान्य हो रहे सम्बन्धो की प्रक्रिया को बल मिला। जनवरी 2001 मे भारत की नौ दिवसीय

---

[69] रीजनल स्टडीज, 19 (1), 2000 (विटर 2001), पृ0 स 28
[70] द न्यूज, (इस्लामाबाद) 27 जुलाई 2000,
[71] शिन्हुआ,बीजिग, 25 जुलाई, 2000

यात्रा पर आये ली-पेग के साथ चीन के वरिष्ठ अधिकारियो, व्यापारियो और अन्य राजनीतिक सहायको का एक बडा शिष्टमडल भी आया।[72] इस दौरान इडिया इटरनेशनल सेन्टर, नई दिल्ली मे दिये गये अपने भाषण मे ली-पेग ने कहा, "आज के विश्व में दो प्रमुख प्रवृत्तियॉ स्पष्ट हो रही है पहली, विश्व-राजनीति का बढता हुआ बहु-ध्रुवीकरण तथा दूसरी, विश्व-अर्थव्यवस्था का बढता हुआ भू-मण्डलीकरण। विश्व-शाति तथा न्यायोचित अन्तर्राष्ट्रीय राजनीतिक-आर्थिक व्यवस्था की स्थापना के लिए बहु-ध्रुवीकरण की प्रक्रिया को बढाना ही होगा। विश्व का भाग्य विश्व के लोगो के हाथो मे होना चाहिए। विश्व समुदाय को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि भूमंडलीकरण की प्रक्रिया से विश्व-अर्थव्यवस्था का संतुलित, तथा स्थायी विकास हो। विश्व शाति तथा मानव कल्याण हेतु भारत तथा चीन के कधो पर महत्वपूर्ण जिम्मेदारी है। भारत के साथ-साथ अपने सभी पड़ोसी देशों के साथ मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध स्थापित करना चीन की वर्तमान विदेशनीति का महत्वपूर्ण सिद्धांत है। हमने भारत को कभी खतरे के रूप मे नहीं देखा। हम भारत के साथ आर्थिक एवं व्यापारिक सहयोग बढाने के इच्छुक है। हम इस बात से सहमत है कि भारत तथा चीन के बीच आपसी समझ तथा विश्वास मे अभी भी कमी है तथा हमें इसे सुदृढ़ करने के लिए और प्रयास करना होगा। चीन एक समृद्ध, विकसित तथा मजबूत भारत देखना चाहता है तथा क्षेत्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय मामलो मे भारत की सक्रिय भागीदारी का स्वागत करता है। यद्यपि भारत तथा चीन मे अलग-अलग प्रकार की राजनीतिक व्यवस्थाएँ है, फिर भी चीन की नेशनल पीपुल्स काग्रेस तथा भारत की ससद एक दूसरे से बहुत कुछ सीख सकते हैं। इसके अलावा दोनो ससदो के बीच सम्पर्क स्थापित होने से दोनो देशो तथा इसके लोगो के बीच मैत्री

---

[72] हिन्दुस्तान, लखनऊ, 4 फरवरी 2001

तथा सहयोग को भी बढावा मिलेगा। भारत तथा चीन को एशिया तथा विश्व की शान्ति एव विकास के लिए साथ-साथ मिलकर काम करना चाहिए'।[73]

जिस राजनीतिक-सामाजिक वातावरण मे ली-पेग भारत आये, उसके कुछ महत्वपूर्ण तत्वो पर भी गौर करना होगा। भारत के परमाणु अस्त्र कार्यक्रम को लेकर जो आलोचनात्मक या आक्रामक माहौल बना था, वह पिछले दो वर्षो मे राष्ट्रपति के0आर0 नारायणन तथा विदेश मत्री जसवत सिह की चीन-यात्रा और चीन के राष्ट्रपति तथा विदेशमत्री की भारत, यात्रा से ठडा पड़ चुका था। चीन की सुरक्षा-चिन्ता, अमेरिका की प्रक्षेपास्त्र रक्षा प्रणाली के विकास और उसके पश्चिमी प्रशान्त पर तैनाती के कार्यक्रम पर केन्द्रित हो चुकी है। जापान और अमेरिका के बीच सुरक्षा-समझौतो का नवीकरण, चीन के लिए एक और सिरदर्द है। उसे जिन-जियाग प्रान्त में अलगाववाद और तिब्बत मे अशाति का भी सामना करना पड़ रहा है। हालाकि आर्थिक उपलब्धियो का चीन का एक शानदार रिकार्ड है, लेकिन वह बेरोजगारी, गॉवो से शहरो की ओर अनियन्त्रित पलायन और खाद्य असुरक्षा की समस्याओं से जूझ रहा है। कुछ हद तक वह भारत के परमाणु अस्त्र और प्रक्षेपास्त्र कार्यक्रम को भी अपनी सुरक्षा के लिए चिन्ता मानता है। 1998 मे परमाणु परीक्षणो के कारण आर्थिक, राजनीतिक और सामरिक दृष्टि से अलग-थलग पडने के बाद भारत ने स्थिति को जैसे सॅभाला, अमेरिका और पश्चिमी यूरोप के देशो के साथ भारत के सम्बन्धो में उल्लेखनीय सुधार, आसियान समुदाय मे भारत की बढती स्वीकार्यता, आसियान क्षेत्रीय सुरक्षा मच में भारत की भागीदारी जैसे कारणों का असर चीन की भारत नीतियो पर भी पडा है। आतकवाद और मादक पदार्थों की तस्करी के साथ इसके सम्बन्धो तथा अलगाववादी आदोलनो पर दोनो देशो की समान चिंताएँ हैं और

[73] ली-पेंग, "चाइना एड इडिया आर स्टिल लैकिग इन म्युचुअल अडरसैन्डिग" मेनस्ट्रीम, 10 फरवरी 2001, पृ024

इन्होने भी भारत तथा चीन के एक दूसरे के प्रति दृष्टिकोण को प्रभावित किया है। फिर यह बात भी ध्यान मे रखनी होगी कि ली-पेग हमेशा से भारत-चीन सम्बन्ध सामान्य बनाए जाने के पक्षधर रहे है।[74]

लीं-पेग ने बार-बार इस यात्रा का उद्देश्य स्पष्ट किया कि चीन, भारत के साथ बेहतर सम्बन्ध चाहता है। उसकी इच्छा है कि भारत के साथ उच्च राजनीतिक स्तरो पर लगातार सम्पर्क होता रहे ताकि मतभेद सुलझे और सहयोग बढे। भारतीय नेताओ के साथ अपनी बातचीत के दौरान उन्होंने माना कि दोनो देशो के बीच सीमा-विवाद एक महत्वपूर्ण मुद्दा है। दोनो पक्षो के बीच इस बात पर सहमति थी कि संयुक्त कार्यदल की बैठको मे सीमा-विवाद हल करने की दिशा मे पर्याप्त प्रगति नहीं हुई है। इससे वास्तविक नियंत्रण रेखा की निशानदेही करने के काम पर भी असर पड़ा है और यह निशानदेही करना सीमा का प्रश्न सुलझाने की पहली महत्वपूर्ण आवश्यकता है। ली-पेंग ने प्रधानमंत्री वाजपेयी को बताया कि चीन वास्तविक नियंत्रण रेखा से जुडा कार्य तीव्रता से पूरा करना चाहेगा ताकि 1993 में हुए समझौते के प्रावधान पूर्णतया लागू किए जा सके और इसके बाद संयुक्त कार्यदल सीमा के महत्वपूर्ण सवाल पर विचार कर सकता है। ली-पेग ने चीन की इस इच्छा का भी संकेत दिया कि भारत-चीन सम्बन्ध फिर से सामान्य पटरी पर लौटे। उन्होंने माना कि भले ही सीमा के प्रश्न के महत्व को नकारा नही जा सकता, फिर भी चीन और भारत को आर्थिक और तकनीकी क्षेत्रो में सहयोग बढाने पर ध्यान देना चाहिए। ली-पेंग नौ दिन तक भारत में रहे और वे हैदराबाद और बेंगलूर भी गए। इससे स्पष्ट था कि चीन की

[74] जे एन दीक्षित; ली-फग की भारत-यात्रा, हिन्दुस्तान (लखनऊ), 4 फरवरी 2001

दिलचस्पी आमतौर पर केवल आर्थिक क्षेत्र मे ही नही, बल्कि खासतौर पर सूचना-प्रौद्योगिकी के क्षेत्र मे भी सहयोग बढाने मे है।[75]

ली-पेग की भारत-यात्रा के अन्तिम दिन भारत ने 2000 किलोमीटर की दूरी तक मार करने वाली अग्नि-2 प्रक्षेपास्त्र का परीक्षण किया। इसकी मारक क्षमता के भीतर दक्षिणी चीन के महत्वपूर्ण शहर आते है। भारत द्वारा ऐसे समय किया गया परीक्षण मात्र एक सयोग नहीं था बल्कि यह स्पष्ट करता है कि भारत चीन के साथ बातचीत मे अलाभकारी स्थिति मे नही है तथा वह लेन-देन के आधार पर ही समझौता करना चाहेगा।[76] ऐसा ही एक नाभिकीय परीक्षण चीन ने भी के.आर नारायणन की 1992 मे की गयी चीन-यात्रा के दौरान किया था।

ली-पेग की इस यात्रा के दौरान चीन ने भारत को सूचित कर दिया कि चीन की जनमुक्ति सेना का नौसैनिक दस्ता 15 से 18 फरवरी 2001 को होने वाले भारतीय नौसेना के फ्लीट-रिव्यू में भाग नहीं लेगा। इस फ्लीट-रिव्यू मे सुरक्षा परिषद के अन्य चार स्थायी सदस्यो सहित लगभग 19 देशों के युद्धपोत भाग लने वाले थे। ऐसा समझा गया कि भारत द्वारा इसमे पाकिस्तान को आमंत्रित न किए जाने के कारण ही चीन ने भारत के इस आमंत्रण को अस्वीकार कर दिया।[77]

वर्ष 2002 के प्रारम्भ में चीन के प्रधानमंत्री झू-रोग्जी की भारत-यात्रा से भारत-चीन सम्बन्धो के विकास मे महत्वपूर्ण प्रगति हुई। भारत की संसद पर हुए आतंकवादी हमले के बाद भारत तथा पाकिस्तान के बीच गंभीर तनाव के दौर में चीन धानमंत्री का भारत आना अपने आप में काफी महत्वपूर्ण रहा। झू-रोग्जी जी 1991 के बाद भारत आने वाले पहले प्रधानमंत्री है। झू-रोंग्जी की इस यात्रा ने भारत को चीन - पाकिस्तान के बीच बढ़ते सैन्य सबन्धों की पुनर्परीक्षा करने का अवसर दिया। ऐसे

[75] जे एन दीक्षित,वही, हिन्दुस्तान (लखनऊ), 4 फरवरी 2001
[76] द पायोनियर, नई दिल्ली, 1999 जनवरी 2001
[77] द टेलीग्राफ, कलकत्ता 18 जनवरी 2001

समय मे जबकि भारत तथा पाकिस्तान की सेनाएँ आमने-सामने थीं, चीनी प्रधानमत्री की भारत-यात्रा ने पाकिस्तान के पक्ष मे झुकाव की परम्परागत चीनी नीति मे परिवर्तन का संकेत किया। भारत के विदेश मंत्री जसवत सिह ने एक सवाददाता सम्मेलन मे 13 जनवरी को कहा, "भारत, चीन तथा पाकिस्तान के बीच 'विशेष सम्बन्ध' तथा सैनिक साज-सामान के हस्तान्तरण के प्रति सचेत है लेकिन इसके बावजूद भारत-चीन सम्बन्ध सुधर रहे है।"[78]

भारत ने आशा व्यक्त की कि झू-रोग्जी कश्मीर-मुद्दे के प्रति 'चुप्पी की नीति' जारी रखेगे। भारत, चीन की इस चुप्पी को भारत-चीन सम्बन्धों मे निरन्तर आ रही परिपक्वता के रूप मे देखता है। अपनी इस यात्रा के दौरान झू-रोग्जी ने कहा कि चीन ने भारत को कभी भी अपने लिए खतरा नहीं माना और भारत भी उसे अपने लिए खतरा नहीं मानेगा।[79] उन्होंने यह भी घोषणा की कि चीन, भारत तथा पाकिस्तान के बीच कश्मीर-विवाद से अपने को अलग रखेगा। आतंकवाद के मुद्दे पर उन्होने कहा कि चीन सभी तरह के आतकवाद के खिलाफ है और इस बुराई को खत्म करने के लिए वह अन्तर्राष्ट्रीय सघर्ष का समर्थन करता है।

झू-रोग्जी की इस यात्रा के दौरान दोनो देशों ने एक द्विपक्षीय समझौता तथा पॉच ज्ञापन पत्रो (MOUs) पर हस्ताक्षर किए।[80] दोनो पक्षो के बीच आर्थिक सहयोग के दायरे को बढ़ाने, नई दिल्ली और पेंइचिग के बीच मार्च माह के अंत तक सीधी विमान सेवा शुरू करने, दोनो देशों के बीच जनसम्पर्क बढाने के उपाय करने, पर्यटन उद्योग के विकास में भागीदारी बढ़ाने, अतंरिक्ष विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के क्षेत्र मे सहयोग बढ़ाने तथा ब्रह्मपुत्र नदी मे बाढ़ के दौरान उसकी निचली धारा के बारे मे सूचना देने सम्बन्धी समझौतो पर सहमति हुई। प्रधानमत्री रोग्जी ने परस्पर समझ को

[78] हिन्दुस्तान टाइम्स, 14 जनवरी 2002
[79] द टाइम्स आफ इडिया, 16 जनवरी 2002
[80] मेनस्ट्रीम, 16 मार्च 2002, पृ0 24

और भी विकसित करने के लिए प्रधानमत्री वाजपेयी के अलावा राष्ट्रपति के.आर नारायणन, उपराष्ट्रपति कृष्णकात, विदेशमत्री जसवत सिह तथा काग्रेस अध्यक्ष सोनिया गॉधी से भी मुलाकात की।

झू-रोग्जी की भारत-यात्रा के दौरान यह स्पष्ट हुआ कि चीन अब भारत को एशिया की महत्वपूर्ण शक्ति तथा दुनिया के सफल विकासशील देश के रूप मे देखने लगा है। इस यात्रा के दौरान एकजुट होकर आतकवाद से निपटने के लिए दोनो देशो ने सयुक्त कार्यदल बनाया। यह भारत-पाकिस्तान के मध्य तनाव तथा चीन-पाकिस्तान के बीच सैन्य सम्बन्धों के सन्दर्भ मे एक महत्वपूर्ण विकास था।[81] रोग्जी की यात्रा का महत्व उसके आर्थिक पहलू मे भी है। उन्होंने बगलौर की यात्रा की और साफ्टवेयर क्षेत्र मे भारतीय कामयाबी को हार्डवेयर क्षेत्र मे चीनी कामयाबी से जोडने की वकालत की। बंगलौर मे साफ्टवेयर कम्पनी इन्फोसिस टेक्नोलॉजी परिसर में भाषण देते हुए उन्होंने इन्फोसिस को शघाई मे अपना कार्यालय खोलने की मजूरी दी। मुम्बई मे उन्होंने व्यवसायी वर्ग से अपील की कि वे चीन मे निवेश करे।

प्रधानमंत्री झू-रोग्जी की भारत-यात्रा से पहले जनरल परवेज मुशर्रफ दो बार पेइचिग हो आये थे। हालॉकि मीडिया मे खबरे आई कि जनरल मुशर्रफ का पेइचिंग मे बड़ा ठंडा स्वागत हुआ। उनकी यह यात्रा भारत की ससद पर हुए आतकवादी हमले के बाद पाकिस्तान पर बढे राजनायिक तथा सैनिक दबाव के कारण हुई थी। किन्तु इस बार 1965 और 1971 के विपरीत चीन ने भारत पर कोई राजनीतिक और सैन्य दबाव डालने की कोशिश नहीं की।[82]

तथ्य यह भी है कि अमेरिका मे 11 सितम्बर 2001 को हुए आतंकवादी हमले के बाद से चीन ने पाकिस्तान को लगभग पचास करोड डालर की सैन्य तथा वित्तीय

---

[81] वही, पृ0 24

[82] जे एन दीक्षित, भारत-चीन के बीच स्थायी सम्बन्धों की सभावनाऍ, हिन्दुस्तान, 3 मार्च 2002

सहायता दी है और इसके पीछे तर्क यह दिया गया कि चीन जहॉ पाकिस्तान के साथ अपना पारम्परिक रक्षा सहयोग जारी रखना चाहता है, वहीं वह पाकिस्तान को अन्तर्राष्ट्रीय आतकवाद के खिलाफ विश्व-सघर्ष में एक सहयोगी तथा साझेदार के रूप मे मजबूत करना चाहता है। दिलचस्प बात यह है कि अमेरिकी सरकार तथा मीडिया ने भी इस सहायता की व्याख्या अमेरिका के नेतृत्व मे आतकवाद के खिलाफ अभियान को चीन के समर्थन के प्रमाण के रूप मे की। यह व्याख्या चाहे किन्हीं शब्दो मे की जाए, लेकिन इस सहायता का ठोस परिणाम तो यह रहा है कि इससे पाकिस्तान की सैन्य क्षमता अधिक बढी है तथा भारत इसकी अनदेखी नहीं कर सकता। भारत को यह समझना होगा कि चीन जहॉ एक ओर पाकिस्तान के साथ निकट तथा ठोस सामरिक सम्बन्ध कायम रखे हुए है वहीं वह भारत के साथ भी सम्बन्धो को बढ़ावा देकर दक्षिण एशिया उपमहाद्वीप मे राजनीतिक सतुलन तथा शक्ति समीकरण बनाने की कोशिश में हैं। झू-रोग्जी ऐसे समय में भारत आए जब दक्षिण तथा मध्य एशिया मे अमेरिका की सामरिक उपस्थिति बढ रही है। यू तो यह प्रक्रिया 1990-91 मे खाड़ी युद्ध से ही शुरू हो गई थी। अमेरिकी सेना की प्रशान्त तथा मध्य कमान, प्रशान्त महासागर, अन्ध महासागर, हिन्द महासागर तथा खाड़ी मे अपने पॉव फैलाये हुए है तो उसकी मध्य कमान के सैनिक उजबेकिस्तान, किरगिस्तान, अफगानिस्तान तथा पाकिस्तान में मौजूद है। अमेरिकी मध्य कमान के प्रमुख लेफ्टीनेन्ट जनरल टॉमी फ्रैक्स ने अपनी हाल की पाकिस्तान यात्रा मे कहा भी था कि अमेरिका दक्षिण-एशिया क्षेत्र में अपनी सैनिक उपस्थिति फिलहाल काफी देर तक बनाए रखेगा। तीस जनवरी 2002 को अमेरिकी राष्ट्रपति जार्ज बुश ने अपने 'स्टेट आफ द यूनियन' भाषण मे भी यही सकेत दिया था। उन्होने कहा था कि आतकवाद के खिलाफ अभियान अभी तो शुरू हुआ है और यह अभी काफी देर तक चलेगा। राष्ट्रपति बुश ने यह सकेत भी दिया

था कि उत्तर कोरिया, इराक तथा ईरान, अमेरिकी अभियान के अगले निशाने हो सकते है।[83]

अमेरिकी सैनिक दस्ते इस समय पाकिस्तान के पेशावर तथा एबराबाद शहरो तथा पसी, ग्वादर और करॉची की बन्दरगाहो पर मौजूद है। ग्वादर मे अमेरिकी सैनिको की उपस्थिति से वहॉ चीनी नौसैनिको की मौजूदगी का मामला पेचीदा हो गया है। इस क्षेत्र में सैनिक उपस्थिति बनाए रखने की अमेरिका की लम्बी योजना से चीन के असर को जो चुनौती मिली है, उस सन्दर्भ मे चीन अपनी दक्षिण एशिया नीति को एक नए सॉचे में ढालने की कोशिश मे है और यह तार्किक भी है। यह स्थिति एक तरह से चीन को पाकिस्तान के साथ यथासभव अधिकतम समीकरण कायम रखते हुए भारत के साथ व्यावहारिक तथा स्थायी सम्बन्ध स्थापित करने के लिए प्रेरित कर सकती है। पाकिस्तान तथा भारत के साथ निष्पक्ष सम्बन्ध बनाए रखने की चीन की इच्छा से भी अधिक, झू-रोंग्जी की ताजा भारत-यात्रा के पीछे यही तर्क था। भारत को भी यह याद रखना होगा कि आर्थिक तथा राजनीतिक कारणों से चीन की विदेश नीति मे अमेरिका तथा पाकिस्तान के साथ सम्बन्धो की उच्च प्राथमिकता हमेशा बनी रहेगी।[84]

चीनी प्रधानमत्री झू-रोग्जी का भारत आना इन सन्दर्भो मे महज एक साधारण कूटनीतिक शिष्टता की यात्रा नहीं थी। चीन आज जापान से सशकित है क्योकि जापान अब अपनी सेनाए सुदूर इलाको मे आतंकवाद से लड़ने के लिए मुहैया कराने का कदम उठा चुका है। चीन-जापान रिश्ते-पूर्वी एशिया की दो महाशक्तियों के आपसी द्वद्व के मुख्य आधार ऐतिहासिक रहे हैं। चीन 11 दिसम्बर की घटना के बाद दक्षिण एशिया मे अमेरिका की उपस्थिति को अब चाहे तो भी नहीं नकार सकता। पाकिस्तान

---

[83] जे एन दीक्षित, ''भारत-चीन के बीच स्थायी सम्बन्धों की सभावनाऍ, हिन्दुस्तान (लखनऊ), 3 मार्च 2002
[84] जे एन दीक्षित, वही, हिन्दुस्तान (लखनऊ), 3 मार्च 2002

पुन पल्टा खाकर पूरी तरह से अमेरिका की ओर मुड गया है। चीन विश्व मच पर अकेला होता जा रहा है। यही कारण है कि इस तूफानी दौर मे भी चीनी प्रधानमत्री झू-रोग्जी ने भारत-यात्रा टाली नहीं और बेहद अफरा-तफरी के माहौल मे वे दिल्ली आए।[85]

मार्च 2002 के अन्त मे बीजिग तथा नई दिल्ली को हवाई मार्ग से जोडने वाली चाइना ईस्टर्न एअर लाइन की उड़ान का उद्घाटन हुआ तथा भारत के विदेशमत्री जसवत सिह ने इस अवसर का सदुपयोग चीन की कूटनीतिक यात्रा के लिए किया। जसवत सिंह की इस बार की चीन यात्रा की सबसे महत्वपूर्ण उपलब्धि यह रही कि दोनों देश इस बात पर सहमत हो गए कि वास्तविक नियत्रण रेखा का स्पष्टीकरण तथा पुष्टिकरण का कार्य एक निर्धारित समय-सीमा के भीतर पूरा कर लिया जाएगा। आतंकवाद के खिलाफ साझा कार्यक्रम भी राजनायिक सम्बन्धों मे नए गुणात्मक छलॉग को प्रदर्शित करता है।[86]

जसवन्त सिह की इस चीन-यात्रा के दौरान जो दूरगामी महत्व का फैसला किया गया, वह वास्तविक नियंत्रण रेखा के पश्चिमी सेक्टर यानी अक्साई-चिन इलाके मे अपने दावों के अनुरूप मानचित्र तैयार करने तथा इस साल के अन्त तक इसका आदान प्रदान करने का है। इसके बाद दोनो देश पूर्वी क्षेत्र यानी अरूणाचल प्रदेश के इलाके में वास्तविक नियंत्रण रेखा के अपने दावो के अनुरूप मानचित्रो की अदला-बदली करेगे। दोनों देशो ने पिछले साल ही मध्य क्षेत्र यानी उत्तराचल और हिमाचल से लगने वाली वास्तविक नियंत्रण रेखा के मानचित्रो का आदान-प्रदान किया था।[87] इस यात्रा के दौरान भारत और चीन के मध्य पारस्परिक व्यापार को बढाने के

---

[85] दीपक मलिक, 'भारत, चीन और नई कूटनीति', हिन्दुस्तान (लखनऊ), 5 अप्रैल 2002
[86] वही, हिन्दुस्तान, 5 अप्रैल 2002
[87] रजीत कुमार,' चीन से फिर उम्मीदें', नवभारत टाइम्स, नई दिल्ली, 8 अप्रैल 2002

सम्बन्ध मे भी सहमति हुई है। प्रधानमत्री झू रोग्जी तथा जसवत सिह की वार्ता के दौरान यह भी तय हुआ कि भारत-चीन के मध्य विवाद के सभी महत्वपूर्ण मुद्दो पर विचार विमर्श करने के लिए एक फ्रेम-वर्क स्थापित किया जाए। इस प्रकार का फ्रेम-वर्क भारत केवल अमेरिका तथा रूस के साथ वार्ता के लिए रखता है। दोनो देशो ने द्विपक्षीय आर्थिक सम्बन्धो की पूर्ण सम्भाव्यता को उत्साहजनक रूप से लागू करने की आवश्यकता पर ध्यान केन्द्रित किया। इस लक्ष्य की पूर्ति हेतु पहले से विद्यमान सयुक्त आर्थिक समूह को सक्रिय किया जाएगा। दोनों पक्षो ने उम्मीद जतायी कि इस वर्ष के अन्त मे भारतीय प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी की बीजिग यात्रा के पूर्व आर्थिक मोर्चे पर ठोस प्रगति हासिल हो सकेगी।

8 नवम्बर 2002 से शुरू होने वाले चीन की कम्युनिस्ट पार्टी के 16 वे महाधिवेशन में राष्ट्रपति जियाग-जेमिन सहित पोलित व्यूरो की स्थायी समिति के छह सदस्य सेवानिवृत्त हो गए। उपराष्ट्रपति हू-जिन्ताओ को पार्टी का नया महासचिव चुना गया। केन्द्रीय सैन्य आयोग की कमान वर्तमान राष्ट्रपति जियाग-जेमिन ने अभी भी .अपने हाथो में रखी है। जियांग जेमिन द्वारा यह पद अपने पास रखने के पीछे तर्क यह है कि इस बदलाव की प्रक्रिया मे कोई अड़चन न आये, शातिपूर्ण ढग से पूरी प्रक्रिया निपट जाए। साथ ही, उन्हें इस बात का शायद भरोसा नहीं है कि उनके द्वारा शुरू की गई सुधार और बाजारवाद की प्रक्रिया को जारी रखा जाएगा या नही। हू-जिन्ताओ की छवि एक स्वतंत्र नेता की है। हालॉकि इन्हें देंग-शियाओ-पिग का खास समझा जाता है । यह दर्शाता है कि चीन मे वर्तमान राजनीति पर परम्परा का कितना नियत्रण है।[88]

---

[88] डॉ स्वर्ण सिह इतजार करिए और देखिये होता है क्या, राष्ट्रीय सहारा (लखनऊ), 23 नवम्बर 2002

सोलहवे अधिवेशन मे चीनी कम्युनिस्ट पार्टी ने अपने सविधान में जियाग-जेमिन के बहुचर्चित 'थ्री रिप्रेजेटेटिव सिद्धान्त' को स्थान दिया है। ये तीन सिद्धान्त है उच्चतर उत्पादक शक्तियो का प्रतिनिधित्व, उच्चतर सस्कृति का प्रतिनिधित्व, और चीनी जनता के बहुलाश के मौलिक हितो का प्रतिनिधित्व। जियाग - जेमिन के ये विचार 'चीनी विशिष्टताओ के साथ समाजवाद' का निर्माण करने के बारे मे देग-शियाओं-पिग के सिद्धान्त का ही अगला कदम है। इसके द्वारा आर्थिक विकास पर सबसे अधिक ध्यान दिया गया है और समाज के हर वर्ग की हिस्सेदारी सुनिश्चित करने पर जोर दिया गया है। इसके फलस्वरूप अब केवल श्रमिक, कृषक और बुद्धिजीवी ही नहीं, बल्कि उद्योगपति भी पार्टी मे शामिल हो सकते है। इसके साथ-साथ चीन की लम्बी सस्कृति और सम्पूर्ण विश्व की सस्कृति के जनवादी आधार पर चीनी कम्युनिस्ट पार्टी ने समाजवादी आधुनिकीकरण को आगे बढ़ाने की घोषणा की है।[89]

चीन भारत का पड़ोसी देश है, इसलिए इस बात पर चर्चा शुरू हो गई है कि नये नेतृत्व के आने से दोनो देशो के बीच रिश्तो मे क्या बदलाव आया है। चीन भारत को अपना प्रतियोगी मानता है और उसे इस बात का एहसास है कि भारत आर्थिक और सैन्य शक्ति के रूप मे एक नई ताकत के रूप मे उभर रहा है। ऐसी स्थिति मे चीन भारत से दोस्ताना सम्बन्ध तो रखना चाहता है, लेकिन एक दायरे मे। इसलिए यह कहा जा सकता है कि भारत और चीन के सम्बन्धो मे कोई विशेष परिवर्तन नहीं होगा। भारतीय प्रधानमंत्री की आगामी चीन-यात्रा को लेकर वहॉ लोग काफी उत्साहित है। भारत सरकार के विदेशी मामलो से जुडे नौकरशाह इस यात्रा के एजेडे को तैयार करने में लगे है।[90]

---

[89] राष्ट्रीय सहारा (लखनऊ), 23 नवम्बर 2002
[90] काशी राम शर्मा, 'व्यापारिक सम्बन्ध होंगे मजबूत', राष्ट्रीय सहारा (लखनऊ), 23 नवम्बर 2002

चीन के नए राष्ट्रपति और कम्युनिस्ट पार्टी के नए महासचिव हू-जिन्ताओ का यह बयान स्वागत योग्य है कि वह भारत और चीन के बीच एक बेहतर और दूरगामी सम्बन्ध चाहते हैं। हमे उम्मीद करनी चाहिए कि इससे भविष्य मे दोनों देशो के रिश्ते सुधरेगे, खटास कम होगी तथा मधुरता बढेगी। नये राष्ट्रपति के बयान का महत्व इस कारण भी ज्यादा बढ जाता है कि उन्होने किसी 'लाग-मार्च' मे हिस्सा नहीं लिया है और न तो वह साम्यवाद की कट्टर परम्परा के प्रतिनिधि है। 1949 में जब चीन मे कम्युनिस्ट पार्टी सत्ता मे आई तो हू-जिन्ताओ सिर्फ दस साल के थे। वे पुराने सिद्धान्तो की जकडन मे बॅधने वाले व्यक्ति नहीं, बल्कि खुली दुनिया को खुली नजरों से व्यापक फलक पर देखने वाले इन्सान हैं। यह सोचना जल्दबाजी होगा कि भारत-चीन सीमा का विवाद जल्द ही निपट जाएगा। इसके लिए लम्बे समय तक कूटनीतिक प्रयास चलाने होंगे। फिलहाल इस मुद्दे को उठाना अक्लमंदी नहीं होगी। चीन ने भी कहा है कि पहले हम दूसरे मुद्दों की मार्फत अपने सम्बन्धो को गाढ़ा बनाये, फिर सीमा विवाद पर आये और यही समय की मॉग भी है। हो सकता है कि छह महीने के अन्तराल मे दोनों देशों का राजनीतिक प्रतिनिधिमंडल मिलता - जुलता रहे। इससे एक दूसरे के विचारो से दोनों देश अवगत होगे और गतिरोध को तोड़ने में मदद मिलेगी।[91]

भारत मे चीन के पूर्व राजदूत शेग-रूइशेंग नेतृत्व में बदलाव के बावजूद भारत-चीन सम्बन्धो के बारे मे आशान्वित है। उन्होंने कहा कि चीन का नया नेतृत्व भारत के साथ अच्छे पडोसियों वाले सम्बन्ध विकसित करने की नीति जारी रखेगा। रूइशेंग ने कहा कि दोनों देशो के बीच सम्बन्धों में आये सुधार से वह संतुष्ट है तथा चीन भारत के प्रधानमत्री अटल बिहारी वाजपेयी और रक्षामत्री जार्ज फर्नांडींज की

[91] नटवर सिह, 'रिश्ते मधुर होंगे', राष्ट्रीय सहारा (लखनऊ), 23 नवम्बर 2002

यात्रा की प्रतीक्षा कर रहा है जिससे दोनो देशो के बीच सम्बन्धो मे व्यापक प्रगति होगी।[92]

सीमा-विवाद पर गठित सयुक्त कार्यकारी दल की 14 वीं बैठक 22 नवम्बर 2002 को नई दिल्ली मे सम्पन्न हुई। सयुक्त कार्यकारी दल की बैठक मे दोनो पक्षो ने वास्तविक नियत्रण रेखा को चिन्हित करने के लिए चल रही प्रक्रिया की समीक्षा की तथा विश्वास बढाने के उपायो पर भी चर्चा की गयी। विदेश सचिव कॅवल सिब्बल के नेतृत्व मे भारतीय पक्ष ने आतकवाद पर अपनी चिन्ताओ से अवगत कराया और चीनी पक्ष ने भी इस पर व्यापक समझदारी दिखाई। चीन का नेतृत्व करने करने वाले विदेश उपमत्री वाग-यी ने अरूणाचल प्रदेश और सिक्किम को जटिल मुद्दा बताते हुए कहा कि दोनों पक्ष सकारात्मक ढग से आगे बढ रहे है। उन्होने कहा, 'हमें काम करना है और उच्चतर स्तर पर किये वादों के अनुसार उसका शान्तिपूर्ण समाधान ढूँढना है।' उन्होंने कहा कि बातचीत सकारात्मक और भविष्य को ध्यान में रखकर हुई। वाग-यी ने विदेशमत्री यशवन्त सिन्हा और राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार ब्रजेश मिश्र से भी भेट की। इससे पहले सयुक्त कार्यकारी दल की बैठक पिछले वर्ष जुलाई में हुई थी।[93]

भारत-चीन सम्बन्धो की जो भी स्थिति रही है या है, वह एक वस्तुगत परिणाम है। किसी एक चीनी नेता के कहने से उस पर कोई फर्क नहीं पडने वाला है और अभी जैसी राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय परिस्थितियॉ है, उनमे भारत और चीन सभी द्विपक्षीय मसलों पर बातचीत और आपसी समझदारी का रास्ता अपनाने को बाध्य है और ये सम्बन्ध पिछली सदी के अस्सी वाले दशक से लगातार अच्छे होने की ओर अग्रसर है। जहॉ तक हू-जिन्ताओ के भारत के प्रति व्यक्तिगत रवैये का सवाल है, वे पिछले दो-तीन दशको से भारत सम्बन्धी कार्यक्रमो में, खास तौर पर सास्कृतिक

---

[92] नवभारत टाइम्स, नई दिल्ली, 18 नवम्बर 2002
[93] दैनिक जागरण, इलाहाबाद, 23 नवम्बर 2002

कार्यक्रमो मे काफी दिलचस्पी के साथ शामिल होते रहे है। भारत के बारे मे उनकी सकारात्मक दिलचस्पी के कारण कहा जा सकता है कि सत्तासीन होने के बाद आपसी मसलो के दीर्घकालीन और स्थायी समाधान की आशाएँ और भी प्रबल हो सकती है। वे तिब्बत का कामकाज भी पार्टी की ओर से देखते रहे है परन्तु तिब्बत सम्बन्धी चीनी नेताओ के नजरिये को भारत-चीन सम्बन्धो की समग्र तस्वीर की बुनियादी बात मानना ठीक नहीं है। यह तो साफ ही है कि इस विवाद के बने रहने के बावजूद भारत-चीन सम्बन्धो में पिछले दो तीन दशकों मे काफी सुधार हुआ है और यह प्रक्रिया और आगे बढेगी, लेकिन यह मान लेना भी ठीक नहीं होगा कि इन सम्बन्धो में रातो-रात जादू की कोई छड़ी घूम जाएगी। पाकिस्तान के साथ चीन के उतरते सम्बन्धों मे किसी बदलाव की स्थिति भी इसी पर निर्भर करेगी कि भारत और चीन के बीच बनने वाली समझ किस दिशा में जाती है। रहा चीन के इस इलाके की शक्ति या महाशक्ति बनने का सवाल, तो उसकी तस्वीर तो कोई बहुत धुँधली है नहीं। इतना जरूर है कि भारत भी इस दृष्टि से अब कहीं पीछे रहने के मूड में नहीं है परन्तु ये चीजें कोई रातों रात होने वाली नहीं है। इसका तामझाम बातो या ऐलानो की बजाय इस पर निर्भर करता है कि प्रगति की गति कैसी है और शांति का माहौल कितना बलशाली है। ये ही किसी भी राष्ट्र के कुछ होने या न होने के आधारभूत पैमाने हैं। फिलहाल यही कहा जा सकता है कि प्रगति को लेकर दोनों देशो मे एक प्रकार की प्रतिद्वन्द्विता है, जो अगर दोस्ताना रही तो दुनिया का चेहरा बदल सकती है और उल्टी दिशा में चली तो किये कराये पर पानी भी फेर सकती है।[94]

---

[94] त्रिनेत्र जोशी, 'सत्ता परिवर्तन के बाद कैसा होगा चीन' राष्ट्रीय सहारा (लखनऊ), 23 नवम्बर 2002

अध्याय - 5

भारत-चीन सम्बन्धः आर्थिक तथा सांस्कृतिक आयाम

भारत तथा चीन एशिया के दो ऐसे बड़े देश है, जो प्राचीनता तथा नवीनता का अद्भुत मिश्रण प्रस्तुत करते है। दोनो देशों की प्राचीन सस्कृति गौरवशाली रही है, साथ ही आर्थिक तथा सामाजिक विकास के क्षेत्र में उनकी उपलब्धियॉ भी कम महत्वपूर्ण नहीं है। लगभग 100 वर्षो पूर्व भारत तथा चीन दोनों ही देशों में सामती तथा अर्द्ध-सामंती व्यवस्था का बोलबाला था। गत शताब्दी के मध्य में 'भारत की स्वतंत्रता' तथा 'चीन की मुक्ति' के पश्चात दोनों ही देशों ने आर्थिक तथा सामाजिक विकास के क्षेत्र में उल्लेखनीय उपलब्धियॉ हासिल की हैं। दोनो देशो के ऐतिहासिक तथ्य यह स्पष्ट करते है कि 'स्वतत्रता' और 'सम्प्रभुता' के साथ विकास की नई ऊँचाइयों को छूने की इनमें क्षमता है जबकि इसके बिना सब कुछ खोने का खतरा भी है।[1] स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद के चीन का इतिहास, दो अतिवादी नीतियों के बीच दोलन करते रहने का इतिहास रहा है। 1949 के बाद से इसके अस्तित्व के दौरान शुरु से अब तक, चीनी कम्युनिस्टों के दो प्रमुख लक्ष्य, समतावाद तथा आर्थिक आधुनिकीकरण रहे हैं। ये दोनो लक्ष्य परस्पर विरोधी रहे हैं। इसके परिणामस्वरुप, जब भी किसी एक पर बल दिया गया तो दूसरे को हासिल किए जाने पर विपरीत प्रभाव पड़ा। चीनी कम्युनिस्ट पार्टी की प्राथमिकता लगातार सामाजिक क्रान्ति से आर्थिक विकास की तरफ खिसकती रही है। एक ही समय पर दोनो को प्राप्त करने का लक्ष्य, अब तक भ्रामक रहा है। माओ के बाद के सुधार, महान सर्वहारा सांस्कृतिक क्रान्ति की क्रान्तिकारी-राजनीति के एक दौर के उपरान्त किए गये थे, जिसके तहत उस दौर में वर्ग-संघर्ष, समतावाद तथा राजनैतिक प्रतिबद्धता को प्राथमिकता दी गई थी। क्रान्तिकारी राजनीति के इस दौर से पेण्डुलम

---

[1] शेंग रूइशेंग, ट्रान्सफार्मिंग हिस्टोरिकल साइनो-इडियन रिलेशस, वर्ल्ड अफेयर्स, 5 (4), (अक्टूबर-दिसम्बर 2001), पृ0 18-19

पुन तीव्र आर्थिक विकास के आधार पर धीरे-धीरे सामाजिक बदलाव पर जोर देने की तरफ सरक गया।

स्वाधीनता के बाद के वर्षों में चीन आर्थिक तौर पर पिछड़ा हुआ था। लगभग 90 प्रतिशत आबादी ग्रामीण इलाकों में रहती थी। मुद्रास्फीति आसमान छू रही थी। लघु स्तर की कृषि, पुरानी उत्पादन तकनीकें तथा विधियॉ, ग्रामीण क्षेत्रों मे नियम बन गई थी। आधुनिक उत्पादक उद्योग सीमित थे। इस दौर मे चीन की कम्युनिस्ट पार्टी ने समाजवादी समाज के बजाय संक्रमणकालीन समाज के निर्माण की कोशिश की, जिसमें चार क्रान्तिकारी वर्गो-औद्योगिक सर्वहारा, किसान, पेटी-बुर्जुआ तथा राष्ट्रीय बुर्जुआ की सामान्य आकाक्षाओं को पूरा किया जा सके। इस अवधि में आर्थिक पुनर्निर्माण को भारी महत्व दिया गया। इसी दौर मे चीन में बॅधुआ मजदूरी तथा सामंती सेवाओं का उन्मूलन कर लिया गया था।

1953-57 का समय ऐसा था जबकि चीन ने स्पष्टत· आर्थिक व राजनीतिक तौर पर भी, स्वयं को सोवियत संघ के नमूने के अनुरुप ढाल लिया था। सैद्धांतिक तौर पर प्रथम पंचवर्षीय योजना ने भारी उद्योगों का पक्ष लिया एवं तकनीकी निपुणता, संस्थागत ढ़ांचों तथा जनता के बड़े हिस्सों को शिक्षा उपलब्ध कराये जाने पर बल दिया गया। इस अवधि में चीन की अर्थव्यवस्था ने शानदार किन्तु असंतुलित प्रगति की।

आगे की दिशा में 'लम्बी छलॉग', सोवियत संघ से उधार ली गई विकास रणनीति का एक विकल्प थी जो इस युक्ति पर आधारित थी कि चीन के पास विशाल जनसख्या है जो राजनैतिक एवं सामाजिक रुप से जागरुक तथा परिश्रमी है। इसे "दो पैरो पर चलते हुए" लागू किया जाना था। अर्थात् उद्योगों को प्राथमिकता देना जारी रखा जाना था किन्तु कृषि को प्रगति का आधार बन जाना था। इस कार्यक्रम के साथ ही 1958 में 'कम्यून प्रणाली' का पूरे चीन मे विस्तार कर दिया गया। सत्ता का विकेन्द्रीकरण करते हुए जनवादी कम्यून को समाजवादी

सामाजिक ढॉचे की बुनियादी इकाई बनाया गया। 1961 के शुरु में आर्थिक स्थिति के भयावह हो जाने से 'लम्बी छलाग' के वर्षो में अपनाई गयी आर्थिक नीति को पुन समायोजित किए जाने की आवश्यकता हुई। आर्थिक लक्ष्यों को संशोधित किए जाने के साथ-साथ जनवादी कम्यूनों की प्रणाली को भी पुनर्गठित किया गया तथा सुदृढ़ीकरण का एक दौर चालू हुआ।

मई, 1966 में शुरु 'सर्वहारा-सांस्कृतिक क्रान्ति' का उद्देश्य उन विचारो, मूल्यों तथा मानसिक आदतों को बदलना जो कि चीन की परम्परा का हिस्सा थी तथा एक नई समाजवादी संस्कृति का निर्माण करना था। इस क्रान्ति के परिणामस्वरुप आर्थिक क्षेत्र में कृषि को यद्यपि मामूली नुकसान पहुॅचा, किन्तु अनेक उद्योगों में उत्पादन काफी नीचे आ गया। विदेश-व्यापार में भी इसी तरह उल्लेखनीय गिरावट आ गई। यह मुख्यत· राजनैतिक गड़बड़ी तथा चीन द्वारा अपनाई गई अलगाववादी नीति के फलस्वरुप ही हुआ। रोजगार की सुरक्षा तथा सभी मजदूरों के लिए रोजी-रोटी उपलब्ध कराने की मुहिम के चलते उत्पादकता मे वृद्धि को पुन· धक्का लगा। दूसरी तरफ उद्यमशीलता को प्रोत्साहन देने की कोई गुंजाइश ही नहीं थी क्योंकि राज्य के निर्देशानुसार ही लोगों को उत्पादन करना होता था। इस तरह सास्कृतिक क्रांति के दौरान जहॉ कम्यून प्रणाली ने अधिकांश जनता की कुछ बुनियादी आवश्यकताओं की पूर्ति की, वहीं केन्द्रीकृत निर्देशों पर चलने वाली अर्थव्यवस्था ने भारी उद्योग तथा पूॅजी के सचय का रास्ता तैयार किया, उपभोग को नाममात्र का बनाये रखा गया तथा लोगों का जीवन-स्तर अवरुद्ध हो गया अथवा इसमें गिरावट आ गई। इस प्रकार की कठोर आर्थिक प्रणाली, उत्पादन की नई व विकासमान शक्तियों की जरुरतें पूरी नहीं कर पाई। अब उपभोक्ता-उद्योग के विकास तथा आर्थिक प्रगति को तेज किए जाने की जरुरत महसूस की गई। इस तरह परिस्थिति देंग-शियाओ-पिग द्वारा पेण्डुलम को सुधार-नीतियों तथा आर्थिक उदारीकरण के पक्ष में मोड देने के लिए परिपक्व हो

गई। यह बात स्पष्ट रुप से दिखाई पडती है कि कम्युनिस्ट पार्टी समाजवाद के लक्ष्य को आर्थिक उदारीकरण के माध्यम से प्राप्त करना चाहती थी किन्तु इसे व्यापक शक्ति माओ की मृत्यु तथा 1976 के उत्तरार्ध में "चार की चौकडी" की गिरफ्तारी के बाद ही हासिल हो सकी। यहॉ तक कि उसके बाद के नये उत्तराधिकारी हुआ-कुओ-फेंग भी सुधारों के प्रति बहुत अधिक झुकाव नहीं रखते थे।

1978 में देंग-शियाओ-पिंग के नेतृत्व में कम्युनिस्ट पार्टी ने आर्थिक विकास तथा चार आधुनिकीकरणों (कृषि, उद्योग, रक्षा तथा विज्ञान व तकनीकी का आधुनिकीकरण) को अपना लक्ष्य बनाते हुए एक दस वर्षीय योजना की घोषणा की। 1980 के दशक से, इसी के आधार पर नये नेतृत्व ने सामूहिकता तथा समतावाद पर जोर देने वाले माओवादी नमूने तथा सोवियत नमूने, जो कि एक समाजवादी आर्थिक-अधिरचना का ढॉचा प्रदान करने के लिए केन्द्रीकृत राज्य-नियोजन तथा राज्य-प्रशासन को आवश्यक मानता था, दोनों को ठुकरा दिया। नये नेृतत्व द्वारा चीन को वर्ष 2000 तक उसके 1980 के सकल औद्योगिक तथा कृषि उत्पाद मूल्य को चौगुना करके एक 'आधुनिक' समाजवादी देश बनाने हेतु नई आर्थिक नीति को लागू किया गया जिसके चार मुख्य सिद्धान्त थे- " पुनः निर्माण, पुनः समायोजन, सुदृढ़ीकरण तथा सुधार।"

आर्थिक क्षेत्र मे सबसे ज्यादा शानदार सुधार विदेश व्यापार, तकनीक तथा निवेश में, "दरवाजे खोले जाने" का था। यह आत्म-निर्भरता की पहले वाली नीति के ठीक विपरीत था, जो कि 1970 तक चली थी जबकि विश्व के साथ पुन. जुड़ने का एक सचेतन प्रयास शुरु हुआ था। हालॉकि 1979 से पहले समस्त चीनी विदेशी व्यापार केन्द्रीय नियंत्रण व नियोजन के अधीन था। आयातों को केवल निर्यातों के स्तर के बराबर ही मजूरी दी जाती थी। इसलिए विदेश व्यापार अत्यधिक सीमित था। 1979 के बाद विदेश नीति के कानूनों को उदार बना लिया गया है। विदेशी

उद्यमियो को सर्वश्रेष्ठ माहौल प्रदान करने के लिए, कुछ क्षेत्रो को सयुक्त उद्यमो के लिए चुन लिया गया। ये चार विशेष आर्थिक क्षेत्र-शेनझॉन, झुहाई, शान्टो तथा जियामेन (बाद में हेनॉन भी) थे। 14 अन्य शहरो को भी विशेष आर्थिक विकास के लिए चुना गया। सयुक्त उद्यमों का मुख्य उद्देश्य, तकनीक का आयात करने में सहायता करना है, जो कि चीन की अर्थव्यवस्था के आधुनिकीकरण की दर को तेज करने, चीनी अर्थव्यवस्था की कमजोर कडियों अर्थात धातुकर्म, दूर-संचार, खनन, परिवहन, तेल की खोज तथा परमाणु बिजली घरों को मजबूत बनाने में मदद करेगी। इस तरह 1978 से अब तक अर्थव्यवस्था में ऐसा सुधार ले आया गया है कि अब उसे पहचान पाना भी कठिन है। मुक्त बाजारों का विकास हुआ है, विदेश व्यापार बढ़ा है तथा कृषि व उद्योग, दोनो ही क्षेत्रों में उत्पादन बढ गया है। यह एक प्रगतिशील एवं विकासमान अर्थव्यवस्था है, जिसमें विकास के फलों को समान रुप से वितरित किया जाता है। उद्यमशीलता को बढावा दिया गया है तथा विदेशियों को बार-बार उच्च तकनीक के क्षेत्र में अधिक से अधिक निवेश करने के लिए आमन्त्रित किया गया है ताकि चीन एक आधुनिक देश बन सके।

भारत तथा चीन के बीच आर्थिक एवं सांस्कृतिक सम्बन्ध प्राचीनकाल से ही रहा है। दोनों देशों के बीच समय-समय पर होने वाले मतभेदों के साथ ही इन सम्बन्धो मे भी उतार-चढ़ाव आता रहा है। आर्थिक सम्बन्धों को मजबूत करने हेतु दोनो देशों ने समय-समय पर अनेक समझौतों पर हस्ताक्षर भी किए। एक-दूसरे के देशों मे प्रतिनिधिमंडलों का आदान-प्रदान भी समय-समय पर होता रहा। जनवरी 1951 में भारत-चीन के बीच चावल-पटसन विनिमय समझौता हुआ। 1952 मे श्रीमती विजयलक्ष्मी पंडित के नेतृत्व में एक भारतीय सास्कृतिक प्रतिनिधिमण्डल चीन गया। 29 अप्रैल, 1954 को दोनों देशों ने 8 वर्षीय व्यापार एवं परस्पर सम्पर्क सन्धि पर हस्ताक्षर किए। इसी समझौते में पचशील के महत्वपूर्ण सिद्धान्तों का भी उल्लेख था।

1959 के अन्त तक दोनो देशो के बीच सीमा-विवाद ने उग्र रूप धारण कर लिया, जिसकी परिणति अन्तत. एक युद्ध में हुई। 1962 के इस युद्ध ने आर्थिक दृष्टि से भी भारत को काफी हानि पहुँचाई। उसे विकास की सभी योजनाओं मे कटौती कर सैन्य व्यय बढ़ाने पर मजबूर होना पड़ा। इस युद्ध के बाद दोनों देशों के बीच लम्बे समय तक सवादहीनता बनी रही। आठवें दशक में, एशिया में परिवर्तित स्थिति, 1971 ई0 के भारत-पाक युद्ध में भारत की विजय, भारत-सोवियत मैत्री संधि तथा चीन में नये नेतृत्व के आने से भारत तथा चीन के सम्बन्धों को सामान्य बनाने की प्रक्रिया को शक्ति मिली। अक्टूबर, 1971 में भारतीय विदेश सचिव के नेतृत्व में अफसरों के एक दल ने नई-दिल्ली में चीन के 'राष्ट्रीय दिवस' समारोह में भाग लिया। नवम्बर 1971 में चीन ने 'अफ्रो-एशियाई मैत्री टेबिल टेनिस प्रतियोगिता' में भारत की टीम को भी आमंत्रित किया। अगस्त, 1973 के बाद भारत के सरकारी समारोहों में चीन की उपस्थिति बढ़ने लगी एव सरकारी तथा निजी यात्राओं के आदान-प्रदान का सिलसिला भी काफी बढ़ गया। दोनों देशों के नेताओं ने अपने राष्ट्रीय दिवसों के उपलक्ष्य में बधाई संदेशों का आदान-प्रदान फिर शुरू कर दिया।

अप्रैल, 1976 ई0 में भारत सरकार ने चीन के साथ पुन उच्च स्तरीय कूटनीतिक सम्बन्ध स्थापित करते हुए श्री के0आर0 नारायणन को चीन में भारत का राजदूत नियुक्त किया। जनता सरकार के कार्यकाल के दौरान भारत-चीन व्यापार सम्बन्ध अधिक बढ़ा। अप्रैल, 1977 में भारत और चीन ने 13.2 करोड़ रूपये मूल्य की एक व्यापार संधि की। फरवरी, 1978 में चीन का एक 16 सदस्यीय व्यापार-प्रतिनिधिमंडल भारत आया और दोनों देशों के बीच व्यापार बढ़ाने पर सहमति हुई। इसी प्रकार चीन द्वारा आयोजित 'कैण्टन मेले' में भारत की ओर से भारतीय इंजीनियरिंग उद्योग-संगठन के चार सदस्यों ने भाग लिया। मार्च, 1978 मे वाग-पिग-नान के नेतृत्व में एक उच्चस्तरीय चीनी सद्भावना प्रतिनिधिमंडल

भारत आया। इसके पश्चात व्यापार-वाणिज्य प्रतिनिधिमडलो का दौरा हुआ और दोनो देशो के बीच 1978 में एक करोड बीस लाख रुपये मूल्य का व्यापार हुआ। सितम्बर, 1978 मे चीन के कृषि वैज्ञानिकों ने भारत की यात्रा की और न्यूयार्क मे विदेशमंत्री वाजपेयी ने चीनी विदेश मंत्री हुआग-हुआ से भेट की। 1 अक्टूबर, 1978 को चीन की स्थापना की 29वीं वर्षगॉठ पर भारत के तत्कालीन उपराष्ट्रपति बी0डी0 जत्थी उपस्थित थे। नवम्बर, 1978 मे मृणालिनी साराभाई के नेतृत्व मे भारतीय नृत्यमण्डली का चीन में भव्य स्वागत किया गया । फरवरी, 1979 में वाजपेयी की चीन-यात्रा के दौरान वियतनाम पर आक्रमण करके चीन ने भारत को 1962 के आक्रमण की याद दिला दी। फलस्वरूप वाजपेयी अपनी यात्रा अधूरी छोड़कर स्वदेश आ गये।[2]

जनवरी, 1980 में इन्दिरा गॉधी के पुन. सत्ता में आने पर सीमा-विवाद को लेकर दोनों देशों के मध्य वार्ताओं के कई दौर सम्पन्न हुए, किन्तु सीमा-विवाद का गतिरोध पूर्ववत बना रहा। 1986 में भारत और चीन के मध्य 140 मिलियन डालर का व्यापार किया गया। इस व्यापार का संतुलन चीन के पक्ष में था क्योंकि भारत का इस व्यापार में केवल 21 मिलियन डालर का ही हिस्सा था। 27 मई, 1987 को भारत तथा चीन के बीच एक अन्य व्यापार-समझौता हुआ, जिसमें जनवरी, 1987 से मार्च, 1988 तक 150 से 200 मिलियन डालर तक व्यापार में वृद्धि करने का लक्ष्य था। इस समझौते में भारत से कच्चे लोहे को चीन भेजने की व्यवस्था थी।

दिसम्बर, 1988 में राजीव गाँधी की चीन यात्रा के दौरान सीमा-विवाद पर सयुक्त कार्यकारी दल के गठन के अतिरिक्त आर्थिक सम्बन्धों, व्यापार, विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी पर भी सयुक्त कार्यकारी दल की नियुक्ति का निश्चय किया गया। 1989-90 के दौरान दोनो देशों ने सामाजिक, आर्थिक तथा सांस्कृतिक सम्बन्ध को

---

[2] बी एल फडिया, अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति, साहित्य भवन पब्लिकेशस, आगरा, 1998, पृ0 387

बढ़ाते हुए सितम्बर, 1989 में एक व्यापारिक आलेख पर हस्ताक्षर किए। भारतीय खिलाडियो ने बीजिग एशियाड मे भाग लेकर सांस्कृतिक सम्पर्को को बढावा दिया।

दिसम्बर, 1991 में चीन के प्रधानमत्री ली-पेग की यात्रा के दौरान शंघाई तथा बम्बई में वाणिज्य-दूतावास खोलने, सीमा-व्यापार शुरू करने तथा अन्तरिक्ष अनुसधान, विज्ञान एवं तकनीकी के क्षेत्र में सहयोग बढाने हेतु समझौतों पर हस्ताक्षर किए गए।[3] जून, 1992 में राष्ट्रपति आर0 वेकटरामन ने चीन की यात्रा की तथा अगले ही वर्ष प्रधानमत्री नरसिम्हाराव ने चीन की यात्रा की। उनकी इस यात्रा के दौरान 'नियत्रण रेखा' सम्बन्धी एक 9 सूत्रीय महत्वपूर्ण समझौता हुआ।[4] 6 जनवरी, 1993 को पीकिंग में हुए एक व्यापारिक समझौते में भारत द्वारा चीन को चालू वर्ष में 13 से 18 लाख टन लोहे के निर्यात का लक्ष्य रखा गया था। 32 वर्षों के अन्तराल के बाद 16 जुलाई, 1994 से भारत व चीन के मध्य सीमा-व्यापार पुन· प्रारम्भ हो गया। यह व्यापार हिमाचल प्रदेश के किन्नौर जिले की सीमा पर स्थित शिपकी दर्रे से प्रारम्भ हुआ।

नवम्बर, 1996 में चीन के राष्ट्रपति जियांग-जेमिन ने अपने व्यापार मंत्री वू-ची के साथ भारत यात्रा की। इस दौरान दोनों देशों के मध्य पूँजी निवेश, जहाजरानी सहित अनेक मुद्दों पर समझौते किए गए।[5] अक्टूबर, 1997 में भारत और चीन के मध्य तेल एवं गैस को प्राप्त करने की भागीदारी में लिए एक समझौता किया गया। मई, 1998 में भारत द्वारा परमाणु परीक्षण किये जाने के कारण दोनों देशों के सम्बन्धों में कुछ समय के लिए तनाव पैदा हो गया। किन्तु धीरे-धीरे दोनों देशों के बीच सम्बन्धों की गाड़ी पुन· पटरी पर आने लगी। विदेशमंत्री जसवंत सिंह की चीन-यात्रा के दौरान दोनों देशों ने आर्थिक, सामाजिक तथा सांस्कृतिक सहयोग को उच्च स्तर पर विकसित करने का निर्णय लिया। साथ ही, भारत-चीन व्यापार को 2 बिलियन डालर से भी अधिक करने का लक्ष्य भी रखा गया।

---

[3] स्टेट्समैन वीकली, 21 दिसम्बर 1991

[4] रमेश ठाकुर, द पालिटिक्स ऐंड इकोनामिक्स आफ इडियाज फारेन पालिसी, नई दिल्ली, 1994, पृ0 83

[5] द टाइम्स ऑफ इडिया 27 नवम्बर 1996 तथा 28 नवम्बर 1996

फरवरी, 2000 में भारत ने चीन द्वारा डब्ल्यू टी ओ. की सदस्यता प्राप्त करने का समर्थन किया। मई, 2000 मे राष्ट्रपति के0आर0 नारायणन की चीन-यात्रा के दौरान दोनो देशों ने द्विपक्षीय आर्थिक तथा व्यापार सम्बन्धो को विकसित करने का निर्णय लिया। 17 जुलाई, 2000 को भारत तथा चीन ने पहली बार सूचना तकनीकी के क्षेत्र में सहयोग के लिए एक ज्ञापन पत्र पर हस्ताक्षर किए।

जनवरी, 2001 में चीन की संसद की स्थायी समिति के अध्यक्ष ली-पेग की भारत यात्रा के दौरान उन्होंने कहा कि भले ही सीमा के प्रश्न के महत्व को नकारा नहीं जा सकता, फिर भी भारत और चीन को आर्थिक तथा तकनीकी क्षेत्रो मे सहयोग बढाने पर ध्यान देना चाहिये। ली-पेंग नौ दिन तक भारत में रहे। इसके बाद जनवरी, 2002 में चीन के प्रधानमंत्री झू-रोंग्जी की भारत-यात्रा हुई, तदुपरान्त मार्च, 2002 में जसवन्त सिंह की चीन-यात्रा ने भारत-चीन सम्बन्धों के सुधार मे एक महत्वपूर्ण अध्याय जोड़ दिया।

इस प्रकार, राजीव गॉधी द्वारा चीन से सम्बन्ध सुधारने हेतु की गई 'ऐतिहासिक पहल' के बाद से लगातार दोनों देशों के बीच आर्थिक सम्बन्ध मजबूत हो रहे हैं। दोनों देशों के बीच व्यापार काफी बढ़ा है। मई, 1998 में भारत के परमाणु परीक्षणों के कारण सम्बन्धों में 'अस्थाई' गतिरोध अवश्य आ गया था जो कि धीरे-धीरे दूर हो गया।[6]

---

[6] जे पी पाण्डा 'पोस्ट नार्मलाइजेशन पीरियड इन साइनो-इडियन रिलेशस', मेनस्ट्रीम, 16 मार्च 2002, पृ0 23

तालिका - 1

वर्ष 1991-92 से 2001-2002 के बीच भारत-चीन समग्र व्यापार

(यू0 एस0 मिलियन डालर में)

वर्ष	चीन को निर्यात	चीन से आयात	समग्र व्यापार की मात्रा	व्यापार-संतुलन
1991-92	48.53	21.01	69.54	+27.52
1992-93	133.51	109.95	243.46	+23.55
1993-94	279.07	301.91	580.99	-22 84
1994-95	254.23	760.83	1015.06	-506.60
1995-96	332.7	811.98	1144.68	-479.28
1996-97	615.32	757.55	1372.87	-142.23
1997-98	718.94	1120.7	1839.64	-401.76
1998-99	409.79	1059.53	1469.32	-649.74
1999-2000	539.41	1288.27	1827.68	-748.86
2000-01	830.03	1494.92	2324.95	-664 89
2001-02	925.74	2038.65	2964.39	-1112.91

स्रोत .- चाइना रिपोर्ट, 36 (3), (जुलाई-सितम्बर 2000), पृ0 400 तथा फारेन ट्रेड ऐंड बैलेस ऑफ पेमेन्ट्स, सी.एम.आई.ई., मुम्बई, अक्टूबर 2002, पृ0 132, 272

नब्बे के दशक के अन्त से भारत तथा चीन के बीच व्यापार मे उल्लेखनीय वृद्धि होनी शुरू हो गई। तालिका-1 से स्पष्ट होता है कि 1991-92 मे दोनो देशो के बीच व्यापार जहॉ 69.54 मिलियन यू0एस0 डालर था, वहीं यह 2001-02 में 2964.39 मिलियन यू0एस0 डालर तक जा पहुँचा। हालॉकि इस द्विपक्षीय व्यापार में व्यापार का संतुलन चीन के पक्ष मे ही रहा है क्योंकि भारत के निर्यातों की अपेक्षा इसके आयातों में बड़ी तेजी के साथ वृद्धि हुई है। वर्ष 1991-92 मे भारत द्वारा चीन को 48.53 मिलियन यू0एस0 डालर का निर्यात किया गया जबकि 21.01 मिलियन यू0एस0 डालर का आयात किया गया। इस वर्ष 27.52 मिलियन यू0एस0 डालर का व्यापार-सतुलन भारत के पक्ष में रहा। आने वाले वर्षों में यह व्यापार-संतुलन भारत के प्रतिकूल होता गया। दोनों के बीच वर्ष 2001-02 में व्यापार-संतुलन चीन के पक्ष में 1112.91 मिलियन यू0एस0 डालर का रहा। इस वर्ष भारत का चीन को निर्यात 925.74 मिलियन यू0एस0 डालर तथा चीन से आयात 2038.65 मिलियन यू0एस0 डालर का रहा।

वास्तव में, यदि दोनों देशों की भौगोलिक विशालता, विश्व-व्यापार में आई तेजी आदि बातों को ध्यान में रखा जाए तो भारत तथा चीन के बीच व्यापार में होने वाली यह वृद्धि अपेक्षाकृत काफी कम प्रतीत होती है। चीन के अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार में गत डेढ़ दशक में हुई वृद्धि को यदि ध्यान में रखा जाय तो यह तथ्य और भी स्पष्ट हो जाता है।[7]

---

[7] अरविदर सिह, 'साइनो-इडियन इकोनामिक रिलेशस एन एनालिसिस आफ रिसेन्ट ट्रेन्डस इन बाइलेटरल ट्रेड', चाइना रिपोर्ट 36 (3) (जुलाई-सितम्बर 2000), पृ0 400

तालिका - 2

भारत द्वारा चीन को किया जाने वाला मद-वार निर्यात (यू0एस0 मिलियन डालर में)

वस्तुएँ	1991-92	1992-93	1993-94	1994-95	1995-96	1996-97	1997-98	1998-99	1999-2000	2000-01	2001-02
कृषि एव सम्बन्धित उत्पाद	**2 4**	**2 18**	**9.84**	**53 32**	**73.1**	**271.18**	**362.58**	**110.72**	**148 49**	**160.92**	**125.72**
आयलमील्स	2 2	0 94	2.39	5 84	28 65	153.74	188 5	31 04	9 69	8 29	4 22
समुद्री उत्पाद	-	0 44	5 9	30 25	13 74	74 07	115 16	50 21	87 81	116.0	84.88
अयस्क एव खनिज पदार्थ	**43.48**	**59.29**	**78.64**	**93.82**	**135.65**	**152.75**	**178.74**	**143.2**	**158.61**	**219.32**	**323.85**
लौह अयस्क	10 98	38 26	48 45	56 2	69 46	65 59	97 63	87 77	81 43	130 16	197 58
अन्य अयस्क एव खनिज	21 45	19 31	20 69	34 17	55 55	71 23	44 34	42 19	65 47	73 15	107 91
निर्मित सामान	**2.79**	**71.42**	**190.47**	**105.0**	**120.68**	**186.06**	**173.46**	**145.74**	**230.67**	**442 32**	**463.24**
चमडा एव चमडा उत्पाद	0 18	1 27	3 82	7 84	3 88	4 16	3 74	3 68	4 69	8 94	13 88
रसायन एव सम्बन्धित उत्पाद	0 67	3 84	10 07	35 39	35 03	49 27	68 93	62 33	100 93	141 38	156 89
इजीनियरिंग सामान	1 16	63 66	172 46	42 31	43 98	79 24	31 85	25 45	28 35	103 22	61 92
टेक्सटाइल्स (सिले वस्त्र को छोडकर)	0 77	1 77	3 02	10 76	22 92	48 43	59 09	42 41	60 77	79 54	80 23
सिले वस्त्र	-	0 08	0 11	0 29	0 5	0 9	0 89	3 5	-	-	-
अन्य निर्मित सामान	-	0 8	0 99	8 41	14 38	4 07	8 95	8 36	34 04	108 40	149 33
अन्य वस्तुएँ	**0 03**	**0 62**	**0.13**	**2.08**	**3.28**	**5 33**	**4.17**	**10.13**	**1.64**	**7 45**	**11 48**

स्रोत - चाइना रिपोर्ट, 36 (3), (जुलाई-सितम्बर 2000), पृ0 403, तथा फारेन ट्रेड ऐंड बैंलेंस आफ पेमेन्ट्स, सी एम आई ई , मुम्बई, अक्टूबर 2002, विभिन्न पृष्ठ।

तालिका-3

भारत द्वारा चीन को किए जाने वाले निर्यात में विभिन्न वस्तुओं का हिस्सा (प्रतिशत में)

वस्तुएँ	1991-92	1992-93	1993-94	1994-95	1995-96	1996-97	1997-98	1998-99	1999-2000	2000-01	2001-02
कृषि एव सम्बन्धित उत्पाद	**4 94**	**1 6**	**3.5**	**21.0**	**22.0**	**44.1**	**50.4**	**27.0**	**27.52**	**19.38**	**13.58**
आयल मील्स	4 53	0 7	0 9	2 3	8 6	25 0	26 2	7 6	1 79	0 99	0.45
समुद्री उत्पाद	-	0 3	2 1	11 9	4 1	12.0	16.0	12 3	16.27	13 97	9 16
अयस्क एव खनिज पदार्थ	**89.59**	**44.4**	**28.2**	**36.9**	**40.8**	**24.8**	**24.9**	**34.9**	**29.40**	**26.42**	**34.98**
लौह अयस्क	22 62	28 7	17 4	22 1	20.9	10.7	13 6	21 4	15.09	15 68	21 34
अन्य अयस्क एव खनिज	44 19	14 5	7 4	13 4	16 7	11 6	6 2	10 3	12 13	8.81	11 65
निर्मित सामान	**5.74**	**53.5**	**68.3**	**41.3**	**36.3**	**30.2**	**24.1**	**35.6**	**42.76**	**53.28**	**50.03**
चमडा एव चमडा उत्पाद	0 37	1 0	1 4	3 1	1 2	0 7	0 5	0 9	0 86	1 07	1 49
रसायन एव सम्बन्धित उत्पाद	1 38	2 9	3 6	13 9	10 5	8 0	9 6	15 2	18 71	17 03	16.94
इजिनियरिग सामान	2 39	47 7	61 8	16 6	13 2	12 9	4 4	6 2	5 25	12 43	6 68
टेक्सटाइल्स (सिले वस्त्र को छोडकर)	1 58	1 3	1 1	4 2	6 9	7 9	8 2	10 4	11 26	9 58	8 66
सिले वस्त्र	-	0 1	0 0	0 1	0 2	0 2	0 1	0 9	-	-	-
अन्य निर्मित सामान	-	0 6	0 4	3 3	4 3	0 7	1 2	2 0	6 31	13 05	16 13
अन्य वस्तुएँ	**0.06**	**0 5**	**0.1**	**0.8**	**1.0**	**0.9**	**0 6**	**2.5**	**0 30**	**0.89**	**1.24**
कुल निर्यात	**100**	**100**	**100**	**100**	**100**	**100**	**100**	**100**	**100**	**100**	**100**

तालिका-2 भारत द्वारा चीन को किए जाने वाले मदवार निर्यात को प्रदर्शित करती है। इस तालिका के ऑकडो से स्पष्ट होता है कि कृषि एव सम्बन्धित उत्पादों का निर्यात वर्ष 2000-01 मे 160 92 मिलियन यू0एस0 डालर था जबकि 2001-02 मे यह घटकर 125.72 मिलियन यू0एस0 डालर रह गया। अयस्क एव खनिज पदार्थों का निर्यात 1991-92 के 43.48 मिलियन यू0एस0 डालर से बढकर 2001-02 मे 323.85 मिलियन यू0एस0 डालर हो गया। निर्मित सामानो का निर्यात सर्वाधिक 463.24 मिलियन यू0एस0 डालर रहा। लौह अयस्क का निर्यात भी वर्ष 1991-92 के 10.98 मिलियन यू0एस0 डालर से बढ़कर वर्ष 2001-02 में 197.58 मिलियन यू0एस0 डालर तक पहुॅच गया। इस तालिका से स्पष्ट होता है कि भारत में आर्थिक सुधारों को लागू करने के बाद से उसके निर्यातो में उल्लेखनीय वृद्धि हो रही है। निस्संदेह परिणामों को दृष्टि से भारत अभी चीन से काफी पीछे है। किन्तु यह तथ्य भी महत्वपूर्ण है कि चीन में आर्थिक सुधारों की शुरूआत भारत से काफी पहले हुई है तथा दोनों देशों के सुधारों में कुछ गुणात्मक अन्तर भी है।

तालिका-3 में भारत द्वारा चीन को निर्यात की जाने वाली वस्तुओं का हिस्सा (प्रतिशत मे) प्रदर्शित किया गया है। इससे स्पष्ट होता है कि चीन को किए गये वर्ष 1991-92 में कुल निर्यात में कृषि एवं सम्बन्धित उत्पादों का प्रतिशत जहॉ 4.94 था, वहीं यह वर्ष 2001-02 में बढ़कर 13.58 प्रतिशत हो गया। इसी प्रकार आयल मील्स का कुल निर्यात में हिस्सा घटकर वर्ष 2001-02 में 0.45 प्रतिशत, अयस्क एवं खनिज पदार्थ का हिस्सा घटकर 2001-02 में 34.98 प्रतिशत रह गया। निर्मित सामान के निर्यात में हुई महत्वपूर्ण वृद्धि के कारण इसका हिस्सा वर्ष 1991-92 के 5.74 प्रतिशत से बढकर 50.03 प्रतिशत हो गया। रसायन एव सम्बन्धित उत्पाद, इजीनियरिंग सामान तथा टेक्सटाइल्स के निर्यात हिस्से में भी वृद्धि दर्ज की गई।

तालिका-4

वर्ष 1991-92 तथा 2001-02 के बीच भारत द्वारा चीन को किए जाने वाले निर्यात की संरचना में महत्वपूर्ण परिवर्तन (प्रतिशत में)

वस्तुएँ	1991-1992	2001-2002
कृषि एव सम्बन्धित उत्पाद	4.94	13.58
आयल मील्स	4.53	0.45
समुद्री उत्पाद	-	9.16
अयस्क एवं खनिज पदार्थ	89.59	34.98
अन्य अयस्क एवं खनिज	44.19	11.65
निर्मित सामान	5.74	50.03
रसायन एवं सम्बन्धित उत्पाद	1.38	16.94
अन्य वस्तुएँ	0.06	1.24

स्रोत - चाइना रिपोर्ट, 36 (3), (जुलाई-सितम्बर 2000), पृ0 402, तथा फारेन ट्रेड ऐंड बैलेंस आफ पेमेन्ट्स, सी.एम.आई.ई., मुम्बई अक्टूबर 2002, विभिन्न पृष्ठ।

तालिका-4 के ऑकड़े निर्यात की सरचना में होने वाले महत्वपूर्ण प्रतिशत परिवर्तन को दर्शाते हैं। इससे स्पष्ट होता है कि कृषि एव सम्बन्धित उत्पाद, निर्मित सामान तथा रसायन एव सम्बन्धित उत्पाद के निर्यात प्रतिशत में जहॉ बढ़ोत्तरी हुई है, वहीं आयलमील्स, अयस्क एव खनिज पदार्थ तथा अन्य अयस्क एवं खनिज के निर्यात प्रतिशत में उल्लेखनीय कमी भी हुई है।

तालिका-5

भारत द्वारा चीन से किया जाने वाला मद-वार आयात (यू0एस0 मिलियन डॉलर में)

वस्तुएँ	1991-92	1992-93	1993-94	1994-95	1995-96	1996-97	1997-98	1998-99	1999-00	2000-01	2001-02
खाद्य एव सम्बन्धित सामान	**1.02**	**2.08**	**11.24**	**184.73**	**14.97**	**8.81**	**7.67**	**9.66**	**72.20**	**14.20**	**39.86**
मसाले	-	-	6	1 55	1 68	3 33	3 76	3 6	21 33	6 51	25 64
निर्यात सम्बन्धी सामान	**2 46**	**30.08**	**90.87**	**166.8**	**201.45**	**218.88**	**311.77**	**279.32**	**255.06**	**276.14**	**344.84**
कार्बनिक रसायन	0 56	20 45	58 12	110 73	138.68	135 28	176 8	166 59	178.71	181 02	236.87
अकार्बनिक रसायन	0 03	3 61	10 87	19 77	28 07	41.68	70 87	58 79	53 20	48 37	58 53
वस्त्र एव धागे	1 86	5 92	19 65	33 16	34 16	41 13	54 83	50 61	20 50	34 75	46 73
मोती एव कीमती पत्थर	0 01	0 11	2 24	3 14	0 54	0 79	9 26	3 31	2 65	12 00	2 71
पूँजीगत सामान	**1.4**	**15.95**	**35.83**	**69.95**	**88.33**	**91.53**	**114.27**	**140.23**	**116.49**	**143.01**	**192.85**
अवैद्युत मशीनरी	0 1	7 68	19 06	27 58	35 28	32 19	49 02	50 3	53 04	60.49	70 66
प्रोजेक्ट सामान	0 74	1 9	9 71	25 85	26 78	17 51	22 28	40 78	11 50	12 80	8 13
वैद्युत मशीनरी	0 29	4 02	2 75	5 91	8.51	12 09	17 57	18 37	28 58	46 34	59 73
व्यावसायिक कल-पुर्जे	0 23	0 93	2 31	3 95	6 86	8 22	14 77	18 72	23 37	23 38	54 33
कच्चे सामान एव मध्यवर्ती उत्पाद	**14.2**	**45.52**	**90.05**	**202.13**	**284.93**	**210.1**	**332.56**	**238.11**	**244.74**	**376.65**	**399.3**
कोयला, कोक तथा ब्रिक्वेट्स	6 99	11 21	9 57	62 07	123 27	94 31	185 82	86 7	146 04	261 34	262 84
कच्चा रेशम	1 15	20 07	50 83	72 15	62.21	43 2	45 62	42.65	87 44	95 66	122 07
लौह धात्विक अयस्क एव धातुमल	-	0 47	4 24	8 5	16 06	7 85	10 31	14 81	11 26	19 65	14 39
निर्मित सामान	**0.89**	**10.66**	**55.15**	**95.21**	**195.83**	**205.98**	**315.5**	**301.65**	**346.41**	**382.07**	**584.46**
इलेक्ट्रानिक सामान	-	-	14 31	25 59	50 77	52 08	109 02	153 12	178 22	244 56	380 74
दवाए एव औषधिया	0 49	5 54	15 91	37 19	74 19	58 68	65 64	60 11	73 05	70 32	103 33
लोहा एव इस्पात	0 06	0 94	13 52	5 24	10 83	26 15	61 3	19 86	30 75	7 53	14 60
अलौह धातुएँ	0 08	2 34	6 88	15 19	26 8	47 7	64 86	44 81	49 01	41 89	54 47
धातु-निर्माणक	0 07	0 62	1 93	3 11	6 78	15 01	8 79	10 76	15 38	17 77	31 32
अन्य वस्तुएँ	**1.05**	**5.67**	**18.78**	**42.0**	**26.47**	**22.26**	**38 93**	**90 56**	**55.91**	**67.17**	**113.04**
कुल आयात	**21.02**	**109.96**	**301.92**	**760.82**	**811.98**	**757.56**	**1120.7**	**1059.53**	**1090.81**	**1259.24**	**1674.35**

स्रोत - चाइना रिपोर्ट, 36 (3), (जुलाई-सितम्बर 2000), पृ0 405, तथा फारेन ट्रेड ऐंड बैंलेंस आफ पेमेन्ट्स, सी एम आई ई , मुम्बई, अक्टूबर 2002, विभिन्न पृष्ठ।

तालिका-6

भारत द्वारा चीन से किये जाने वाले आयात में विभिन्न वस्तुओं का हिस्सा (प्रतिशत में)

वस्तुएँ	1991-92	1992-93	1993-94	1994-95	1995-96	1996-97	1997-98	1998-99	1999-00	2000-01	2001-02
खाद्य एव सम्बन्धित सामान	**4.85**	**1 89**	**3.72**	**24.28**	**1.84**	**1.16**	**0.64**	**0.91**	**5.60**	**0.94**	**1.95**
मसाले	-	-	-	0 20	0 19	0 43	0 33	0 33	1 65	0 43	1 25
निर्यात सम्बन्धी सामान	**11.70**	**27 35**	**30.09**	**21.92**	**24 80**	**28.89**	**27.81**	**0.26**	**19.79**	**18.47**	**16 91**
कार्बनिक रसायन	2 66	18 59	19 25	14 55	17 07	17 85	15 77	15 72	13 87	12 10	11 61
अकार्बनिक रसायन	0 14	3 28	3 60	2 59	3 45	5 50	6 32	5 54	4 12	3 23	2 87
वस्त्र एव धागे	8 85	5 38	6 50	4 35	4 20	5 42	4 89	4 77	1 59	2 32	2 29
मोती एव कीमती पत्थर	0 04	0 10	0 74	0 41	0.06	0 10	0 82	0 31	0 20	0 80	0 13
पूँजीगत सामान	**6.66**	**14.50**	**11.86**	**9.19**	**10.87**	**12.08**	**10.19**	**13.23**	**9.04**	**9.56**	**9.45**
अवैद्युत मशीनरी	0 47	6 98	6 31	3 62	4 34	4 24	4 37	4 74	4 11	4 04	3 46
प्रोजेक्ट सामान	3 52	1 72	3 21	3 39	3 29	2 31	1 98	3 84	0 89	0 85	0 39
वैद्युत मशीनरी	1 38	3 65	0 91	0 77	1 04	1 59	1 56	1 73	2 21	3 09	2 92
व्यावसायिक कल-पुर्जे	1 09	0 84	0 76	0 51	0 84	1 08	1 31	1 76	1 81	1 56	2 66
कच्चे सामान एव मध्यवर्ती उत्पाद	**67.58**	**41.40**	**29.82**	**26.56**	**35.09**	**27.73**	**29.67**	**22.47**	**18.99**	**25.19**	**19.58**
कोयला, कोक तथा ब्रिक्वेट्स	33 26	10 19	3 16	8.15	15 18	12 44	16 58	8 18	11 33	17 48	12 89
कच्चा रेशम	5 47	18 25	16 83	9 48	7 66	5 70	4 07	4 02	6 78	6 39	5 98
लौह धात्विक अयस्क एव धातुमल	-	0 42	1 40	1 11	1 97	1 03	0 91	1 39	0 87	1 31	0 70
निर्मित सामान	**4 23**	**9 69**	**18.26**	**12.51**	**24 11**	**27 19**	**28 15**	**28.47**	**26 88**	**25.55**	**28.66**
इलेक्ट्रॉनिक सामान	-	-	4 73	3 36	6 25	6 87	9 72	14 45	13 83	16 35	18 67
दवाए एव औषधियॉ	2 33	5 03	5 26	4 88	9 13	7 74	5 85	5 67	5 67	4 70	5 06
लोहा एव इस्पात	0 28	0 85	4 47	0 68	1 33	3 45	5 46	1 87	2 38	0 50	0 71
अलौह धातुये	0 38	2 12	2 27	1 99	3 30	6 29	5 78	4.22	3 80	2 80	2 61
धातु-निर्माणक	0 33	0 56	0 63	0 40	0 83	1 98	0 78	1 01	1 19	1 18	1 53
अन्य वस्तुएँ	**4.99**	**5.15**	**6.22**	**5.52**	**3.25**	**2.93**	**3.47**	**8.54**	**4.33**	**4.49**	**5.54**
कुल आयात	**100**	**100**	**100**	**100**	**100**	**100**	**100**	**100**	**100**	**100**	**100**

स्रोत - चाइना रिपोर्ट, 36 (3), (जुलाई-सितम्बर 2000), पृ0 400 तथा 405, , फारेन ट्रेड ऐंड बैंलेस आफ पेमेन्ट्स, सी एम.आई ई , मुम्बई, अक्टूबर 2002, विभिन्न पृष्ठ।

भारत द्वारा चीन से किये जाने वाले मद-वार आयात का विवरण तालिका-5 मे दिया गया है। इस तालिका से स्पष्ट होता है कि खाद्य एव सम्बन्धित वस्तुओ का आयात 2001-02 में बढ़कर 39.86 मिलियन यू0एस0 डालर हो गया जबकि यह वर्ष 1991-92 में 1.02 मिलियन यू0एस0 डालर था। इसी प्रकार 1991-92 से 2001-02 के बीच निर्यात सम्बन्धी सामानो का आयात 2.46 मिलियन यू0एस0 डालर से बढ़कर 344.84 मिलियन यू0एस0 डालर, पूँजीगत सामानों का आयात 1.4 मिलियन यू0एस0 डालर से बढ़कर 192.85 मिलियन यू0एस0 डालर, कच्चे सामान एवं मध्यवर्ती उत्पाद का आयात 14.2 मिलियन यू0एस0 डालर से बढकर 399.3 मिलियन यू0एस0 डालर, निर्मित सामान का आयात 0.89 मिलियन यू0एस0 डालर से बढकर 584.46 मिलियन यू0एस0 डालर और अन्य वस्तुओं का आयात 1.05 मिलियन यू0एस0 डालर से बढकर 113.04 मिलियन यू0एस0 डालर तक जा पहुँचा।

तालिका-6 में वर्ष 1991-92 से लेकर 2001-02 के बीच भारत द्वारा चीन से किए जाने वाले आयात में विभिन्न वस्तुओ का हिस्सा (प्रतिशत में) प्रदर्शित किया गया है। इस तालिका से स्पष्ट हो रहा है कि खाद्य एवं सम्बन्धित सामान तथा कच्चे सामान एवं मध्यवर्ती उत्पादों के आयात-हिस्से में जहॉ कमी हो रही है वहीं निर्यात-सम्बन्धी सामान, पूँजीगत सामान, निर्मित सामान तथा अन्य वस्तुओं के आयात-हिस्से में वृद्धि हो रही है।

तालिका-7

वर्ष 1991-92 तथा 2001-2002 के बीच भारत द्वारा चीन से किए जाने वाले आयात की संरचना में महत्वपूर्ण परिवर्तन (प्रतिशत में)

वस्तुएँ	1991-1992	2001-2002
खाद्य एव सम्बन्धित सामान	4.85	1.95
निर्यात सम्बन्धी सामान	11.70	16.91
कार्बनिक रसायन	2.66	11.61
पूँजीगत सामान	6.66	9 45
कच्चे सामान एव मध्यवर्ती उत्पाद	67.58	19.58
कोयल, कोक तथा ब्रिक्वेट्स	33 26	12.89
निर्मित सामान	4.23	28.66
अन्य वस्तुएँ	4.99	5.54

स्रोत .- चाइना रिपोर्ट, 36(3), (जुलाई-सितम्बर 2000), पृ0 400, 405 तथा फारेन ट्रेड ऐंड बैलेंस आफ पेमेन्ट्स, सी.एम.आई.ई., मुम्बई, अक्टूबर 2002, विभिन्न पृष्ठ।

तालिका-7 में भारत द्वारा चीन से किए जाने वाले आयात की संरचना में महत्वपूर्ण प्रतिशत परिवर्तन को प्रदर्शित किया गया हैं इससे स्पष्ट होता है कि निर्यात सम्बन्धी सामान, कार्बनिक रसायन, पूँजीगत सामान निर्मित सामान तथा अन्य वस्तुओं के आयात प्रतिशत में वृद्धि हो रही है जबकि खाद्य एवं सम्बन्धित सामान, कच्चे सामान एव मध्यवर्ती उत्पाद तथा कोयला, कोक एवं ब्रिक्वेट्स के आयात प्रतिशत में कमी हो रही है।

आर्थिक सुधारो को लागू करने तथा अपनी अर्थव्यवस्था को बाहरी दुनिया के लिए खोलने के पश्चात् चीन अपनी आर्थिक विकास की दर को ऊँची बनाए रखने मे सफल रहा है। गत पॉच वर्षों में चीन की औसत आर्थिक वृद्धि-दर 8.3 प्रतिशत रही है। वर्ष 2000 में चीन का इस्पात उत्पादन 128.5 मिलियन टन था जबकि विश्व बाजार में इसकी भागीदारी भी बढ गयी। चीन का वर्ष 2000 में विदेशी व्यापार 474.3 बिलियन यू0एस0 डालर था जबकि इसका विदेशी मुद्रा भंडार 165.6 बिलियन यू0एस0 डालर तक जा पहुॅचा। हाल ही में अन्तर्राष्ट्रीय ओलम्पिक समिति ने 2008 के ग्रीष्म ओलम्पिक खेलो की मेजबानी भी चीन को सौंपी है। वास्तव में यह उस चीन में आये ऐतिहासिक परिवर्तनों का ही सुफल है जिसे आज से लगभग 100 वर्षों पूर्व 'पूर्वी एशिया का बीमार' कहा जाता था।[8]

आर्थिक विकास के क्षेत्र में भारत की उपलब्धियॉ भी कम महत्वपूर्ण नहीं है। इसकी भी आर्थिक वृद्धि-दर गत दशक में औसत रूप से अच्छी रही हैं। इस दौरान भारत में उद्योगों का व्यापक रूप से फैलाव हुआ तथा यह विज्ञान तथा तकनीकी के क्षेत्र में विकसित देशों में भी अग्रणी स्थान रखता है। परमाणु ऊर्जा, अंतरिक्ष तथा इलेक्ट्रॉनिक्स आदि क्षेत्रों में भी भारत ने काफी अच्छी प्रगति की है। साफ्टवेयर के उत्पादन तथा निर्यात में भारत शीघ्र ही 'साफ्टवेयर महाशक्ति' बनने वाला है। भारत की 'हरित क्रान्ति' तथा 'श्वेत क्रांति' की पूरे विश्व में व्यापक प्रशंसा की गई।[9] नई शताब्दी में इस बात की पूरी संभावना है कि चीन तथा भारत विकसित देशों से अपनी दूरियॉ कम करके 'विश्व-शक्ति' बन सकेंगे।

भारत तथा चीन दोनों के बीच आर्थिक एवं सामाजिक विकास का मुद्दा सबसे महत्वपूर्ण है। यह दोनों के लिए आवश्यक है तथा इसके लिए इनके बीच स्थायी एवं सौहार्दपूर्ण वातावरण का होना आवश्यक है। चीन, भारत का सबसे बड़ा पडोसी देश है तथा भारत चीन का दूसरा सबसे बड़ा पड़ोसी देश है। अत.

---

[8] शेंग रूइशेंग, ट्रान्सफार्मिंग हिस्टोरिकल साइनो-इंडियन रिलेशस, वर्ल्ड अफेयर्स, 5 (4), (अक्टूबर-दिसम्बर 2001), पृ0 18

[9] वहीं, पृ0 19

शातिपूर्ण सह-अस्तित्व केवल सुरक्षा के दृष्टिकोण से ही महत्वपूर्ण नहीं है, बल्कि यह इन दोनो की आर्थिक सवृद्धि के लिए भी महत्वपूर्ण है। शातिपूर्ण-सहअस्तित्व यह सुनिश्चित करेगा कि दोनों अपने आर्थिक ससाधनों को सुरक्षा तैयारियो पर न खर्च करके अपने आर्थिक एवं सामाजिक विकास पर खर्च करेंगे। यह सत्य है कि दोनों ही देशों की अपनी आंतरिक समस्यायें भी हैं। ऐसी स्थिति में दोनो के लिए यह आवश्यक हो जाता है कि वे एक दूसरे के प्रति अच्छे पड़ोसी की तरह व्यवहार करने की वर्तमान नीति को जारी रखें तथा 1954 में घोषित पचशील के सिद्धांतों का अनुसरण करे। यह भी वास्तविकता है कि आर्थिक एव सैन्य-शक्ति में वृद्धि के परिणामस्वरूप दोनों ही देशों के लोगों में प्रतिस्पर्धात्मक महत्वाकांक्षा भी बढ़ेगी, किन्तु जैसे-जैसे दोनों देश अपनी नीतियो को दृढता से लागू करेंगे वैसे-वैसे इस प्रतिस्पर्द्धा का स्थान आपसी समझ तथा विश्वास ले लेगा।[10]

भारत तथा चीन के आर्थिक सम्बन्धों में हाल के वर्षों में उल्लेखनीय सुधार हुआ हैं। दोनों देशों के बीच व्यापार गत दशक में बडी तेजी के साथ बढ़ा है। दोनों के बीच व्यापार में वृद्धि की इससे भी ज्यादा संभावनायें तथा क्षमता हैं, साथ ही इसके लिए अनुकूल परिस्थितियॉ भी मौजूद हैं। भारत तथा चीन दोनों ही विशाल बाजार हैं और दोनों देश अपने यहॉ नये आर्थिक सुधारों को लागू कर रहे हैं। इसके साथ ही अन्य वस्तुओं के व्यापार में भी वृद्धि होगी। इस्पात, पेट्रोलियम, अंतरिक्ष, साफ्टवेयर आदि क्षेत्रों में आर्थिक सहयोग में निरंतर वृद्धि हो रही है। आर्थिक सुधारों को लागू करने के अनुभवों का आदान-प्रदान भी दोनों के लिए काफी लाभदायक होगा क्योंकि ऐसी अनेक समस्यायें हैं, जिनका सामना दोनों को ही करना है। भारत, चीन, म्यांमार तथा बाग्लादेश के बीच भी क्षेत्रीय आर्थिक सहयोग की अपार संभावनाएॅ हैं।[11]

---

[10] वही पृ0 20

[11] वही, पृ0 21

यह एक अच्छा सकेत है कि दोनों देशों की सरकारें तथा व्यापारी वर्ग भारत-चीन के बीच आर्थिक सम्बन्धों में वृद्धि की और अधिक सभावनाएँ तलाश रहे हैं। भारत के दृष्टिकोण से यदि देखा जाए तो यह निर्यात वृद्धि केवल लौह अयस्क तथा इस्पात के क्षेत्रों में ही नही बल्कि अन्य अनेक क्षेत्रो में भी हुई है। यह तथ्य ध्यान देने योग्य है कि नब्बे के दशक के शुरू में दोनों देशों के बीच व्यापार कुछ सौ मिलियन डालर ही था। 1991 में भारत मे आर्थिक सुधारों को लागू करने के पश्चात इसमें उल्लेखनीय वृद्धि हुई है तथा इस क्षेत्र में वृद्धि की अंपार संभावनाएँ अभी भी मौजूद है।[12]

इस बात का एहसास भारत तभा चीन दोनों को है कि उनके आर्थिक सम्बन्धों में अभी और वृद्धि की क्षमता तथा क्षेत्र दोनों ही है, जोकि दोनों देशों के लिए लाभदायक होगा। भारत तथा चीन दोनों के द्वारा अपनी अर्थव्यवस्थाओं को विश्व के लिए खोल देने से इस क्षेत्र में आशाएँ काफी बढ़ गयी हैं। पहली बार इसके लिए दोनों देशों के बीच राजनीतिक वातावरण भी अनुकूल दिखाई पड़ रहा है। भारत तथा पाकिस्तान के बीच 1999 में हुए कारगिल संघर्ष पर चीन का रूख पाकिस्तान-समर्थक नहीं था। करमापा लामा का विवाद हो या नाभिकीय - परीक्षण अथवा सीमा-विवाद का मुद्‌दा, दोनों ही देशों की सरकारों ने काफी सयम से काम लिया है।[13]

भारत तथा चीन के बीच सीमा विवाद को हल करने के लिए होने वाली संयुक्त कार्य दल की बैठकों में मुख्य चर्चा द्विपक्षीय आर्थिक सम्बन्धो पर ही होती हैं। यह बात महत्वपूर्ण है कि दक्षिण एशिया के देशों के साथ सम्बन्ध बनाते हुए चीन द्वारा भारत को अनदेखा किया जाना काफी मुश्किल होगा। क्योंकि भारत दक्षिण-एशिया के देशों में सबसे अधिक राजनीतिक दृष्टि से स्थिर तथा आर्थिक दृष्टि से सुदृढ देश है।

---

[12] सी0 वी0 रगनाथन, इडिया-चाइना रिलेशस प्राब्लम्स ऐंड पर्सपेक्टिव्स, वर्ल्ड अफेयर्स, (अप्रैल-जून 1998), वाल्यूम-2 न 2, पृ0 110

[13] अरविदर सिह, 'साइनो-इडियन इकोनामिक रिलेशस एन एनालिसिस आफ रिसेन्ट ट्रेन्डस इन बाइलेटरल ट्रेड', चाइना रिपोर्ट 36 (3) (जुलाई-सितम्बर 2000), पृ0 397

20वीं शताब्दी के अन्तिम दशक में सूचना प्रौद्योगिकी, तकनीकी, सचार आदि क्षेत्रों में क्रातिकारी परिवर्तन हुए हैं। इन परिवर्तनों ने अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार, निवेश एव सेवाओं को महत्वपूर्ण ढंग से प्रभावित किया है। इन क्रातिकारी परिवर्तनों का लाभ निश्चित रूप से भारत तथा चीन, दोनों देशों के सामाजिक-आर्थिक विकास में दिखाई पडना चाहिए। इसके लिए सबसे पहली आवश्यकता यह है कि विश्व के दोनों बडे देश एक दूसरे के लिये खुले हों।[14] दोनो देशों मे बडे पैमाने पर आर्थिक सुधार कार्यक्रमों को लागू किया गया है। आवश्यकता इस बात की है कि इन सुधारों का लाभ देश की अधिसंख्या जनता को मिले, इसी में इसकी सार्थकता निहित है।

यह बात ध्यान देने योग्य है कि दोनों देशों के बीच व्यापार एवं निवेश इनकी क्षमता से काफी कम हैं। विभिन्न क्षेत्रों के उद्यमियों द्वारा दोनों देशों के बीच व्यापार तथा निवेश को बढ़ाने के अनेक पारम्परिक उपायो को तलाशा जा रहा है, फिर भी व्यापार तथा निवेश में वृद्धि की प्रक्रिया काफी धीमी है। दोनों देशों को उन क्षेत्रों में आर्थिक सहयोग बढ़ाने की आवश्यकता है, जहॉ उन्हें एक-दूसरे की स्वदेशी तकनीक की जरूरत है। दोनों देश अपनी आधारभूत संरचनाओं के विकास के लिए, तथा उद्योग एवं सेवाओं के विकास के लिए अन्य पश्चिमी देशों से तकनीकी का आयात करते है। जबकि उन्हें इसके लिए एक-दूसरे की समृद्ध एवं उन्नत तकनीकी का आदान प्रदान करना चाहिए। इसके लिए दोनों देशों के विशेषज्ञों को विचार करना चाहिए।[15]

भारत तथा चीन, दोनों को अपनी भौगोलिक निकटता का लाभ भी उठाना चाहिए। हाल के वर्षों में चीन ने सीमा-पार सम्पर्कों को बढ़ावा दिया है। ऐसे में दोनों देशों को सीमा-पार-व्यापार की सारी सम्भावनाओं को तलाशना चाहिए। इस

---

[14] सी0 वी0 रगनाथन, इडिया-चाइना रिलेशस प्राब्लम्स ऐंड पर्सपेक्टिव्स, वर्ल्ड अफेयर्स, (अप्रैल-जून 1998), वाल्यूम-2 न 2, पृ0 114

[15] वही, पृ0 114

दिशा में शुरुआत भी हो चुकी है। तिब्बत के रास्ते भारत-चीन सीमा-पार-व्यापार इसी दिशा में की गई एक पहल है । भारत के पूर्व तथा चीन के दक्षिण-पश्चिम मे स्थित बाग्लादेश, म्यामार तथा आसियान के कुछ देशों में आधारभूत सरंचना के निर्माण तथा संचार सुविधाओं के विस्तार के क्षेत्र में भारत तथा चीन द्वारा काफी कुछ किए जाने की गुंजाइश है। इससे दोनों के बीच व्यापार बढने के साथ ही इस पूरे क्षेत्र का विकास भी होगा। दोनों देशों की सरकारो को तथा उद्योग एव व्यापार-जगत के नेताओं को इस महत्वपूर्ण क्षेत्र के विकास हेतु भू-आर्थिकी (Geo-Economics) की वास्तविकताओ का खुलासा भी करना चाहिए।[16]

शेंग रूइशेंग ने चीन और दक्षिण एशियाई देशों के बीच बढ़ते व्यापार एव आर्थिक सहयोग पर प्रतिक्रिया व्यक्त करते कहा है, "भारत और चीन के बीच व्यापार तथा आर्थिक एव तकनीकी सहयोग की व्यापक सम्भावनाएँ हैं।"

वर्ष 2001 के शुरू मे चीन की संसद की स्थायी समिति के अध्यक्ष तथा चीन के राजनीतिक सत्ताक्रम के दूसरे सबसे बडे नेता ली-पेंग की नौ दिवसीय भारत-यात्रा के दौरान चीन के व्यापारियों तथा उद्योगपतियों एव आर्थिक विशेषज्ञो का एक बडा शिष्टमडल भी उनके साथ रहा। इस दौरान हुए विचार-विमर्श से यह जाहिर हुआ कि चीन, अपनी रूचि के कुछ विशेष क्षेत्रों में भारत के साथ आर्थिक तथा प्रौद्योगिकीय सहयोग बढ़ाना चाहता है। स्पष्ट है कि यह क्षेत्र भारत के लिए भी विशेष रूचि के ही होंगे। ली-पेंग की दक्षिण भारत के उन राज्यों के दौरे, जहॉ की आर्थिक तथा प्रौद्योगिकीय गतिविधियों में अब पूरा विश्व रूचि लेने लगा है, ने संकेत दे दिया कि कौन से ऐसे क्षेत्र है जहाँ चीन की विशेष दिलचस्पी है।[17]

राजनय के गैर-सरकारी गलियारों के माध्यम से भी भारत तथा चीन के सम्बन्धों को सुधारने की कोशिशें होती रही हैं। 1997 से ही दोनों देशों की विभिन्न संस्थाओं के बीच विचारो का आदान-प्रदान होता रहा है। इन वैचारिक मंचों पर

---

[16] वही, पृ0 115

[17] जे एन दीक्षित, 'चीन से सम्बन्ध सुधारने के गैर-सरकारी प्रयास', हिन्दुस्तान (लखनऊ), 1 अप्रैल 2001

भारत के सेंटर फार पालिसी रिसर्च, इंस्टीट्यूट आफ चाइनीज स्टडीज, दिल्ली विश्वविद्यालय जैसी सस्थाएँ और चीन की ओर से चाइनीज इंस्टीट्यूट आफ इटरनेशनल स्टडीज के वरिष्ठ सलाहकार, राजदूत शेग रूइशेंग और पेइचिग चाइना इस्टीट्यूट आफ कंटेम्परेरी इटरनेशनल रिलेशंस, इंस्टीट्यूट आफ एशिया पैसिफिक स्टडीज, चाइनीज एकेडमी आफ सोशल साइंसेज, इंस्टीट्यूट फार साउथ एशियन स्टडीज, युनान एकेडमी आफ सोशल साइंसेज, तथा चीन के एशिया डेवलपमेंट सेंटर के विद्वान भाग लेते रहे हैं। मार्च 2001 में दिल्ली में हुए दो दिवसीय से सेमिनार में निकट भविष्य में भारत-चीन सम्बन्धों की प्रकृति के कुछ सकेत सामने आए। इस सेमिनार के दौरान भारत-चीन सम्बन्धों पर असर डालने वाले सभी अन्तर्राष्ट्रीय, क्षेत्रीय तथा आपसी मुद्दों पर व्यापक चर्चा की गई। यह महत्वपूर्ण बात है कि दोनों शिष्टमंडलों ने जो अपने-अपने विचार रखे, उन पर भारत तथा चीन की सरकारों की नीतियों के खटके और धारणाएँ कहीं लागू नहीं होती। लेकिन निश्चय ही, सभी तर्क, दोनों की नीतियों के संपूर्ण दायरे के भीतर ही दिये गए। तो भी अपने-अपने विचार रखते समय कोई हिचक नहीं थी, एक खुलापन था, सीधा और सटीक दृष्टिकोण था और इस विचार-विनिमय की प्रकृति विश्लेषणात्मक थी।[18]

इस चर्चा के दौरान आर्थिक सहयोग के मुद्दे पर, इस बात पर सहमति थी कि भारत और चीन भले ही इस क्षेत्र में एक-दूसरे के पूर्णतया पूरक नहीं हो सकते लेकिन कुछ विशेष प्रौद्योगिक, प्रशासनिक और व्यापारिक क्षेत्रों में ऐसी पूरक भूमिका निभा सकते हैं; और इन क्षेत्रों में विकास की भी पूरी संभावना है।

इस मुद्दे पर भी व्यापक सहमति थी कि चीन, जिस तरह भारत और म्यॉमार के साथ लगते अपने दक्षिणी इलाकों के आर्थिक विकास पर जोर दे रहा है, उससे भारत, म्यॉमार तथा बॉग्लादेश के साथ चीन के सहयोग की सभावनाएँ अच्छी हैं। विचार-विमर्श के दौरान ऐसे संकेत भी मिले कि मेकांग, ब्रह्मपुत्र और

---

[18] वही, हिन्दुस्तान (लखनऊ) 1 अप्रैल 2001

गंगा के पूर्वी थाले के क्षेत्रों के बीच सहयोग हो सकता है और एक विकास-प्रक्रिया की श्रृंखला में इन्हें जोडा जा सकता है।[19]

दो साल पहले जब एशिया का बड़ा इलाका मंदी के दौर से गुजर रहा था, सिर्फ चीन और भारत ऐसे दो देश थे, जहॉ सकारात्मक विकास-दर दर्ज की गई थी। चीन आज एशिया की सबसे तेजी से विकास करती अर्थव्यवस्था है और भारत भी अपने आर्थिक सुधारों के बल पर उससे बराबर की होड लेने की सोच रहा है। ऐसे में दोनों देशो के आपसी व्यापारिक रिश्ते बहुत महत्वपूर्ण हो गए हैं। मगर चीन और भारत के कारोबारी सम्बन्धों की कहानी मोहब्बत और नफरत की कहानी है। इस कहानी में एक ओर तो यह हसरत है कि दोनों देशों के बीच समृध्दि के आदान-प्रदान की तमाम संभावनाओं का पूरी तरह दोहन हो और दूसरी ओर यह डर है कि कहीं चीन की खासतौर पर विकसित की गई लडाकू निर्यातक नस्ल अपने सस्ते माल से भारतीय उत्पादकों के काम-धंधे चौपट न कर डाले। पिछले कुछ सालों में चीन के माल से दहशत वाला यह दूसरा पक्ष ही मजबूत हुआ है। भारतीय उपभोक्ता बाजार में चीन के सस्ते तैयार माल ने इस दौरान ऐसा कहर ढाया कि देशी व्यापारियों का असंतोष उद्योग चैम्बरों से होता हुआ संसद तक में गूॅजने लगा।[20]

चीनी माल की चुनौती का सामना करने के लिए भारत को अनेक उपाय करने होंगे। इस सम्बन्ध में भारत सरकार ने कुछ प्रारम्भिक कदमों की घोषणा भी की है। ब्रजेश मिश्रा के नेतृत्व में इस समस्या के समाधान के लिए एक विशेष पैनल गठित किया गया है। आयातित माल के ग्राफ पर नजर रखने के लिए इस पैनल के तहत राजस्व और वाणिज्य सचिवों की एक उपसमिति भी बनाई गई है। इसके अलावा सस्ते आयात पर अंकुश रखने के लिए आधा दर्जन तरीकों की घोषणा भी की गई है। भारत को अपने लघु उद्योगों को संरक्षण देने के साथ ही

[19] वही, हिन्दुस्तान (लखनऊ), 1 अप्रैल 2001

[20] कचना, 'चीनी माल की चुनौती और भारत की तैयारियॉ', नवभारत टाइम्स (नई दिल्ली), 10 दिसम्बर 2000

चीनी माल पर सीमा-शुल्क की दरों को भी सशोधित करना चाहिए। भारत सरकार को भी चीन की तर्ज पर अपने उत्पादको को अतिविशिष्ट सुविधाएँ देकर देश मे एक लडाकू निर्यातक नस्ल विकसित करनी चाहिए। याद रखना होगा, कि बदूकों और टैंकों से लडने के दिन अब लद चुके हैं। अब तो दुनिया में व्यापार के जरिए ही आखेट होता है। सारा यूरोप और सारा अमेरिका आज ऐसा ही, संरक्षणों और सब्सिडियों का, युद्ध लड़ रहा है। इस नजरिए से बेहद सस्ते चीनी सामान का यह सैलाब सन् बासठ के नेफा के हमले से कम नहीं है।[21]

यदि आर्थिक सुधारों की सफलता की दृष्टि से आकलन किया जाय तो चीन के परिणाम भारत की अपेक्षा अधिक उत्साहवर्धक दिखाई पडते हैं। चीन में विदेशी प्रत्यक्ष निवेश को बढ़ाने हेतु अनेक उपाय किए गए हैं जिससे विदेशी प्रत्यक्ष निवेश के मामले में स्थिति काफी सुधरी है। ऐसा नहीं है कि भारत इस मामले में पीछे है। भारत ने भी विदेशी प्रत्यक्ष निवेश को प्रोत्साहित करने के लिए कई कदमों की घोषणा की है। अनिवासी भारतीयों का योगदान भी इस क्षेत्र में उल्लेखनीय है।[22]

भारत-चीन व्यापार को बढ़ाने हेतु इसे निवेश से भी जोड़ने की जरूरत है। भारत द्वारा चीन के प्रदेशों में निर्यातमूलक इकाईयॉ स्थापित की जाएँ तथा ऐसा ही चीन द्वारा भी भारत में किया जाए। इस प्रकार 'भारत-चीन व्यापार क्षेत्र' का निर्माण सरलता से हो सकेगा। भारत और चीन के बीच विश्व-व्यापार संगठन समझौते पर हस्ताक्षर तथा चीनी माडल पर आधारित दो 'विशेष आर्थिक क्षेत्रों' के निर्माण की घोषणा के बाद दोनों देशों में परस्पर निवेश को बढ़ाने का यह उपयुक्त समय है। यदि चीन भारतीय सीमा से सटे 'युनान' में विशेष आर्थिक क्षेत्र की स्थापना करता है तो यह और भी सहायक होगा। जहां तक भारत का प्रश्न है, इसे 'निर्यात मूलक औद्योगीकरण' पर गम्भीरतापूर्वक ध्यान देना होगा। इसके साथ ही भारत द्वारा चीन को किए जाने वाले निर्यात की मदों में भी विविधता लानी

---

[21] सजय अभिज्ञान, 'नींद से जागी सरकार और नई बहस', नवभारत टाइम्स (नई दिल्ली), 10 दिसम्बर 2000

[22] बिप्लव चौधरी, 'रोल आफ फारेन डाइरेक्ट इन्वेस्टमेंट इन द चाइनीज इकोनामी विद स्पेशल रिफरेन्स टू द ओवरसीज चाइनीज इट्स इम्प्लीकेशन फार इडिया', चाइना रिपोर्ट 37 (4), 2001, पृ0 474

होगी, क्योकि भारत-चीन के बीच व्यापार की स्थिरता और वृद्धि इस बात पर निर्भर करेगी कि दोनों के बीच कितनी ज्यादा से ज्यादा वस्तुओं का व्यापार होता है। आधारभूत सरचनाओं के विकास के क्षेत्र में भी भारत तथा चीन द्वारा विशेषज्ञों एवं निवेश के आदान-प्रदान की काफी संभावनाएॅ है। चीन ने हाईवे, बंदरगाह, ऊर्जा तथा दूरसंचार के क्षेत्र में आधारभूत संरचनाओं का काफी अच्छा विकास किया है। आने वाले वर्षों में इससे चीन की अर्थव्यवस्था को काफी मजबूत आधार मिलेगा।[23]

फरवरी, 2000 मे बीजिंग में हुए व्यापार, विज्ञान एवं तकनीकी तथा आर्थिक सम्बन्धों पर संयुक्त कार्यदल के छठें दौर की बैठक में भारत तथा चीन के बीच आधारभूत क्षेत्रों जैसे ऊर्जा, शक्ति, परिवहन सुविधाएॅ तथा दूरसंचार आदि क्षेत्रों में सहयोग को बढ़ाने पर सहमति हो गई है। भारत ने इन क्षेत्रों में चीनी कम्पनियों को आमंत्रित करते हुए आधारभूत क्षेत्रों में निवेश तथा भागीदारी से सम्बन्धित सूचनाएँ उपलब्ध कराने पर भी अपनी सहमति जताई है। दोनों पक्षों ने विश्व बैंक, एशियाई विकास बैंक तथा अन्य अन्तर्राष्ट्रीय वित्तीय संस्थाओं द्वारा दोनों देशों में सचालित योजनाओं के टेंडरों में सहूलियतें देने पर सहमति व्यक्त की है। इस बैठक में दोनों देशों के बीच द्विपक्षीय व्यापार तथा आर्थिक सहयोग के तीव्र विकास हेतु बैंकिग, जहाजरानी तथा हवाई सुविधाओं को बढाने की आवश्यकता पर भी बल दिया गया।[24]

उभरते विश्व बाजार में, यदि भारत तथा चीन को व्यापारिक प्रतिद्वन्द्वी के रूप में देखा जाए तो उनके बीच व्यापार तथा आर्थिक सहयोग के क्षेत्र काफी सीमित होंगे, क्योंकि ऐसे में वे एक दूसरे के लिए 'पूरक' नहीं बल्कि 'प्रतियोगी' का कार्य करेंगे। किन्तु भारत-चीन आर्थिक सम्बन्धों के पीछे यह कारक उतना महत्वपूर्ण नहीं है। 'वैश्वीकरण' के बावजूद अभी भी अधिकांश भारतीयों के लिए

---

[23] अरविदर सिह, 'साइनो-इडियन इकोनामिक रिलेशस एन एनालिसिस आफ रिसेन्ट ट्रेन्डस इन बाइलेटरल ट्रेड', चाइना रिपोर्ट 36 (3) (जुलाई-सितम्बर 2000), पृ0 406-409

[24] वही, पृ0 409

चीन की राजनीतिक तथा आर्थिक व्यवस्था एक रहस्य बनी हुई है। भाषा की समस्या तथा सूचनाओं की कमी से इसमें और वृद्धि हुई है। चीन मे लागू आर्थिक सुधारों के प्रति अनिश्चितता की धारणा ने भी भारत-चीन आर्थिक सम्बन्धो को प्रभावित किया है।[25]

यह तथ्य ध्यान देने योग्य है कि केवल भारत ही उपरोक्त समस्याओं का सामना नहीं कर रहा है, बल्कि चीन की व्यवस्था पूरे विश्व के लिए परिवर्तनशील, अबूझ एवं रहस्यमय बनी हुई है। यहॉ तक कि चीन के नियमित व्यापारिक एव निवेश सहयोगियों को भी इस इस कठिनाई का सामना करना पडा है। उदाहरण के लिए जापान, ताईवान तथा अन्य दक्षिण-पूर्व एशियाई देशों का नाम लिया जा सकता है। ताईवान तािा अन्य दक्षिण-पूर्व एशियाई देशें ने चीन के साथ व्यापार में अपने तत्र का कुशलतापूर्वक प्रयोग किया है। भारत को भी चीन के साथ व्यापार मे चीनी तंत्र को ध्यान में रखना होगा। इसके साथ ही भारत को दो अन्य बातों का भी विशेष ध्यान रखना होगा। वे हैं- विश्वसनीयता एवं गुणवत्ता। चीनी सामान अपनी गुणवत्ता और मूल्य के लिए पूरी दुनिया में मशहूर है। ऐसे में भारत को चीन के साथ अपना निर्यात बढ़ाने के लिए इन बातों को ध्यान में रखना ही होगा।[26]

विश्व-व्यापार संगठन का सदस्य बनने के बाद चीन में व्यापारिक गतिविधियॉ और अधिक पारदर्शी होती जा रही हैं। आने वाले समय में चीन की अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण परिवर्तन देखने को मिलेंगे। निश्चित रूप से, इन परिवर्तनों का प्रभाव भारत-चीन आर्थिक सम्बन्धों पर भी पड़ेगा।

नवम्बर, 2002 में चीन की कम्युनिस्ट पार्टी की 16वीं कांग्रेस ने देश की कमान हू-जिन्ताओ को सौंप दी। निवर्तमान राष्ट्रपति जियाग-जेमिन ने अपनी राजनीतिक रिपोर्ट मे पार्टी कांग्रेस के सामने अगले 20 साल की अवधि के लिए

---

[25] वही, पृ0 410
[26] वही, पृ0 410

विकास की एक रूपरेखा भी प्रस्तुत की है। सन् 2000 में चीन का सकल घरेलू उत्पाद जितना था, 20 साल में उसे चार गुना करने का लक्ष्य उन्होने रखा है। जियांग-जेमिन ने पार्टी के सामने जो लक्ष्य रखा है उसके अनुसार चीन 2020 तक एक 'मध्यम विकसित राष्ट्र' होगा और सारे चीनवासियों को एक सुविधाजनक स्तर प्राप्त होगा। इसके लिए जेमिन ने चार चीजों पर बल दिया है . अर्थव्यवस्था का विकास, लोकतंत्र को पुष्ट करना, उच्चसंस्कृति के साथ-साथ सामाजिक समरसता से युक्त जन-जीवन में विभिन्नताओं का समावेश और प्रकृति तथा पर्यावरण का संरक्षण एवं विकास। जियाग-जेमिन ने पार्टी के सामने तीन ऐतिहासिक मुद्दो का कार्यक्रम भी रखा है (1) मातृभूमि का पुन· एकीकरण, अर्थात ताईवान का चीन में विलय. (2) विश्व-शांति की सुरक्षा के साथ-साथ विश्व स्तर पर तमाम देशों के विकास के लिए कार्य करना, और (3) चीनी राष्ट्र का पुनर्जागरण तथा अपनी विशिष्टताओं के साथ समाजवाद का निर्माण करना। इसके साथ ही उन्होंने एक ठोस नारा भी कांग्रेस को दिया- 'एक सम्पन्न समाज का निर्माण'।[27]

कम्युनिस्ट पार्टी की 16वीं कांग्रेस में भारत, रूस सहित सभी पडोसी देशों से सम्बन्ध सुधारने की बात कही गई। भारत और चीन में विगत एक दशक में तुलनात्मक व्यापार बढने के बावजूद भारत का चीन के बाजार में 0.5 प्रतिशत और चीन का भारत के बाजार में 2.5 प्रतिशत हिस्सा है। जब सारी दुनिया में आर्थिक मदी का बोलबाला है, उस समय भी चीन ने अपनी विकास दर बनाये रखी है। देखना यह है कि मार्क्सवाद से 'यू टर्न' लेने के बाद भी क्या चीन आर्थिक विकास के सतत मार्ग पर चलता रहेगा? चीन में मार्क्सवाद असफल हुआ है या सफल, इसका आकलन तो बाद मे होगा, पर एक बात तो तय है कि अब चीन दुनिया के मार्क्सवादियों के लिए आदर्श नहीं रहेगा।[28]

---

[27] मनोरजन मोहती, 'नया नेतृत्व नया दौर', राष्ट्रीय सहारा (लखनऊ), 23 नवम्बर 2002

[28] अरविदर सिह, 'मार्क्सवाद से यू टर्न', राष्ट्रीय सहारा (लखनऊ), 23 नवम्बर 2002

चीन के नए नेतृत्व ने भी भारत से दोस्ताना सम्बन्ध रखने की इच्छा जाहिर की है। नये नेतृत्व का मुख्य मुद्दा खुलापन और आर्थिक विकास का है। वर्ष 2002 में भारत और चीन के बीच 2.4 अरब डालर का व्यापार हुआ था, जिसे 2003 में बढ़कर 3 अरब डालर हो जाने की सभावना है। भारत में गेहूँ, और चावल का उत्पादन अधिक होता है और चीन इसका बड़ा बाजार है।भारत साफ्टवेयर में अव्वल है जबकि चीन हार्डवेयर में। इसलिए इस बात की पूरी सम्भावना है कि दोनों देशों के बीच व्यापारिक रिश्ते मजबूत होंगे। भारत के लोग यह जानने को उत्सुक हैं कि जो बौद्ध धर्म चीन में फला-फूला, वह भारत में समाप्त कैसे हो गया। चीनी लोग भारत की शास्त्रीय कलाओं में विशेष दिलचस्पी लेते हैं। इसलिए एशिया के इन दो बड़े देशों के बीच सांस्कृतिक आदान-प्रदान की काफी गुंजाइश है। कुल मिलाकर यह कहा जा सकता है कि चीन के साथ हमारे सम्बन्ध तभी और बेहतर हो सकते हैं, जब भारत का तीव्र आर्थिक विकास हो तथा उसकी सैनिक शक्ति भी बढ़े, क्योंकि अन्तर्राष्ट्रीय मंच पर कमजोर राष्ट्रों की आवाज सुनी नहीं जाती।[29]

चीन द्वारा अर्थव्यवस्था में खुलापन लाने के प्रयासों को अमेरिका व यूरोप द्वारा सराहा गया है। इसने विश्व-बाजार में एक सम्मानजनक हैसियत भी प्राप्त कर ली है। भारत व चीन के बीच भी व्यापार उल्लेखनीय रूप से बढ रहा है और इसका भविष्य भी काफी उज्जवल है। सार्वजनिक एवं निजी क्षेत्र, दोनों के ही कुछ भारतीय उद्यम चीन के साथ संयुक्त क्षेत्र में स्थापित किए जा रहे हैं। किन्तु चीन की सरकार के इस आश्वासन के बावजूद कि कम से कम अगले 100 वर्षों तक आर्थिक सुधारों से पीछे नहीं हटा जाएगा, चीन तथा पश्चिम के देशों के बीच आर्थिक अन्योन्य-क्रिया ने अभी जोर नहीं पकड़ा है। भारत तथा चीन, दोनों की अर्थव्यवस्थाओं की उच्च्व वृद्धि दर होने से महत्वाकांक्षी चीनी और भारतीय

---

[29] काशीराम शर्मा, ' व्यापारिक सम्बन्ध होंगे मजबूत', राष्ट्रीय सहारा (लखनऊ), 23 नवम्बर 2002

उद्यमियों में एक समान बाजारों पर कब्जे के लिए वस्तुत. होड़ लगी है। चीन अपनी 'कुनमिग पहल' तथा भारत 'मेकाग-गगा सहयोग' के तहत परस्पर आर्थिक और बुनियादी ढॉचे के विकास तथा ऊर्जा-सुरक्षा में मदद के जरिए दक्षिण-पूर्व एशियाई देशों के बाजारों तक पहुॅचने की कोशिश कर रहे हैं। दोनों के बीच म्यांमार, थाईलैण्ड, वियतनाम, मलेशिया और इण्डोनेशिया से नजदीकी व्यापारिक सम्बन्ध बनाने के लिए होड चल रही है। सस्ते और बड़े पैमाने वाले उपभोक्ता सामान के मामले में जहॉ चीन आगे है, वहीं सूचना प्रौद्योगिकी और सूचना आधारित उद्योगों में वह खुद को पिछड़ा पा रहा है।

इस प्रकार, भारत तथा चीन के बीच आर्थिक क्षेत्र में सहयोग की व्यापक सम्भावनाएँ हैं। आज आवश्यकता इस बात की है कि दोनों देश आर्थिक सम्बन्धो को और मजूबत करें तथा इस क्षेत्र में परिपक्वता का लाभ अन्य क्षेत्रों की समस्याओं के समाधान में उठायें। सांस्कृतिक सहयोग को तीव्र करके भी दोनों देशों द्वारा आपसी सम्बन्धों को प्रगाढ़ बनाया जा सकता है। भारत तथा चीन के बीच परिपक्व आर्थिक तथा सांस्कृतिक सहयोग न केवल इन देशों की जनता के हित में है बल्कि इस पूरे क्षेत्र की शांति एवं समृद्धि के लिए भी आवश्यक है।

अध्याय - 6

उपसंहार

प्राचीन काल से ही भारत एव चीन के मध्य सांस्कृतिक सम्बन्ध रहे है। दोनो देशो ने पडोसी की भूमिका का उत्कृष्ट रूप में निर्वहन भी किया है। व्यापारिक एव धार्मिक परिप्रेक्ष्य मे भी लम्बे अन्तराल से चीन एव भारत मे माधुर्यता कायम रही है। चीन में बौद्धधर्म का सर्वाधिक वर्चस्व रहा है और इस दृष्टि से भारत चीन का धर्मगुरू भी है। इतिहास इस बात का साक्षी है कि ह्वेनसांग, फाह्यान, इत्सिग जैसे कई चीनी यात्री अनवरत भारत मे बौद्ध धर्म की शिक्षा - प्राप्ति के लिए आते रहे हैं। कालान्तर में दोनो राष्ट्र विदेशी आधिपत्य मे आ गए और इसके फलस्वरूप सम्बन्धो मे दूरियां बढ़ती गई। सन् 1947 मे भारत के आजाद होने तथा 1948 में कोमिन्तांग सरकार के पतन के बाद 1949 में चीन के साम्यवादी देश के रूप में उभरने के पश्चात् पुनः दोनों देशों के मध्य अन्तर्सम्बन्धों की महत्ता का अनुभव किया गया। भारत की विदेश नीति में चीन के साथ शाति एवं मैत्रीपूर्ण सम्बन्धो की स्थापना का मूल लक्ष्य प्रारम्भ से ही रहा है। 1949 मे चीन में स्थापित साम्यवादी शासन को मान्यता देने वाले गैर-साम्यवादी देशों मे भारत का दूसरा स्थान था। चीन को संयुक्त राष्ट्र में प्रवेश दिलाने मे भी भारत ने पर्याप्त उत्साह का प्रदर्शन किया था। अमेरिका आदि विभिन्न देशो द्वारा आलोचना करने के बावजूद भी भारत चीन से मित्रता करने के सन्दर्भ में तनिक भी विचलित नहीं हुआ। लेकिन यह सब एकतरफा सिद्ध हुआ। चीन भारत की स्वतत्रता को अवास्तविक एवं गुट-निरपेक्षता की नीति को मात्र दिखावा मानता था। चीन ने भारत को 'पश्चिमी साम्राज्यवाद का पिछलग्गू' एवं नेहरू को 'बुर्जुआ', 'साम्राज्यवादियो का दास' एवं 'प्रतिक्रियावादी चरित्र वाला' बताया।

पचशील पर आधारित अपने घनिष्ठ सम्बन्धो के द्वारा 1950 के दशक मे भारत तथा चीन विश्व के समक्ष एक आदर्श प्रस्तुत कर रहे थे कि किस प्रकार अलग

अलग व्यवस्था को अपनाते हुए भी दो पडोसी देश भाई-चारे के साथ रह सकते है। लेकिन 1960 के दशक के आरम्भ मे भारत-चीन मित्रता की उष्मा वायुमण्डल मे तिरोहित हो गई थी। पहले दलाई लामा-प्रकरण, तदुपरान्त सीमा-विवाद ने ऐसी कटुता पैदा की कि 'हिन्दी-चीनी भाई-भाई' तथा 'शाति पूर्ण सहअस्तित्व' का स्थान 1962 के खुले सशस्त्र संघर्ष ने ले लिया। इस सघर्ष मे भारत की शर्मनाक पराजय हुई जिसकी पीड़ा आज भी भारतीय जनमानस को कचोटती है।

भारत-चीन युद्ध की कटुता, सीमा सम्बन्धी विवाद, चीन का भारत-विरोधी पाकिस्तान के साथ सम्बन्ध सुधारना एव उसे सैन्य तथा परमाणु तकनीकी सहायता देना, तिब्बत की स्वायत्तता का मुद्दा, आदि ऐसे महत्वपूर्ण प्रश्न रहे जिसके कारण भारत चीन सम्बन्ध लम्बे समय तक निलम्बित ही रहे। श्रीमती इन्दिरा गांधी के प्रधानमंत्रित्व काल में भारत व चीन के मध्य पुन राजदूत स्तर के सम्बन्धो की स्थापना हुई। 1979 में वाजपेयी द्वारा की गई चीन-यात्रा के 10 वर्ष पश्चात राजीव गॉधी द्वारा की गई चीन यात्रा से भारत चीन सम्बन्धो मे सुधार की नई शुरूआत हुई। इस यात्रा के दौरान वास्तविक नियत्रण रेखा पर शान्ति बनाए रखने तथा सीमा विवाद का समाधान खोजने के लिए एक संयुक्त कार्यकारी दल की स्थापना का निर्णय लिया गया। इसके बाद से दोनो देशो के बीच आपसी सम्पर्कों का क्रम नियमित रूप से बना रहा। भारत द्वारा मई 1998 मे किए गए परमाणु परीक्षणो के बाद भारत-चीन सम्बन्ध एक बार फिर तनाव पूर्ण हो गए थे किन्तु जसवत सिह की चीन यात्रा ने इसे पुनः सामान्य करने का सफल प्रयास किया।

भारत चीन युद्ध के बाद उपजी कटुता के बावजूद चीन के साथ भारत के सम्बन्धो मे धीरे-धीरे सन् 1988 से सुधार आना शुरू हुआ हैं। सातवे दशक के अन्त मे चीन और भारत के नेता वर्ग इससे सहमत हो गए कि चूँकि सीमा-विवाद जटिल है

तथा इसे आसानी से नहीं सुलझाया जा सकता, इसलिए भारत और चीन को विभिन्न क्षेत्रो मे सहयोग एव मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध बनाने चाहिए तथा ऐसा माहौल तैयार करना चाहिए, जिसमें पारस्परिक समझ-बूझ तथा सहानुभूति के आधार पर दोनो देश राजनीतिक बातचीत के माध्यम से सीमा विवाद सुलझाने मे सक्षम हो सके। दोनों देशो ने इस सम्बन्ध में हाल के वर्षों मे काफी सराहनीय कार्य भी किया है। सितम्बर, 1993 में दोनो देशों ने एक करारनामे पर हस्ताक्षर भी किए ताकि वास्तविक नियत्रण रेखा पर माहौल को स्थिर एव शांत बनाया जा सके। इस रेखा के दोनों ओर सेनाओं को पीछे हटाने तथा कमी लाने और दोनों देशों के बीच सम्बन्धो मे स्थिरता लाने की दृष्टि से परस्पर विश्वास उत्पन्न करने सम्बन्धी उपायों को लागू करने पर भी सहमति बन गई है। दोनों देश इस बात पर सहमत है कि यदि हालात स्थिर होते हैं तो भारत और चीन को सीमा विवाद सुलझाने का प्रयास करना चाहिए। ऐसा करते समय दोनो देशों को अपने अतीत के कठोर रूख तथा पूर्वाग्रहों को भी दूर रखने का प्रयास करना चाहिए।

यह मात्र सयोग नहीं कि हाल के वर्षों में भारत-चीन वास्तविक नियंत्रण रेखा पर कोई उत्तेजक घटना नहीं घटी है और दोनो देशो के सैनिक चैन की नींद सोने लगे है। सैन्य तैनाती में भी भारी कमी आई है और इससे भारतीय सेनाओ पर दबाव तथा खर्च भी काफी कम हुआ है। दोनों देश इस निश्चितता के माहौल में सीमा-विवाद पर शातिपूर्वक बातचीत कर सकते है। यह महत्त्वपूर्ण है कि वास्तविक नियंत्रण रेखा पर अंतिम सहमति हुए बिना ही भारत और चीन पूरी शांति कायम रख सके है। इस रेखा पर किसी तरह की गोलाबारी नहीं होती है, जबकि जम्मू-कश्मीर में 740 किलोमीटर लम्बी नियत्रण रेखा के स्पष्ट निर्धारण के बावजूद भारत और पाकिस्तान आपस मे टकराते रहे हैं। इसी परस्पर विश्वास के माहौल मे दोनों देश वास्तविक

नियत्रण रेखा का स्पष्ट निर्धारण करने की दिशा मे आगे बढ रहे है। एक बार जब इसका निर्धारण हो जाएगा तब निरंतर चौकसी की भी जरूरत नहीं रह जाएगी और सीमा-विवाद के बावजूद दोनो देश शांति से रह सकेंगे तथा विवाद के हल के लिए बातचीत जारी रख सकेगे। इस दौरान अन्य क्षेत्रों मे बेहतर सम्बन्ध कायम करने की कोशिश की जा सकती है और आर्थिक आदान-प्रदान को तेज किया जा सकता है। इससे जनता के स्तर पर सम्पर्क बढ़ेगा और दोनो देशों के बीच दोस्ती का माहौल बनेगा।

सीमा-विवाद के हल के प्रयासों को धीरे-धीरे आगे बढाते हुए भारत और चीन आर्थिक एवं व्यापारिक रिश्तों को अहमियत दे रहे है। दोनो देशो ने राजनीतिक मतभेदों को दूर करने के लिए भी ईमानदारी से विचार किया है और चीन ने स्पष्ट किया है कि वह भारत के लिए कभी खतरा नहीं बन सकता। भारतीय रक्षामत्री जार्ज फर्नांडीज ने मई, 1998 में परमाणु परीक्षणों से पूर्व चीन को भारत की सुरक्षा के लिए खतरा बताया था, जिसका चीन ने कड़ा प्रतिवाद करते हुए भारत से परमाणु अप्रसार-सधि पर दस्तखत करने की मॉग की थी। अब जार्ज फर्नांडीज को चीन यात्रा का निमंत्रण देकर चीन ने संदेश दिया है कि वह भारत के लिए खतरा नहीं बनना चाहता। भले ही चीनी मिसाइलों से पाकिस्तान लैस हो चुका हो, लेकिन यदि चीन शाति का आश्वासन देना चाहता हो, तो भारत को सतही तौर पर इसे मानते हुए चीन से स्पष्ट बात करनी चाहिए।

भारत-चीन सीमा-विवाद के हल के लिए अब तक प्रमुख रूप से तीन प्रस्ताव सामने आए है- कोलम्बो योजना, एक-मुश्त समझौता और क्षेत्र-दर-क्षेत्र निपटारा। कोलम्बो प्रस्ताव को मानने के लिए भारत तैयार था किन्तु चीन ने साफ इन्कार कर दिया। चीन सीमा विवाद के हल के लिए एकमुश्त-समझौते की पेशकश लम्बे समय से

करता रहा है। इसके तहत कहा गया है कि सीमा विवाद के हल के लिए चीन पूर्वी क्षेत्र मे भारत को कुछ छूट दे और भारत चीन को 'वास्तविक नियत्रण रेखा वाले इलाके' के आधार पर पश्चिमी क्षेत्र मे। इस एकमुश्त समझौते से भारत को न केवल अक्साई-चिन, बल्कि 5000 वर्ग मील वाले उस अतिरिक्त इलाके से भी हाथ धोना पडेगा, जिसे 1962 के युद्ध के दौरान चीन ने हडप लिया था। इसी कारण भारत इस प्रस्ताव को मानने से इन्कार करता रहा है। भारत क्षेत्र-दर-क्षेत्र के हिसाब से सीमा-विवाद का निपटारा चाहता है। इसके अन्तर्गत भारत चाहता है कि दोनों देश पूर्वी और मध्य क्षेत्रों के विवादास्पद इलाकों का निपटारा पहले करे तत्पश्चात पश्चिमी क्षेत्र के समाधान पर बातचीत की जाए। मगर चीन यह प्रस्ताव स्वीकार करने से इकार करता रहा है।

सीमा-विवाद के समाधान हेतु कोई भी सुझाव 'परस्पर लाभकारी' या 'परस्पर समझौतावादी' दृष्टिकोण पर आधारित होना चाहिए, एक तरफा त्याग पर नहीं। इसके लिए दोनो देशो को अपने यहॉ के जनमत का भी ध्यान रखना होगा। दोनो देशों को राजनीतिक दृष्टि से कुछ ठोस निर्णय लेने चाहिये जिससे सीमा-विवाद के हल में सुविधा हो सके। चीन द्वारा इस दिशा मे त्यागपूर्ण, तर्कसंगत व समझौतावादी दृष्टिकोण अपनाया जाना चाहिए।

भारत शुरू से ही चीन के आंतरिक मामले में अहस्तक्षेप की नीति पर चलता रहा है, विशेषकर तिब्बत के मुद्दे पर भारत हमेशा ही चुप रहा है। भारत ने तिब्बत को चीन का अभिन्न अग स्वीकार किया था और इस नीति में कोई बदलाव भी नहीं आया है। किन्तु चीन, हमेशा से इस मुद्दे पर भारत को शंका की दृष्टि से देखता रहा है। वह भारत पर चीन-विरोधी गतिविधियों को अपने यहॉ से संचालित किए जाने का आरोप अक्सर लगाता रहा है। जनवरी, 2000 मे 17वे करमापा लामा के भारत

आने की घटना ने एक बार पुन इस समस्या को उभार दिया था किन्तु दोनो ही सरकारो ने इस सकट से निपटने मे काफी सयम का परिचय दिया।

तिब्बत के साथ भारत का अटूट राजनैतिक और सास्कृतिक सम्बन्ध रहा है। अब जब दलाईलामा सघर्ष करते-करते टूटने से लगे है तो भारत को चाहिए कि उन्हे सहारा दे। चीन को नाराज किए बिना तिब्बत के मसले पर एक विश्व जनमत बनाने का प्रयास किया जाना चाहिये। तिब्बत मे मानवाधिकारो का हनन पूरे विश्व समुदाय के लिए चिन्ता का विषय है। यह आवश्यक नहीं कि भारत सरकार खुलकर दलाईलामा के पक्ष मे और चीन के विरोध मे वक्तव्य दे। भारत मे अनेक ऐसी गैर-सरकारी सस्थाएँ है जो तिब्बत की आजादी के लिए लड़ रही है। अप्रत्यक्ष रूप से भारत-सरकार इनकी सहायता कर सकती है। यही नहीं, ये संस्थाएँ पश्चिमी देशो की अन्य गैर-सरकारी संस्थाओं से सम्बन्ध बनाकर तिब्बत और दलाईलामा के पक्ष में एक प्रबल जनमत बना सकती है। भारत को यह तथ्य हमेशा ध्यान मे रखना चाहिए कि स्वतंत्र तिब्बत भारत के लिए सामरिक दृष्टि से अत्यन्त महत्वपूर्ण है।

आज परिस्थितियाँ बदल रही है। चीनी नेतृत्व मे अब कम्युनिस्ट कट्टरता लुप्त हो चुकी है। भारत की सैन्य दुर्बलता भी अब जाती रही है। अन्तर्राष्ट्रीय जनमत ही नही, चीन के अदर की जनतांत्रिक आवाजें भी अब दलाईलामा से सहानुभूति रखती है। इन हालातों मे तिब्बती-समस्या का ऐसा समाधान ढूँढना मुश्किल नहीं है जिसमें चीन, भारत और तिब्बत, तीनो के हितों की पूर्ति हो सके। इसके लिए भारत को अपने मौन से आगे बढने की आवश्यकता है।

चीन और पाकिस्तान के बीच बढते प्रतिरक्षा एवं परमाणु तकनीकी सहयोग का भारत-चीन सम्बन्धो पर शुरू से ही नकारात्मक असर पड़ता रहा है। चीन द्वारा दी गई मदद के कारण ही पाकिस्तान परमाणु हथियारों और प्रक्षेपास्त्रो की वर्तमान क्षमता

प्राप्त कर सका है। उत्तर कोरिया और अन्य देशो से भी पाकिस्तान को हथियारो की आपूर्ति हुई है, लेकिन पाकिस्तान की सामान्य सैनिक क्षमताओ और परमाणु हथियारो एव प्रक्षेपास्त्रों की क्षमता बढाने में चीन ने लगातार प्रमुख भूमिका अदा की है। परमाणु हथियारो और मध्यम दूरी तक मार करने वाले प्रक्षेपास्त्रों से लैस देश के रूप मे पाकिस्तान की वर्तमान सामरिक शक्ति चीन-पाकिस्तान के बीच प्रतिरक्षा सहयोग का ही परिणाम है। यही नहीं, पाकिस्तान को टैक, तोपखाना और सैनिक विमानो की आपूर्ति करने वालों में भी चीन प्रमुख है।

पाकिस्तान के साथ इस प्रतिरक्षा सहयोग को बनाए रखने के पीछे चीन का उद्देश्य भारत को सामरिक एव राजनीतिक दबाव मे रखना है। चीन न केवल पाकिस्तान बल्कि म्यांमार (बर्मा) के साथ भी सैनिक सहयोग बढा रहा है। हिन्द महासागर में म्यॉमार-समुद्र तट के पास चीनी नौसेना की बढती उपस्थिति से यह तथ्य स्पष्ट हो जाता है। वास्तव में चीन भारत के पडोसी देशों के साथ मेल-जोल अथवा सामरिक गठबन्धन करके दक्षिण एशिया मे भारत के प्रभाव को कम करने मे लगा है। भारत ने इस सम्बन्ध मे जब भी अपनी चिताओं से चीन को अवगत कराया, उसकी दलील यह रही कि उसने किसी भी अन्तर्राष्ट्रीय प्रतिबद्धता का उल्लंघन नहीं किया है और पाकिस्तान के साथ उसका प्रतिरक्षा सहयोग भारत सहित किसी भी देश के खिलाफ नहीं है। चीन के अनुसार यह पडोसी देशों के साथ शांतिपूर्ण-सहअस्तित्व की नीति का ही अग है, तथा वह भारत के साथ भी ऐसा ही प्रतिरक्षा सहयोग व्यावसायिक आधार पर विकसित करने का इच्छुक है।

चीन-पाक सम्बन्ध भारत के लिए चिता का विषय जरूर है, परन्तु ऐसा नहीं है जिसे दूर न किया जा सके। इसके लिए भारत को चीन की दक्षिण एशिया-नीति, विशेषकर पाकिस्तान सम्बन्धी नीति पर पैनी दृष्टि रखते हुए परिपक्व एव कुशल

राजनय का प्रदर्शन करना होगा। इस मसले पर खुलकर चीन से बात करना और उनका सतोषजनक उत्तर पाना ही दोनो देशो के बीच ठोस सम्बन्धो की नींव रखने मे सक्षम होगा। चीन को भी भारत की इस चिता का निराकरण करने के लिए पाकिस्तान से एक निश्चित दूरी बनानी होगी।

शीत-युद्ध की समाप्ति के बाद रूस और चीन के बीच बढता सहयोग भी भारत के लिए कम चुनौतीपूर्ण नहीं है। चीन अपने प्रयासों और रूस के साथ बडे पैमाने पर सहयोग के जरिए अपनी प्रतिरक्षा सेनाओं के विस्तार और आधुनिकीकरण के विशाल कार्यक्रम को कार्यान्वित कर रहा है। विश्व-व्यापार सगठन के कामकाज, संयुक्त राष्ट्र मे सुधार, शस्त्र-नियत्रण और परमाणु-अप्रसार, नाटो के विस्तार तथा शांति के लिए साझेदारी के नाम पर उज्बेकिस्तान जैसे प्रमुख गणराज्यो पर नाटो की सीमाएँ बढ़ाए जाने जैसे मुद्दो पर रूस और चीन के विचारो मे काफी समानता है। दोनों देश व्यापक राजनीतिक और आर्थिक सन्दर्भों मे अमेरिका पर निर्भर भी है और इस क्षेत्र मे बढ रहे अमेरिकी प्रभाव को सतुलित करने मे अपनी भूमिका पर बल भी दे रहे हैं। भारत को इस बात को ध्यान मे रखते हुए, कि रूस-चीन सहयोग, अमेरिका के खिलाफ कोई ऐसी सामरिक व्यवस्था नहीं है जिसमें उनका अमेरिका से टकराव होगा, अमेरिका, चीन तथा रूस से अलग-अलग सम्बन्ध विकसित करने का प्रयास करना चाहिए।

भारत-चीन सम्बन्ध, एक-दूसरे के अमेरिका के साथ सम्बन्धों से भी प्रभावित होते है। भारत द्वारा चीन-पाक सैनिक सहयोग तथा चीन के अन्य दक्षिण एशियाई देशो के साथ बढ़ते सैनिक सहयोग के आधार पर अमेरिका से सहयोग की अपेक्षा की जाती रही है। भारत तथा अमेरिका के बीच बढते किसी भी सम्बन्ध को चीन अपने लिए खतरनाक मानता है। वह यह नहीं चाहता कि इस क्षेत्र में अमेरिका का प्रभाव

बढे। अमेरिका के इस क्षेत्र मे बढते प्रभाव को कम करने के लिए ही चीन अपने सभी पड़ोसियो से मधुर सम्बन्ध स्थापित करने की नीति पर चल रहा है। भारत के लिए यह आवश्यक होगा कि वह बदलते अन्तर्राष्ट्रीय परिवेश में चीन तथा अमेरिका दोनो से संतुलित सम्बन्ध स्थापित करे। अमेरिका भी चीन पर सामरिक दबाव बनाने के लिए चीन के पडोसी देशो से सामरिक सहयोग विकसित करना चाहता है। वह मानता है कि चीन के खिलाफ चीन के पड़ोस मे एक प्रतिद्वन्द्वी शक्तिशाली देश का खडा होना अमेरिका के हित में होगा। इसीलिए अमेरिका भारत की परमाणु नीति की उपेक्षा करते हुए अब भारत के साथ दोस्ती विकसित करने की आकाक्षा कर रहा है। यह ठीक उसी तरह है जिस तरह अमेरिका ने शीतयुद्ध के दिनों मे भारत को सोवियत खेमे का मानते हुए पाकिस्तान के परमाणु शक्ति सम्पन्न देश बनने के प्रयास को नजरअन्दाज किया था। चूँकि भारत, दक्षिण-कोरिया या जापान जैसा रिश्ता अमेरिका के साथ विकसित नहीं कर सकता है, इसलिए भारत का अपनी सुरक्षा के लिए पूर्णत अमेरिका पर निर्भर होना उचित नहीं होगा। निश्चय ही भारत और अमेरिका के बीच सामरिक सहयोग भारत के लिए सामरिक दृष्टि से काफी अनुकूल होगा और यह भारत के लिए काफी लाभदायक भी होगा लेकिन भारत को अपनी सुरक्षा-व्यवस्था मजबूत करने के लिए अपनी ही तैयारी करनी होगी। भारत के खिलाफ पाकिस्तान और चीन की संयुक्त घेरेबन्दी को देखते हुए भारत को अमेरिका के साथ सामरिक सम्बन्ध मधुर तो करने ही चाहिए लेकिन इसके साथ ही उसे अपनी सुरक्षा तैयारियो के प्रति भी हमेशा सजग एव सतर्क रहना चाहिए।

एशिया की निर्विवाद शक्ति बनने के लिए चीन ने जो दीर्घकालिक रणनीति अपनाई थी, वह भारत द्वारा परमाणु हथियार और मध्यम दूरी तक प्रहार करने वाले प्रक्षेपास्त्र बना लेने के कारण विफल हो गई। लेकिन चीन और भारत दोनो प्रच्छन्न

परमाणु प्रतियोगिता तथा अविश्वास के बावजूद ऐसे सतुलित सम्बन्ध बनाने के इच्छुक रहे जिसके आधार पर न्यूनतम सामान्य सम्बन्ध विकसित किये जा सके ताकि दोनो देश अपने लिए अधिक महत्वपूर्ण आतरिक, वाह्य और सुरक्षा सम्बन्धी मामलो पर ध्यान केन्द्रित कर सकें।

चीन की पहली प्राथमिकता प्रौद्योगिकी की उन्नति, बढती आबादी के अनुरूप खाद्य उत्पादन में वृद्धि तथा आधारभूत ढॉचे का विकास करते हुए आर्थिक विकास करने की है। दूसरे, चीन को क्षेत्रीय एवं भूमडलीय सामरिक चुनौतियो का सामना करने के लिए अपनी प्रतिरक्षा क्षमता का आधुनिकीकरण भी करना है। तीसरे, चीन को आतरिक सामंजस्य और स्थिरता के प्रति किसी भी खतरे का सामना और उसका समाधान भी करना है। चौथे, चीन को आर्थिक दृष्टि से आधुनिक बनाने के लिए ऊर्जा की सुरक्षा तथा वित्तीय एवं आर्थिक उपादानो को भी सुनिश्चित करना है। पॉचवे, शीतयुद्ध के बाद की परिस्थितियो में विश्व के शक्ति केन्द्रों - अमेरिका, यूरोपीय संघ, रूस, और जापान के साथ सामरिक एव राजनीतिक समीकरण स्थापित करने के साथ ही ताइवान और दक्षिण चीन सागर में चीन के क्षेत्रीय दावों के परिप्रेक्ष्य में चीन के सुरक्षा सम्बन्धी एवं आर्थिक हितों के सन्दर्भ मे जापान, आस्ट्रेलिया और आसियान देशो के साथ सम्पर्क कायम करना भी चीन की प्राथमिकता है। इसके अतिरिक्त वह दक्षिण-एशियाई और मध्य एशियाई देशो के साथ सम्बन्धों का इस ढ़ंग से विकास करना चाहता है जिससे सामरिक एवं राजनीतिक वातावरण की स्थिरता सुनिश्चित की जा सके और चीन अपने अधिक व्यापक और अधिक ऊँची प्राथमिकता वाले लक्ष्यों पर अपना ध्यान केन्द्रित कर सके। इस सन्दर्भ में चीन के लिए भारत का विशेष महत्व है, क्योंकि वह तिब्बत की समस्या में उलझा हुआ है और चीन ऐसी धार्मिक कट्टरवादी ताकतो से भी चिन्तित है जो उसकी एकता को नुकसान पहॅुचा सकती है।

दूसरी ओर भारत भी आर्थिक विकास, प्रौद्योगिकी के आधुनिकीकरण और बुनियादी ढॉचे के निर्माण पर अपना ध्यान केन्द्रित करना चाहता है। पाकिस्तान की ओर से खतरे तथा चीन की परमाणु एव प्रक्षेपास्त्र क्षमताओ के बारे मे आशकाओ को देखते हुए भारत भी अपनी सुरक्षा क्षमताओ के आधुनिकीकरण का इच्छुक है। भारत के सामने भी आंतरिक सामजस्य और स्थिरता को बनाए रखने की चुनौती चीन से अधिक जटिल है, क्योकि वह अपना लक्ष्य अधिनायकवादी तरीके के बजाए लोकतात्रिक तरीके से हासिल करना चाहता है। भारत भी अपनी अर्थव्यवस्था को मजबूत बनाने के लिए ऊर्जा सुरक्षा और वित्तीय उपादानो को बढाने में लगा है। विश्व के प्रमुख शक्ति केन्द्रों से नए समीकरण स्थापित करने मे भारत भी सक्रिय है। चीन को जहॉ ताइवान, तिब्बत और सिक्यांग की चिंता है, वहीं भारत जम्मू-कश्मीर और उत्तर-पूर्वी क्षेत्र मे अलगाववादी हिंसा एवं आतंकवाद को लेकर चितित है।

यद्यपि दोनों देशों में सहयोग स्थापित करने के पर्याप्त आधार मौजूद है तथापि चीन के साथ दीर्घकालिक, स्थिर और सहयोगपूर्ण रिश्ता कायम करने का काम भारत के लिए बहुत जटिल है जिसमे समय और धैर्य दोनों की जरूरत होगी। इसमें सफलता इस बात पर निर्भर करेगी कि आर्थिक, प्रौद्योगिकीय और सैनिक क्षेत्रों में मजबूत बनने के लिए चीन के इरादों और नीतियों के प्रति भारत कितना सतर्क रह पाता है। भारत के लिए चीन के प्रति विरोध या टकराव के बजाए एक नपी-तुली और व्यावहारिक नीति अपनाना अधिक वांछनीय होगा।

दक्षिण एशिया के लोगों के विकास तथा इस क्षेत्र मे स्थिरता लाने के लिए यह आवश्यक है कि भारत और चीन के बीच सामान्य सम्बन्ध हों। दोनों देशों को अतीत की यादो और आशकाओं पर आधारित कटुता या विरोध को छोड देना चाहिए। भारत और चीन के बीच व्यावहारिक, राजनीतिक और सामरिक संतुलन तभी आ सकता है,

जब दोनो देश प्रत्येक क्षेत्र मे समुचित स्थिरता लाने की दृष्टि से पारस्परिक सम्बन्ध स्थापित करें। दक्षिण एशिया के अन्य देश भी भारत और चीन को सामान्य द्विपक्षीय सम्बन्धो को विकसित करने और इन सम्बन्धो को समर्थन देने के लिए प्रोत्साहित करके इस प्रक्रिया मे अपना योगदान दे सकते हैं। चूकि नेपाल, भूटान और म्यॉमार भारत और चीन की सीमाओं पर स्थित है, इसलिए ये देश इस प्रक्रिया में विशेष सकारात्मक भूमिका निभा सकते हैं। भारत और चीन के बीच लम्बे समय तक वैमनस्य से निश्चित रूप से एशियाई शांति और स्थिरता पर नकारात्मक प्रभाव पडेगा।

देंग-शियाओ-पिंग के नेतृत्व में चीन में राजनीतिक अनुशासन और सुसंगति के साथ आर्थिक उदारीकरण की जो प्रक्रिया प्रारम्भ हुई, वह अभी भी जारी है। इसके परिणामस्वरूप चीन सर्वाधिक महत्वपूर्ण बाजार तथा उदारीकरण की प्रक्रिया मे एशिया का प्रमुख प्रतिभागी बनकर उभरा है। इन्हीं कारणों से अमेरिका जैसे देश द्वारा भी चीन के प्रति अपनी नीति में परिवर्तन करते हुए उसके साथ बेहतर सम्बन्ध स्थापित करने पर बल दिया जाने लगा है। यद्यपि चीन की राजनीतिक व्यवस्था का लोकतात्रिक पुनर्गठन निष्प्रभावी हो गया फिर भी चीन में आतरिक स्थिरता, राजनीतिक सामजस्य और देश के भीतर अनुशासन आया है। अन्तर्राष्ट्रीय समुदाय पर इन घटनाओ का सकारात्मक प्रभाव पड़ा तथा यह समझा जाने लगा है कि चीन राजनीतिक दृष्टि से स्थिर तथा महत्वपूर्ण आर्थिक प्रतिभागी देश है, इसके पास प्रभावी प्रौद्योगिकीय और सैन्य शक्ति है तथा इसे प्रमुख सत्ता केन्द्र माना जाना चाहिए, जिसका अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धो में विशेष स्थान है।

पिछले दशक के दौरान चीन की वार्षिक औसत वृद्धि दर 9 से 11 प्रतिशत के बीच रही है। इस दौरान चीन ने मुद्रास्फीति और अर्थ व्यवस्था में मदी के दबावों पर भी नियत्रण रखा। समग्र रूप मे चीन मे आर्थिक निष्पादन की गति विकासशील देशों

मे सर्वाधिक सक्षम और उत्पादनशील मानी जाती है। परमाणु अस्त्रो और मिसाइल क्षमता की दृष्टि से चीन एक बडी ताकत है। परन्तु चीन के विभिन्न क्षेत्रों के बीच विकास और समृद्धि के स्तर मे काफी विभिन्नता भी है। चीन के विभिन्न क्षेत्रो मे समृद्धि और विकास के स्तरों पर विद्यमान विषमता से वहॉ राजनीतिक तनाव विद्यमान है, जो चीन के नेताओं द्वारा देश मे स्थिरता लाने की दिशा में प्रमुख और अत्यन्त महत्वपूर्ण चुनौती है। चीन के भीतर अन्दर ही अन्दर जातिगत- भाषाई, धार्मिक और सांस्कृतिक विघटनकारी ताकतें उभर रही है, जिनका चीन की एकता और अखडता पर प्रभाव पड़ना निश्चित है। चीन को मुस्लिम आबादी, तिब्बती तथा जिन-जियाग प्रान्त मे अल्पसंख्यक जाति वर्ग तथा उत्तर-पश्चिमी चीन में अलगाववादी प्रवृत्तियो का भी सामना करना हैं। इसके अतिरिक्त चीन में भ्रष्टाचार, व्यापक स्तर पर बेरोजगारी तथा आने वाले दिनों में खाद्यान्न की कमी की समस्या भी गम्भीर रूप धारण करने वाली है।

चीन का यह आकलन है कि अपने चारो ओर स्थिरता तथा शांति का माहौल बनाए रखना अति आवश्यक है, ताकि आंतरिक स्थिरता और विकास सम्बन्धी प्रमुख लक्ष्य प्राप्त किये जा सके। इसीलिए चीन अपने पडोसी देशो तथा सयुक्त राज्य अमेरिका, रूस, पश्चिमी यूरोप और जापान जैसे विश्व के अन्य महत्वपूर्ण देशो के साथ व्यावहारिक और सहयोगपूर्ण सम्बन्ध बनाना चाहता है। चीन यह मानता है कि सर्वोच्च स्थान प्राप्त करके विश्व की बड़ी ताकत के रूप मे उभरना ही उसकी नियति है। चीन सयुक्त राष्ट्र मे सुधार के साथ ही परमाणु-अप्रसार तथा जनसंहारक अस्त्रों के उन्मूलन का भी हिमायती है।

भारत तथा चीन दोनो ही एक-ध्रुवीय विश्व-व्यवस्था के विरोधी है। शीत-युद्ध की समाप्ति तथा सोवियत संघ के विघटन ने अमेरिका को विश्व की एकमात्र महाशक्ति

बना दिया है। ऐसे मे भारत तथा चीन, दोनो को मिलकर बहु-ध्रुवीय विश्व-व्यवस्था की स्थापना के लिए कार्य करना चाहिए। इस सम्बन्ध मे रूसी प्रधानमत्री प्रिमाकोव द्वारा प्रस्तावित भारत-चीन व रूस के सामरिक त्रिकोण की सकल्पना को भी आजमाए जाने की आवश्यकता है। इन तीनों देशों के एक साथ एक मच पर आने से अमेरिका पर मनोवैज्ञानिक दबाव बनने का मार्ग प्रशस्त होगा, जिससे एशियाई महाद्वीप पर कोई भी कार्रवाई करते समय वह इस त्रिकोण के 'रूख' को नजर अन्दाज नहीं कर पायेगा।

आतकवाद की समस्या भी दोनों देशो में भयावह होती जा रही है। भारत तो लम्बे समय से कश्मीर मे पाकिस्तान प्रायोजित आतकवाद का सामना कर रहा है। चीन ने भी हर प्रकार के आतंकवाद की निन्दा की है। भारत को इस सम्बन्ध में चीन के साथ व्यापक सहयोग की सम्भावनाओं को तलाशना चाहिए जिससे पाकिस्तान पर आतंकवाद को समाप्त करने के लिए दबाव बनाया जा सके।

भारत तथा पाकिस्तान के बीच कश्मीर के मुद्दे पर भी चीन से कूटनीतिक मदद ली जा सकती है। हालॉकि चीन ने इसे भारत और पाकिस्तान के बीच का द्विपक्षीय मामला बताते हुए आपसी बातचीत से ही इसका समाधान करने की इच्छा जाहिर की है। भारत-पाकिस्तान के बीच हाल ही में हुए कारगिल सघर्ष मे चीन का रवैय्या पाकिस्तान-समर्थक नहीं था। इसे भारत-चीन सम्बन्धो के विकास हेतु एक शुभ-संकेत माना जाना चाहिए। इसके साथ ही दोनो देशों के अनेक अन्तर्राष्ट्रीय मुद्दो पर भी समान विचार है। दोनो ही देश चाहते हैं कि नई अन्तर्राष्ट्रीय आर्थिक एवं राजनीतिक व्यवस्था का गठन पारस्परिक समानता एवं लाभ के सिद्धान्तों के आधार पर होना चाहिए। उत्तर व दक्षिण के देशों के बीच सहयोग को भी और बढाया जाना चाहिए।

11 सितम्बर 2001 को अमेरिका पर हुए आतकवादी हमले ने दक्षिण एशिया मे अमेरिकी उपस्थिति को बढ़ा दिया है। इससे चीन-पाकिस्तान धुरी भी कमजोर हुई

है। पाकिस्तान अब एक बार फिर अमेरिका की ओर उन्मुख हो गया है। चीन अब चाहे भी तो दक्षिण एशिया में अमेरिका की उपस्थिति को नकार नहीं सकता। ऐसे मे चीन द्वारा भारत के साथ सम्बन्ध मजबूत करने को प्राथमिकता देना अनायास नहीं है। भारत को चाहिए कि इन परिस्थितियो का लाभ उठाकर चीन के साथ विवादो को सुलझाने का प्रयास करे।

भारत को दक्षिण-पूर्व तथा पूर्वी एशिया के देशो के साथ भी सहयोग विकसित करने पर ध्यान देना चाहिए। जापान विश्व का सबसे बडा सहायता करने वाला देश है। उसके पास लागत के लिए सबसे अधिक पूॅजी है। उसके साथ हमारा सम्बन्ध न तो औपनिवेशिक रहा है, न सीमा के झगड़े और न ही आर्थिक विवाद। चीन को बॉधे रखने की जापानी रणनीति हमारे हितो से भी मेल खाती है। सिगापुर दक्षिण-पूर्वी एशिया की आर्थिक शक्ति का स्रोत है। उसने यह साबित कर दिया है कि कैसे आधुनिक तकनीक के प्रयोग से एक छोटा सा देश एक आर्थिक महाशक्ति बन सकता है।

भारत तथा चीन के बीच आर्थिक एवं व्यापारिक सहयोग की अपार संभावनाऍ हैं। दोनों देशो के बीच बढते आर्थिक सहयोग से न केवल दोनो देशों के लोगो की खुशहाली सुनिश्चित होगी वरन् इस पूरे क्षेत्र का विकास सम्भव हो सकेगा। आर्थिक एवं सांस्कृतिक सहयोग के कारण दोनों देशों की जनता एक दूसरे के विचारों को अच्छी तरह समझ सकेगी। जिससे एक ऐसा माहौल तैयार होगा जो दोनो देशो के बीच सीमा सम्बन्धी विवाद के समाधान में सहायक होगा। यद्यपि हाल के वर्षों में भारत तथा चीन के बीच इस दिशा मे महत्वपूर्ण प्रगति हुई है तथापि इसे और तेज किए जाने की आवश्यकता है। दोनो देशो के बीच व्यापार की मात्रा अभी भी इनकी क्षमता से काफी

कम है। दोनो ही देशो को एक दूसरे के देश में सयुक्त उद्यम स्थापित करने हेतु प्रयासो को और तेज करना चाहिए।

चीन मे हू-जिन्ताओ के नये नेतृत्व ने भी अपने सभी पडोसी देशो के साथ सम्बन्ध सुधारने की नीति को जारी रखने का सकेत दिया है। यह आशा की जानी चाहिए कि आने वाले समय मे दोनो देश आर्थिक एव सास्कृतिक सम्बन्धो को विकसित करते हुए सीमा-विवाद का कोई तर्क-सगत तथा परस्पर स्वीकार्य समाधान ढूँढने मे सफल होगे। इसी में इन दोनों देशों का तथा इस समूचे क्षेत्र का हित निहित है और यही समय की मॉग भी है।

सन्दर्भ - ग्रन्थ सूची

पुस्तकें :

- ए0 अप्पादोराई (सम्पादित); **सेलेक्ट डाक्यूमेन्ट्स आन इंडियाज फारेन पालिसी एंड रिलेशंस (1947-1972),** (आक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, नई दिल्ली, 1985)
- ए0 अप्पादोराई; **एसेज इन इंडियन पालिटिक्स ऐंड फारेन पालिसीज,** विकास पब्लिसिंग हाउस, नई दिल्ली
- ए0 लैम्ब, **द चाइना-इंडिया बार्डर,** आक्सफोर्ड, 1964
- अमिताभ मट्टू (सम्पादित) , **इंडियाज न्यूक्लियर डेटरेंट : पोखरन II ऐंड बियांड,** नई दिल्ली, 1999
- ए0 के दामोदरन ऐंड यू0एस0 बाजपेयी (सम्पादित), **इंडियन फारेन पालिसी : द इन्दिरा गाँधी ईयर्स,** नई दिल्ली, 1990
- बी0 एल0 शर्मा, **पाक-चाइना एक्सिस,** बंगलौर, कानपुर, लंदन
- बिपिन चन्द्र, मृदुला मुखर्जी, आदित्य मुखर्जी, **आजादी के बाद का भारत (1947-2000),** हिन्दी माध्यम कार्यान्वयन निदेशालय, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली, 2002।
- बी0एल0 फडिया, **अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति,** साहित्य भवन पब्लिकेशन्स, आगरा, 1998
- बी0एन0 मलिक, **माई ईयर्स विथ नेहरू : द चाइनीज बिट्रेयल** (एलाइड पब्लिशर्स, बम्बई, 1971)
- भवानी सेनगुप्ता, **राजीव गाँधी : ए पोलिटिकल स्टडी,** नई दिल्ली, 1989

- भीमसन्धु, **अनरिजाल्व्ड कानफ्लिक्ट : चाइना ऐंड इंडिया,** नई दिल्ली, 1988
- बी0एम0 कौल; **अनटोल्ड स्टोरी,** बम्बई, 1971
- बी0आर0नन्दा (सम्पादित), **इंडियन फारेन पालिसी : द नेहरू ईयर्स,** (रेडिएन्ट पब्लिशर्स, नई दिल्ली, 1990)
- चार्ल्स एच0 हेमसठ तथा सुरजीत मानसिह, **ए डिप्लोमेटिक हिस्ट्री आफ माडर्न इंडिया,** (एलाएड पब्लिशर्स, बम्बई, 1971)
- डी0 आर0 मनकेकर, **द गिल्टी मेन ऑफ 1962** (तुलसी शाह इन्टरप्राइजेज, बम्बई, 1968)
- दुर्गादास (सम्पादित); **सरदार बल्लभ भाई पटेल करेसपाण्डेंस** (नवजीवन, अहमदाबाद, 1971)
- डी0 एन0 वर्मा; **अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध** (ज्ञानदा प्रकाशन (पी0ऐंड डी0), नई दिल्ली, 2000)
- दावा नोर्बू; **रेड स्टार ओवर तिब्बत** (कोलिन्स, लन्दन, 1974)
- दावा नोर्बू, **कल्चर ऐंड द पालिटिक्स आफ थर्ड वर्ल्ड नेशनलिज्म** (कटलेज, लदन/न्यूयार्क, 1992)
- एफ0 एस0 एजाजुद्दीन, **फ्रांम ए हेड थ्रू ए हेड - द सीक्रेट चैनेल बिट्वीन यू0एस0ए0 ऐंड चाइना थ्रू पाकिस्तान,** आक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 2000
- जी0सी0 केण्डाडमथ, जे0बी0 कृपालानी; (गगा-कावेरी पब्लिसिंग हाउस, वाराणसी, 1992)
- जी0डब्ल्यू0चौधरी, **चाइना इन वर्ल्ड अफेयर्स,** कोलोरेडो, 1982

- गॉधी जी राय; **अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति** (भारती भवन पब्लिशर्स ऐड डिस्ट्रीब्यूटर्स, पटना, 1993)
- हिरण्यमय कार्लेकर; **इंडिपेंडेंट इंडिया : द फर्स्ट फिफ्टी ईयर्स,** दिल्ली, 1998
- हरीश कपूर ; **इण्डियाज फारेन पालिसी 1947-1992,** नई दिल्ली, 1994
- एच0ई0रिचर्डन; **तिब्बत ऐंड इट्स हिस्ट्री** (**नेशनल कमीटी फार तिब्बत ऐंड पीस इन साउथ एशिया,** नई दिल्ली, 1991)
- इदर मल्होत्रा; **इंदिरा गाँधीः ए पर्सनल ऐंड पोलिटिकल बायोग्राफी,** लंदन 1989
- जसजीत सिंह (सम्पादित); **न्यूक्लियर इंडिया,** नई दिल्ली, 1998
- जे0 बन्दोपाध्याय, **द मेकिंग आफ इंडियाज फारेन पालिसी,** नई दिल्ली, 1987
- जे0एन0दीक्षित; **भारतीय विदेश नीति,** (प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली, 1999)
- जे0एन0दीक्षित, **माई साउथ ब्लाक ईयर्सः मेमोरीज आफ ए फारेन सेक्रेटरी,** नई दिल्ली, 1996
- जे0एन0दीक्षित; **एक्रास बार्डर्सः फिफ्टी ईयर्स आफ इंडियाज फारेन पालिसी,** नई दिल्ली, 1998
- जान रोलेण्डः **ए हिस्ट्री आफ साइनो-इंडियन रिलेशंस,** (एलाएड पब्लिशर्स, बम्बई, 1971)
- जे0पी0 मित्तर, **बिट्रेयल आफ तिब्बत** (एलाएड पब्लिशर्स, बम्बई, 1964)
- जवाहर लाल नेहरू, **इंडिया ऐंड द वर्ल्ड** (एलेन ऐड उनविन, लंदन, 1936)
- जवाहर लाल नेहरू, **इंडियाज फारेन पालिसी : 1946-61,** (नई दिल्ली 1961)

- करूणाकर गुप्ता, **स्पाटलाईट आन साइनो-इंडियन रिलेशंस,** (न्यू बुक सेन्टर, कलकत्ता, 1982)
- कृष्ण चन्द्र श्रीवास्तव, **प्राचीन भारत का इतिहास भाग-2,** (लोक भारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 1992)
- के0एम0 पणिक्कर; **इंडिया ऐंड चाइना : ए स्टडी आफ कल्चरल रिलेशंस,** बम्बई, 1957
- कृष्ण डी0 माथुर एंड पी0एम0कामथ; **कन्डक्ट आफ इंडियाज फारेन पालिसी,** नई दिल्ली, 1996
- के0पी0 मिश्रा (सम्पादित); **जनताज फारेन पालिसी,** (विकास पब्लिकेशन हाउस, नई दिल्ली, 1979)
- के0पी0 मिश्रा (सम्पादित); **फारेन पालिसी आफ इंडिया : ए बुक ऑफ रीडिंग्स** (थामसन प्रेस, नई दिल्ली, 1977)
- ललित मानसिंह एवं अन्य (सम्पादक मण्डल) ; **इंडियन फारेन पालिसी : एजेन्डा फार द 21स्ट सेन्चुरी,** (कोनार्क पब्लिशर्स प्रा0 लि0, नई दिल्ली, 1998)
- लार्न जे0 काविक, **इंडियाज क्वेस्ट फार सिक्योरिटी : डिफेन्स पालिटिक्स, 1947-1965,** (यूनिवर्सिटी आफ कैलीफोर्निया प्रेस, बर्कले, 1967)
- एम0के0 रसगोत्रा ऐड वी0 डी0 चोपडा (सम्पादित) ; **इंडियाज रिलेशंस विद रशिया ऐंड चाइना : ए न्यू फेज,** नई दिल्ली, 1997
- माइकेल ब्रेशर, **इंडिया ऐंड वर्ल्ड पालिटिक्स : कृष्णा मेननूस व्यू आफ द वर्ल्ड,** (प्रेजर, न्यूयार्क, 1968)
- मिन्हास मर्चेन्ट, **राजीव गाँधी : ए पोलिटिकल स्टडी,** नई दिल्ली, 1989

- एम0 एस0 राजन, **इंडिया इन वर्ल्ड अफेयर्स,** न्यूयार्क, 1964
- एम0 एस0 राजन ऐंड ए0 अप्पादोरोई, **इंडियाज फारेन पालिसी ऐंड रिलेशंस,** नई दिल्ली, 1985
- एम0 जी0 गुप्ता, **राजीव गाँधीज फारेन पालिसी : ए स्टडी इन कन्टीन्यूटी ऐंड चेन्ज,** (एम0 जी0 पब्लिशर्स, आगरा, 1987)
- नेविले मैक्सवेल, **इंडियाज चाइनावार,** (जायको पब्लिशिंग हाउस, बम्बई, 1970)
- प्रकाश चन्द्रा, **इंटरनेशनल रिलेशंस,** विकास पब्लिशिग हाउस प्रा0 लि0, नई दिल्ली, 1983
- पुष्पेश पत एवं श्रीपाल जैन; **भारतीय विदेश नीति : नए आयाम,** मेरठ, 1997
- पुखराज जैन, बी0 एल0 फाडिया, **भारतीय शासन एवं राजनीति,** (साहित्य भवन पब्लिकेशंस, आगरा, 2002)
- प्रबोध चन्द्र बागची, **इंडिया ऐंड चाइना,** न्यूयार्क 1951
- पी0 सी0 चक्रवर्ती, **इंडियाज चाइना पालिसी,** बुलुमिगटन, 1962
- पी0वी0 नरसिम्हाराव, **सेलेक्टेड स्पीचेज, वाल्यूम-1,** नई दिल्ली, 1991-92
- पी0वी0 नरसिम्हाराव, **सेलेक्टेड स्पीचेज, वाल्यूम-III,** नई दिल्ली, 1993-94
- आर0 एस0 यादव, **भारत की विदेश नीति : एक विश्लेषण,** (किताब महल, इलाहाबाद, 1999)
- आर0 एस0 यादव (सम्पादित) ; **इंडियाज फारेन पालिसी टुअर्ड्स 2000 ए0 डी0,** नई दिल्ली, 1993

- राय सी0 मैक्रीडीस (सम्पादित), **फारेन पालिसी इन वर्ल्ड अफेयर्स,** नई दिल्ली, 1979
- राम मनोहर लोहिया; **इंडिया, चाइना ऐंड नार्दर्न फ्रंटियर्स,** (नवहिन्द, हैदराबाद, 1963)
- रमेश चन्द्र मजूमदार, **क्लैसिकल एज,** बम्बई, 1962
- रमेश ठाकुर, द **पालिटिक्स ऐंड इकोनामिक्स ऑफ इंडियाज फारेन पालिसी,** नई दिल्ली, 1994
- सतीश कुमार (सम्पादित), **ईयर बुक आन इंडियाज फारेन पालिसी, 1985-86,** नई दिल्ली, 1988
- सतीश कुमार (सम्पादित); **ईयर बुक आन इंडियाज फारेन पालिसी, 1990-91,** नई दिल्ली, 1991
- सर्वपल्ली गोपाल, **जवाहर लाल नेहरू : ए बायोग्राफी, वाल्यूम** 2 (आक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, नई दिल्ली, 1979)
- सुबिमल दत्त, **विद नेहरू इन द फारेन आफिस,** कलकत्ता, 1977
- सुरजीत मानसिंह, **इंडियाज सर्च फार पावर : इंदिरा गाँधीज फारेन पालिसी (1966-1982),** (सेज पब्लिकेशस, नई दिल्ली, 1984)
- टी0 पालोज तथा गुरूप्रीत कौर (सम्पादित), **इंडिया ऐंड द वर्ल्ड अफेयर्स,** नई दिल्ली, 1995
- उदय नारायण राय, **गुप्त सम्राट और उनका काल,** इला0, 1971
- उदय नारायण राय, **विश्व सभ्यता का इतिहास,** लोक भारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 1992

- वी0 एन0 खन्ना, लिपाक्षी अरोडा, **भारत की विदेश नीति,** विकास पब्लिशिंग हाउस प्रा0 लि0, नई दिल्ली, 2000
- वी0 एन0 खन्ना; **फारेन पालिसी आफ इंडिया,** विकास पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, 1997
- वी0 पी0 दत्त; **इंडियाज फारेन पालिसी,** (विकास पब्लिशिग हाउस, नई दिल्ली, 1997)
- वी0 पी0 दत्त; **इंडिया फारेन पालिसी इन ए चेंजिंग वर्ल्ड,** नई दिल्ली, 1999
- वी0 पी0 दत्त; **इंडिया ऐंड द वर्ल्ड,** नई दिल्ली, 1990
- वन्दना अस्थाना; **इंडियाज फारेन पालिसी ऐंड सबकन्टीनेन्टल पालिटिक्स,** कनिष्क पब्लिकेशंस, नई दिल्ली
- डब्ल्यू. मारग्रेट फिशर, ई0 लियोरोज, ए. राबर्ट हट्टेनबैक; **ए हिमालयन बैटलग्राउन्ट : साइनो-इंडियन राइवल्री इन लद्दाख,** (प्रेजर, न्यूयार्क, 1963)

<u>रिपोर्ट्स :</u>

- ह्वाइट पेपर II (मिनिस्ट्री आफ एक्सटर्नल अफेयर्स, नई दिल्ली, नवम्बर (1959)
- ह्वाइट पेपर II (मिनिस्ट्री आफ एक्सटर्नल अफेयर्स, नई दिल्ली, (नवम्बर 1959-मार्च 1960)
- ह्वाइट पेपर II (मिनिस्ट्री आफ एक्सटर्नल अफेयर्स, नई दिल्ली, नवम्बर 1960)
- ह्वाइट पेपर II (मिनिस्ट्री आफ एक्सटर्नल अफेयर्स, नई दिल्ली, (दिसम्बर, 1961-अगस्त1962)
- एनुअल रिपोर्ट, मिनिस्ट्री ऑफ एक्सटर्नल अफेयर्स, नई दिल्ली, 1991-92

- एनुअल रिपोर्ट, मिनिस्ट्री ऑफ एक्सटर्नल अफेयर्स, नई दिल्ली, 1992-93
- एनुअल रिपोर्ट, मिनिस्ट्री ऑफ एक्सटर्नल अफेयर्स, नई दिल्ली, 1993-94
- एनुअल रिपोर्ट, मिनिस्ट्री ऑफ एक्सटर्नल अफेयर्स, नई दिल्ली, 1994-95
- एनुअल रिपोर्ट, मिनिस्ट्री ऑफ एक्सटर्नल अफेयर्स, नई दिल्ली, 1995-96
- एनुअल रिपोर्ट, मिनिस्ट्री ऑफ एक्सटर्नल अफेयर्स, नई दिल्ली, 1996-97
- एनुअल रिपोर्ट, मिनिस्ट्री ऑफ एक्सटर्नल अफेयर्स, नई दिल्ली, 1997-98
- फारेन ट्रेड ऐंड बैलेंस ऑफ पेमेन्ट्स, सी.एम.आई.ई., मुम्बई, अक्टूबर, 2002

<u>शोध-पत्रिकाओं में प्रकाशित लेख :</u>

- ए0के0 दामोदरन ; 'इंडिया ऐंड चाइना इन द वर्ल्ड,' मेनस्ट्रीम, (एनुअल, 28 अक्टूबर 1989), पृ0 91-100, 115-16
- अभिजीत घोष; 'डायनामिक्स आफ इंडिया - चाइना नार्मलाइजेशन,' चाइना रिपोर्ट, 31(2) (अप्रैल-जून 1995), पृ0 251-70
- अरविंदर सिह; 'साइनो-इंडियन इकोनॉमिक रिलेशंस : एन एनालिसिस ऑफ रिसेन्ट ट्रेन्ड्स इन बाइलेटेरल ट्रेड,' चाइना रिपोर्ट, 36(3) (जुलाई-सितम्बर 2000), पृ0 397-410
- अशोक कपूर, 'चाइना ऐंड प्रोलीफेरेशन : इम्प्लीकेशन्स फार इंडिया', चाइना रिपोर्ट, 34(3-4), (जुलाई-दिसम्बर 1998), पृ0 401-17
- अल्का आचार्या, 'साइनो-इंडियन रिलेशंस सिंस पोखरन II', इकोनॉमिक ऐंड पोलिटिकल वीकली, 34(23), 1999 (5-11 जून), पृ0 1397-1400

- अलका आचार्य ऐड जी0पी0 देशपाडे "स्टिल मोमेन्ट इज ए वोलाटाईल सियुयेशन : झू-रोगजी विजिट्स इंडिया", इकोनामिक ऐंड पोलिटिकल वीकली, 37(5), (2-8 फरवरी, 2002), पृ0 367-69
- अविनाश एम.सकलानी, 'कोलोनलिज्म ऐंड अर्ली नेशनलिस्ट लिंक्स बिट्वीन इंडिया ऐंड चाइना', चाइना रिपोर्ट, 35(3), (जुलाई-सितम्बर 1999) पृ0 259-70
- आनन्द कुमार, 'करमापा क्वेश्चन', मेनस्ट्रीम, 38(6), (29 जनवरी 2000) पृ0 45-46
- अलेक्जेडर सलिस्की, 'चाइना, इंडिया, रशिया : ह्वाई ए स्ट्रेटेजिक ट्रायंगेल?' वर्ल्ड अफेयर्स, 5(1), (जनवरी-मार्च 2001) पृ0 124-49
- अल्का आचार्या ऐंड जी0 पी0 देशपाडे, "स्टिल मोमेन्ट इन ए वोलाटाईल सिचुयेशन : झू-रोंग्जी विजिट्स इंडिया", इकोनामिक ऐंड पोलिटिकल वीकली, 37(5), (2-8 फरवरी, 2002), पृ0 367-69
- अतुल शर्मा, 'प्रास्पेक्ट्स आफ ट्रेड एंड इन्वेस्मेन्ट इन इंडिया ऐंड चाइना', इंटरनेशनल स्टडीज, 39(1), (जनवरी-मार्च 2002), पृ0 25-44
- बिप्लव चौधरी, 'रोल ऑफ फारेन डाइरेक्ट इन्वेस्टमेन्ट इन द चाइनीज इकोनामी विद स्पेशल रिफरेन्स टू द ओवरसीज चाइनीज : इट्स इम्पूलीकेशन फार इंडिया', चाइना रिपोर्ट, 37(4), (अक्टूबर-दिसम्बर 2001), , पृ0 463-74
- बुर्रा श्रीनिवास, 'लिबरलाइजेशन, पावर ऐंड पालिटिक्स इन चाइना ऐंड इंडिया', जर्नल आफ कन्टेम्परेरी एशिया, 27(4), 1997, पृ0 460-74
- बदर आलम इकबाल, 'इंडिया-चाइना ऐंड द वर्ल्ड इकोनामी', इंडिया क्वार्टरली, 56(3-4), (जुलाई-दिसम्बर 2000), पृ0 97-108

- सी0 वी0 रगनाथन , 'इंडिया, चाइना रिलेशंस : प्राब्लम्स ऐंड पर्सपेक्टिव्स', वर्ल्ड अफेयर्स, (अप्रैल-जून 1998) वाल्यूम-2 नं0-2
- सी0 वी0 रगनाथन , 'साइनो-इंडियन रिलेशंस इन द न्यू मिलेनियम : चैलेन्जेज ऐंड प्रासपेक्ट्स', चाइना रिपोर्ट, 37(2) (अप्रैल-जून 2001) पृ0 129-40
- सी0 वी0 रंगनाथन, विनोद सी. खन्ना, इंडिया-चाइना रिलेशंस, वर्ल्ड फोकस, 20(2), फरवरी 2000, पृ0 18-20
- सी0 वी0 रगनाथन, 'इंडिया ऐंड चाइना : ए गुड फ्यूचर इफ वी कैन डील विद द पास्ट', वर्ल्ड फोकस, 22(4), (अप्रैल 2001), पृ0 10-17
- चन्दा रानी अखूरी; 'इंडिया-चाइना नेगोसियेशंस आन द बार्डर क्वेश्चन : टूवार्ड्स ए कन्सेप्चुअल फ्रेमवर्क', चाइना रिपोर्ट, 35(3) (जुलाई-सितम्बर 1999) पृ0 293-308
- चिन्तामणि महापात्रा; 'इंडिया, चाइना ऐंड रशिया : स्ट्रेटेजिक ट्रांयगेल इज पासिबिल', स्ट्रेटेजिक एनालिसिस, 22(11), फरवरी 1999 पृ0 1793-96
- चिन्तामणि महापात्रा; 'इण्डो-यूएस रिलेशंस : द चाइना फैक्टर', स्ट्रेटेजिक एनालिसिस, 21(8) (नवम्बर 1997) - पृ0 1225-28
- शेग-रुयूशेग; 'चाइना ऐंड इंडिया : ट्रान्सफार्मिंग हिस्टोरिकल साइनो-इंडियन रिलेशंस', वर्ल्ड अफेयर्स, 5(4), (अक्टूबर-दिसम्बर 2001), पृ0 18-26
- चग-तान, 'रसो-साइनो-इंडियन स्ट्रेटेजिक ट्रायंगेल : सिग्नल्स मिस्ड इन इंडिया', इकोनॉमिक ऐंड पोलिटिकल वीकली, 34(1-2), (2-15 जनवरी 1999), पृ0 12-13

- देवेन्द्र कौशिक, 'द न्यू जियोपालिटिक्स ऑफ सेन्ट्रल एशिया : रशिया, चाइना ऐंड इंडिया', कन्टेम्पोरेरी सेन्ट्रल एशिया, 3(2), अगस्त 1999 पृ0 13-21
- दावा नोर्बू, 'तिब्बत इन साइनो-इंडियन रिलेशंस : द सेन्ट्रलिटी ऑफ मार्जिनलिटी', एशियन सर्वे, 37(11) (नवम्बर 1997) पृ0 1078-95
- इ डिसूजा, 'साइनो-इंडियन डेटेन्टे : द मनीपाल ज्वाइंट मीटिंग', यू एस आई जर्नल, 131(543), (जनवरी-मार्च 2001) पृ0 46-53
- गिरी देशिग्कर, 'एन एन्टी इंडिया ग्लू? : चाइना-पाकिस्तान रिलेशंस', मनूशी, 110, (जनवरी-फरवरी 1999), पृ0 14-16
- गिरी देशिग्कर; 'काउन्टरवेलिंग पावर : चाइना अपोजेज इंडियन हेजीमनी इन साउथ एशिया बट रियलाइजेज इट्स ओन लिमिट्स', हिमाल, 11(6) जून 1998, पृ0 12-17
- गिरी देशिंग्कर; 'चाइना प्रिजनर ऑफ इट्स पास्ट', इडिया इटरनेशनल सेन्टर क्वार्टरली, 16(2) (समर 1989), पृ0 45-54
- जी.एस. भार्गव, परसीव्ड थ्रेट फ्राम चाइनाः फैन्टम आर फैक्ट?, मेनस्ट्रीम, 36 (26), 20 जून 1998, पृ0 15-16
- गुरमीत कनवल; 'चाइनाज लांग मार्च टू वर्ल्ड पावर स्टेटस : स्ट्रेटेजिक चैलेन्ज फार इंडिया', स्ट्रेटेजिक एनालिसिस 22(11) (फरवरी 1999), पृ0 1713-28
- जी.एस मिश्रा 'इंडिया चाइनां रिलेशंसः ए रिएप्रेजल', मेनस्ट्रीम, 3 मार्च 1987,
- जी0 पी0 देशपाण्डे, 'थर्ड सन इन द साइनो-इंडियन स्काई : द सेवेनटीन्थ करमापा इन इंडिया', चाइना रिपोर्ट 36(2), (अप्रैल-जून 2000) पृ0 253-58

- गैरी किन्वर्थ, 'द प्रैक्टिस आफ कामनं सिक्योरिटी: चाइनाज बार्डर विद रशिया ऐंड इंडिया', चाइनीज काउन्सिल आफ एडवांस्ड पालिसी स्टडीज, नं0 4, अक्टूबर, 1993, पृ0 15
- गौतम सोनी , 'लेभेरजिंग इन्फार्मेशन टेक्नोलॉजी फार ग्रेटर कोआपरेशन बिट्वीन इंडिया ऐंड चाइना', वर्ल्ड अफेयर्स, 5(4), (अक्टूबर-दिसम्बर 2001) पृ0 84-88
- जे0पी0 पाण्डा, 'पोस्ट नार्मलाइजेशन पीरियड इन साइनो-इंडियन रिलेशंस' मेनस्ट्रीम, 40(13), (16मार्च 2002), पृ0 20-24
- जान. डब्ल्यू. गार्वर, 'साइनो-इंडियन रेप्रोचमेन्ट ऐंड द साइनो-पाकिस्तान एनटेन्टे'; पोलिटिकल साइंस क्वार्टरली, 111(2) (समर 1996) पृ0 323-47
- जान डब्ल्यू गार्वर; 'द रेस्टोरेशन आफ साइनो-इंडियन कम्मीटी फालोइंग इण्डियाज न्यूक्लियर टेस्ट्स', द चाइना क्वार्टरली, 168, दिसम्बर 2001, पृ0 865-889
- जे0 ए0 नकवी, 'एनेमी ऑफ ए फ्रेंड = एनेमी : चाइना ऐंड पाकिस्तान आर कामरेड्स इन आर्मृस थैंक्स टू इंडिया ऐंड द यू एस' हिमाल, 11(6) (जून 1998), पृ0 30-32
- जे.के. बरल, जे.के. महापात्रा तथा एस.पी. मिश्रा; 'राजीव गांधीज चाइना डिप्लोमेसी: डायनामिक्स ऐंड प्राब्लम्स', इंटरनेशनल स्टडीज, वाल्यूम 26, नं.3, (जुलाई-सितम्बर 1989), पृ0 266
- जे मोहन मलिक, 'चाइना-इंडिया रिलेशंस इन द पोस्ट सोवियत एरा: द कान्टीन्यूइंग राइवल्री', द चाइना क्वार्टरली, नं0 142, जून 1995, पृ0 317-19
- के0 आर0 नारायणन, 'ह्वाई साइनो-इंडियन कोऑपरेशन इज ए हिस्टोरिकल नेसेसिटी इन द न्यू सेन्चुरी', मेनस्ट्रीम, (24 जून 2000), पृ0 7-10

- खालिद महमूद, 'रिबिल्डिंग साइनो-इंडियन रिलेशंस (1988-2000)' - रॉकीपाथ, अनसर्टेन डेस्टिनेशन', रीजनल स्टडीज, 19(1) 2000 (विंटर 2001); पृ0 3-35
- ली-पेग , 'चाइना ऐंड इंडिया आर स्टिल लैकिंग इन म्युचुअल अंडरस्टैडिंग', मेनस्ट्रीम, 10 फरवरी 2001, पृ0 21-24
- लाल, 'इंडिया : कानट्रास्ट्स इन इकोनामिक लिबरलाइजेशन' ? वर्ल्ड डेवलपमेंट, 23(9), (सितम्बर 1995), पृ0 1475-94
- मनोरजन मोहती, 'पार्टीज ट्र पंचशीलः इंडिया चाइना रिलेशंस ऐंड द न्यूक्लियर एक्सरलोजन्स इन साउथ एशिया', बुलेटिन आफ कन्सर्नड एशियन स्कालर्स, वाल्यूम 31, नं.2, अप्रैल-जून 99, पृ0 63
- मीरा सिन्हा भट्टाचारजी, 'इंडिया-चाइना-पाकिस्तान : बियांड कारगिल- चेंजिग इक्वेशनूस', चाइना रिपोर्ट, 35(4), (अक्टूबर-दिसम्बर 1999), पृ0 493-500
- मीरा सिन्हा भट्टाचारजी ऐड सी0 वी0 रंगनाथन; 'इंडिया ऐंड चाइना : प्रिन्सिपिल्स आफ कन्सट्रक्टिव कोआपरेशन', चाइना रिपोर्ट, 36(3) (जुलाई-दिसम्बर 2000), पृ0 383-90
- मनमोहन अग्रवाल ऐड दीपांकर सेन गुप्ता ; 'कम्पेयरिंग ट्रान्जिसन इकोनामीज : चाइना ऐंड इंडिया', चाइना रिपोर्ट, 36(1), (जनवरी-मार्च 2000), पृ0 43-72
- एम0 जे0 विनोद, 'इंडिया-चाइना रिलेशंस : इशुज, इवेन्ट्स ऐंड द नेचर आफ द डायलाग', मेनस्ट्रीम, 37(50), 4 दिसम्बर 1999, पृ0 9-11
- पौला बनर्जी, 'बार्डर्स एज अनसेटिल्ड मार्कर्स इन साउथ एशिया : ए केस स्टडी ऑफ द साइनो-इंडियन बार्डर', इंटरनेशनल स्टडीज, 35(2), (अप्रैल-जून 1998), पृ0 179-91

- राजिन्दर पुरी; 'द ग्रेट लीप फारवर्ड', इलस्ट्रेटेड वीकली आफ इंडिया, बम्बई, 17 नवम्बर 1985,
- रीता मनचन्दा; 'चाइना मेक्स डिप्लोमेटिक गेन्स एट इंडियाज एक्सपेन्सः अनइक्वल एक्सजेंज', फार ईस्टर्न इकोनामिक रिव्यू, 26 दिसम्बर 1991, पृ0 10
- राबर्ट सटर; 'साउथ एशिया क्राइसिसः चाइनाः एसेसमेन्ट्स ऐंड गोल्स', कांग्रेसनल रिसर्च सर्विस मेमोरेण्डम, 11 जून 1998।
- राजेश राजगोपालन; 'द स्टेट आफ साइनो-अमेरिकन रिलेशंस : इम्प्लीकेशंस फार इंडिया', स्ट्रेटेजिक एनालिसिस, 23(4), (जुलाई 1999), पृ0 671-81
- राजशेखर जी. जवालगी ऐंड अदर्स, 'इंडिया ऐंड चाइना एज इमर्जिंग जियान्ट्स इन द ग्लोबल इकोनामी : ए कम्परेटिव आउटलुक', फारेन ट्रेड रिव्यू, 32(1-2), (अप्रैल-सितम्बर 1997), पृ0 1-15
- सुमीत गागुली, 'द साईना-इंडियन बार्डर टाक्स 1981-1989; ए व्यू फ्राम न्यू देलही' एशियन सर्वे, वाल्यूम XXIX, नं0 12, दिसम्बर 1989, पृष्ठ 1128-29
- सुमीत गागुली; 'ज्वाइंट बेनिफिशियरीज; फार ईस्टर्न इकोनामिक रिव्यू, 30 जनवरी 1992, वाल्यूम पृ0 24
- श्री प्रकाश , 'इंडिया-चाइना रिलेशंस : ए कम्परेटिव व्यू आफ द 1950 ज ऐंड अर्ली 1990 ज', इंडिया क्वार्टरली, 52(3), (जुलाई-सितम्बर 1996) पृ0 1-20
- सुरजीत मानसिह; 'द यूनाइटेड स्टेट्स, चाइना ऐंड इंडिया : रिलेशनशिप्स इन कम्परेटिव पर्सपेक्टिव', चाइना रिपोर्ट, 35(2), (अप्रैल- जून 1999), पृ0 119-42
- सुरजीत मानसिह, और स्टीफन आई लेविन, 'चाइना ऐंड इंडियाः मूविंग वियांड कन्फ्रंटशेन; प्राब्लम्स आफ कम्युनिज्म, (मार्च-जून 1989), पृ0 30-48

- सुरजीत मानसिह, 'इंडिया-चाइना रिलेशंस, इन द पोस्ट कोल्ड वार एरा' एशियन सर्वे, वाल्यूम 34, अंक-3 मार्च 1994, पृ0 285-300.
- सुजीत दत्ता , 'साइनो-इंडियन डिप्लोमेटिक नेगोसियेशन्स : ए प्रिलिमिनरी असेसमेन्ट', स्ट्रेटेजिक एनालिसिस, 22(12), (मार्च 1999), पृ0 1821-34
- श्रीकान्थ कोन्डापल्ली ; 'चाइनाज रिस्पांस टू इंडियन न्यूक्लियर टेस्ट्स', स्ट्रेटेजिक एनालिसिस, 23(6), (सितम्बर 1999), पृ0 1039-44
- सचदेव वोरा; 'द मिडिल सेक्टर आफ द साइनो - इंडियन बार्डर, यू.एस.आई जर्नल, 131(545)', (जुलाई-सितम्बर 2001), पृ0 411-13
- स्नेहलता पाण्डा, 'पोखरन II : रिस्पान्स आफ यू एस, रशिया, चाइना ऐंड पाकिस्तान', बिस जर्नल, 20 (1), (जनवरी 1999) पृ0 12-30
- सुमित चक्रवर्ती. प्रेसीडेन्ट आफ इंडिया इन चाइना : ए प्रोडेक्टिव विजिट', मेनस्ट्रीम, 38 (25), (10 जून 2000), पृ0 3-6, 32-33
- स्वर्ण सिंह, 'चाइना-इंडियाः एक्सपैन्डिंग इकोनामिक इन्गेजमेन्ट', स्ट्रेटेजिक एनालिसिस, 24 (10), जनवरी 2001 पृ0 1813-1831
- स्वर्ण सिह; 'इंडियाज तिब्बत पालिसीः टू गिव आर नाट टू गिव वन मोर एसाइलम;' मेनस्ट्रीम, 38 (6), (29 जनवरी 2000), पृ0 47-49
- स्वर्ण सिंह; 'फिफ्टी ईयर्स आफ साइनो - इंडियन टाईज; वर्ल्ड फोकस, 20 (11-12), (अक्टूबर-दिसम्बर 1999), पृ0 44-47
- स्वर्ण सिह; 'द कारगिल कानफ्लिक्टः ह्वाई ऐंड हाऊ आफ चाइनाज न्यूट्रलिटी', स्ट्रेटेजिक एनालिसिस, 23 (7), (अक्टूबर 1999), पृ0 1083-94

- स्वर्ण सिंह, 'साइनो-इंडियन सीबीएम्स : प्राब्लम्स ऐंड प्रासपेक्ट्स', स्ट्रेटेजिक एनालिसिस, 20 (4) (जुलाई 1997), पृ0 543-59
- स्वर्ण सिह, 'पोखरन - II : इम्पूलीकेशन्स फार साइनो - इंडियन टाईज,' मेनस्ट्रीम, 36 (23), (30 मई, 1998), पृ0 4, 34,
- स्वर्ण सिंह, 'साइनो-इंडियन टाईजः नीड फार बोल्ड इनीसियेटिव्स', स्ट्रेटेजिक एनालिसिस, 22 (11), फरवरी 1999, पृ0 1729-42
- स्वर्ण सिह; 'साइनो - इंडियन रिलेशंसः स्कोप फार एक्सपैडिंग टाईज; वर्ल्ड फोकस, 19 (10-12), (अक्टूबर-दिसम्बर 1998) पृ0 38-40
- स्वर्ण सिह; 'साइनो - इंडियन-इंडियन टाईजः टाइम फार पोलिटिकल इनीसिएटिव्स, मेनस्ट्रीम, 37 (21), 15 मई 1999, पृ0 9-11
- स्वर्ण सिंह 'बीजिंग्स न्यूट्रलिटी ओवर कारगिल ऐंड साइनो - इंडियन टाईज', मेनस्ट्रीम, 37 (32), (31 जुलाई 1999), पृ0 13-16
- स्वर्ण सिह 'चाइनाज पोश्चर आफ न्यूटलिटी;, वर्ल्ड फोकस, 20 (6-7), (जून-जुलाई1999), पृ0 32-34
- स्वर्ण सिह, 'रसिया-चाइना-इंडियाः टाइम टू रिवाइव द स्ट्रेटेजिक ट्रायंगेल कान्सेप्ट;' मेनस्ट्रीम, 37 (47), (13 नवम्बर 1999) पृ0 10-12
- स्वर्ण सिह, 'इंडिया ऐंड चाइना : ग्रोविंग इकोनामीज, ग्रोविंग इंटेरेक्शन', वर्ल्ड अफेयर्स, 4(1), (जनवरी-मार्च 2000), पृ0 8-97
- टी0कार्की हुसैन, 'चाइना-इंडिया-पाकिस्तान', वर्ल्ड फोकस, 17 (4), (अप्रैल 1996), पृ0 11-13

- वी0सी0भूटानी; **'साइनो-इंडियन रिलेशन्स आर बैड: दे कैन नाट गेट बेटर', मेनस्ट्रीम, 38 (33), (5 अगस्त 2000),** पृ0 18-21
- वाहेगुरू पाल सिंह सिधू ऐंड जिग - डांग युआन, **'रिजाल्विंग द साइनो - इंडियन बार्डर डिस्यूट', एशियन सर्वे, 41 (2), (मार्च-अप्रैल 2001),** पृ0 351-376

<u>**शोध प्रत्रिकाएँ**</u>

- **एशियन सर्वे**
- **एशियन रिकार्डर**
- **एशियन रिलेशंस**
- **बीजिंग रिव्यू**
- **बिस जर्नल**
- **बुलेटिन आफ कन्सर्नुड एशियन स्कालर्स**
- **कन्टेम्परेरी पोलिटिकल स्टडीज**
- **कन्टेम्परेरी सेन्ट्रल एशिया**
- **चाइना रिपोर्ट**
- **इकोनामिक ऐंड पोलिटिकल वीकली**
- **फार ईस्टर्न इकोनामिक रिव्यू**
- **फारेन ट्रेड रिव्यू**
- **हिमालयन ऐंड सेन्ट्रल एशियन स्टडीज**

- हिमाल
- इंटरनेशनल स्टडीज
- इंडिया क्वार्टरली
- इंडिया इंटरनेशनल सेंटर क्वार्टरली
- मेनस्ट्रीम
- मनूशी
- पालिटिकल साइंस क्वार्टरली
- रीजनल स्टडीज
- स्ट्रेटेजिक एनालिसिस
- स्ट्रेटेजिक डाइजेस्ट
- द चाइना क्वार्टरली
- तिब्बतन रिव्यू
- द चाइना पोस्ट
- यू0एस0आई0 जर्नल
- वर्ल्ड फोकस
- वर्ल्ड अफेयर्स
- वर्ल्ड डेवलपमेंट

समाचार पत्र एवं पत्रिकाएं :

- अमृत बाजार पत्रिका
- अमर उजाला, इलाहाबाद
- चाइना डेली, बीजिंग
- दैनिक जागरण, इलाहाबाद
- दिनमान
- डेमोक्रेटिक वर्ल्ड
- फ्रंटलाइन, नई दिल्ली
- हिन्दुस्तान, लखनऊ
- इंडिया टुडे, नई दिल्ली
- इंडियन एक्सप्रेस, नई दिल्ली
- जनसत्ता, नई दिल्ली
- न्यूयार्क टाइम्स, वाशिंगटन
- नवभारत टाइम्स, नई दिल्ली
- आर्गनाइजर
- आउटलुक, नई दिल्ली
- पालिटिक्स इंडिया, नई दिल्ली
- राष्ट्रीय सहारा, लखनऊ
- द नेशन, इस्लामाबाद

- द सेण्टीनेल, गुवाहाटी
- द पायोनियर, नई दिल्ली
- द एशियन एज, नई दिल्ली
- द हिन्दू, नई दिल्ली
- द टाइम्स आफ इंडिया, नई दिल्ली
- द न्यूज, इस्लामाबाद
- द टेलीग्राफ, कलकत्ता
- द हिन्दुस्तान टाइम्स, नई दिल्ली
- द ट्रिब्यून, चंडीगढ़
- द स्टेट्समैन वीकली
- द इलस्ट्रेटेड वीकली आफ इंडिया, बम्बई